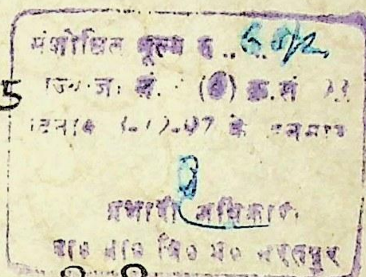
राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

आनन्दकुमार R.A.S.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक 185



महाराजा श्री विजयसिंघजी री ख्यात

सम्पादक

ब्रजेशकुमारसिंह

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1997

प्रथमावृत्ति 500] [मूल्य 60 00 रु.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
आनन्दकुमार R.A.S.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक 185

महाराजा श्री विजयसिंघजी री ख्यात

सम्पादक
ब्रजेशकुमारसिंह

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1997

प्रथमावृत्ति 500] [मूल्य 60.00 रु.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत : अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी-राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय-प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

आनन्दकुमार R.A.S.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक 185

सम्पादक

ब्रजेशकुमारसिंह

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

1997

मूल्य 60.00 रु.

मुद्रक

हिमालय प्रिन्टर्स, कुम्हारिया कुंआ, खाण्डा फलसा, जोधपुर

प्रधान सम्पादकीय

'ख्या प्रकथने' धातु में क्त प्रत्यय से निष्पन्न ख्यात शब्द मूलतः प्रख्यात, अभिहित या परिज्ञात का कथन करता है किन्तु उत्तर मध्य-कालीन इतिहास के लेखकों ने ख्यात शब्द को इतिहासपरक मानकर एक नवीन अर्थ प्रदान किया। फलतः राजस्थानी भाषा में विलिखित गद्य साहित्यान्तर्गत अनेक ख्यातों का प्रणयन किया गया जिनमें मुहंता नैणसी री ख्यात, बांकीदास री ख्यात, दयालदास री ख्यात, महाराजा मानसिंह जी री ख्यात, तखतसिंह जी री ख्यात काफी सुविख्यात हैं। इन ख्यातों का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि से समान रूप से महत्व है। इन ख्यातों में दयालदास की ख्यात को छोड़कर सभी राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला से प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रस्तुत महाराजा विजयसिंहजी की ख्यात के सम्पादन कार्य में मूल पाठ अविकल रूप से प्रस्तुत करने के साथ ही सम्पादक ने अपनी भूमिका में महाराजा विजयसिंह जी के काल की सभी राजनैतिक एवं सामाजिक घट-नाओं के बखूबी चित्रण के साथ तत्कालीन उपलब्ध स्रोत विजयविलास काव्य तथा कृष्णाजी जगन्नाथ पारसनीक के पत्र संग्रह तथा विजयसिंह कालीन हकीकत की बहियों आदि स्रोतों के माध्यम से ख्यात की प्रामा-णिकता की जांच की है जो निस्सन्देह एक स्तुत्य प्रयास है।

महाराजा विजयसिंह जी ने करीबन 40 वर्ष शासन किया। दिल्ली की बादशाहत शिथिल हो जाने से मराठों का उपद्रव बराबर बना रहा। महाराजा रामसिंह एवं बखतसिंह के आपसी झगड़े के कारण भी सरदारों में स्वतन्त्रता आ गई थी। महाराजा विजयसिंह को गुलाबराय के प्रति अधिक आसक्ति एवं उसके राजकाज में हस्तक्षेप के कारण भी सरदार लोग महाराजा से अप्रसन्न थे। इतनी अस्थिर मनस्थिति के बावजूद भी महाराजा

विजयसिंह को कूटनीति व राजनैतिक क्षेत्र में काफी सफलतायें प्राप्त हुईं। महाराजा विजयसिंह के काल में चांदी के विजयशाही सिक्के चलाये गये। गोवध का पूर्ण निषेध हुआ और धार्मिक क्षेत्र में चौपासनी के वल्लभ सम्प्रदाय का काफी वर्चस्व बढ़ा।

पुरातन ग्रन्थ माला में प्रकाशित विविध अन्य ख्यातों के अनुक्रम में प्रस्तुत ख्यात एक और मणि के रूप में संयोजित की जा रही है। आशा है कि प्रस्तुत ख्यात सुधीजनों, इतिहासविदों एवं भाषा विकासक्रम के अध्ययन-कर्त्ताओं हेतु समान रूप से उपयोगी हो सकेगी— ऐसा मेरा विश्वास है।

आनन्द कुमार
(R.A.S)
निदेशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

॥ ॐ ॥

भूमिका

राजस्थान के इतिहास के स्रोतों में अभिलेखीय सामग्री के अलावा ख्यात, वात, हकीकत, वचनिका, गीत आदि इस प्रकार का स्रोत है जो ऐतिहासिक होने के साथ-साथ साहित्यिक भी है। राजस्थान के अन्य पूर्व रियासतों की अपेक्षा मारवाड़ में ख्यात लेखन की विशेष रूप से परम्परा रही है जिसका प्रारम्भ मुंहता नैणसी से होता है। मुंहता नैणसी राजस्थान के लगभग सभी राजवंशों की विगत प्रस्तुत करते हैं, परन्तु राठौड़ां री ख्यात को देखने से पता लगता है कि नैणसी की ख्यात लिखने की पद्धति को सम्भवतः कम पसन्द किया गया और ख्यात का लेखन राजवंशों के शासक विशेष के लिए होने लगा। राठौड़ां की ख्यात जो समग्र रूप से उपलब्ध है वह महाराजा मानसिंह के समय को समेटती है। इसी ख्यात में से शासक विशेष से सम्बद्ध भाग को शासक के नाम से सम्बोधित किया गया है और हमारे सामने अभयसिंह की ख्यात, मानसिंह की ख्यात उपलब्ध है। हाल ही में महाराजा तखतसिंह की ख्यात भी प्रकाशित हो गई है। यद्यपि उसका प्रस्तुत स्वरूप ख्यात के प्रचलित स्वरूप से भिन्न है।

शासक विशेष के राजनैतिक उपलब्धियों को एवं घटनाक्रम को आँखों देखा हाल की भांति चित्रित करना ख्यात के लेखक का उद्देश्य होता है। ख्यात लेखक अपने "अन्नदाता" के साथ-साथ चलता है। महाराजा के पूरे शासन से सम्बन्धित घटनाओं का विवरण होने से उसमें कुछ ऐसी बातों का भी समावेश हो जाता है जिन्हें सामाजिक या सांस्कृतिक कहना समीचीन होगा। इस प्रकार के संकेत प्राप्त होना महज प्रसंगवशात् ही सम्भव होता है। यहां पर प्रस्तुत की जा रही महाराजा विजयसिंह की ख्यात भी कुछ ऐसे संकेत अवश्य करती है जिनमें पुष्टिमार्ग के प्रति उनकी भक्ति या

अपनी पड़दायत गुलाबराय के प्रति उनकी आसक्ति जाहिर होती है। कभी ऐसा भी देखा गया है कि ख्यात लिखते समय या प्रतिलिपि करते समय कुछ ऐसी घटनाएँ छूट भी गईं जो इतिहास के अन्य प्रमाणों द्वारा स्वीकृत हो चुकी हैं। जो भी हो इस ख्यात को प्रस्तुत करते समय यह प्रयास किया गया है कि ख्यात के मूल गद्य को यथाप्राप्त अवस्था में ही प्रस्तुत किया जाय तथा भूमिकास्वरूप लिखे जा रहे पृष्ठों में मेरा यह विनम्र प्रयास रहेगा कि मैं अपनी बात को ख्यात तक सीमित रख सकूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के संग्रह में उपलब्ध प्रस्तुत ख्यात का विवरण इस प्रकार है—

ग्रन्थांक	— 15639
ग्रन्थ का नाम	— महाराजा विजयसिंह री ख्यात
पत्र संख्या	— 100
लम्बाई	— 33 सेन्टीमीटर
चौड़ाई	— 26 सेन्टीमीटर
पंक्ति प्रति पत्र	— 22
अक्षर प्रति पंक्ति	— 32

प्रति परिचय प्रस्तुत करते हुए इस बात का संकेत किया जाना आवश्यक है कि अन्य ख्यातों की तरह यह ख्यात भी पूर्व मारवाड़ राज्य के कारखाना इतिहास में प्रतिलिपि कराई गई प्रतियों में से एक है। इसका उपयोग पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ तथा परवर्ती इतिहासकारों ने भी किया है। फिर भी इस ख्यात में विजयसिंह के राजनैतिक एवं व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित ऐसी अनेक छोटी-मोटी घटनाओं का विवरण है जो अन्य घटनाओं को समझने में या उनके क्रम को जोड़ने में बहुत सहायक सिद्ध हो सकती हैं। इस दृष्टि से ख्यात को मूल रूप में प्रस्तुत करने का यह विनम्र प्रयास है। दूसरे विजयसिंह की सामरिक उपलब्धियों अथवा निराशाओं को लेकर लिखे गये **"विजय-विलास-काव्य"** विजयसिंह के समय में पेशवा के वकील कृष्णाजी जगन्नाथ पारसनीक का पत्र संग्रह और विजयसिंह के समय की हकीकत बहियें (1820 से 1849 तक); इन स्रोतों से ख्यात की घटनायें प्रमाणित होती हैं। अतः प्रतिलिपि होने पर भी इसकी प्रामाणिकता में सन्देह नहीं किया

जा सकता है ।

महाराजा बखतसिंह का देहावसान हुआ तब बखतसिंह नागौर के शासक थे । अभयसिंह के पुत्र रामसिंह ने भी सिंहासन के लिए अपना दावा किया, परन्तु सरदारों का साथ मिलने से बखतसिंह ने मारवाड़ पर कब्जा कर लिया और बिना रक्तपात किये वे मरुधराधीश हो गये । रामसिंह को यह कैसे सहन हो सकता था । उसने मल्हार राव होल्कर और जयाप्पा सिंधिया की मदद से फिर से शिर उठाने का प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हो पाये । परन्तु महाराज बखतसिंह के मरने के बाद रामसिंह ने मन्दसोर से और कुम्पावत खींवकरण फतेहसिंघोत मल्हार राव होल्कर तथा जयाप्पा सिंधिया के साथ मन्दसोर से मारवाड़ की ओर कूच किया तब महाराजा विजयसिंह मारोठ में थे । यों रामसिंह और महाराजा विजयसिंह के संघर्ष के प्रारम्भ से इस ख्यात का प्रारम्भ होता है । जयाप्पा सिंधिया को फौज किशनगढ़ से पुष्कर पहुँची । मराठों की फौज 60,000 हजार थी और महाराजा विजयसिंह की फौज 40,000 थी । मेड़ता को जयाप्पा सिंधिया ने घेर लिया । सम्वत् 1811 की आसोज वद 13 को हुए इस युद्ध में 15 चांपावत सरदार, 4 मेड़तिया, 1 महेचा तथा 7 भाटी सरदार काम आये ।

मेड़ता हाथ से निकलने पर महाराजा विजयसिंह नागौर आए । जयाप्पा सिंधिया ने नागौर को घेर लिया और ताउसर डेरा किया तथा रामसिंह फौज के साथ जोधपुर की ओर रवाना हुआ । इसके साथ-साथ मराठों ने फलौधी और जालोर को भी घेर लिया लेकिन जोधपुर पर उसका कब्जा नहीं हो पाया । इधर नागौर में अपने डेरे में स्नान करते हुए जयाप्पा सिंधिया को महाराजा विजयसिंह ने धोखे से मरवा दिया । फिर भी स्थिति अभी न हार की थी और न जीत को । जयाप्पा के मरने के बाद उनके पुत्र जनकूजी सिंधिया ने जोधपुर के घेरे को और कड़ा कर दिया । जब मराठों की फौज का लक्ष्य जोधपुर हुआ तब महाराजा विजयसिंह बीकानेर चला गया और बीकानेर महाराजा गजसिंह के साथ वह जयपुर के लिए रवाना हुआ । रामगढ़ में पड़ी कछवाहों की 60,000 सेना को नागौर में मराठों का डेरा उखाड़ने के लिए रवाना किया गया, परन्तु यह फौज भी मराठों का विशेष हानि नहीं पहुंचा पाई और अन्ततः अत्यधिक जन-धन की हानि उठाकर

सेना वापस जयपुर चली गई।

जयपुर महाराजा की लड़की की सगाई रामसिंह से हुई थी। मुत्सद्दियों ने माधोसिंह को समझाया कि जब रामसिंह को लड़की देनी है तो जोधपुर भी रामसिंह को रहने दो, इससे रामसिंह पर एहसान भी होगा। मुत्सद्दियों की इस पशोपेश में कच्छवाहों की फौज डीडवाना से वापिस जयपुर पहुँच गई। महाराजा विजयसिंह ने सिंघवी फतेहचन्द और देवीसिंह महासिंघोत की मारफत मराठों से बात की और मारवाड़ के दो हिस्से किए गए। इक्यावन लाख रुपिया पेशकसी के तय हुए तथा ढाई हजार गांव रामसिंह को और ढाई हजार गांव महाराजा विजयसिंह को दिए गए। इसी समय अजमेर मराठों को दिया गया और 6,00,000 रोकड़ देना तय हुआ। एक लाख के पेटे रावटी, 2 लाख नकद और बाकी के लिए आश्वासन दिया गया। तब महाराजा विजयसिंह जी बीकानेर पधार गये और कुछ समय बाद सरदारों के साथ नागौर आए। नागौर से संवत् 1812 में जोधपुर गढ़ दाखल हो गये और अपने उमरावों, मुत्सद्दियों को ओहदे आदि प्रदान किये। वि० सं० 1813 में रामसिंह जयपुर गए। जयपुर से झिलाय आदि स्थानों पर उनके विवाह हुए।

वि० सं० 1813 में मारवाड़ में अकाल पड़ा तब उस समय रामसिंह झिलाय गया हुआ था, मराठा नहीं थे। तब सरदारों ने महाराजा विजयसिंह को कहा कि अब रामसिंह के परगनों पर कब्जा करो, परन्तु पोकरण ठाकुर श्री देवीसिंह इससे सहमत नहीं हुए क्योंकि एक वर्ष का तो शान्ति रखने का वचन ही दिया था। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है। महाराजा विजयसिंह की फौज ने मेड़ता पर कब्जा कर लिया। यह समाचार मिलते ही मराठों और रामसिंह ने 7,000 हजार की फौज इकट्ठा कर मेड़ता कूच किया तब जोधपुर से महाराजा विजयसिंह भी रवाना हो गये। महाराजा का डेरा पीसांगण हुआ, पीसांगण से आलणीयास डेरा किया। मराठों ने कालू पर कब्जा किया फिर लोठोती से वेलावास डेरा किया। मराठों के साथ खानाजाद की सेना भी थी। फिर सेनाओं का आमना-सामना मेड़ता में हुआ। महाराजा विजयसिंह की फौज को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी। तब युद्ध को सरदारों के जिम्मे छोड़कर महाराजा विजयसिंह जोधपुर की ओर रवाना हो गयें।

महाराजा विजयसिंह और महाराजा रामसिंह की इस टकराहट से परेशान होकर पोकरण और निम्बाज के ठाकुर बिना अनुमति लिये अपने-अपने ठिकानों में चले गये। उनके साथ ठा० छत्रसिंह और दौलतसिंह भाटी भी रवाना हो गये।

महाराजा विजयसिंह के मन की अस्थिरता का ख्यातकार ने बखूबी बयान किया है। नाराज हुए देवीसिंह को बुलाने के लिए वि० सं० 1815 में गोयनदास को भेजा लेकिन देवीसिंह महाराजा विजयसिंह के पास जोधपुर नहीं आये फिर जेसा कच्छवाहा को भेजा तब भी देवीसिंह जोधपुर नहीं आए। अन्त में ठाकुर केसरीसिंह जी को कुछ फौज के साथ भेजा गया तो भी देवीसिंह ने जोधपुर आना स्वीकार नहीं किया और अन्त में जोधपुर से पोकरण फौज भेजी गई किन्तु कोई असर नहीं हुआ। तब महाराजा विजयसिंह स्वयं चहांण सींभूदान और 200-300 आदमियों के साथ लेकर बीसलपुर के तालाब के ऊपर बगीची में डेरा किया, तब देवीसिंह दस कदम सामने आया और मुजरा करके कहा कि यहां पर बहुत ठण्ड है, आप मेरे डेरे पधारें। केसरीसिंह जी भी साथ में था। पुरानी बहियां देखकर सरदारों को फिर गाँव इनायत किये गये।

संवत् 1816 के फाल्गुन में महाराजा विजयसिंह के आध्यात्मिक गुरु स्वामी आत्माराम का देहावसान हो गया। महाराजा विजयसिंह बहुत उदास हुये। जब स्वामी जी की शव-यात्रा रवाना हो रही थी तब पोकरण ठाकुर देवीसिंह, रास ठाकुर केसरीसिंह, आसोप ठाकुर छत्रसिंह, ठाकुर भगवतसिंह बैकुण्ठी के दर्शन करने के लिए किले में दाखिल हुए। इनके साथ गये लोगों को इमरती पोल के बाहर ही रखा गया और पोल बन्द कर दी गई। इधर से लोहा पोल को भी बन्द कर दिया गया। बैकुण्ठी सूरजपोल से रवाना होने के बाद जब ये उमराव जनाना ड्योढ़ी से होते हुये सिणगार चौकी की ओर रवाना हो रहे थे तब अकस्मात् महाराजा विजयसिंह की आज्ञा से देवीसिंह, जवानसिंह, छत्रसिंह, केसरीसिंह को कंद कर लिया गया। नगारखाने की कोठरियों में इन तीनों--देवीसिंह, जवानसिंह और छत्रसिंह को पृथक्-पृथक् कोठरियों में हथकड़ियां, बेड़ियां और गले में तोखां लगा करके कैद किया गया। उस समय का दोहा बहुत प्रसिद्ध है—

केहर देवो छत्तसाल दोळो राजकुंवार ।
मरते मोडै मारीया चोटी वाला चार ।।

देवीसिंह ने अन्न-जल का त्याग कर दिया और 6 दिन बाद देवलोक हो गये । देवीसिंह को रामदेव का इष्ट था । बाबा ने उनकी मृत्यु से पूर्व बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ तोड़ दी थीं । एक महीना बीता और आसोप के ठाकुर छत्रसिंह की भी मृत्यु हो गई । केसरीसिंह को 3 साल तक कैद में रहना पड़ा और कैद में ही उनकी मृत्यु हो गई । यों पोकरण ठाकुर देवीसिंह की धोखे से की गई हत्या आगे चलकर भीमसिंह और मानसिंह के समय में कितनी घातक सिद्ध हुई, यह भीमसिंह-मानसिंह प्रकरण में देवीसिंह के पौत्र सवाईसिंह द्वारा किए गये उपद्रवों से स्पष्ट होती है ।

ठाकुर देवीसिंह की हत्या से क्षुब्ध उनके पुत्र सबलसिंह ने श्यामसिंह के साथ पाली में 10,000 फौज इकट्ठी की । उनके साथ कुम्पावत, उदावत, भाटी जेसा साथ हो लिये । जोधपुर से उनके मुकाबले के लिये धायभाई जगन्नाथ जी रवाना हुये । सबलसिंह की फौज के छोटे पटायत धायभाई की ओर एक-एक करके मिल गए । सबलसिंह निम्बाज चला गया । इस बीच जंयपुर से जोसी बालु वापस आते मेडता रुका और मेड़ता को खाली देखकर उस पर कब्जा कर लिया तथा मेड़ता पर महाराजा विजयसिंह की आंण दुहाई फिरवायी । जोसी बालु के हटते ही चांपावत और उदावत सरदारों ने मेड़ता का घेरा दिया, परन्तु इस युद्ध में रामसिंह के प्रतिनिधि चांपावत सरदारों को सफलता नहीं मिली । मेड़ता में हुए नुकसान की भरपाई के लिये धायभाई ने तोपखाने के साथ रामसिंह की ओर रुख किया । भागता हुआ रामसिंह रूपनगर चला गया और धायभाई ने मारोठ पर कब्जा कर लिया ।

महाराजा विजयसिंह की यह ख्यात इस प्रकार की सरदारों के साथ एवं मराठों के साथ हुई कई मुठभेड़ों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है । अन्ततोगत्वा रामसिंह का यह संघर्ष वि० सं० 1829 में उसके स्वर्गवास के साथ समाप्त हुआ । इसके बाद ही मारवाड़ में शान्ति हुई और विजयशाही एक रुपये में 2 मण धान लोगों को नसीब हुआ और अमन चैन ऐसा हुआ कि—"महाराज विजेसिंवजी रो प्रताप वधीयो ने मुलक में घणो चैन हुवो । ने जवान पीण चोखा हुवा । बीजेशाही रु. 1/अेक रो धान मण 2 हुवो ने

रईयत सुखी हुई । मुलक सारा में आबादांन ने आंण दीराया । हीरण खोला हुता मगरा वीत चरे ने सांढीया रा टोळा चर-चर आवे । पीण कोई नांव लेवण पावे न्हीं । ईसो अमल दसतुर जमायोड़ा । महाराज तो भगती रे वस होय श्रीजी री सेवा करे सु कसाईवाड़ो मेट दीयो ने सीकार मने कर दीवी । ... पांणी ऊपर सिला तीरे ने देसां-परदेसां रा म्हाराज रा दरसण करण ने आवे ने कहे कलु में राजा परीक्षत ज्युं छे ।"

वि० सं० 1830 में महाराजा विजयसिंह ने निम्न प्रकार से परगनों के हाकिम नियुक्त किए —

नागौर	— मु० मनरूप
मेड़ता	— सिं० धनराज
प्रवतसर	— भं० सुखराज
मारोठ दोलतपुर	— सिं० ताराचन्द
डीडवांणे	— भं० माणकचन्द
फलौधी	— सिं० हिन्दुमल
सीवाणे	— भं० फतेराम
जालोर	— सिं० जोरावरमल
पाली	— सिं० मांनमल
सोजत	— सिं० खूबचन्द

अब विजयसिंह को दिनचर्या बदलने लगी । दिन-रात प्रभु भक्ति में रहने लगे । उनके इस बदलाव का वर्णन ख्यातकार ने इस प्रकार किया— "श्री म्हाराज प्रभु री बंधगी करे सु रात घड़ी च्यार रहे तरां तारत पधार दांतण कर सीनान करे । पछे प्रभु रे मींदर चाकरी करे । पछे सेवा कर प्होर दीन चढीयां पछे पोसाक पधरावे । पछे असवारी कर मींदरां पधारे । पछे दोफार रा थाळ पधरावै । पछै घड़ी दोय आराम करे । पछै उठने राज-काज रे वासते मुसदीयां रो दरबार कर ने सारी जाब नीवड़े । पांणी ऊपर सिला तीरे ने देसां-परदेसां रा म्हाराज रा दरसण करण ने आवे ने कहे—कलु में राजा परीक्षत ज्युं छे ।"

रियासत का कसाईवाड़ा श्रीजी की सेवा में समर्पित किया गया ।

गोवध का निषेध हुआ। मांस-भक्षण अपराध हो गया।

संवत् 1831 में जब ठाकुर जैतसिंह का मराठों के वकील गुलाबराय से काफी नजदीकी सम्बन्ध था। उसका महादजी सिंधिया से भी अन्दर ही अन्दर मेल-जोल था। इसलिए जैतसिंह को किले बुलाया और खावका के महलों में जब मुजरा करने के लिए वह नीचे झुका उसी वक्त बिजयराम गहलोत और सिंघवी खूबचन्द ने महाराजा के इशारे पर गर्दन और बगल में कटार मारकर उसकी हत्या कर डाली।

संवत् 1832 के आस-पास विजयसिंह की पड़दायत गुलाबराय का राज-काज में प्रभाव बढ़ने लगा और धीरे-धीरे उसकी यह इच्छा होने लगी कि सरदार और उमराव मुझे मुजरा करने के लिए उपस्थित होवें। गुलाब-राय ने महाद जी सिंधिया से जोड़-तोड़ बैठाकर अपने लड़के शेरसिंह को युवराज बनाने के लिए कुचक्र प्रारम्भ किया। शेरसिंह की युवराज पदवी का समारोह दो बार आगे टला लेकिन अन्त में विजयसिंह को गुलाबराय के सामने झुकना पड़ा क्योंकि मारवाड़ की सीमा पर महादजी सिंधिया अपनी 50 हजार फौज के साथ तैयार था।

गुलाबराय के प्रभाव के कारण महाराजा विजयसिंह धीरे-धीरे राज-काज से उदास होने लगा। उसके उमरावों का साथ, उसे ऐसा लगा कि छूटता जा रहा है। खीची गोरधन यद्यपि बहुत स्वामिभक्त व्यक्ति था फिर भी उसके प्रति विजयसिंह के मन से संशय उत्पन्न हुआ। सारे राज-काज पासवान गुलाबराय के हाथ में चला गया। दीवांण बदल दिये गये, मुत्सदी, खवास और पासवानों से दण्ड लिया जाने लगा। गोरधन खीची पर राज का पैसा खाने का आरोप लगाया गया। अब तक सबलसिंह के लड़के सवाईसिंह जयपुर से मारवाड़ आए हुए थे। वे गुलाबराय की मार्फत महाराजा को सिरदारों के विरुद्ध भड़काते रहे। सं० 1847 के काती सुद 9 को जब शेरसिंह को युवराज बनाया गया और जालोर गुलाबराय को जागीर में दिया गया। उनके सारे ओहदेदार उनके साथ जालोर चले गये।

शहर में भीमसिंह का बन्दोबस्त हो गया था। गुलाबराय ने जब वह कुछ समय के लिये महिलाबाग (मायला बाग) के महलों में रहने के लिये आई थी तब महाराजा विजयसिंह की सेवा में खास रुक्का भेजकर यह भय प्रकट

किया कि भीमसिंह जी मुझे मार देंगे, तब महाराजा विजयसिंह ने पोकरण ठा० सवाईसिंह और रास ठाकुर जवानसिंह वगैरा को पासवान जी के पास बाग भेजा । उन्होंने गुलाबराय को गढ़ चलने के लिये निवेदन किया और कहा—आप जैसा चाहेंगी भीमसिंह वैसा ही करेगा, यह आश्वासन भी दिया । गुलाबराय महाडोल में बैठी और जवाहरात के गहनों का डिब्बा भी महाडोल में रख दिया । वह दिन वैसाख वद 10 वि०सं० 1848 का था । शाम को महाडोल रवाना हुआ । बाग और गढ़ के बीच ख्यातकार के अनुसार चालो के ठाकुर रूपावत सिरदारसिंह ने गुलाबराय की हत्या कर दी । गुलाबराय के गहने जो महाडोल में रखे थे, सवाईसिंह और जवानसिंह ने लूट लिए । ब्राह्मणों ने गुलाबराय का कागा श्मशान में दाह संस्कार कर दिया ।

महाराजा विजयसिंह के लिये गुलाबराय महाराणी से भी बढ़कर थी । वह स्वामिनी भी थी औरप्रिया भी । हालांकि उनको बहुत समय तक पासवान गुलाबराय की इस घटना का पता नहीं चल पाया, परन्तु जब उनको पता चला तो वे विरक्त से हो गए ।

संवत् 1849 के आषाढ़ वद 10 से उनका स्वास्थ्य अधिक गिरने लगा । अन्न-जल छूट गया । आषाढ़ वद 14 को महाराज कंवार सावंतसिंह और शूरसिंह ने 2200 रुपये का दान-पुण्य किया । रात आधी बीतने पर विजयसिंह देवलोक हो गये । विजयसिंह के देहावसान के समय पेशवा का वकील विजयसिंह जी के पास ही बैठा था उसमें इस घटना का बहुत मर्मस्पर्शी वर्णन किया है—

"ज्येष्ठ वदि 10 के दिन दर्शन के बाद महल में आने पर उनका शरीर अत्यन्त शिथिल पड़ा । डेढ़ प्रहर रात बीतने पर पासवान (गुलाबराय) की दोनों सेविकाओं को अपने पास बुलाकर यह बार-बार पूछते रहे कि सरदारों ने उसे (पासवान को) किस प्रकार मारा। इसी तरह की बातों में आधी रात से ज्यादा समय बीत गया । तीनों ही निरन्तर आंसू बहा रहे थे । तब उनका बुखार तेज हुआ और पेट में सांस चढ़ गई । ...... चार दिन बुखार चढ़ता गया और सांस चढ़ती गई । ज्येष्ठ वदि 14 रविवार दिन में दोपहर पश्चात् ...... दान-धर्म और भगवत् स्मरण कराया । डेढ़ प्रहर रात बीतने तक मैं उनके पास था । आधी रात के समय सांस चढ़ जाने से उनका देहान्त हो

गया। सोमवार को अमावस्या थी। छः घड़ी दिन बीतने पर राजकीय सम्मान के साथ यहां से तीन कोस दूर उनके पूर्वजों का स्थान मण्डोर में अग्नि संस्कार किया गया।"

ख्यात लेखक की विधा के अनुसार विजयसिंह की रानियों और उनके कंवरों का विवरण इस ख्यात में भी दिया गया है। यह ख्यात लेखन की परम्परा का एक अंग है।

विजयसिंह के शासन का आधा समय वि०सं० 1829 तक रामसिंह और उसके पक्ष के सरदारों के साथ युद्ध में बीता और बाद में पासवान गुलाबराय के प्रभुत्व के कारण प्राय: उमरावों से उसकी कभी नहीं बनी। इसके मूल में "उमरावां थापिया जिका राजा व्है" इस उक्ति का फिर से स्मरण हो आता है। बखतसिंह तक सभी उमरावों का एक साथ समर्थन शासक को मिलता रहा परन्तु विजयसिंह के भाग्य में यह नहीं था। इसलिए राजनैतिक उपलब्धि की दृष्टि से यदि हम विजयसिंह का मूल्यांकन करना चाहेंगे तो ऐसा कुछ हमें विशेष नजर नहीं आता जो उसे पूर्ववर्ती शासकों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर सके। दरअसल विजयसिंह का महत्त्व एक शासक या योद्धा के रूप में देखना उसके साथ अन्याय होगा। महाराजा अभयसिंह ने चौपासनी में श्रीनाथ जी की स्थापना कर जिस पुष्टिमार्ग के लिये मारवाड़ में भूमिका बनाई, उसे वास्तव में विजयसिंह ने ही पुष्ट किया है। गुलाबराय चौपासनी के विट्ठलनाथ जी की शिष्या थी और कीर्तन गाया करती थी। विजयसिंह की कृष्ण-भक्ति में सबसे अधिक योगदान गुलाबराय का है। स्वयं गुलाबराय ने और प्रशासन के मार्फत जिन मन्दिरों का निर्माण कराया है और उन मन्दिरों में पूजा, अर्चना और भक्ति की जो अजस्र धारा फूट पड़ी है उसकी मिशाल राजस्थान की अन्य रियासतों में ढूंढने से भी नहीं मिलेगी। गुलाबराय के संगीतज्ञ होने से और इन मन्दिरों में नित्य कीर्त्तन के लिए वन्दगी के आधार पर जिन गायक-वादकों की नियुक्तियां हुई, उन्होंने जोधपुर में संगीत के वातावरण को समृद्ध बनाया है।

कृष्ण-कथा पर आधारित चित्रांकन की समृद्धता भी इसी सम्प्रदाय के प्रभाव का योगदान है। यों जाने-अनजाने विजयसिंह और गुलाबराय ने स्थापत्य, संगीत और चित्रकला को समृद्ध करने वाले जिस पुष्टिमार्गीय

धार्मिक परिवेश का निर्माण किया उसका ऋण चुकाया नहीं जा सकेगा। वास्तव में जोधपुर को व्रज बनाने वाले महाराजा विजयसिंह का सांस्कृतिक पुरुषार्थ मरुधरा के शासकों का एक ऐसा योगदान है जिसका अनुकरण फिर कभी नहीं किया गया और मानसिंह ने यदि किया भी तो वह स्थायी नहीं रह सका। अतः मेरी राय में विजयसिंह की उपलब्धियों को स्थायी सांस्कृतिक अवदान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए, केवल स्वर्गकाम वीर की दृष्टि से नहीं।

—ब्रजेशकुमार सिंह

महाराजा श्री विजयसिंघजी री ख्यात

म्हाराज श्री विजेसिंघजी री ख्यात सरू—

माहाराजा श्री विजेसिंघजी रो जनम संमत 1786 रा मीगसर वद ११ ब्रसपतवार री संमत 1809 रा भादवा ...म्हारोठ में टोके वीराजोया[1]। संमत 1809 रा म्हा (माघ) वद १२ मंगलवार जोधपुर पधार सीणगार चोकी राजतोलक वीराजीया। संमत 1849 रा असाढ़ वद अमावस देवलोक हुवा[2]। मुसायवी खीची गोरधन ने दीवी[3]। दीवांण बगसी श्री वड़ा म्हाराज[4] राखीया था सु सरू राखीया[5]।

संमत 1809 श्री माहाराज मारोठ सूं कूच कर मेड़ते पधारीया। म्हेलां दाखल हुवा। राजा कीसोरसिंघजी वणेडा रा मगग रो साथ वगेरे भेळो कर भीणाय अमल कीयो[6]। तरे मारोठ रा डेरा राठौड़ केसरीसिंघ बखतावरसिंघोत उदावत नु बड़ा म्हाराज राजगढ़ दीयो थो पटे नै भाटी कीसनसिंघ हठीसिंघोत नै और ही सीरदारां ने फौज दे वीदा किया था सु अजमेर रे गांव न्याड़ा वाघसरी कने जाय पांथा[7] सो लोक मांगीभगत थी नाठ गया[8]। नै कीसोरसिंघजी आपरा साथ सु उभा रया, नीसरीया नहीं। सो राजवी कीसोरसिंघजी नु केसरीसिंघ जी मार लिया उदावत।[9]

संमत 1810 रा मंदसोर सु म्हाराज रामसिंघजी[10] आपाजी[11] कंने चमोर गुदे कुंपावत खींवकरण फतेसिंघोत ने सिं. जोरावरमल तु मेलिया था। सु

---

1 राजतिलक के लिए बैठे/राजतिलक की रस्म पूरी हुई।

2 (अ) रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग-1, पृ. 392 के अनुसार वि.सं. 1850 की आषाढ़ वदि 30 (ई. स. 1793 की 8 जुलाई) को रात्रि में जोधपुर में महाराजा विजयसिंह का स्वर्गवास हो गया।

(ब) इतिहास संग्रह, सं. डी. बी. पारसनीस, सतारा, अंक 4–5–6, जनवरी 1915, पृ. 82 के अनुसार ज्येष्ठ वदि 14 रविवार सं. 1849 के दिन दो प्रहर ढलने पर भगवत्स्मरण कराया तथा आधी रात के समय सांस चढ़ने से देहावसान हुआ। पत्र लेखक श्रीमन्त पेशवा का वकील था जो विजयसिंह की मृत्यु के समय उनके समीप था।

3 अधिकारी बनाया। 4 श्री बखतसिंहजी। 5 निरन्तर रखा। 6 भिणाय पर अधिकार किया। 7 पहुंचे। 8 भाग गए। 9 केसरीसिंह उदावत ने किसोरसिंह को मार दिया। 10 महाराजा अभयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र। 11 जयापा शिंदे (सिंधिया)–जनको जी का पुत्र।

आपाजी चमारगुदां सु कूच कर मंदसोर आया ने म्हाराज रामसिंघजी ने साथे लिया ने सांमल कूच कर राव मलार[1] सु सांमल हुवा । ने जटवा कुंभेरगढ़ लागा[2] तरे मलार रा बेटा खांडेराव रै गोली लागो । सु मारीयो गयो । पछे चांपा चपोकर जाय सु बात ठेराय कूच कीयो सु दीली गया । पातसा अेमदसा नु पकड़ ने केद कीयो । ने आंखीयां में सीलायां[3] फेर दीया ने आलमगीर नु पातसा रे तखत बेसाणीयो ।

ने मलार तो पाछो गयो । ने म्हाराज रामसिंघजी ने दीषणी आपो[4] मारवाड़ कांनी आया ।[5] आ खबर आई तरै म्हाराणीजी श्री सेखावतजी ने कंवरजी फतेसिंघजी ने भोमसिंघजी सीरदारसिंघजी वगेरे नु जेसलमेर मेलिया । म्हारांणी श्री राजावतजी ने कंवर जालमसिंघजी वगेरे नु उदेपुर मेलिया । श्रीजी साथ भेळो कीयो ।[6] बीकानेर सु राजा गजसिंघजी, रूपनगर रा राजा बादरसिंघजी आय सांमल हुआ । पटायत, आसामीदार[7] सात सौ आठ सौ ।

श्रीजी अरोगण वीराजे तरे पांतीये बैठ जीमे ।[8] मेड़ता बारै फौज रा डेरा हुवा ने मोरचा कर लिया ।

चांपावत राठौड़ सुरतांणसिंघ हरीसिंघोत पटे हरसोलाव बलुओत नु जोधपुर रे गढ़ कीलेदार मेलीयो । ने चांपावत भगौतसिंघ सगतसिंघोत रोहट रा आईदानोत ने गढ़ में राखीया ने सेहर रो पण जावतो भोळायो ।[9]

संमत 1811 रा आपारै साथ म्हाराज रामसिंघजी राजा सावन्तसिंघजी रो बेटो सीरदारसिंघजी दर कूच कीसनगढ़ आया - असवार 30,000 हजार तीस सु कीसनगढ़ लूटीयो, कतल कीवी । ने कंवर सीरदारसिंघजी नुं सुंपीया । बीकानेर सुं कुंपावत दलपत कनीरांमोत मारेगढ़ में असवार 500 पांच सौ सु आय सांमल हुवा । रामसिंघजी कनै ने कनीरांमजी पीडां[10] बीकानेर रया था ।

आपाजी री फौज रा डेरा कीसनगढ़ सुं पोकरजी[11] डेरा हुवा । ने उठां

1 मल्हार राव होल्करं । 2 कुम्भेरगढ़ पहुंचे । 3 आंखों में गर्म सलाखें डाल दीं । 4 दक्षिणी (मराठा) सरदार जयाप्पा शिंदे । 5 मारवाड़ की ओर आया । 6 महाराजा विजयसिंह ने सैन्य बल इकट्ठा किया । 7 जागीरदार । 8 महाराजा विजयसिंह भोजन करने के लिए बैठे तत्पश्चात् अन्य सरदार पंक्तिवद्ध हो भोजन करते । 9 सुरक्षा सौंपी । 10 अकेला । 11 पुष्कर (अजमेर के पास) ।

सु आलणीयास डेरा हुवा ने आलणीयास लुटीयो । पछे—कीया ने मेड़ता सु सीलेपोस[1] चढ़ीयो सो मारवाड़ दीखणीया[2] रा घोड़ा लावे । दीखणीया री फौज रा गंगारडे डेरा हुवा । ने मेड़ता सु तीनु राजा[3] चढ़ीया सो दीखणीयां री फौज हजार साठ 60,000 थी । म्हाराज री फौज हजार 40,000 चालीस थी । तोपखांना रो जजीरो[4] दे दीखणीयां री फौज ऊपर आया ने गोला रा राड़[5] हुई आथण तांई[6] । सो दीखणी हार में रया ने राठोड़ जीत में रया । आथण रा तीनु राजा रा डेरा आया ने दीखणी ही डेरे आया ।

रामसिंघजी रो मोदी फौज ले जेतारण गयो ने आगे जेतारण भारथसिंघ उदावत कायम कीनो थी । पीण नींवाज सु डरतां मोदी ने बुलायो ने दीखणीया री फौज 3000 हजार तीन सु ले मोदी जेतारण डेरा कीया । ने मेड़ता सु अणदु दोढ़ीदार सीलेपोस साथे लेर चढ़ीयो ने घोड़ा 100 अेक सौ उदावतां रा साथे ने रातो रात खड़ीया[7] ने दीन उगा फौज ऊपर आंण पड़ीया[8] । सु दीखणी भाग नीसरीया[9] । डेरां लूट लीया । अेक प्रीथीराज उदावत देधांणा रो कांम आयो[10] । पांच सीलेपोस घायल हुवा । फते कर ने मेड़ते आया जीणसु सीरदार घणा हमगीर हुवा[11] । दीखणी कूच कर कुड़की डेरा कीया । तरे सीरदारां जांणीयो दीखणीया पाछो कूच कीयो । ज्यां दीनां राठौड़ां ने दोठा जोईजे ने केसरीसिंघ बखतावरसिंघोत ने भाटी कीसनसिंघ श्री हजूर में अरज कीवी—स्वारे[12] राड़ कराईजे, ताड़ो लूट लेसां[13] । ने फौज में तीन करोड़ रो माल छै, सु लूट लेसां । तरे देवसिंघजी कोलाणसिंघजी अरज कीवी स्वारे म्हाराज बखतसिंघजी रो सराद छे,[14] सो राड़ नहीं करीजे । जरां केसरीसिंघजी कयो -कांम आवसी[15] ज्यां रो सराद छै । ने म्हाराज रो दोनु भेलाहीज[16] हुसी । तरे प्होर रात पाछलि[17] रात रो नगारो हुवो । चोपदार डेरा डेरा फीर गया । सीरदार त्यार हुवो । आज राड़ छै[18], सु त्यारी हुवीं ने तेलीया रोटा[19]

---

1 सशस्त्र सैनिक । 2 दक्षिणी (मराठाओं का) । 3 जोधपुर महाराजा विजयसिंहजी, बीकानेर राजा गजसिंहजी, एवं रूपनगर (किशनगढ़) के राजा बादरसिंहजी । 4 जखीरा, समूह । 5 युद्ध । 6 संध्या तक । 7 रातो रात हांके, चलाये । 8 प्रातः होते ही फौज ऊपर आक्रमण कर दिया । 9 भाग निकले 10 वीरगति को प्राप्त हुआ । 11 प्रसन्न हुए । 12 कल प्रातः । 13 लश्कर लूट लेंगे । 14 श्राद्ध (पुण्य तिथि) । 15 वीर गति को प्राप्त होंगे । 16 इकट्ठा ही । 17 रात का पिछला प्रहर । 18 आज युद्ध होगा । 19 तेल से चुपड़ी रोटी ।

सु गाडा भराय लोया ने सोर गोला[1] सु ं गाडा भराय लोया ने कही–दोखणीया ने मुळक बारे काढ़ आवसां ।

सो दोन उगां म्हाराज असवार हुय चांदावतां रा डेरा कने आंण उभा रया[2] । ने चोपदार मेलीयो । जालमसिंघ बाहादरसिंघ चांपावत देसवाल आवे तरे ईण जाय मुजरो कीयो[3] । जरां श्री हजूर फुरमायो –थे तोपखाना ऊपर चंदोळ[4] रहैजो । तरं बाहादरसिंघ अरज करी – खानाजाद ने तो हरोळ[5] राखीजे । तरे फुरमायो—मांने थांरी नीसा[6] छै । ने तोपखानो छे सु म्हारो जीव छे[7], जरें थांने राखां छां । फेर बलोत भाटी रुघनाथसिंघोत, चांपावत मेड़तीया माहारे हाकम देवकरण सुराणो सीलेपोस जाबक ने पाला री बीरादरीया सारी ईतरो लोक चंदोळ तोपां कने राखीयो ।

ईतरो कं ने आगा खड़ीया[8] । बड़ी तोप रे धुर रा बळद रे लागी[9] सु जाय पड़ीयो । तरां पड़ीहार जसो अरज कीवो के आज राड़ न कीजे । तरे केसरी-सिंघजी कयो –दुसमणां रा सींग आज पाडसां[10], ने फते हुसी । आगा खड़ीया, ने म्हाराराज गजसिंघजी आंण भेळा हुवा । तरे बीकानेर रो अेक सावणी[11] ही, तीण मालम कीवी के म्हाराज गजसिंघजो मुंहता बखतावरमल ने हजूर मेलीयो सु जाय मालम कीवी । आज राड़ न करीजे सावण पाळे छे[12] । तरे फेर सीरदारां मानी न्हीं ।

ने मालकोट[13] सुं आगा हुवा ने च्यारुं कांनी फौज रे तोपखानां री आलींद[14] रे भुरज वणाय आगा खड़ीया । डावी बाजू तो म्हाराज श्री गजसिंघ जी फौज हजार पांच सु जीवणो बाजू म्हाराज बाहादरसिंघ लोक हजार 2000 सु वैवे[15] ने चीलां फौज माथे घणी भवे[16] सु असमान छाईज गयो । तरे सुक-नीया कयो—सीरदारां ! राजा ने कवो[17] आज राड़ मती करो । राड़ कीयां खराबो हुसी[18] । तरे वादरसिंघजी षालीव रा पेमसिंघजी दोलतसिघजी लवेरा

1 गोला-बारूद । 2 डेरा के पास आकर खड़े रहे । 3 नमस्कारादि किया । 4 सेना का पिछला भाग (चन्द्रावळ) । 5 सेना का अग्र भाग (हरावळ) । 6 भरोसा । 7 सर्वस्व । 8 इतना कहकर आगे चले । 9 बड़ी तोप की धुर बैल के लगी । 10 दुश्मनों को भारी शिकस्त आज देंगे । 11 शकुन शास्त्र को जानने वाला । 12 शकुन अनुकूल नहीं है, विरोध करता है । 13 मेड़ता के किले का नाम । 14 तोपखाना का समूह । 15 चल रहे थे । 16 मंडरा रही थीं । 17 कहो । 18 युद्ध करने से बर्बादी होगी ।

रो भाटी सारा ही भेळा होय ने देवीसिंघजो ने कही के थे जाय ने अरज करो, अठे उभा रहो । तरे घोड़ा वड़घढ़ाय ने अरज करी—म्हाराज सुकनी कहे छे, अठे उभा रहीजो । फौज रो तसीयो[1] (तसवियो) लीजे । दीखणी आसी तो राड़ करसी, न्हीं आसी तो स्वारे राड़ करसां ।

तरे असवारी ऊभी रही । तरे केसरोसिंघजी बोलिया —चोला दीसा कवे सु तो सगत आपणी भीड़ आई है । ने खावंदां[2] मोटे नांव कीयां ने रोजक[3] दीया सु जाणे है । राड़ करसां तो मरणो पड़सी । जीण सु ं अरज करे है । खावंद खड़ाईजै आज तांड़ो लूट लेसां । तरे देवीसिंघ बेराजी होय[4] पाछा आया ने फोज आगी हालो[5] । तरे दोलतसिंघजी भाटी कयो – ठाकुरां अरज करी के न्हीं ? तरे देवीसिंघजी कयो—मैं तो मुठे घलाई फेर कीणी रे हर हुवे तो घलावो । तरे सारा जांणीयो, होणहार है सु मांने न्हीं । अठा सु आ खड़ीया ने दीखणी पीण नगारो कराय चढ़ीया ने आपेजी कयो – बाबा ! आज रे दीन थारी बाग पकड़ूं छै । दतु ने खांडेराव री वागां छोड़ी ने कयो—उणा रा तोपखाना रो जजीरो छे सु डेरा माय सु चीज वसत उठाय लो । डेरा लुटसी तरे जजीरो टुटसी । आपा ने फीकर मोकलो हुवो के राठौड़ तेरदार छे सो सीव़ सरम राखसी । तेरदार बात छे । आपोजी चढ ने फौज बारै आंण उभा रया । ने रावत चढ़ आया । त्यांने कयो—बाबा थांने भूजां भार छै[6] । आज कीसड़ा अेक हुवो छै । पटीयो ने दीखण अलग छै । रावतां कयो—आप जमां खातर राखो ।

ईण तरे कर खड़ीया सु राठौड़ां री फौज रे दोनु ं बाजु अलगा जाय उभा रया ने मोह छोड़ दीयो । ने ज्यां दीनां रा राठौड़ दीठा जोईजे । अेक अेक रे दील में ईसी के आपा ने मार लेऊं । फौज दोनु ं च्यारू ं कांनी तोपां राखी । असमान छीबता बै ज्यु ं सु ही रणखुरी उंच्यायड़ा सु आगा खड़ीया । सु झरी आई, जठे असवारी उभी रही । म्हाराज जल आरोगीयो । जरां चंदोळ तोप-खानो छो । जीणा रा सागड़ीया जांणीयो बळदां ने पाणी पावां । तरे वीनां हुकम तोपां छोड़ बळदां ने पावण ले गया । ने असवारी अगाड़ी षड़ दीवी ।

सु चंदोळ रो आंतरो[7] 500 पांच सौ पांवड़ां रो पड़ गयो ने दीखणीया

1 टोह । 2 मालिक, स्वामी । 3 रोजगार । 4 नाराज होकर । 5 फौज आगे रवाना हुई । 6 आपकी भुजाओं के ऊपर भार है । 7 अन्तर ।

जांणीयो–ग्रो ही मोसर[1] लादो छै ने घोड़ा चलाया सु तोपां जुतण दीवी न्हीं। कजीयो[2] पड़ गयो ने राड़ सरू हुई। ने हजूर री फौज बीचे दीखणी ग्राय गया ने चंदोळ रा घोड़ा उठीया सु मार दीखणीया ने 500 पांच सो पांवडा ले गया। ने पाछा ग्राया ने फेर लुब गया[3]। ने फौज हजार 30,000 तीस हजार तो चंदोळ सु लड़वो कीया ने हजार तीन हजूर री फौज सु ग्रोत-ग्रोतरे घेरीया ने उभा रया। ने रामसिंघजी री फौज हजार दसेक कुण कांनी उभा रया ने चंदोळ रा लोक सु जगड़ो प्होर दोय तांई हुवो। ने हजूर में मालम हुई के चंदोळ री फौज मारीजे छे। तरे म्हाराज बरछी रो म्यांन काढ़ ने घोड़ा री बाग फेरी। जरां सीरदारां कयो के म्हाराज पगां हेटलि सेठो राखो[4]। फौज मुई तो मुसालो छै, सो मर जाय तो कांई ? जरें हजूर फुरमायो के ऊपर करो तरे उदावत केसरीसिंघजी कीसनसिंघजी भाटी घोड़ा चलाया सो तोपखांना रा बळद दीखणी ले जावता था सु मार ने छुड़ाय लाया। परन्तु चंदोळ री फौज रे ऊपर न्हीं हुवे। तोपखांना रा बंळद कांम ग्राय गया[5] ने बाकी रा था, सु दीखणी ले गया।

ने जगड़ो[6] हुता दोफार[7] हुवा तरे सीरदारां कहो के घोड़ा काढ़ो[8] सो हजूर री फौज भेळा हुवां[9]। जरां बादरसिंघ सवलसिंघ वीदावत बोलीयो—के हाथ में कबांण छी जीका तोपां रे लगाईजे ने कयो–ग्रापा तो घोड़ा काढ़ां पीण तोपा चाले न्हीं। कीणी रे जांणो हुवे सु जावो। ईण तरै लड़तां प्होर दोय हुई। ने दीखणीया रा घोड़ा हालिया सु नेड़ा[10] ग्राया ने गजा री गाडीयां छुटी सो चोवड़-चोवड़ा घर थांसु घोड़ा रो ने दीखणीया रो गड़ो हुय गयो। पीण तीड़ वालो दल हो सु कीसा घर रा मरे ?

जालमसिंघ उदेसिंघोत ने बादरसिंघजी कयो–तू नीकल। थांरो तो ग्रागे ही तीन जणां धणीया रे ग्ररथ ग्राया छै, सु नीसरो[11]। हजूर भेळा हुवां ने पाछला री गोर राखजो[12]। तरे जालमसिंघजी म्हाराज सु भेळा हुवा ने बादरसिंघजी घोड़ा चलाया। सु दीखणीया ने मार ने पांवडा पांच सौ ले गया। ने बादर-

---

1 ग्रवसर। 2 भगदड़। 3 छिप गए। 4 पैरों को नीचे मजबूत रखना। 5 मर गए। 6 झगड़ा। 7 दोपहर। 8 निकालो। 9 इकट्ठे होवें। 10 नजदीक। 11 ग्रापके घर के तीन सदस्य पहले ही मालिक के लिए काम ग्रा गए, इसलिए तुम युद्ध के घेरे से निकल जाग्रो। 12 निगाह, नजर रखना।

सिंघजी रे तरवार पांच ने भालो अेक लागो । ने पाछा तोपखांना में आंण उभा रया ने तीर वाया[1] सु अंगुठा रे अगाड़ी रो मांस उड़ गयो । ने हाड़ नीसर गयो । तरे कवांण तो हेटी नाषी[2] ने अमल लीयो[3], ने पांणी पीयो । ने दीवड़ी पाछी आदमी ने झलाई[4] । ने दीषणी फेर लुवीया[5] । जरां सीलेपोसां कयो—बादरसिंघजी ने म्हाराज हाथ देखो छो । हजूर मालम कर सांतरा कयो–थारो भरोसो छै । जीसा ही नीवड़ीया । यूं कह ने घोड़ा री वाग हाथ दे ने घोड़ो पाछो फेरीयो । ने घोड़ा उठाया, थणचा री लागी । सु कारगीर हुय गया[6] । तरे बेलीयां घोड़ा ऊपर सूं उतार कमर खोली ने जीव दीयो । जरां लोथ[7] उठाय ने नाल री छाय मेली ।

जीतरे सुरतो खीची आय ने कयो—मारो घोड़ो काम आयो सु घोड़ो मांगीयो । तरे बखते कोठारी कयो–अे ही घोड़ा थारी दील चावे सु चढ़ो । तरे बादरसिंघजी री असवारी रे घोड़े चढ़ हजूर री फौज रे भेळो हुवो ।

—ने बादरसिंघजी साथे आदमी 15 कांम आया ने जणां 10 घायल हुवा ।

—ने चांदावतां री आसांमीयां 21 कांम आई । चांदावत उरजणसिंघ सूरसिंघोत, लालसिंघ सेसमलोत सथलांण रो, बादरसिंघ खाटु रा काम आया ।

—ने बलोतां री आसामीयां 12 कांम आई ने बेली 30 तीस कांम आया ।

—मोतीसिंघ मेड़तीया मारोठ रो कांम आयो, बेली 10 कांम आई ।

—ने रुघनाथ सिंघोतां री आसामीयां 15 कांम आई ।

पछे तीजे प्होर रा सोर गिजा[8] री गाड़ीयां उड़ी जठा पछै पड़ीयार तोपखानां रा 5 काम आया । दरोगा ने सीलेपोस 700 कांम आया । ने सागड़ी सीलेपोस 50 पचास पड़ीया । जुजरबा वाळा आदमी 30 पड़ीया ने फुटकर लोक रोजगारी मोकला[9] कांम आया । ने दीषणी रावत 17 ठावा कांम आया ।

1 तीर चलाया । 2 नीचे रख दी । 3 अफीम खाई । 4 मोटे कपड़े (जीन) की बनी पानी की थैली आदमी को वापस संभलाई । 5 मराठा फौज छिप गई । 6 वीरगति को प्राप्त हो गया । 7 लाश । 8 गोला-बारूद, रसद आदि । 9 अत्यधिक ।

ने आठ पालखीनवेस कजीया रे मौसर वागा जलीजती, जीसड़ा कांम आया। सारा दीखणी हजार 3000 पड़ीया।

पछे तीजा प्होर रा सीरदारां अरज करी तरे फौज पाछी फीरी। सु चंदोळ री फौज रा कांम आया जीण खेत ऊपर असवारी आई ने घायल पड़ीया जीके घोड़ा रा पगती चीथीजता[1] ने वे हेला करे—"रे! मुवोड़ा[2] ने क्यूं मारो?"

घोड़ा, ऊँठ, बळद मुवोड़ा दीठा ने जांणीयो—फौज तो सारी पार पड़ी।[3] तरे लोक रो मन चल गयो। हजूर फुरमायो—सीरदार कांम आया जीणा री लोथां[4] हाथीयां में घाल लो। सु हाथीयां में घलाय कीतराक ने तांगा में घालीया ने वहीर हुवा। महाराज बाघ(द)रसिंघजी घोड़ा रे [डोरी छी] पाषरी सीण री छी जीका लग गई। ने असवारी रा कपड़ा लग गया। ने अदबळिया[5] हुवा ने कीसनगढ़ रा आदमी 100 अेक सो कांम आया। ने बादरसिंघजी तो मेड़ता ने खड़ीया[6]।

ने म्हाराज गजसिंघजी रा आदमी 300 तीन सौ कांम आया। ने 100 सौ अेक घायल हुवा।

ने खेत मांय सु फौज मेड़ता सांमा खड़ीया। ने दीखणी च्यारूं कांनी लुबीया[7]। ने फौज गोठे हुई। ने दीन वदते दीषणी दतु रा घोड़ा उठीया ने हाथी घेर लीया। तरे पाली रा ठाकुर पेमसिंघजी पाछा घीरीया ने कांम आया। हाथी दीखणी ले गया। ने दुजी बार दीखणीया घोड़ा फेर हाथीयां ने केसरीसिंघ उदावत भाटी कीसनसिंघ पाछा फीर ने कजीयो कीयो। केसरीसिंघ जी रे हाथ रे तरवार लागी। ने केईक वेली कांम आया ने फौज खर-बीखर हुय ने प्होर अेक रात गया मेंड़ते आया।

संमत 1811 रा आसोज वद 13 सनीसर वार आ लड़ाई हुई जठे कांम आया, तीण री विगत—

15 खांप चांपावत—

1 पेमसिंघ राजसिंघोत, पाली

---

1 पैरों से रौंदे जाते हुए। 2 मरे हुए। 3 फौज सारी छिन्न-भिन्न हो गई। 4 लाशें। 5 अधजले। 6 मेड़ता के लिए रवाना हो गए। 7 छिप गए।

1 उरजनसिंह सुरतसिंघोत, झंवर
1 जेतसिंघ केसरीसिंघोत, मांडावास
1 बादरसिंघ कनकसिंघोत, खाटु
1 कीरतसिंघ गोपीनाथोत, हेबतसर
1 नवलसिंघ पदमसिंघोत, धामली
1 सुभकरण ग्यानसिंघोत, गंठीयो
1 रा. लालसिंघ सेसमलोत
1 मोकमसिंघ पदमसिंघोत, सरवाड़
1 उदैसिंघ सूरजमलोत, पाछीपा
1 लखधीर मुकनसिंघोत, वरणेल
1 सवाईसिंघ कीसोरसिंघोत, भेड़वास
1 जोरावरसिंघ कुंपोत, समाड़ीयो
1 जोरावरसिंघ नारखानोत, जैतपुरो
1 भोमसिंघ मुकनसिंघोत, वरणेल

15

4 खांप मेड़तीया—

1 रायसिंघ दुरजणसिंघोत, लूंणवो
1 मोतीसिंघ जोधसिंघोत, मारोठ
1 सूरसिंघ सांवतसिंघोत, लूंणवो
1 जुजारसिंघ दीपसिंघोत, खारीयो

1 खांप महेचो –

सीरदारसिंघ करणसिंघोत, घोप

7 खांप भाटीयां री—

1 सुभकरण सूरसिंघोत, रामपुरो
1 कीरतसिंघ लखावत, खारीयो
1 महेसदास नाथावत कीरस्योत
1 बखतसिंघ लखावत कंटालीये

1 पेमसिंघ मुकनसिंघोत मोड़ावास

1 भाटी दोलतसिंघ

1 जेतसिंघ डूंगरसिंघोत, पाता रो वाड़ो

—

7

1 चंवाण लालसिंघ इन्द्रसिंघोत

1 लाडखांनी सेखावत दोलतसिंघ गुमानसिंघोत, लालास रो

महाराज विजयसिंह का नागोर रवाना होना—

पछे दीन उगे डेरा वारे छा, जीके माहे लीया[1] ने कोट में मोरचा वताया। म्हाराज सफील हेटे फीरीया[2]। ने पछे रात घड़ी 4 च्यार गई देवीसिंघजी कीलांणसिंघजी आय ने म्हाराज ने असवार कीया। ने सीरदारां ने कवाड़ीयो[3] थो, सो दरवाजे आय भेळा हुवो।

म्हाराज चढ़ खड़ीया। सो म्हाराज रा घोड़ा रो मूंडो उदेसिंघजी रा घोड़ा रे पुठ लागी। ने घोड़ो बुकीयो[4]। तरे उदेसिंघजी कयो—सुजे छै के न्हीं? माहे पड़ै छै। तरे म्हाराज फुरमायो—भोले लागो। जरां यां ओळखीयो[5]। जरां कयो—गुनो[6] माफ होसी। तरे फुरमायो—तु भोंदु[7] छै सु मुढ़ा आगे हुय जा। तरे आघा(गो) खड़ीया ने अेक वेली गजसिंघजी ने मीलीयो। नागोर रे मारग आवतो।

पछे कोस अेक तांई उदेसिंघजी आगे खड़ीया ने पछे उभा रया। ने कयो—हुं टाबरां ने काढ ने आसुं। तरे फुरमायो—नागोर रा कांकण तांई हाल[8] तरे कयो—मांरा कवीला काढ़ ने आसुं। तरे देवीसिंघजी म्हाराज ने कयो—आप ने नागोर श्री गिरधारीजी पोछावसी[9]। आप खड़ावो। तरे उदेसिंघजी तो पाछा वळीया[10]। ने म्हाराज आगा खड़ीया। सु दीन उगे बोड़वे आया, ने म्हाराज थाक गया।

तरे फुरमायो—काई गाड़ी[11] हुवे तो लावो। तरे जाट अेक बोडवा रो

---

1 सवेरा होने पर डेरा से वाहर लोगों को अन्दर लिया। 2 नीचे-नीचे फिरे। 3 कहलवाया। 4 चौंक गया। 5 पहचाना। 6 गुनाह 7 भोला। 8 नागौर की सीमा तक चलो। 9 पहुंचावेंगे। 10 वापस चल दिए। 11 बैलगाड़ी।

भार काढण[1] ने आयो थो, जीण ने पकड़ लीयो। तरे जाट हेला कीया—रे मारा टावर गांव में सूना वेठा है। पिण दे बुड़ीयो। ने गाड़ी ले आया। म्हाराज बीराजीया। ने सीरदार जाट ने कहे—रे आछो खड़[2]। तरे जाट वळदां ने कूटण लागो। तरे म्हाराज फुरमायो—रे, मार मती। तरे जाट कयो—देखे छे। बड़ा सीरदार थांरा रजपुत धुंधावे छे। उठा सूं गांव ईनाणे आया। तरे सांमा कळस[3] लाया। तरे जाट जांणी म्हाराज छे। तरे सीलाम कीवी। ने आगे नागोर सीरदार गया जीकाने प्रतापमल पूछीयो—म्हाराज कठे छे? तरे सीरदार, मुत्सदीयां, खवास, पासवांनां कयो—के मेड़ता सूं तो असवार नागोर नु हुवा छै। पछै तो ठीक न्हीं।[4] जरां प्रतापमल कांनी कनी असवार राईका चाढ़ीया, के हजुर री खबर लावो। महाराज गजसिंघ जी तो ताउसर आंण उतरीया। जाट दही री जावणीया[5] लायो जवार बाजरीं रा सोगरा[6] लायो। तरे म्हाराज ही सीरावणी[7] कीवी ने सीरदार ही कीवी।

देवीसिंघजी, कील्यांणसिंघजी, छत्रसिंघजी भाटी, कीसनसिंघजी, केसरीसिंघजी चांदावत, जालमसिंघजी ईतरा सीरदार साथे था। ने ईनाणा सुं आयो राईके खबर दीवी के म्हाराज पधारीया। ईनाणे उतरीया छे[8]। तरे प्रतापमल हाथी खासो ले सांमो गयो[9], जाय ने मुजरो कीयो[10], नीज़र-नीछरावळ कीवी[11]। रतनसिंघ सबलसिंघोत मुजरो कीयो। ज़रां म्हाराज़ फुरमायो—रतनसिंघ, बादरसिंघ भलीभांत लड़ीयो, कांम आयो। फुरमायो—बादरसिंघ रे कीतरा वेटा है? तरे अरज कीवी—गरीबनवाज! च्यार बेटा छै। तरां फुरमायो—मांहा रो जीव है तो च्यारांने बादरसिंघ कर देसां[12]। जरां रतनसिंघ अरज कीवी के खावंद[13] ईतरा फुरमावे हे जद चाकर मुवो न्हीं, अमर छे। पछे नागोर सुं नेड़ा पधारीया। तरे सीरदारां अरज कीवी—म्हाराज

---

1 ढुलाई करने। 2 बैलों को तेज हांके। 3 पानी से भरा कलश। 4 बाद का ठीक पता नहीं। 5 दही की हांडी। 6 जवार बाजरी की मोटी रोटी। 7 प्रातःकालीन नाश्ता। 8 ईनांणा गांव में रुके हुए हैं। 9 हाथी विशेष को लेकर महाराज के पास गया। 10 प्रणाम किया। 11 भेंट दी और न्यौछावर की। 12 मेरे रहते-रहते चारों बेटों को बादरसिंह की तरह शूर-वीर बना दूंगा। 13 स्वामी।

हाथी असवार हुईजे। तरे म्हाराज फुरमायो—कीसां फते कर आया छां[1]। तरे सीरदारां फेर अरज करी—आपरी दुनीया[2] दरसण करने हमगीर[3] हुवे। तरे हाथी असवार हुवा ने देवीसिंघजी लारे चढ़ीया[4]। ने नागोर दाखल हुवा।

पछे राजा गजसिंघजी तो बीकानेर गया। ने राजा बादरसिंघजी रूपनगर गया। ने दीन दस हुवा ने सारा मनसोवो कीयो[5]। नागोर में सामान तो घणो पण पांणी थोड़ो। जीण सु जोधपुर पधारो। तरे लोक ने दीलासा दे[6], दीन वद ने[7] ने असवार हुवा सो कोसेक पधारीया ने नागोर ऊपर बादळी नीसरी ने मेह हुवो[8]। सु तलाब भरीज गया। तरे सुकनीया[9] कयो—आज मेह हुवो, पाछा पधारो। जरां पाछा पधारीया ने दीन उगां असवारी कर तलाब देखीया। सो सेंठा भरीज गया[10]। तरे अरज करी—म्हाराज आपरी भीड़ ईन्द्र राजा कीने आयो[11]। तलाव देखने सफील-सफील जावता रे वासते[12] फीरीया। ने सीरदार मुजरो कीयो ने जांणीयो म्हाराज कद पधारीया? ने खैरवा रा ठा. ईन्द्रसिंघ ने करमसोत जोरावरसिंघजी आगे वदीया था सो खींवसर आय रामसिंघजी सूं मेल कर ने चांदावत देवसिंघ आयो सु रामसिंघजी कने ले गया।

मेड़ते तोपखानो थो ओर ही जीनरा[13] घणी रही सु आपा रे आई। ने आपारा ने रामसिंघजी रा हाकम मेड़ते रयां। पछे दोनुं ही सांमल कूच कर नागोर आया।

ताउसर डेरा कीया, मोरचा लगाया ने घेरो दीयो—

संमत 1811 रा काती सुद 15 वीसपतवार[14] प्रोहित जगुजी जनकुजी ने सतावा वळीया[15]। ने रामसिंघजी री फौज रा सीरदारां ने लेने जोधपुर

---

1 कौनसी विजय प्राप्त करके आया हूं। 2 जनता। 3 कृतकृत्य। 4 पीछे सवार हुए। 5 विचार किया। 6 लोगों (जनता आदि) को आश्वस्त करके। 7 दिन निश्चित करके। 8 बादल निकले और बरसात हुई। 9 शकुनशास्त्र को जानने वाले। 10 लबालब भर गये। 11 आपकी सहायता (साथ) देने के लिए देवताओं के राजा इन्द्र आये हैं। 12 सुरक्षा के लिए। 13 खाद्य सामग्री आदि। 14 बृहस्पतिवार। 15 तेजी से बढ़े, चल दिए।

आया। अभेसागर डेरा कीया ने सहेर दोला मोरचा लगाया[1], घेरो दीयो। गढ़ में कीलेदार चांपावत सुरतसिंघ हरसोलाव रो ठाकुर था। खीची सुन्दरो गढ़ में थो। सहेरपनो दोढ़ीदार गोयंददास सोभावत ने कोटवाल पड़ीयार सीवदांन हाकम सिंघवी सावंतमल सु तीन था। च्यार वार हेलो कीयो[2], नीसरणीया लगाई[3], चढ़ीया पिण माहलां मार उतार दीया। सहेर कोट[4] कागड़ी कांनी[5] रा आदमी बुरज रा चुवांण[6] मील ने कुंपावत दळकरण कनीरामोत रा आदमी 30 तीस चढ़ाया था, सु श्रीजी[7] री तपस्या रे प्रताप उणारो हीज माहोमाह चढ़ण री खेंचातांण[8] हुई। ने दोढ़ीदार गोयंनदास वगेरे ने खबर हुई सु बुरजां कांनी साथ[9] ले आया सु कीतराक तो वारलां ने मांयला[10] मिळीया था सो उतर गया, तरे बुरज रा मोरचा च (हुं) ओर राखीया।

जाळोर रो गढ़ भीळ गयो[11] थो सो भंडारी पोमसिंघ सहेर माय सुं गढ़ ऊपर जाय मार कायम कीया।

फलोदी रे कोट घेरो दीयो। ईण तरे च्यार जायगा घेरो दीयो। जोधपुर, नागोर, जालोर ने डीडवांणे तो म्हाराज वीजेसिंघजी रो अमल रयो। बाकी जायगा रामसिंघजी ने आपा रो अमल हुवो। ने नागोर घेरा में श्री दरबार रा वीसटाला[12] सारू आदमी जावता-आवता ने सांमी वीजेराम भारथी उदेपुर जाय राणा प्रतापसिंघजी कना सुं सलूमर रावजी जेतसिंघजी नुं वीसटाला सारू लाया।

आपा[13] री फोज कने डेरो कीयो ने चवांण राजसिंघ ने मेल आपा ने कवायो के रांमसिंघजी रो ऊपर करो हो। सुं ईणा री राजकरण री पोछ[14] है। तरे आपे कयो—ईणा में कीं हुई न्हीं हुई, जांणू छूं। पीण वचन दीयो है सु जीवतो रयो तो अेक वार गढ़ में बेसांण[15] देसुं। ईण ताछ[16] वीसटाला

1 जोधपुर शहर में कड़ा मोरचा लगाया। 2 चार बार हमला किया। 3 सीढ़ियां लगाईं। 4 शहर का परकोटा। 5 कागा की तरफ। 6 चहुवांण। 7 महाराजा विजयसिंहजी। 8 परस्पर खींचातान हुई। 9 दल। 10 बाहर वाले व अन्दर वाले। 11 लुट गया। 12 सन्देश, विचार-विमर्श। 13 जयाप्पा शिंदे। 14 क्षमता। 15 गद्दीनशीन। 16 विषय, उद्देश्य।

री वात हुयवो करती। पीण जोधपुर दीया वीना मांने न्हीं। ने नागोर दोळो करड़ो घेरो दीयो। ने वारां सूं रसत आवे[1] ने रसत वाला पकड़ीजे। जीण रा नाक वाढ़ लेवे[2]। मण अेक आदमी वोज[3] उठाय लावे जीण रा सू वीजेशाही 200) दोय सो पटे[4]। जीण लालच सु नाक वाढवो करीया तोई लायबो[5] कीया। तरे हाथ काटीया। तरे म्हाराज फुरमायो के घेरो उठे न्हीं। यूं कीतराक दीन लड़सां।

सांईदांन चुहांण री वीरादरी में खोखर केसर खां ने गेलोत .... सीलेपोस[6] में था। जीणा दोनुं जणां आपस में सला कीवी के कठे ही गोली री लाग ने मर जासां तो आपा नु मार ने मरां तो अमर नांव हुवे। ईसो मतो करो साईंदास ने कयो—थे हजूर में अरज करो—आपा ने मैं मारसां। तरे सांईंदास अरज करी—के मारी वीरादरी रा दोय सीलेपोस ईण तरे केवे छे।

तरे हजूर दोनु जणां ने वुलाय खातर करी के थांनु दस-दस हजार रो पटो देसां। ने दरोगा ने बीस हजार रो पटो देसां[7]। ने भाखरोद राजस्थान देसां[8] तरे ईणा दोनु जणां अरज कीवी—खावंद धणी हो। लारे म्हारे अेक भाई छे। जीणा ने रोटी बखसावजो। पछे दोनुं जणा ने खरची[9] ने अेक-अेक पेसकवज[10] दे वीसटाला वाला कने साथे बारे काढीया सु दीखणीया री फोज में दुकांन मांडी[11] ने बजार में रैवे सो ईहुं करता अेक दीन आपोजी डेरा री पड़छाया[12] वाजोट ऊपर बैठा[13] था ने खीजमतदार[14] संपाडो[15] करावता था। जीण बखत में सागड़द[16] था जीणा कयो अवार तंन छे[17]। तरे अे दोनु जणा माहोमाह में लड़ीया ने थापां वाही[18]। ने हाथ पकड़ ने हापा(आपा)जी कने लड़ता-लड़ता आया। ने कयो—बाबा सा! मारे सीरी छे[19]। जीण ने पांच सो रुपीया दे रसत ने मेलीयो थो सु रुपीया छाबर (छिपाकर) राखीया ने

---

1 बाहर से खाद्य सामग्री आती थी। 2 काट लेवे। 3 बोझा। 4 प्राप्त होते। 5 लाते रहे। 6 बख्तरबन्द सैनिक। 7 बीस हजार कीमत की जागीर दे देंगे। 8 भाखरोद ठिकाना देंगे। 9 व्यय। 10 कटारी विशेष। 11 दुकान स्थापित की। 12 तम्बू की परछाई। 13 लकड़ी की बनी चौकी। 14 नौकर लोग। 15 स्नान। 16 भेदिया। 17 अभी तो वे खुले बदन हैं। 18 हाथापाई की। 19 भागीदार।

कहे छे—खजवाणां ने देसवाल[1] बीच में खोस[2] लीयो। तरे आपे कयो—अवी तो जावो। सीनांन कर ने थारो नीसाफ कर देवूं[3]। तरे अे दोनुं जणा बेस गया। सो आपे रा हाथ तो दोनुं खीजमतदारां रे हाथ में था ने आपो डेरा में वात करी। जीणां सांमो देखतो थो। जीतरे खोखर आंख दीवी[4] के ओ ओसर फेर मीळसी न्हीं[5]।

ईहुं कहै[6] गावड़ पकड़[7] ने पेसकबज वायो[8] सु बगल लागो। सो दोय आंगल पेली बगल में छुरी नीसरी ने फेर वायो सु छाती में लागी सु करकरा हाडां मै जातो नीसरीयो न माहे मरोड़ीयो[9] सु भांज गयो ने गेलोत वायो सु पेट में लागो। जीतरे रावत सा लड़ीया सु खोकर ने तो ऊपर हीज वाढ़ीयो[10] ने गेलोत ने पावंडा[11] पांचेक ऊपर ईंणा ने हीज मार लीया। ने फोज में हाको[12] हुवो सु मारवाड़ा बजार में फोज में लादो[13] सु मार लीयो।

ने दतुजी कयो—वीसटालु ने रामसिंघजी री फोज ने सारी ने बाढ़[14] कतल कर नाखो। तरे आपाजी कयो—रामसिंघजी ने मारीया तो दरगा में दावणगीर हो। सु तरे रामसिंघजी री फोज तो बची ने चवांण राजसिंघजी ने सलुंबर राव तेजसिंघजी वगेरे मेवाड़ रा हा जीणा रा डेरा ऊपर लोक[15] गयो सो साथ(त)सुधा ने मारीया। दरबार रा उकीलां[16] ने मारीया। वीजे-राम भारथी ने हाथी रे पग बांध गीसायो[17] ने मारीयो।

ने गढ़ में बादळ मेल[18](म्हेल) ऊपर दुरबेणी वाळो[19] बेठो थो जीण मालम कीवी के दीखणीया री फोज में बेदो[20] छे। फोज चढ़ चढ़ दीखणादी आथुणी[21] जाय छे। तरे म्हाराज ही दुरबेणी में दीठो[22]। तरे फुरमायो—बेदो तो मोकलो[23] छे। तरे चुं. साईंदास छांने[24] अरज कीवी—आज आपे ने मारीयो तीण रो बेदो छे।

---

1 गांवों के नाम जो नागोर रियासत में है। 2 छीन लिया। 3 स्नान करने के बाद तुम्हारा फैसला कर दूंगा। 4 आंख से इशारा किया। 5 यह अवसर बाद में नहीं मिलेगा। 6 ऐसा कहकर। 7 गला पकड़ कर। 8 चलाया। 9 अन्दर मरोड़ दिया। 10 तलवार से काट दिया। 11 कदम। 12 हो-हल्ला। 13 पाया। 14 काटकर। 15 सेना। 16 वकीलों को। 17 घसीटा। 18 बादळ महल। 19 दुरबीन वाला। 20 उपद्रव। 21 पश्चिम। देखा। 23 अधिक। 24 चुपके से।

पछे तीजे दीन दीखणी अेक दारू रो पीयोड़ो पादरो[1] दरवाजे आयो। सु देवीसिंघ रे डेरे आयो। तरे उणनु पूछीयो—आज थारी फोज में वेदो फेर छे। तरे उण कयो—आपा सायव ने चुक[2] हुवो। जरे ठीक[3] पड़ी। पछे दीखणी नु रुपीया 5) दीराया ने दारू मीठाई दे ने सीख[4] दीवी।

जोधपुर किले पर घेरा—

आपा रो बेटो जनकु जोधपुर फोज सावटी[5] ले आयो। सीवांणची दरवाजे नीसरणीया लगाय हलो[6] कीयो। आदमी 500 पांच सौ मरण गया। पीण स्हेर भीळियो न्हीं[7], गरज सजी न्हीं[8]।

आपो मुवा पछे घेरो घणो सांगड़ो[9] दीयो। तरे म्हाराज फुरमायो—ऊपर वीना फोज उठे न्हीं[10]। तरे सीरदारां कयो—आंपणो ऊपर कुण करे। तरे फुरमायो—रामसिंघजी गेला[11] छे, जीको ही दीखणी आपा ने लाया। सु मैं बारे जावतां हींदु मुसलमांन कने जाय फोज लावां। तरे सीरदारां अरज कीवी—आप पधारीजे। अठे तो मैं क्यु ही काढ़ देवां न्हीं[12]। तरे म्हाराज तयार हुवा।

जवानसिंघ सुरजमलोत रीयां रो, भाटी दोलतसिंघ, सीरदारसिंघ जोधो दुगोली रो, सीरदारसिंघ महेचो थोब रो, करणीदांन बारहठ, खीची गोरधन, प्रो. वीजेराम ने दुजी फुटकर आसामीयां, ईतरा साथे तयार हुवा। खवास, पासवान, असवार पांच सौ सु तयार हुवा। ने माही दरवाजे[13] आय उभा रया। ने जेसो कछवाहो ने अंणदु दोढ़ीदार असवार 200 दोय सो ले दोनुं कांनी असवार 200 उठा[14] था। ज्यां ने हजूर सु रूमाल री आनी दीवी[15] ने ईणा रा घोड़ा हालीया[16]। सो जेसो कछवाहो तो जाय कजीयो[17] कर दीखणीयां री चोकीयां थीं जीके मुंढा आगे कर ने आथूंड़ी जड़ ऊपर ले आया। ने अंणदु कजीयो करने उगी तारकीनजी तांई[18] लायो ने बीच में उतरादो

---

1 सीधा। 2 घोखे से मारा। 3 मालूम। 4 विदाई। 5 पर्याप्त। 6 हमला। 7 रास्ते पर अधिकार नहीं हुआ। 8 उद्देश्य पूर नहीं हुआ। 9 बहुत भारी। 10 घेरा फौज के विना नहीं हटेगा। 11 नादान। 12 यहां पर हम किसी का वश नहीं चलने देंगे। 13 अन्दर वाले द्वार पर एकत्र हुए। 14 सन्नद्ध। 15 रूमाल से संकेत दिया। 16 चले। 17 लड़ाई। 18 पूर्व में तारकीन दरगाह तक।

बारो[1] हुय गयो। जठे म्हाराज रा घोड़ा हालीया सु जाता रया। पछे दीखणी सारा भेळाहोय ने जोर दीयो[2] तरे ग्रे कोट रे पले[3] ग्राय उभा रया। ऊपर सु गोला छुटा जीतरे रात पड़ गई।

म्हाराज कोस 15 गया। रात ग्रादीक[4] रा घोड़ा ऊपर सु थाक गया। तरे मारग में वेलु रेत रो दड़ो[5] जठे उतरीया। ग्रेक पीछेवड़ो[6] बीछाय ने वीराजीया। चाकर दबावण लागा जीतरे लारे जवांनसिंघजी ग्राय गया ने कयो—उतरीया कीहुं ? ग्रजेस[7] तो नागोर नेड़ो[8] छे। ग्रसवार हुईजे[9]। तरे फुरमायो—ठाकुरां मैं तो थाक गया। तरे जवांनसिंघजी उतरीया ने पाग माय सूं ग्रमल रो कोसीटो[10] छोटो छे सो वीयां खासे रतीक रो काढ छुरी सुं फाड़ ने उण रा दोय करने ग्रेक तो ग्राप लीयो, ग्रेक हजूर रे नीजर कीयो। तरे फुरमायो—के ग्रमल तो कदे ही खादी न्हीं[11]। तरे कयो—गरीबनवाज ! ग्रोषध[12] छे। तरे ग्राप लीयो। सु थोड़ी वार पछे ऊगो[13]। तरे ग्राप फुरमायो के ईणरो तो वड़ो जोस छे। जरां जवांनसिंघजी कयो—के ग्राछो छै जद हीज खावां छां। न्हीं तो ग्रापरा चाकर बेकुब[14] तो न्हीं छे। पछे उठा सुं चढ़ खड़ीया। दीन उगां माताजी रो ग्रोरण[15] नीजर ग्रायो। दोय सीलेपोस टाळीया[16] ने कयो—दोय खाजरू[17] मोल[18] दे ने जरूर मोल लावो सु माताजी रे चढ़ावसां। पछे माताजी रे थांन गल जोड़ी[19] खाजरू चढ़ाया। पछे डेरे पधारीया। गोठ री ताकीद[20] कीवी। तरे रसोवड़ा रे दरोगे तीन-तीन पईसा में देनगी[21] था, कर ने मांस छुनण ने ग्राटो ग्रोसण[22] ने ग्रादमी चालीस-पचास ढुकाय[23] दीया सु घड़ी च्यार रात गया रसोड़ो हाजर हुवो। तरे दरोगे ग्ररज कीवी—थाळ पधरावो[24]। तरे फुरमायो—के पेला सीरदारां नुं जीमावो[25] पछे थाल लावो। तरे रोठा सूं गाढ़ा भर ने मजूरां रे साथे मांस,

---

1 उत्तर दिशा का स्थान खाली हो गया। 2 शक्ति लगाई। 3 कोट के नीचे का मैदान। 4 ग्रर्द्धरात्रि। 5 बालू रेत का टीबा। 6 वस्त्र विशेष। 7 ग्रभी तो। 8 नजदीक। 9 वापस ग्रसवार हो जाग्रो। 10 ग्रफीम का टुकड़ा। 11 ग्रमल (ग्रफीम) कभी खाई नहीं। 12 ग्रौषधि। 13 थोड़ी देर बाद नशे का ग्रसर हुग्रा। 14 बेवकूफ। 15 देवी के क्षेत्र की सीमा। 16 ग्रलग किए, चुने। 17 बकरे। 18 कीमत। 19 गले से दोनों को परस्पर बांध। 20 तकाजा। 21 दैनिक मजदूरी पर। 22 ग्राटा गूंदना। 23 काम में लगा दिया। 24 थाल लगाग्रो। 25 मुख्य-मुख्य सिरदार।

घ्रीत रा चरू ले ने डेरा-डेरा आया । सु सीरदारां ने ओजकी ने थाकेलो[1] जीण सु सुता पड़ीया[2], सु उठे न्हीं । तरां प्होरायतां[3] ने पुछीयो—कितरा आदमी छो ? प्होरायत कहे जीतरां रोटा परा दे ने चरी में घ्रीत घाल देवो ने दुकड़ीया[4] में मांस घाल[5] देवो । ने डेरे फीरीया । ने पछे हजूर पधारीया । तरे फुरमायो—के सीरदारां ने जीमाया ? तरे अरज करी के सीरदार तो सूता छे । ने डेरे वळ[6] परी दीनी छे । तरे म्हाराज अरोगीया । पछे प्रभात बीकानेर सु खासो नै हाथी बखतावरमल मुंतो लेर आयो । सू कूच कर बीकानेर आया ।

गजसिंघजी आया ने घणा हेत सुं गढ़ म्हेलां में ले गया । पछे जेपुर कागदवाई[7] कर ने दोनुं राजा असवार हुवां सो जेपुर पधारीया । म्हाराज माधोसिंघजी सांमा पधारीया[8] । बाईस घोड़ा नगारा रा मेलीया । ने हणवत बाड़ी डेरो कीयो । ने माधोसिंघजी मीलीया ने कयो—के थांरे तो मैं लारे[9] रेसां न्हीं । ने म्हारे आपा रा भाई-बेटा सूं वैर छे । सु आपां अेक हुवो । जेपुर, जोधपुर, बीकानेर, रूपनगर—अे च्यारूं राजा आंपे अेक छां । ने उदेपुर राणोजी आपणे सांमल छे । ने कोटा-बूंदी न्हीं छे । सु जूंभसी जूं ने पलेट लेसां[10] । ने इतरा भेळा हुवांण रे दीखणी पग मांडे न्हीं[11] । जरें अेक हुय ने नागोर दोळो घेरो[12] छे । सु उठाय देसां । जरां ईणा कूच कीयो ।

कछवाहा हजार 60,000 साठ फौज रामगढ़ पड़ी छी । अनरधसिंघ खंगारोत जीणने हुकम पोथौ[13] । थे जाय ने नागोर दोलो घेरो छे । सु उठाय दो, जगड़ो करने । जरां ईंणां कूच कीयो । ने हजुर सु उदावत दळकरणजी रो ठाकुर ने नैरतनोत, जोधो जुंजारसिंघजी दुगोली रो ठाकुर, ने उदावत, ने जोधां री आसामीयां मेली[14] सु अे कछवाहा सांमल होय कूच करायो । ने दीखणीया नुं ठीक[15] हुई । के कछवाहां री फोज आवे है । तरे भुरटीया[16] ने फोज हजार 7,000 (सात) दे ने वीदा कीयो सु कांकड़ आंण जेलीयो ।[17]

---

1 रात्रि जागरण की थकान । 2 सोये हुए । 3 पहरेदार । 4 दो कड़ों वाला । 5 डाल । 6 भोजन सामग्री । 7 पत्राचार । 8 अगवानी हेतु सामने आये । 9 पीछे । 10 निबट लेंगे । 11 पैर नहीं जमा सकेंगे । 12 नागोर के चारों ओर का घेरा । 13 पहुंचा । 14 भेजी । 15 मालुम हुई । 16 मराठी सैन्य दल विशेष । 17 रास्ते के जंगल पर कब्जा किया ।

सु कछवाहा रो कूच हुवो ने दीखणी दोळा ग्रांण फीरे[1] सु रहेणे (रहण) देवे न्हीं। ने कुवा फोगा रा बांधीयोड़ा था[2] सुलगाय[3] दे, सु पांणी पीवण देवे न्हीं। ने तीरसां मरतां बेरा में डोल नाखे सु डोल माहे रेहे जाय[4]। यूं करतां दोलतपुरे डेरा हुवा। सो ग्रेक वाटको पांणी रुपीये मीले[5]। दीखणीया ईसां कायल[6] कीया सु वीस कोस धरती दस दीनां सु डीडवाणां तांई नीठ पुगा[7]। दीखणीया घास बाळ[8] दीयो ने रात-दीन चढ़ीया उभा[9] रहे ने कछवाहां रा घोड़ा घास बीना मर गया।

तरे मुतसदीयां माधोसिंघजी सुं ग्ररज कीवी—रामसिंघजी सुं बाई री सगाई[10] कीवी छे। ने फेर सारा सीरदारां ने ग्रेक करसां तो जोधपुर रामसिंघजी रे ग्रावण दो[11]। पछे सारी हींदुसथांन ने ग्रेक कर देसां। ने दीखणीयां सु जगड़ो करसां। म्हाराज गजसिंघजी ने तीजी[12] लाय परणाय[13] ने वीजेसिंघजी सुं फाड़ लेसां[14] ने म्हाराज वीजेसिंघजी ग्रठें[15] ग्रावे तरे पकड़ लेसां ने क्हेसां जोधपुर खाली[16] करसो तरे छोड़सां। रामसिंघजी रे माथे ग्रसान (ग्रहसान) हुसी—जोधपुर म्हाराज माधोसिंघजी दीरायो। तरे माधोसिंघजी फीर गया[17] ने मुत्सदीया कयो—साठ हजार फोज छे सु डीडवांणे पुरी हुवे छे। तरे दीखणीयां सु मीलीयो ने कयो—थारी फोज हजार तीनेक मेलो, सु मारे वख[18] में ग्रासी तो मैं पकड़ लेसां। के मैं ग्रठां सुं सीख देसां[19]। सु ईंणा कने साथ घोड़ो छे, सो पकड़ लेसां के मार नाखसां। ईण तरे ठेराय ने ग्रेक दीन म्हाराज वीजेसिंघजी माधोसिंघजी सु मीलण ने मांहे[20] गया। जरां बाई[21] कयो—वावाजी री बदनामी तो लोकायत[22] में ह्वे छे ने हमें थें ग्रठे ग्राया छो। तो कछवाहां रो भरोसो मत कीजो। ईंणां रो मतो[23] खोटो

---

1 चारों ग्रोर ग्राकर घूमते रहते। 2 कच्चे कुए फोग नामक झाड़ी के डंठलों से ग्रन्दर बांधे हुए थे। 3 ग्राग लगा देते थे। 4 प्यास से व्याकुल सैनिक कुएं में डोलची पानी भरने के लिए डालते तो डोलची ग्रन्दर ही रह जाती थी। 5 एक कटोरा पानी एक रुपये में मिलता था। 6 विवश। 7 मुश्किल से पहुंचे। 8 जला दी। 9 खड़े। 10 विवाह सम्बन्ध। 11 रामसिंघजी के ग्रधीन होने दो। 12 तृतीय। 13 विवाह करना। 14 विजयसिंह से ग्रलग कर ग्रपने पक्ष में कर लेंगे। 15 यहां। 16 जोधपुर के शासन का ग्रधिकार छोड़ना। 17 लौट गये। 18 नियन्त्रण। 19 विदा कर देंगे। 20 ग्रन्दर। 21 बहन। 22 समाज में। 23 इरादा।

दीसे छे। थें अठै ईंहुई आया। थांरों ऊपर हींगलाज करसी[1]। तरे म्हाराज ऊठ ने बारै आया, ने कटारी ऊपर हाथ ने डरू-फरू[2] हुता ही आया। तरै जवानसिंघजी कयो—ईण तरै कांई ? ईतरे आप कहो—ठाकुरां! ईणां री खांप[3] खोटी छै। तरे जवांनसिंघजी माधोसिंघजी कने जाय बेठा। ने कयो—डेरा पधारो। आप सुं कांई। कीसी कीवी तो[4] हुं माधोसिंघजी नु मार लेसुं। कुसले[5] डेरे पधार ने समाचार देसो जरां हुं उठसूं। जरां श्री म्हाराज तो डेरां ने खड़ीया ने जवानसिंघजी पाछा माधोसिंघजी कने जाय बैठा। तरे माधोसिंघजी पूछीयो—ठाकुरां पाछा क्यूं आया। तरे कहो—समाचार बतलावणा छै। ईण तरै आड़ी-अबळी बात[6] कीवी। ने म्हाराज डेरै पधार ने अेक म्हेलीयो ने कवायो—आपनै श्रीहजुर याद फुरमाया है। जरां जवांनसिंघ जी सीख कर ने डेरा आया ने आगे कूच री त्यारी कीवी। ने घोड़ा 22 नगारा रा उभा। जरां जवांनसिंघजी कयो—यां घोड़ां रे जींण कीहुं न्हीं ? जरां हजुर फुरमायो—अे तो घोड़ा माधोसिंघजी रा है। तरे कयो—हमार[7] तो चाकर पाळा[8] है सु चढ़ ने उरा लेसां[9]। पछे जांणीजसी[10]। तरे नगारा रा डुंडीया[11] तो पड़ी रही ने घोड़ा ऊपर चाकर चढ़ गया। ने म्हाराज गजसिंघजी ने समाचार दीयो—चढ़ ने वेगा आवो। सु गजसिंघजी तो पाट[12] वेस रया परणीजण[13] रै लालच ने। मु. वखतावरमल लारे हुवो सु पादरे मारग[14] तो दीखणी आडा आय गया। ने ईणां ऊंचा नीसरीया[15]। सु दीन उगां तूंरा री पाटण[16] गया। उठे वळ[17] कीवी। घोड़ां ने ताजा कीया ने चढ़ीया। सु सेखावतां री जुजणु[18] जाता उतरीया। उठे भोपालसिंघजी मीजमानी[19] कीवी। घोड़ा 4 हाथी 2 नीजर कीयो। घोड़ा 2 राखीया। उठे दीन दोय-तीन ढवीया[20]। पछे चढ़ीया सु नोहर पधारीया, उठे रया।

कछवाहां री फोज डीडवाणां सु खराब हुय[21] पाछी आयी। ने दळकरण

1 तुम्हारी रक्षा माता हिंगलाज करेंगी। 2 घबराये हुए से। 3 जात। 4 कुछ गड़बड़ की तो। 5 कुशलपूर्वक। 6 आडी-टेढ़ी बात। 7 अभी। 8 पैदल। 9 चढ़कर मार लेंगे। 10 देखी जायेगी। 11 नगाड़े के डंडे। 12 चौकी। 13 विवाह हेतु। 14 सीधा मार्ग। 15 ऊपरी रास्ते से निकले। 16 तंवरों का ठिकांना पाटण। 17 भोजन। 18 झुंझनूं। 19 मेजवानी। 20 ठहरे, रुके। 21 नुकसान उठाकर।

जी, जुजारसिंघजी हाकम कहो थो मो कने रहो । तरे यां कहो—मैं तो हजुर जासां । तरे गुलाबराय ग्रासोपे कही—हजुर कने तो घणाई छै । ने ग्रठे राजा रो स्हेर छे । ने दीखणी दोळा[1] बैठा छे । सो ग्रा चाकरी वधती[2] छे । जरां कहो ग्रठे म्हारा घोड़ा मर जाय । ईण तरै रहै चढ़ गया । ग्रेक रतनसिंघ लालसिंघोत रयो । जीण सु म्हाराज घणा राजी हुवा, ने चाकरी[3] ठेहरी । ने दळकरणजी सु जुजारसिंघजी सु मोकला[4] बेराजी हुवा । मां कने कांई थो[5] ? चाकरी तो डीडवांणे थी । पछे ग्रठे नागोर सिंघवी फतेहचन्द ने देवीसिंघ म्हासिंघोत दीखणीया सु बात करी के ग्रादो[6] मुलक देणो कीयो । ने ईकावन लाख रुपीया पेसकसी[7] रा ठेहराया ।

पांच हजार गांव मारवाड़ रा सु ग्रढ़ाई हजार गांव रामसिंघजी रे, जीण में मेड़तो 1, प्रबतसर 1, मारोठ 1, सोजत 1, जालोर 1, भीणाय 1, केकड़ी 1, देवळीयो रा (16) सोले गांव, मसुदा रा (27) सताईस गांव म्हाराज श्री रामसिंघजी रे ...ने जोधपुर 1, नागोर 1, डीडवाणे 1, फलोदी 1, जेतारण 1 ग्रे प्रगना म्हाराज वीजेसिंघजी रे, ग्रजमेर दीखणीया ने दीयो ।

ईण तरे बात ठेहरी—रुपीया 6,00,000 रोकड़ दीया ने बतीस हाथी भरणा[8] मैं दीया ने ग्रेक रावटी ग्रेक लाख में दीवी ने दोय लाख रुपीया रोजवार[9] दीयो ने बाकी रुपीया में ग्रोळ[10] दीवी । सिंघवी बुधमल फतेचन्द रो भाई जुगनेश्वर सीरमाली उजीण[11] में मुवो[12] । प्रोहीत जीवराजे वीजेराज रो ग्रासोपो सदासीव हरनाथ रो ग्रे ग्रासांमीया 4 ले ने दीखणीयां ने कूच करायो—

संमत 1812 रा काती सुद 15 मंगलवार ने राईको[13] म्हेलीयो । म्हाराज पधारीजे, दीखणीया रो कूच हुवो । जरां म्हाराज बीकानेर पधारीया । दीन 10 ने जोधपुर पधारीया । सारा ही सीरदार जोधपुर गया । जरां सीरदारां रा ठीकाणां छुटा[14] ज्यांने रोजीनो[15] देणो ठेरीयो—

---

1 घेरकर । 2 ग्रधिक । 3 सेवा का ग्रोहदा बढ़ाना । 4 काफी ग्रधिक । 5 हमारे पास क्या था, क्यों ग्राये, इस प्रकार की प्रताड़ना दी । 6 ग्राधा । 7 पेशकस । 8 भरपाई में । 9 दैनिक खर्च के । 10 बाकी के देने का वायदा । 11 उज्जैन । 12 मर गया । 13 ऊंटनी सवार, संदेशक । 14 जागीरें छूट गईं । 15 दैनिक खर्च ।

जवानसिंघजी सुरजमलोत ने रुपीया 35/-रोजीना, प्रीथीसिंघजी, फतेसिंघजी ने गांव काकेलाव भाखरोद ने दस रुपीया, केसरीसिंघ उदावत ने नागोर रो गांव गोवां, रुग्णज, नाग्णो, सांजु—च्यार गांव दीया। पाड़(पहाड़) सिंघ जेतावत नु मूंडवो दीयो ने दस रुपीया रोजीना देवे। जेतसिंघ कुसलसिंघोत ने रु. वी. 25/- रोजीना देवे। वदनसिंघ जावला रो तरणाऊ लांबो वाळो दीयो ने पसर[1] रु. 25/- रोजीना रुघनाथसिंघ ने रुपीया 35/- देवे। ओर ही आसामीयां रा गांव छुटा ज्यांने रोजीनो देवे।

दीखणी दतुजी जनकुजी नागोर सूं कूच कर डेरा रूपनगर कीया। राजा बाद्‌र सघजी ने बात करण बारे[2] बुलाया ने चोकी[3] बेठांण दीवी। ने राज आधो आद[4] कराय दीयो। रूपनगर खाली कराय कंवर सीरदारसिंघजी ने दीयो। कीसनगढ़ बादरसिंघजी ने दीयो।

संमत 1812 में श्रीजी नागोर सूं जोधपुर पधार गढ़ दाखल[5] हुवा।

संमत 1812 रा जेठ सुद 5 सन(शनिवार) भंडारी दोलतराम, सुरतरांम, हीमतराम, जोधमल, सांवतरांम नु छोड़ीया[6]। रुपीया 2,00,000 दोय लाख लीया।

संमत 1813 बगसीगीरी री खीजमत भंडारी दोलतराम रा बेटा भवांनीराम रे नांवे दीवी बगसीगीरी रो कांम भंडारी सुरतराम सांवतराम कीयो। सुरतराम वीजेशाही रुपीया 70,000 सीतर हजार रुपीया भरीया।

संमत 1812 में जोसी संतोषीराम बेटा भाउ मनरूप ने व्यास पदवी देरासर[7] दीयो।

संमत 1813 रा म्हाराज बखतसिंघजी री ख्वास री बेटी मोतीबाई गांव खेतासर रा भाटी भवानीसिंघ फतेसिंघोत ने परणाई। पटो दस हजार रो दीयो। पंचोली लाला री हवेली दीवी।

संमत 1813 रा बेसाख सुद 12 भंडारी दोलतराम रामसरण हुवो[8]। लारे सांणी (शाहनी) सत कीयो[9] बेसाख सुद 12

---

1 खर्चा। 2 बाहर। 3 पहरा। 4 आधा-आधा। 5 प्रवेश। 6 मुक्त किया। 7 गांव। 8 देहान्त हो गया। 9 सती हो गई।

पंचोली लालजी नुं छोड़ीयो। रुपीया 1,50,000 दोढ़ लाख भराया। संमत 1813 रामसरण हुवो।

प्रोहीत वीजेराज संमत 1813 रामसरण हुवो तरे प्रोयत सीरदारसिंघ री हवेली श्रीजी कांण करावण[1] पधारीया।

संमत 1813 रामसिंघजी जेपुर गया। ईसरीसिंघजी री बेटी सुं आगे सगाई कीवी थी सु परणीयां, पछे दुजो व्याव भीलाय परणीया पछे अेक चावड़ा जेसा री डोलो आयो सु परणीया।

संमत 1813 में प्रोहीत जगुजी रामसरण हुवा। बहू लारे सत कीयो पोष सुद 4 सन (शनिवार)।

संमत 1813 काळ[2] पड़ीयो ने राज में कसालो[3] पैदास न्हीं[4]। जीण सुं सीरदारां रो रोजीनो चढ़ जावे[5] जरे सीरदारां हेला[6] करे ने दुख देवे। सो युं करतां रामसिंघजो तो भिलाय[7] गया ने दीखणी दतुजी नेरबदांजी रे कोठे गया। जरां सीरदारां कयो—अबार वेत छे[8]। मेड़तो उरो लो[9]। तरे सीरदारां सारा ने बुलाय मसलत[10] करी के हमार दीखणीया रा थांणा माफक छे[11]। सो प्रगना उरा लेवो। तरे देवीसिंघजी कयो—बात करी है जरां वरस अेक रो वचन दीनो छे। जीतरे तो प्रगना लेण में आवे न्हीं सो जरां तो पछे मीसलत बीखराई[12]।

पछे दीन च्यार में सरदार अरज करीयो ने रोजीनो कीतराक दीना ने देसो? भूखा सु चाकरी हुवे न्हीं। उठीने जासां तरे सबळा[13] पड़सी। ने रामसिंघजी मेड़ते आंण बेठा। पछे प्रगना छुटे न्हीं। ने उलटा थारे कना सु छुड़ावण री मरजी राखसी। ने ठाकुर देवीसिंघ केवे है—ज्यां रा टाबर म्होकरण रा म्हेलां में बैठा छे। म्हारा टाबर लोकां रे पाछो फड़े[14] बेठा है।

---

1 शोक व्यक्त करना। 2 अकाल। 3 गरीबी। 4 पैदावार, उपज नहीं। 5 दैनिक खर्च बकाया रहने लगा। 6 चिल्लावे। 7 गांव का नाम। 8 अभी अवसर है। 9 वापस अधिकार में ले लो। 10 विचार-विमर्श, मशविरा। 11 मराठा सेना के सैनिक अड्डे अपने वश में आने के अनुकूल। 12 बैठक विसर्जित हुई। 13 बलशाली। 14 पराश्रित।

म्हा सु' अवेरणी[1] आवे न्हीं । नें मैं ईतरा जणां जासां तो उणा रो चेळो[2] भारी हुसी, सु जमी (जमा) राखो[3] । तरे यांने सारा ही ने भेळा करने फुरमाईजे । मेड़ता री वीदा रो मुजरो करो पछे देवीसिंघजी नाकारो कीकर करसी । तरे देवीसिंघजी किलांणसिंघजी ने हजुर बुलाय ने फुरमायो के फतेचन्द ने मेड़ते मेलां छां । सु वीदा रो मुजरो करो । तरे सीरदारां कयो—ठा. देवीसिंघजी ने फुरमाईजे पछै मैं ही मुजरां करां । तरे आप फुरमायो—के ठा. माहा रे जमी आया राजी के वेराजी । तरे देवीसिंघजी अरज करी के ईसड़ो हरांमखोर कुण छे ? सु म्हाराज रे जमी आया बेराजी[4] । पीण पांच म्हीना बरस दीन में घटे छे सु जेज[5] करावे । पछे सारा प्रगना खानाजाद ले देसी । तरै फुरमायो—माने राजी राखो तो विदा रो मुजरो करो । तरे देवीसिंघजी मुजरो कीयो ने सारा ही सीरदारां मुजरो कीयो । सिंघवीजी मुजरो कीयो ने नागोर सीलेपोसां रो रसालो थो । जीणने राईको मेलीयो तरै सरे दीन मेड़ते आधी रात रा आईजो ।

जोधपुर सूं सीरदार चढ़ीया सु मेड़ते ओडाबारी कने रैट[6] ऊपर चढ़ ने भेळीयो । सहेर में सदासीव पंडीत थो जीको नास[7] अजमेर परो गयो । अेक प्होर तो मेड़तो लुटीयो पछे म्हाराज वीजेसिंघजी री आंण[8] फीरी । भंडारी पोमसी फोज ले ने गयो सु जालोर कायम कीयो[9] ने चंडावळ ठा. प्रीथीसिंघजी ने जेतावत पाड़सिंघजी अे दोनुं जणां सोजत कायम कीवी[10] ।

अजमेर सुं कासीदा री जोड़ीयां[11] चाली सु जीनकु ने दतुजी पटेल रा डेरा नरबदा ऊपर था सु जाय कागद दीया । रांमसिंघजी नु जमी दीराई[12] थी सो वीजेसिंघजी उरी लीवी[13] । ने अेक अजमेर छे सु ऊपर न्हीं हुवो तो अजमेर ही उरो लेसी । अे समाचार सुण पटेल तामस[14] कीयो ने कयो—मारवाड़ जासुं । जरां कने लोक छो सु दीन उगा नरबदा पार उतर गयो ने कयो के—दुजा मुळक ऊपर चालो तरे तो त्यार छां । ने मारवाड़ में अेक-अेक

---

1 समेटना । 2 पलटा । 3 ध्यान में राखो । 4 नाखुश । 5 प्रतीक्षा । 6 रहंट । 7 भागकर । 8 दुहाई । 9 जालोर पर अधिकार कर लिया । 10 सोजत पर अधिकार कर लिया । 11 पत्रवाहकों के जोड़े । 12 ठिकानों पर कब्जा कराया था । 13 वापस अधिकार कर कब्जे में ले लिया । 14 क्रोध ।

जणा रे सो-सो घोड़ा छां सो पुठीये[1] वैस[2] घेर आया छां। तरे खानुजी जादु कयो—आपरो कांई काम छै? मांने मेलीजे। तरे पटेल कयो—फोज हाले न्हीं सो लोक वीना तुं कांई करसी? जरां खानुजी कह्यो–मो कने पांच सो घोड़ा छे। उजीण रा सोवायत[3] ने लीखाय दो सु उण कने लोक छे सु हुं ले जासूं ने रोजगारी लोक[4] ले जाय ने फेर राख लेसां। तरे खानु ने वीदा कीयो। पटेल दीखण खानु हजार 4,000 च्यार लोक सुं अजमेर आयो ने रामसिंघजी री फोज हजार 3,000 भेळा हुवा ने मेड़ता ने कूच कीयो। मेड़ते फतेचन्द सिंघवी ने दोढ़ीदार गोयनदास हा, जीके कूच कर ने गांव भेसड़े डेरा कीया। ने दीखणीया सुरीवास डेरा कीया ने अेक दीन राड़[5] कीवी। सु गोला बुहा[6] ने फोज आमी-सांमी पड़ी। पीण देवीसिंघजी पाछ-मना[7] ने दीखणीयां ने कागद दीयो के मारे ऊपर[8] हुय प्रगना लीना छे। सो थें सेंठा[9] रहो। मैं थांसुं राड़ करां न्हीं[10]। तिण सु लांवीया बुलुंदे अमल कर लीयो। सु केसरीसिंघजी रा ने जेतसिंघजी रा तो राड़ करण में हरोळ[11], पीण देवीसिंघजी कीलांणसिंघजी राजि लारा पाछमना। सो मारवाड़ रा सीरदार दोय घड़ी ठेरीया[12] सो आधा तो तंन देवे[13] ने आधा पाछमना। तरे हजूर ने लिखीयो—आप पधारो तो सीरदार तंन देसी ने दीखणीया ने मुळक बारे काढां।

तरे म्हाराज श्री वीजेसिंघजी जोधपुर सूं कूच कीयो। सु रुघनाथ नार-सिंघोत ने सीरदारसिंघ दुगोली रा ने सींभूदान चवांण, मोखमसिंघ—अे तो सीरदार साथे ने दुजा खवास, पासवान साथे सारो लोक हजार अेक सुं लांबीया डेरा हुवा। सु भारथसिंघ उदावत रा बेली[14] मांहे सु गोली बावे[15] सु म्हाराज फुरमावे—देखो सांमे[16] लांवीया में ही मांने[17] गोलीयां बावे।

तरे सीवदांन खीची अणदु दोढ़ीदार अरज कीवी—के ईण ने तो मैं दरबार रा चाकर ही घणां छां[18]। हुकम हुवे तो कूट ने काढ़ दां[19]। तरे फुर-

1 पृष्ठभाग। 2 बैठकर। 3 सूवेदार। 4 दैनिक वेतन के सैनिक। 5 झगड़ा। 6 गोला-बारी हुई। 7 अनमना, म. विजयसिंहजी से नाखुश। 8 मुझे दबा करके। 9 मजबूत। 10 मैं तुमसे युद्ध नहीं करूंगा। 11 आगे। 12 जमे। 13 उत्साही योद्धा। 14 साथी। 15 चलावे। 16 सामने। 17 हम पर। 18 इनके लिए तो हम लोग ही पर्याप्त हैं। 19 आज्ञा हो तो मारकर बाहर भगा दें।

मायो—ग्रबखातो लागे छै[1]। तरे रसाला रो लोक जाय ने हाको कीयो सु भीत हेटे जाय नीसरीया[2] ने बेठा ने भीत खोदण लागा। तरे मांय सु नीसर ने नास गया[3] ने दरबार रो थांणो[4] राखीयो। पछे लांबीया सु कूच कीयो। ने दीखणी ही कूच कर ने लाडपुरे पाछा जाय डेरा कीया ने सीरदारां म्हाराज सूं मुजरो कीयो ने कूच कीयो सु डेरा सीरायचा तोपां[5] तो डेरे हीज[6] राखीया ने छड़ी फोज ले लाडपुरे जाय दीखणीयां सु कजीयो कीयो। सु खानु ने रामसिंघजी पंवार दीखण सु ग्राया सो बारै सो 1200 रावत लेर सु दोनुं ही नुं मुंढ़ा ग्रागे घेर लीया[7]। सो नास ने ग्रजमेर परा गया[8]।

म्हाराज रा डेरा पीसांगण कराया। पीसांगण ऊपर रु. 20,000/- बीस हजार ठेरीया[9]। पछे केसरीसिंघजी कहे ग्रजमेर हालो[10], सु ग्रजमेर उरो लेसां[11] ने देवीसिंघजी कहे—प्रबतसर चालो[12], सु मेड़तीया कनां सुं रुपीया लेसां, ने चाकर राखसां। परवतसर ग्रमल कर ने[13] ग्रजमेर लागसां[14] ने प्हेली ग्रजमेर लागसां तो उठे घर[15] है सु तुरत तो हाथे ग्रावे न्हीं[16] ने ग्रापां कने खरची पीण न्हीं[17] ने मेड़तीया पांच हजार ग्रादमी रामसिंघजी कने भेळा हुय जासो ने प्हेल करसी[18]। जीण सुं पेली मेड़तीया ने संभाळ[19] ने पछे सांभर ले पछे ग्रजमेर लागसां।

तरे कूच कर ने ग्रालणीयावास डेरा हुवा ने उठे सुं भेरूंदे डेरा कीया। ने भेरूंदा सुं हरसोर डेरा कीया। ने देवीसिंघजी रो कागद खानु ने गयो। फोज तो ग्रठीने है ने थे मुळक में पेस जावो[20]।

सु खानुं रे गांव री फोज हजार 3,000 तीन ग्राय गई ने हजार छव फोज दीखणीया री थी जुमले हजार 9,000 नव सुं कूच कर गांव नांद डेरा

---

1 हमारे लिए हल्की बात होगी। 2 दीवार के नीचे जाकर निकले। 3 ग्रन्दर से निकल कर भाग गए। 4 सैनिक चौकी। 5 तोपखाना। 6 डेरे में ही। 7 सामने से घेर लीया। 8 ग्रजमेर भागकर चले गए। 9 पीसांगण के ठिकाने से 20,000 रुपये लेना निश्चित हुग्रा। 10 ग्रजमेर के लिए कूच करो। 11 वापस कब्जा करें। 12 परबतसर के लिए कूच करो। 13 परवतसर पर ग्रधिकार करके। 14 ग्रजमेर पहुंचेंगे। 15 ग्रजमेर में रामसिंह का ठिकाना है, गढ़ है। 16 ग्रासानी से कब्जे में नहीं ग्रावेंगे। 17 ग्रपने पास व्यय हेतु धन भी नहीं है। 18 ग्राक्रमण की पहल। 19 ग्रधीन। 20 प्रवेश कर जाग्रो।

कीया ने नांद सु जड़ाऊ मारी[1]। तरे हलकारां मालम करी के दीखणी मुळक में पेठा[2]।

तरे कूच हुवो सु जड़ाऊ डेरा हुवा ने दीखणीयां जड़ाऊ सु कालु मारी[3] ने लोठोती डेरा कीया। लोठोती सु बीलाड़े हुय बीलावस डेरा कीया। म्हाराज कूच कीयो सु रणसी गांव डेरा कीया पछे आगे तो दीखणी ने लारे[4] म्हाराज। दीखणीयां खंडप भंवराणी मारी ने म्हाराज रा डेरा पाली हुवा ने दीखणी गुंदोज हुय पीपाड़ मारी। म्हाराज कापरड़े पधारीया पछे हलकारा खबर दीवी के खानु पीपाड़ छे ने रावत छे। जीके केईक चढ़ गया छे। तरे केसरीसिंघजी कयो—असवार हुईजे, कजीयो करसां ने आज दुःख मेट देसां। तरे देवीसिंघजी कयो—पांच कोस तो जमी छे ने लोक बीखरीयो बवै[5] छै। थोड़ो दीन छे[6], राड़ करसां। पछे रात पड़ जासी। दीनरी[7] तो आंखीया री सरम छै[8], सु कजीयो बीगड़ जासी[9] ने खानु आगे पूठ फेरीयां लोकायत बीगड़ जासी। अठे डेरा कर ने स्वारै[10] राड़ करसां। तरे कापरड़े डेरा कीया।

खांनु कूच कीयो सु मोकाले डेरा कीया ने म्हाराज रा डेरा मालास हुवा। खांनु कूच कीयो सु मेड़ते आया। हलो कीयो सु कोट भीळीयो न्हीं। सु मीडरे डेरा कीया ने म्हाराज रा डेरा गंगारड़े हुवा सु (18) अठारे वेली ऊमरसिंघ रा कांम आया ने दीखणी आदमी 70 सतर काम आया। गांव लूट ने कुचेरे डेरा कीया। म्हाराज रा डेरा हरसोलाव हुवा। खांनु खरनाळ मारी। म्हाराज वारणी डेरा कीया। खांनु कुबारे डेरा कीया। महाराज आसोप पधारीया। खांनु नागोर हेटे[11] नीकल ने डुहे मारी। उठा सूं बड़ी खाटु मारी। सीरदार च्यार कांम आया। गढ़ी भीळ गई। ठाकुराणियां नु अेकण रथ में वेठांण जोरावरसिंघ फतेसिंघ रे डेरे लावे था[12] ने भला आदमी साथे था। पीण पाज सूं उतरता[13] रथ रो पेड़ो[14] भांज गयो[15] ने र(स)थ

---

1 नाद गांव से जड़ाऊ गांव पहुंचे। 2 अपने ठिकाने (गढ़) में। 3 कब्जे की। 4 पीछे। 5 चल रहा है। 6 सूर्यास्त का समय होने वाला है। 7 दिन में। 8 प्रत्यक्ष देखने से लिहाज करते हैं। 9 युद्ध का तारतम्य बिगड़ेगा। 10 आने वाला प्रातः। 11 नागोर से निचली ओर से। 12 ला रहे थे। 13 परन्तु तालाब का पानी (रेत का बांध) से उतरते समय। 14 पहिया। 15 टूट गया।

मांय सूं बारे आय पड़ी सु दीखणीया लूट लीवी । पछे पावे प्होचाय दीवी । पछे कुचेरे डेरा कीया ने नीबड़ा वाली गढ़ में सीरदारसिंघजी जावला सूं प्होर अेक गोल वाही[1] । पछे ठाकुर फतेसिंघजी बात कर डेरे ले आया । पछे खांनु गंगारडे डेरा कर ने मेड़ते कजीयो कर ने मीडरे डेरा कीया ने म्हाराज तो आसोप हीज डेरा राखीया ।

पछे जांणीयो सीरदार तो तंन देवे न्हीं[2] ने रईयत मराया कांई हुवे । तरे रुघनाथसिंघजी सुरतांणसिंघजी करणीदांन बारठ ने बात करण ने मेलीयो । सु अे तीन आसांमीया मीडरे रे डेरा खांनु कने आया ने वात कीवी के जनकुजी दतुजी पटेल ईंणां रामसिंघजी नु जमीं दीराई जीतरी छोड़ देणी ने बात ठेराई[3] । पछे प्रगना छोड़ दीया । मेड़ती खाली कर दीयो । जालोर रो गढ़ खाली कर दीयो ने दीखणीया रा थांणा बेठा पछे खांनु दीखणा नुं कूच कीयो ।

जोरावरसिंघ कने ठा. देवीसिंघजी रा कागद था जीके म्हाराज वीजेसिंघ कने बीजनस[4] मेल दीया ने कयो—आप कीणां[5] रे भरोसे बारै बेठा हो ? आपरा उमरावां तो अे परणांम[6] छे ।

तरे म्हाराज जोधपुर ने कूच कीयो ने नींबाज री बावरीया री पेड़ियां[7] मुळक मारे[8] सु बावरी पचीयो[9] रा भलो आदमी 500 पांच सो ले ने गांव कुड़छी धणारी मार ने आवता था सु फोज रो नगारो सुण ने बागोरीया रा भाखर में वड़ गया[10] । तरे कुड़छी धणारी वाळां वेती असवारी फीरीयाद कीवी[11] । ने हलकारा मालम कराई के वागोरीया रा डुंगर में बावरीयां गोठ कीवी छे[12], ने बेठा छे । जरां अंणदुजी ने कछवाहो जेसो ने सीलेपोस ने नागोर री आसामी दे वीदा कीया । ने कयो—के बड़ोड़ा रा सीरदार ने

1 एक प्रहर ठहरकर बात की । 2 युद्ध में मरने को तैयार नहीं । 3 जनकुजी दतुजी द्वारा रामसिंहजी के हक में जो जागीरें रखी वे रामसिंहजी के लिए छोड़ने की बात तय की । 4 संलग्न करके । 5 किनके । 6 परिणाम, नतीजा कार्य । 7 इकाइयां । 8 देश को लूटे । 9 नाम विशेष । 10 विजयसिंहजी की फौज के नगाड़े सुनकर वागोरिया गांव के पास पहाड़ों में घुस गये । 11 गांव वालों ने विजयसिंहजी से चलते-चलते ही फरियाद की । 12 बाकी पहाड़ों में खान-पान की गोष्ठी कर रहे हैं ।

लखाव पाड़जो मती[1]।

सो हजार 1,000 अेक असवारा सुं जाय दोलां फीरीया। तरे बावरी संभीया[2] तरे ईंणां कयो–थे कीहुं बरवड़ो छो[3]? महाराज तो राजी हुवा छै। थे तो करमसोता रा गांव मारीया छे। सु थांमे ठावा-ठावा हुवे[4] जीको आवो। सो श्रीहजुर में मुजरो करावां ने खींवसर दोड़ो ने ठाकुर कीलांण-सिंघजी हजूर में उभा छे, ने मालुम कीवी छे। तरे बावरीया नु धीरोज आयो[5] सु आदमी पचास-साठ था, सु नेड़ा आया[6]। तरे कयो—जांमखीयां[7] गुळ करदो, तरे गुळ कीवी। के सीलेपोसां नु सेनी कीवी[8] सु तरवारां भीळता ही हुवां सु सारा ने मार नाखीया।

पछे घोड़ा उठाया[9] सु लारला ने ही मार नाखीया। अेकण ने ही जावण दीयो न्हीं। बावरीया रे मुळक में उण दीन सुं हीज चेन हुवो[10] ने पछे नींबाज रा कीलांणसिंघजी आ बात सुणी सो बेराजी हुवा।

पछे संमत 1814 रा फागुण में श्री म्हाराजजी जोधपुर गढ़ दाखल हुआ ने सीरदारां सीख मांगी[11] तरे सीख दीवी न्हीं। तरे सीरदार वीगर सीख चढ़ गया—

1 पोकरण ठाकुर देवीसिंघजी
1 ठाकुर छत्रसिंघजी
1 भाटी दोलतसिंघजी
1 नींबाज ठाकुर कीलांणसिंघजी
1 भाटी दौलतसिंघजी

ईंणां सारा जीलायत घरे जाय बेठा।

संमत 1815 में नागोर री धरती में छोटी खाटु रो जोधो जालमसिंघजी दोड़े[12] ने मगरासर नारणोत हठीसिंघ दोड़े ने डीडवांणे कांनी सेखावत लूटे।

---

1 बावरियों के बड़े सरदारों को हमले का आभास न होने देना। 2 सावधान हुए। 3 अड़ पड़ना, लड़ने को उत्सुक। 4 तुम लोगों में खास-खास हो। 5 विश्वास आया। 6 निकट आया। 7 पलीते। 8 इशारा किया। 9 चलाया। 10 शांति स्थापित हुई। 11 अपने ठिकाने लौटने की आज्ञा मांगी। 12 चढ़ाई कर कर लूटे।

ने आथुंणी कांनी करमसोत लूटे । नागोर रा प्रगना ने च्यारूं कांनी लागा[1] । तरे नागोर सुं फोजबंदी करी[2] । सु जालमसिंघजी ने घेर पाछा दरवाजा में बाड़ दीया[3] । तरे जोधपुर समाचार आया । तरे फुरमायो–देखो समै, सो खाटु रो ही ज़ोधो मुळक लुटे छै[4] । दौलतपुरा रो गढ़ उरो लीयो । तरे धायभाईजी जगजी कयो—मीनखां ने सुंपो तो क्हेण नुं वीगड़े[5] । तरे गोरधन खीची बोलीयो—कै सोई[6] बांछड़ा[7] सावण धाड़े छै राजाजी रा धाय भाई छो । थां जीसो ईण राज़ में दुजो कुण छै[8] ? तरे धाय भाई कयो–आप वचन देवो सो राखुं, जीण ने राखूं, ने काढूं जीण ने काढूं[9] । तरे गोरधनजी वचन दीयो । तरे धाय भाई जगजी वीदा हुवो । ने सीरदारां ने कही—चढ़ो । तरे सीरदार उत्तर दीयो—के मैं तो धायभाई साथै चढ़ां न्हीं । तरे सींभुदान चुवांण ने भाटी कीसनसिंघ वीदा हुवा ने धायभाई चढ़ीयो । तरे कीसनसिंघजी भाटी कयो के मोदीयां आंण दीराई छे[10] । तरे धायभाई वीजैशाही रु. 2000) दोय हजार दीया ने चढ़ ने नागोर आया सु घोड़ा 150 डोडसै सूं नागोर रा सीरदार ने प्रवाणा[11] दे बुलाया। तोपखांनो सांतरो[12] करायो ने सीलेपोस आदमी था जीण ने वीजैशाही रु. 2)दोय दे ने हमगीर[13] कीया । वीरादरीयां[14] रा पाळा[15] हजार 2000 दोय था ने पटायतां रो हजार दोय हुवो । जुमला फोज रो लोक हजार 5,000 पांच हजार लोक हुवो । ने तोपखाना रा बळद न्हीं सु गांव गांवा सुं बळधा री जोड़ीयां[16] लीवी ने जाटां ने कहो के खांख में रुपीया भराय देसां[17] । ने जालमसिंघजी रुको मेलीयो—मारै पाखी[18] तोपां न्हीं सु धायभाई देसी । सु बदरामजी(नाम)सु ऊपनो[19] छे तो ईठीयासंण सू डेरे आवजो ईण तरै कागद

---

1 नागौर के परगने चारों ओर से लूटे जाने लगे । 2 नागौर की फौज तैयार की । 3 जालमसिंह को उसी की सीमा में सीमित कर दिया । 4 जोधपुर समाचार आने पर आश्चर्य किया और कहा कि समय की बात है कि खाटु का साधारण योद्धा नागौर में लूट मचा रहा है । 5 अच्छे लोगों के पास शासन रहे तो क्योंकर बिगाड़ हो । 6 सभी । 7 बछड़े । 8 आपकी तुलना का इस राज्य में दूसरा कौन है ? 9 तब आप वचन देकर काम सौंपें, मैं जिसको रखना चाहूंगा उसे रखूंगा जिसे चाहूं उसे निकालूंगा, कोई दखल न दे । 10 तब किसनसिंहजी ने कहा मोदी लोगों ने सौगंध दिलवाई है, भुगतान बाबत । 11 परवाना । 12 सुदृढ़ । 13 अपने पक्ष में । 14 बिरादरी । 15 पैदल । 16 बैलों की जोड़ी । 17 यथेष्ट रुपया दिला देंगे । 18 पास । 19 उत्पन्न हुआ हो तो ।

लीख ने मेलीयो[1] सु धाय भाई सुण ने कूच कीयो । सु इठीयासंण डेरा कीया ने पाछो कागद लीख ने मेलीयो के हूं तो आऊं छूं । ने तू गनेसिंघजी सुं ऊपनो[2] छे तो चवड़े आंण लड़जे । पछे ईठीयासंण सूं कूच कर खींयाळे डेरा कीया । पछे बीसटालु मेलीयो जीण ने कहो के पचीस हजार रो पटो देसुं ने फोज में आंण डेरा करसां । बीसटाले गांव आसरवाडां रा ठा. अणंदसिंघजी ने मेलीयो सु मानी न्हीं । ने कहो—तांड़ो ले धायभाई आयो छै । सु तांड़ो लूट लेसुं । पछे खींयाळा सूं कूच कीयो । सु वहार तो पूठ पाछे दी न्हीं[3] ने पीडां[4] आगे गयो । ने बड़ी खाटु आयो, जीतरे बीसटालु ही आया । तरे धाय भाई कयो—अेकर सुं फेर जावो । तरे अणंदसिंघजी कयो—आप केसो तो फेर जासुं पीण माने कींव न्हीं[5]? उ कहै छै ज्युं मैं आप आगे कहा न्हीं[6] । जरां कहो ठीक छै ने आधा खड़ीया ने जांणीयो चोड़े कज़ीयो करसी । पीण वारै[7] नीसरीया न्हीं । सु जाय ने गांव सु उगुणीं त्रफ डेरा कर दीया ने बेरा ऊपर जब थांसु मनाई कर दीवी सु बीगाड़ कीयो न्हीं । तरे जालमसिंघजी जांणीयो के मोसुं डरता लूटीयो न्हीं । तरे प्रभाते धाय भाई दातंण करता ने रुको आयो जीण में लीखीयो के—अेक डांगी[8] तोड़ी तो बाळद लूट लेसुं । अो जाब सुण ने कयो—बेरो लूट लो । तरे फोज रा दोड़ीया सुं अेक घड़ी में जाब बाढ[9] ने डेरा में ले आयां । जालमसिंघजी उभा-उभा दीठो[10] । तोपां सरू हुई मोरचा लागा ।

सु उगा रा मोरचा अेक तो खांडीया डुंगर ऊपर ने अेक मठ मै । दोय मोरचा भारी, सुं तीन-दीन तो गोला बुहा ने पछे मनसोबो कर नै हळो ठेरायो[11] । खांडीया डुंगर ऊपर[12] तो नरसींगदास भंडारी ने दरबार रो रसालो ने मठ कांनी सीरदारा ने कयो—के पाछली रात घड़ी दोय हुवे तरे तोप छुटे तरे दोड़जो सुं कमरां बांधीया बैठा रया[13] । ने तोप छुटी ने कयो—हमें दोड़ो[14] । तरे कीसनसिंघजी भाटी धाय भाईजी ने सुस दीराय[15] राखीया ।

---

1 इस तरह पत्र लिखकर भेजा । 2 उत्पन्न हुआ । 3 सेना को पीछे से ललकारा नहीं । 4 स्वयं । 5 कुछ भी नहीं । 6 जैसा वह कहता है उस तरह हम आपके सामने नहीं कह सकते । 7 बाहर । 8 पौधे की डाली । 9 फसल काट करके । 10 खड़े-खड़े देखते रहे । 11 हमला करना निश्चित किया । 12 खंडित पहाड़ के ऊपर । 13 कमर कसे बैठे रहे । 14 अब दौड़ो । 15 सौगन्ध दिला करके ।

पांच आदमीयां सु ं उभो रयो ने सीरदार दोड़ीया सु मठ भेळ दीयो[1]। अेक रायमलोत रो माथो जाय पड़ीयो। जठा पछै पांच पांवंड़ा दीना ने उदुखांन रे तरवार लगाई ने मठ कायम कीयो[2]। ने खांडीयो डु ंगर ही कायम कीयो। उणां रा आदमी घणा मुवा। अेक मोरचो ढू ंढा[3] में थो जीकण री गोलीयां धाय (भाई) उभो, जठै आवे। जीतरे चांदावतां रे चांदावत रतनसिंघ जुजारसिंघ आदमी दसेक सु ं आय उभो रहो। तरे धाय भाईजी कयो—आप उभा रहो, मे लोह करसां[4]। तरे धाय भाईजी पीडां ठांठरिया ओधण पकड़ नें थकावण लागा[5]। सु धके ही गोलीयां तो मोकली छुटै सु ठाठड़ी[6] रे लागी। पीण ठाठरी टापरा री भीत सु ं अड़ाय दीवी[7]। तरे वे नास गया, गढ़ी में बड़ गया।

गांव में मोरचा हा, जीका ने गढ़ी में बाड़ दीया ने सांकड़ा[8] मोरचा लगाया। ने तोपां नेड़ी ले जाय ने मांडी। तरे दीन 13 लड़ीया। पछे सीटाणा[9] तरे अणंदसिंघ माहे कर वात ठेरी सो रु. 10,000/- दस हजार गुनेगारी रा ठेरीया ने अेक खाटु देणी ने फोज में डेरो करसी। ईण तरै बात ठेहरी। तरां गोला मने हुवा[10]।

पछे अणंदसिंघ गढ़ी में जाय जालमसिंघजी ने धाय भाईजी सु ं मुजरो करावण लाया। सो घोड़ा चढ़ीया। आदमी 500 सु मु ंडा आगो तोड़ा[11] सीलगतो आयो। तरां धाय भाईजी कयो ईणां ने माहाराज रो कुरब कोई न्हीं, सो हुंई उठु ं कोई न्हीं[12]। तरे अणंदसिंघजी कयो – अेकर सांतो उठणो[13]। पछे आप री सला। जरां कयी—लावो। तरे सीरायचा में लाया, मुजरो कीयो। सो कठकठो सो उठीयो[14]। मु ंडा आगे जालमसिंघजी बेठो, सायतेक[15] बेठा रया। बात बतळावण तो क्यु ं ही हुई न्हीं ने सीख करने

---

1 मठ में घुस गये। 2 मठ पर कब्जा कर लिया। 3 खंडहर। 4 हम लोग शस्त्र प्रहार करेंगे। 5 जोश ठंडा करके बैलगाड़ी के अगला हिस्से (ओधण) को पकड़कर सुस्ताने लगे। 6 बैलगाड़ी के ठाठा। 7 छोटे मकान की दीवार से सटा दी। 8 संकरा। 9 कुछ धीमे पड़े। 10 गोलाबारी बन्द हुई। 11 बन्दूक की गोली। 12 जालमसिंहजी को महाराजा का सम्मान नहीं रहा, इसलिए उनके सम्मान में खड़ा नहीं होऊंगा। 13 एक बार तो उठना चाहिए। 14 बेमन से उठे। 15 अल्पकाल।

डोढ़ी बारे आयो ने हलकारा आंण कयो—गढ़ी में पांणी थोड़ो छे ने गोला सुं भीतीयां जोजरी हुई[1]। तरे अणंदसिंघजी ने पाछा बुलाया, केहो—ठाकुरां आपणे बात कोई करनी नहीं। तरे अणंदसिंघजी कयो—गढ़ी सेंठी[2] छै। मांहे हजार 1,000 आदमी छै। सु तुरत गढ़ी तूटसी नहीं ने खरच मोकलो लागसी। तरे धाय भाई कयो—खरच लागसी तो जोधपुर रो घर छै। ईणां नुं तो मारने छोड़सुं। था हस्ते री बात छे। सु गढ़ी में वाड़ सेंठा कर आवो[3]। जालमसिंघजी ने पाछा गढ़ी में वाड़ ने कयो—वात तो धाय भाई माने कोय नहीं। थांसु मोटीपणो हुवे, सु करो। पछे दरवाजो झड़ ने भीत चुणता था जीतरे तोप छुटी सु गोला सूं कींवाड़ टूट ने बुरजा रे लागो। च्यार पोर गोला घंवीया[4]। आथण[5] नीठ कीयो। रात आधी रो जालमसिंघ जी ने पाछो गढ़ी में वाड़ ने कयो। तरे जालमसिंघजी च्यार बावरी ले रात आधी रा नीसर गयो।

मनाणा रो ठाकुर नहीं। परभात रा आदमी म्हेलीयो। अजे लीक री अमल[6] री मनवार कीं हुई नहीं। तरे आदमी जाय बुजीयो के ठाकुर कठे? जरां के आ मांने तो ठीक[7] नहीं। आदमी पाछो आय कयो—जालमसिंघ तो अठे कोय नहीं। तरे दलेलसिंघजी पूछीयो--ठाकुर कठे छे? तरे आदमीयां कयो—उवे तो आधी रात रा नीसर गया। तरे अणंदसिंघ नीसर गयो ने कयो— माने काढ़ो। तरे अणंदसिंघजी धायभाई ने केयो जालमसिंघ तो नीकल गयो ने मनाणा रो ठाकुर छै तीण नु परो काढ़ो[8]। जरां वायभाई कयो—अे ही क्युं आया छा? ईणां ने ही मारने छोड़सुं। तरे कयो—थारो चोर थो, सु तो परो गयो ने खेड्डु[9] सदा आवे छे। पांच हजार मेड़तीया छे, सो मरसी न्हीं। तरे रुपीया देणा करने मनांणा रो ठाकुर बारे नीसरीयो।

पछे गढ़ी कायम कर ने थांणो राखीयो ने नो बुरजो थो सो पाड़ नाखीयो। सींगवी ताराचंद ने थांणा रा खरच रा रुपीया दस हजार आया ने पछे झाड़ोद रा गांवा ऊपर कूच कीयो[10]। बावरी, थोरी, लादा[11] जीणां रा

---

1 दीवारें जर्जर हो गईं। 2 मजबूत। 3 गढ़ में प्रवेश कराकर मजबूती कर आओ। 4 घनघनाये। 5 सायंकाल। 6 अफीम। 7 मालुम न्हीं। 8 निकालकर बाहर करो। 9 पास का। 10 हमले के लिए प्रयास किया। 11 मिले।

कालजा कढ़ाय नाखीया ने गांव ऊपर पेसकसी[1] ठेरी ने भरणा[2] में घोड़ा लीया। गांव ताजा था सु मुळक लूट ने धन भेळो कीयो थो, सु पेसकसी मोकली[3] दीनी जीण सु खरच री बेबुदी[4] हुई ने भरणा में मोकळा भेळा हुवा। उठी रा दुजी गावां कनां सु नीजरांणा[5] रा घोड़ा लीया सु जाता तो सोलेपोस पाळा था सु घोड़ा 300 तीन सौ भेळा कीया ने सेखावतां लाड़खानीया सुं डंड ले मगरासर ऊपर कूच कीयो। मगरासर पांणी नहीं सु जांणीयो। फोज अठे कोई आवे नहीं। सु पखाळ 100 अेक सो नवी कराई ने नागोर रा गांवा रा कांकड़ था जीणां गांवा सु बांणा[6] मंगाया, जुताय दीया ने मगरासर आंण घेरीयो। डेरे-डेरे पांणी रा बांणा आय जावे सु घोड़ा डेरा में पांणी पावे ने मोरचा सांकड़ा। ने सुरग[7] लागी सु गढ़ी में वेरो थो जीण री पुठीयां 3 (तीन) नीकली ने मायला सीढ़ीयां। तरे चांदावतां रे मोरचे हलो पड़ीयो। ठाकुर सीरदारसिंघजी कहो सु मारी बात करे। ईण तरे हेलो मारे सु कुणी बोलीयो नहीं। अेक रोहळ रा रजपुत मुकंदो बोलीयो सु हलकारे धायभाई ने कयो—मांहला सु रोहल रो हुल मुकंदो बोलीयो। तरे धायभाई बुलाय तकरार[8] कीवी। के थांरे कांई कांम ? सु माहलां सुं बात करो। हमे जा, बोलजे मती। हुं ईणां नुं मारने छोड़सूं। कीणी रे मोरचे हुय ने नीकलीयो तो मुळक बारै काढ़ देसूं। सो दीन अठारै 18 तो लड़ीया ने पछे रात आदी रा नीसरीया। सो भाटी कीसनसिंघजी रे मोरचे आदमी 100 पांच-छव बीसी था सु गाड़ा कर ने नीसरीया। सु अेक बार तो गोलीयां छुटी, पछे मोरचा पार हुय गया। पछे लारे फोज चढ़ी ने जावण पावे नहीं, सो कोस 4 च्यार गांव ओवादरो नारणोता रो बीकानेरी रो छे, जीण में जाय वड़ीया[9]। ने दीन उगे ने फोज दोली[10] जाय फीरी ने कयो—अे चोर सुंप दो के थांने ही भेळा मारसां। तरे प्होर अेक तो जोड़ (झोड़) कीयो ने पछे गांव बाळण ने बुदड़ाले दोळा फीरीया। तरे सीटाय[11] ने हरींसिंघजी नें ईणां रा बेटा था जीणां नुं सूंप दीया। ने बावरी 18 अठारे सुंप दीया, सु पकड़ ने फोज में लाया। सु बावरी (18) था जीणां रा तो मोडा कांनी कालजा

---

1 जुर्माना। 2 क्षतिपूर्ति में। 3 पर्याप्त। 4 पूर्ति। 5 भेंट। 6 जलपात्रों की गाड़ी। 7 सुराग। 8 धमकी दी। 9 घुस गए। 10 चारों ओर। 11 धीमे पड़ गए।

कढ़ाया । अेकण बावरी रो कालजो हाथ घाल काढीयो । मेतरीयां तरां बोलीयो—जीवाड़ो[1] तो धन बताऊँ । तरे कहो—धन बतावसी, तो पाटो बांधसां[2] ।

तरे गढ़ी में जाय जमी खुदाई । जंजाळा मण 5/ सीसो नीसरीयो । तरे कहो—अो कांई धन ? तरे कहो—चालो, फेर बताऊँ । उठा सूं आगो फेर नीसरीयो सु कायलो पड़[3] जीव नीसर गयो । पछे वेलदार लगाय गढ़ी पड़ाय नाखी । ने हटींसिंघ रो ने ईणां ने बेटा रो ही मोरा कानी कालजा काढ़ण लागा । तरे सीरदारां कहो—राठौड़ छे । तरे सीरोजी मांय तीना रा ही माथा तोड़ नाखीया । पछे मुं. बखतावरमल ने सीख दीवी सु बीकानेर गयो । धाय भाई कूच कर नागोर आयो । नागोर रा प्रगना में सोनो चवड़े हाथ में ले ने फीरो सो कांई नांव लेण पावे न्हीं, ईसड़ो[4] चेन हुवो ।

सु रसाला ने तो नागोर राखीया ने सीरदारां ने सीख दीवी । ने धाय भाई जोधपुर आयो । घोड़ा पनरे[5] तो खासा बनात[6] सु खासा नटगट[7] हुवोड़ा ने आदमी 100 जलेबदार वटुका ने बनात री खोलियां री पालखी आगे वेहे[8] ने बड़ोड़ा सीरदार रीसांणा,[9] सु आप-आप रे घरे बैठा ।

पछे संमत 1815 री साल देवीसिंघजी चांपावत पोकरण जाय वेठा था । सु दोढ़ीदार गोयंनदास ने मेलीयो पण आयो न्हीं । गोयंनदासजी ने घोड़ो 1 ने जाषोड़ो ऊंट[10] दीयो सु हलकारा मालम करी । तरे म्हाराज मन में वेराजो[11] हुवा । ने फेर कछवाहा जेसा दे पोहोकरण मेलीयो तो ई देवीसिंघजी आया नहीं ने घोड़ी दे ने सीख दीवी ने कयो—म्हाराज रे तो रास रा ठाकुर केसरीसिंघजी चाहीजे । म्हांरो कांई काम है ? तरे जेसा जी आय अरज कीवी । तरे म्हाराज केसरीसिंघजी नुं फुरमायो के ठाकुरां थें जाय देवीसिंघजी नुं ले आवो । तरे केसरीसिंघजी अरज कीवी—के मारे ने देवी-सिंघजी दोढ़[12] है जीण सूं मनै न्हीं मेलाइजे[13], परंत श्री हजुर फुरमायो—के

---

1 जिन्दा रखो । 2 मरहम पट्टी करेंगे । 3 अशक्त हो गया । 4 ऐसा । 5 पन्द्रह । 6 अधिक सुसज्जित । 7 चंचल, फुर्तीले । 8 चले । 9 नाराज हुए । 10 सज्जित ऊंट । 11 नाराज । 12 तनाव । 13 मुझे नहीं भेजें ।

थारे ने उणां रे मेळ न्हीं, तो पीण वे थांरी ईसको[1] करे है ? सो थे जावसो तो देवीसिंघजी अठे आवसी । जीण सु केसरीसिंघजी चढ़ीया । घोड़ा 100 सु पोकरण गया ने उठा सु ं देवीसिंघजी सांमा आया, ने गोठ कीवी । पछे दुजे दीन डेरे मीजमानी मेली । सीरदारां रे वास्ते रसोवड़ा सु ं थाल पुरस ने म्हेलीया । पछे तीजे दीन चाकरां ने कहो—ठाकुर केसरीसिंघजी के स्वारे वळ[2] रे वासते सरबरा[3] लेण नु बुलावे तो मांरा हुकम वीना जाइजो मती ।

पछे दीन उगा बुलावण ने आया ने कयो के घोड़ा रे रातब[4] तुलावो । तरे दरोगा कयो—ठाकुरां रो हुकम होई न्हीं । तरे चाकरां ठा. देवीसिंघजी ने अरज कीवी—आज वळ तुलावण री ठा. दुवायती[5] दीवी न्हीं । तरे ठावा आदमी केसरीसिंघजी कने मेल ने कवायो—के वळ रे वासते रसोड़दार मेलो[6] । तरे केसरीसिंघजी कयो के आगे तीन जंणां रोटी खावण नु आया ज्यु ं केसरी न्हीं आयो है । ठाकुरां ने कवो जोधपुर चालो तो रोटी खावां, न्हीं तो पाछो जाब[7] दो । तरे आदमी जाय ठाकुर देवीसिंघजी ने कयो । तरे ठाकुर कयो—ठाकुर मांने डराय ने ले जावे, जद तो चालु ं न्हीं । जीणरा समाचार केसरीसिंघजी सुणिया । तरे घोड़ा जीण कराय ने कहो के प्होकरण रा ठा. आपरे घरे कीतराक दीन बेठा रेहसी । तरे देवीसिंघजी कयो—पोकरण अठे ही लादसी, वेगा आवजो । तरे केसरीसिंघजी जोधपुर आया ने अरज कीवी । तीण ऊपर श्रीहजुर सू ं पोकरण फोज वीदा कीवी । ठाकुर मद[8] में आवे है ।

जीतरे नींवाज ठा. कीलांणसिंघजी रामसरण[9] हुवा सो केसरीसिंघजी रास वाला रे बेटा खोले टीके बेठो[10] जीण सु ं नींबाज रो पटो दलजी नांवे लीखावजो ।

सो श्रीहजुर फुरमायो—के मांने पूछीयो बीना मते खोळे दीयो । सो थांने मैं पीपाड़ देवां न्हीं । आ वात केसरीसिंघजी सुणी, तरे ठाकुरां कयो—कै मारा बेटा रो अेक ही वेटो तो राजाजी लेवो । ईण ताछ कहे, नगारो दे जोधपुर सु ं चढ़ीया । तरै आसांमीया साथे ही—रास ठाकुर केसरीसिंघजी,

---

1 ईर्ष्या । 2 भोजन । 3 स्वागत, आव-भगत । 4 घोड़े का दाना-पानी । 5 इजाजत । 6 भेजो । 7 उत्तर । 8 गर्व, घमण्ड । 9 स्वर्गवास । 10 गोद बैठा था ।

जायला रा ठा. मदनसिंघजी, हाडो दलेलसिंघजी साथे सो ग्रे तीनु जणां जाय मंडोवर डेरा कीया जिणरी श्री हजुर मालम हुई तरे सिंघवी फतेचन्द ने गोयंददासजी ने मेलीयो ने कवायो—के पीपाड़ वासते थांनु कुण केवायो ? थांनु पीपाड़ मुबारक हुवो। दीवांण सिं. फतेचंदजी जाय ने पटो नींबाज रो रास ठा. ने लिख ग्राया ने ठाकुर ने पाछा लाया। पछे दीन दस सु ठाकुर ग्रापरा घर री सीख कर नींबाज ग्राया। तरै साथै ईतरा सीरदार हा—पाली ठा. जगतसिंघजी, ग्रासोप छत्रसिंघजी, भाद्राजण ठा. उदेभांणजी, भाटी दोलतसिंघजी, लवेरो। ग्रे सारा ही नींबाज भेळा हुवा ने केसरीसिंघजी सु मीलिया ने ग्रेक हुवा।

पछै रामसिंघजी सुं कागदवाई[1] कीवी। तिण री श्री हजुर में हलकारां मालम कीवी। सीरदार ग्रेक हुवा। ने रामसिंघजी सु मीलावट[2] कीवी छै। तरै म्हाराज सि. फतेचंद ने नींबाज म्हेलीयो ने कवायो के थांरो मन हुवे ज्यां ने राखो ने मन हुवे ज्यां ने काढ़ो। मारा घर में थे करसो ज्युं हुसी। पछै फतेचंदजी सीलेतरे[3] में दोय म्हीना तांई नींबाज रया। सीरदारां री खातर कर सीरदारां नु जोधपुर लाया। सु बखतसागर ऊपर डेरा कीया। तरै म्हाराज फुरमायो—के सीरदारां नु कहो जूं हवेलीयां में डेरा करे। तरे सीरदारां कयो के ग्राज काल धाय भाई मनीजे[4] है सो धाय भाई री बांह दीराग्रो[5] सो हवेलीयां में डेरा करां। तरे म्हाराज फुरमायो—जगा नु कै जाय ने वचन दे सीरदारां ने स्हेर मेलाव[6]।

तरे जगजी धाय भाई ग्ररज कीवी—मने मत मेलावो। सीरदारां री तरे[7] ग्रौर छे नै सामो फीतुर[8] हुसी। पिण म्हाराज माडे[9] मेलीयो। तरे जगजी पालखी में बेस[10] ने सीरदारा कने जावण ने त्यार हुवो सु घोड़ा 4 सोना रूपा री सागत[11] रा ग्रादमी छव वीसी वनात री खोलीयां बंदुकां वालां खास वरदार ने ग्रादमी 200 दोय सो सीलेपोसा रो पालखी दोलो गटो[12] ने चोपदार रूपारी छड़ीया रा सीलामती वोलतो वहे[13]। ने सीरदार सारा देवीसिंघ

---

1 पत्राचार। 2 रामसिंहजी से एकता की। 3 सलाह मशविरा। 4 उनका मान ग्रधिक है। 5 सहारा दिलाग्रो। 6 वचन देकर सरदारों को शहर में भेजो। 7 भावना। 8 झंझट। 9 जबर्दस्ती। 10 बैठकर। 11 स्वागत। 12 चारों ग्रोर से घेरा। 13 सलामती बोलते हुए चल रहे थे।

जो पोकरण रे डेरे बेठा था, जठे धाय भाई पावरो[1] आयो तरे बोलीया, कयो —धाय भाईजी आवे छे। तरै देवीसिंघजी कहो—भला ही आवो। ने जगत-सिंघजी चोपड़ रमता था सो असवारी सांमो देख ने कयो—बदरीजी रो पुत ईतरी जीनत कर पधारीया है सु मैं तो ईणरा वाप ने ही जाणां हां। सु अे समाचार अेक हळकारो सुणतो थो सु आप धाय भाईजी री पालखी घोड़ा री वाळ में बोली जद सारा समाचार कहा। सुण नें काळा री पुछ ऊपर पग दीयो ईतरी रीस आई[2] पींण डेरा में आयो। सीरदार ऊठ उभा रहा, मुजरो कीयो —हेटा[3] बेठां सीरदारां ऊंचा बेठण री कही, पीण सामो बैस गयो।

सो सायतेक[4] बैठ ने उठ उभो रयो। जरां सीरदारां कही—अमल लीरावो। तरे धाय भाई कयो—अमल म्हाराज सारी चाहीजे। यूं कै ने हवेली आयो ने सीरदारां कूच कीयो ने बणाड़ डेरो कीयो। तरे धाय भाई अरज कीवी थी मने मत मेलावो। तरे श्रीहजुर सुं जोधा रुघनाथसिंघजी ने चांदावत सुरतसिंघजी, सिंघवी फतेचन्दजी नु फेर मेलीया सु बणाड़ जाय सीरदारां नु कयो—थे कूच करने उरा आया सु दरवार में कांई चुक[5]।

जोधपुर रा घर में तो थे करसो जूं हुसी। ने दरवार थारो कांई केणो लोपीयो[6]? तरे सीरदारां कयो—म्हाराज रे तो जमी सांमीजी राखसी ने धाय भाईजी चाहीजे। म्हारो कांई काम छै? गोला रो कांम छे। पींण ठाकुरां पैल की जोधपुर पईल छव म्हीना लागो ने हमके तो छवां दीन हि कोय लगावां न्हीं। अे समाचार केसरीसिंघजी उदावत रास रो तकीये ऊपर हाथ पटक ने कयो। तरे रुघनाथसिंवजी कयो—ठाकुरां! जोधपुर तो राजा जी रे भाग रो छे। सो भाग में लीखीयो है सो कुण मेटसी?

तरे देवीसिंघजी कयो—राजा तो म्हारी कटारी री पड़दली[7] में छे। सु करसां जीका ही राजा हुसी। तरे वीसटालु पाछा आया ने सीरदार कूच कर भीसलपुर[8] डेरा कीया। तरे रुघनाथसिंघजी फुरमायो—अेक बार फेर जावो। तरे अरज कीवी—के फुरमावसी तो चाकर छां, फेर जावसां। पीण सीरदार

1 सीधा। 2 काले नाग पर पांव रखने से जैसा नाग को गुस्सा आता है, वैसा गुस्सा आया। 3 नीचे। 4 क्षण भर। 5 गलती, भूल। 6 कौनसी बात नहीं मानी। 7 म्यांन, खोल। 8 बीसलपुर।

गेर जवां बोले[1] सु चाकरां सु अरज करणी आवे न्हीं। सीरदारां ने आपरे लावणा हुवे तो आप पींडा पधारो सु आपरा ठाकुर है सु उरा[2] आवसी।

तरे म्हाराज बीजेसिंघजी असवार हुय ने वडोड़ा सीरदारां ने तो साथे लीया न्हीं ने चवांण सींभूदान ने नागोर री आसामीयां 4 ने आदमी 200 चढ़ीया। खवास, पासवानां सुधा आदमी 300 सु म्हाराज पधारीया, तीण री खबर लागी। तरे पीपळ वाली नाडी तांई सांमा आया ने पावंड़ा अेक सो उली कांनी घोड़ा सु उतरीया ने खासो[3] हो जीण में पधारीया। सीरदारां मुजरो कीयो, नीजर नीछरावळ कीवी, ने उठा सुं खड़ीया सु म्हाराज रो लोक तो कम थो ने खासा दोळो[4] वांरो हीज लोक घोड़ा आय गया सु वीसल-पुर रे तळाव ऊपर री बगेची वीछायत कीवी जठे वीराजीया ने राज में कसाळो[5] सो उठतो न्हीं ने सीरायचा तंबु बेगार री गाड़ीयां[6] में था सु लेर पछाड़ी रेहे गया ने सीयालो सु रेळ[7] बाजे सु म्हाराज वार-वार पूछे—सीरायत्रा खड़ा हुवा के न्हीं ? ने पाणी री रेहले[8] आवे। तरे देवीसिंघजी अरज कीवी – खांनाजाद रे डेरे पधारीजे। अठे ठंड आवे छै। तरे फुरमायो—ठीक है। तरे म्हाराज खासे बीराजीया। देवीसिंघजी पावंड़ा दसेक खासा रे जुता ने म्हाराज ने डेरे ढोलीये[9] ऊपर पधराया ने देवीसिंघजी पगचंपी कीवी।

पछे म्हाराज सु सवी राय दीनी ने पटा बही सु मंगाय ने सीरदारां ने दीवी, ने कयो—थांरी सलाह हुवे ज्यांने ने राखो। मैं तो जाणां सारां री घेराड़ी[10] चाकरी छे। सु सारा ही रो समाधांन हुवे तो आछो। हमे थे बेराजी हुवा तो मैं नागोर जाय बेठां। मारे तीन बेटा छै ज्यांने बेसाणो पीण फीतुर मत करो। दुनीया दुःख पावे, सु ठीक न्हीं।

तरे देवीसिंघजी कयो – जोधपुर आपरा भाग में लीखीयो छे। आप वीनां धणी धोर जीणरा माईता[11] में भेळ[12] ने तीर धणी[13] आय रेवे, जीण रे चाकर आपरा छां। ने पटा—बही सुंपी[14]। जरां म्हाराज फुरमायो – दोय

1 उल्टी जबान बोलते हैं। 2 नजदीक। 3 पालकी विशेष। 4 चारों ओर। 5 सामग्री। 6 मुफ्त में काम करने वालों की गाड़ियों में। 7 शीतलहर। 8 तेज बहाव। 9 चारपाई। 10 सम्मिलित। 11 माता-पिता समान। 12 मिलकर। 13 स्वामी। 14 सौंपी।

गांव थां कना सु' मांगा छां । सु मांने देणा पड़सी । ने बाकी थारी सला[1] हुवे, सु करो । तरे केसरीसिंघजी कयो–उव' दोय गांव कीसा है? सु फुरमावो । तरे कयो–कोसाणो 1 ने नारसर 1 तरे केसरीसिंघजी कयो–नारसर तो ठीक, ने कोसाणो तो बादरसिंघ सबलसिंघोत रो छे, सु उणरा बेटा कना सु' उरो लीयो[2] । दुजा चांदावतां रो हट कुण करे मारे? हजुर फुरमायो–चांदावतां रो ठीकांणो छे सु चांदावतो श्रावे । तरे देवीसिंघजी केसरीसिंघजी नु पालीया[3] बाबाजी श्ररज मती करो । श्रे दोय गांव ने बाकी रा ही ने जीव जामाखामद रा ही । जठे सु सीरदारां छे सु सीरदारां ने राजी कर डेरे पधारीया । ने दुजे दीन कूच कर जोधपुर पधारीया । माहाराज गढ़[4] दाखल हुवा ने सीरदारां हवेलीयां में डेरा कीया । पीण सीरदार कवे मेलां मे सांमी श्रातमारामजी रो काही कांम[5]? तलेटी राखो[6] । माहाराज तलेटी पधारे । श्रसवारी कर दरसण कर लेसी तरे सांमी जी श्रातमारामजी कयो—सीरदारां ने मैं साथे हीज जासां[7] । सो कीतराक दीन पछे संमत 1816 रा फागण वदी 1 सांमीजी धांम पदारीया[8] ने माहाराज ने फीकर हुई ने ग(घ)णा[9] उदास हुवा ने खीची गोरधन सीरदार ने केवाड़ीयो[10] थे हजुर श्रावो[11], म्हाराज उदास छे सु धीर-पदो[12] ने सांमीजी रो चलाणो करावो[13] तरे सीरदारां हजुर श्राया –

वीगत—ठाकुर देवीसिंघजी पोक(र)ण, ठाकुर केसरीसिंघजी रास, ठाकुर छत्रसिंघजी श्रासोप, ठाकुर भगवतसिंघजी, ठाकुर रुघनाथसिंघजी, ठाकुर जवानसिंघजी ने सीरदारां रो साथ छो, ज्यांने कश्रो । राजलोक सांमी जी री बेकुंठी रा दरसण करण ने श्रावे छे । सु थे पोळ बारे उभा रहो सु साथे नु तो ईमरती पोल बारे काढ़ ने श्राडा कींवाड़ दीया जीतरे नींबाज रा ठाकुर दौलतसिंघजी श्राया सो ईमरती पोल री बारी[14] खोल ने श्रेक चाकर ने सीरदार ने मेलीया श्रागे लवा पोळ जड़ी दीठी[15] । तरे श्रघर री डाग[16] पड़ी जीण ऊप(र) बेठ गया । श्रेक-श्रेक भावसिंघजी श्राईदांनोत कने बेठो

1 विचार । 2 वापस लिया । 3 रोका । 4 किला । 5 महलों में स्वामी श्रात्मारामजी का क्या काम है । 6 तलहटी के महलों में राखो । 7 सरदार लोग श्रौर मैं साथ ही जाएंगे । 8 स्वर्गवास हो गया । 9 श्रत्यधिक । 10 कहलाया । 11 महाराज के पास श्राश्रो । 12 धैर्य बंधाश्रो । 13 मृतक संस्कार । 14 खिड़की । 15 बन्द दिखाई दी । 16 श्रगर की लकड़ी ।

थो सु सांमीजी र वेकुंठी ले नीसरीया सु सुरज पोळ तांई म्हाराज पधारीया पछे-पछे सीरदारां मुसदी राय राखीया सु पाछा सींणगार चोकी आंण उभा रया[1]। सु अेक तो गोरधन खीची ने अेक जगजी धाय भाई उभा।

सो धाय भाई उवा वखत देख ने[2] अरज करी—म्हाराज आज ईसड़ो तत छे[3] सीरदार अेकला ईसड़ा कदे ही आवे नहीं[4]। जद आवे है जद हजार आदमीयां सुं आवे छे। सु सोधना ही ईसड़ो मुरथ कदे ही आवे नहीं[5] सो राज करण री मरजी हुवे तो फुरमाईजे। तरे गोरधन चीड़ी बोलीयो[6]—हजुर आछो हुवे, जीऊं करो[7]। बीजो मुरथ[8] थो ईसड़ो हीज मीलीयो छे। तरे माहा-राज कयो—वचन दीयो छे। तरे धाय भाई कयो—मारा बचन तो है नहीं। तरे हजुर फुरमायो—के फीतुर[9] पड़ जावसी। तरे धाय भाई कयो—फीतुर जांणे ने हुं जांणु, ईतरा डरो छो? सो राज करावो तो भाग रो तो भरोसो रखावो[10]। डर-डर ने ईतरा भेळा[11] हुवो छो। सु ईण तरे राज कुण करण देसी[12]? तरे म्हाराज फुरमायो—तूं जांणे थारी सला हुवै ज्यूं कर। तरे दोढ़ीदार गोयनदास ने कयो—तूं जाय सिरदारां ने बुलाय लाव के म्हाराज उदास घणा छे। सु आय ने म्हाराज ने धीरपदो नै लारा सु सिलैपोस रसाला रो लोक थो जिण ने जनांनी ड्योढ़ी रे तेखांना ने आणंदघणजी[13] रा मींदर हेटै[14] कोटड़ीयां छी जिणां में वैसांण दीया ने कहो—नगारखांना री पोल सूं उली कांनी[15] आवे। तरै तीनुं सिरदारां नु देखो केड़ाक हाथ घालो छो[16]। ने गोयनदासजी जाय सिरदारां ने कयो—म्हाराज उदास छै। सु थे हजुर आवो जरां रुघनाथसिंघ नाहरसिंघोत ने जवांनसिंघ सुरजमलोत तो पावंडा पांचेक आगे विदा हुवा। ने लारा सु देवीसिंघजी केसरीसिंघजी, छतरसिंघजी बहीर हुवा ने भगोतसिंघजी कयो—हुं सांमीजी री माटी[17] सुळ कराय ने[18] आवुं छुं।

---

1 सीणगार चौकी (महल में स्थान विशेष) के पास आकर खड़े रहे। 2 अवसर पाकर। 3 आज ऐसा अवसर है। 4 सिरदार लोग इस प्रकार अकेले कभी नहीं आते हैं। 5 सो ढूंढने पर भी ऐसा अवसर कभी भी नहीं आता। 6 चिढ़कर बोला। 7 जैसा उचित समझें वैसा करें। 8 अन्य अवसर। 9 दंगा-फसाद, संघर्ष। 10 भाग्य का तो भरोसा रखो। 11 संकुचित। 12 इस तरह राज्य कौन करने देगा। 13 आनंदघन। 14 नीचे। 15 नजदीक, पास में। 16 प्रहार करते हो। 17 पार्थिव शरीर। 18 दाह संस्कार करवा करके।

तरै ग्रे सिरदार वहीर हुवा। तरै नगारखांना री पोळ में ग्रावतां ग्रागे लवां पोळ जड़ी[1] देखी तरे देवीसिंघजी कयो--बाभाजी ग्राज रा दिन भयांनख(क) डरावणो लागो छे। तरे केसरीसिंघजी कयो बाभा थांने तो सीतंग छे। ग्रापां सु करै जिण रो मुंढो कीसड़ो ? ईतरी बात हुई ने जवांनसिंघजी, रघ-नाथसिंघजी ग्रागै पावंडा पांच-सात री छेती[3] सुं वेवै। सु जनांनी दोड़ी सुं ग्रागा हुवा ने दोनु कांनी सुं ग्रादमी उठीया[4] सु पकड़ताईज हुवा ने कयो— श्री दरबार रो हुकंम है। तरे केसरीसिंघजी तो हेठा बेस गया ने छतरसिंघजी देवीसिंघजी गोतागोत[5] करी, जीतरे गोयनदासजी ग्रावे था सु ईणां ने पकड़न री ठीक नहीं जिण सु केणी ग्रायो। रे मत करो मत करो। तरे धाय भाई जगजी सीणगार चोकी उभो थो, सु सुणीयो। ने राजाजी ने कयो--महाराज! गोयनदास सिरखो[6] ग्रादमी केवे जरे लोक ग्रलगो हुय जाय। तरे चुक[7] बीगड़ जावे सु ग्रो ही सिरदारां सुं मिलीयोड़ो छै।

तरे गोयनदासजी ने ही पकड़ केद कर दीया। देवीसिंघजी री तरवार थी जिण ऊपर दस जणां रा हाथ पड़ीया ने जोर कीयो सु मूठ री वाटकी[8] नीकल गई। तीनुं सिरदारां ने बांद[9] दीया ने जवांनसिंघजी हजुर ग्राया डरू-फरू[10]।

तरे म्हाराज फुरमायो--ठाकुरां! थें यूं क्यूं हो? ग्रै सिरदार तो मगरूरी[11] मै घणा छा ने थांरै ग्रबरोसो[12] हुवै तो मांरी तरवार राखो। जवांनसिंघजी ने तरवार भलाई[13]। तरे जवांनसिंघजी कयो--राज री मरजी सीवाय हालै[14] जिण मै ग्रा हुवै ईज। तरै श्री म्हाराज फुरमायो--ठाकुरां ग्रै सिरदार दुजो राजा थापै छा[15]। जरां कांई करां ? ग्रा विचारी छै ने देवी-सिंघजी तो मै ग्रभैसिंघजी रा बेटा सु भूंडा[16] हुवा, जिण रो पाप पुगो छै। नें छत्रसिंघजी बोलीया--नागोर रा धणी नु जोधांणनाथ कीयो[17]। तरै मांरा

---

1 दरवाजे बन्द। 2 सनक। 3 फासला, ग्रन्तर। 4 खड़े हो गए। 5 उछल-कूद। 6 सरीखा। 7 छल। 8 तलवार की मूठ की कटोरी। 9 बांध दिया। 10 जवांनसिंघजी महाराजा के पास डरते-डरते ग्राए। 11 घमण्ड। 12 ग्रविश्वास। 13 पकड़ाई, थमायी। 14 महाराज की मर्जी के विरुद्ध ग्राचरण करे। 15 दूसरे राजा को स्थापित करना चाहते हैं। 16 बुरा। 17 नागोर के स्वामी को जोधपुर (मारवाड़) का स्वामी बनाया।

गला मै बनणा[1] पड़ै ही पड़ै, पण असलां ने नहीं मांनै पोला[2] ने मांनै छै। सु राज गमाय देसी। तरै धाय भाई कयो—तु रा(र)नकुड़ोया रो धणी चार हजार रो पटायत जिण ने आसोप रो धणी कीयो नै सिरायत[3] कीयो जद तु बोले छै ने फेर भुंडो बोले छै। धाय भाई मूछां उखलाय दिवी ने बांसां सु कुटायो[4]। पछै तीनां ने उठाय नै नगारखांना री ओरीयां में जुदा-जुदा जड़ दीया[5]। हथकड़ीयां, बेड़ीयां, गला मैं तोखां[6] घलाय दीवी। उण समै रो दुहो—

केहर देवो छतसाल दोळो राजकंवार।
मरते मोडै मारीया चोटी वाला चार॥

रास ठाकुर केसरीसिंघजी रा बेटा दोलतसिंघजी नु नींबाज खोळै दीया था सो ईमरती पोळ कने आया था। तरै आगे लवापोळ जड़ी दीठी तरै बारै बेठा था। सु गांह बेदो[7] सुण नै पाछो नीसरीयो तरै भावसिंघजी कह्यो—बाबा थे सिरदार छौ, उभा रहौ। तरै उरड़[8] ने नीसर गया। तरै भावसिंघजी जांमा री चाल[9] पकड़ी सु जांमो उदड़[10] गयो ने हालीयो जाय[11]। तरै भावसिंघ कटारी काढ़ी तरै दोलतसिंघ पेसकवज बायो[12] सु भावसिंघ रा हाथ रे लागो ने भावसिंघ कटारी वाही सु कवरवंडो फाट ने आंगल अेक कड़ीयां मैं गोचो[13] लागो। तरै भींतरि मोर दे उभो रह्यो[14]। चाकर साथै थो तिण ईमरती पोळ चढ़ ने बारे लोक उभो थो जिणां में कूद पड़ीयो। पछै दोलतसिंघजी री खबर मांह[15] पड़ी तरै लोवा पोळ[16] खोल ने दोलतसिंघजी ने मांह[17] लीना ने वागो लोही[18] सु भरीयो दीठो। तरै म्हाराज रीस कर ने फुरमाई--के ईण रे कीण दीवी[19]? दोय वार फुरमायो। तरै धायभाई अरज करी कै ईतरी रीस फुरमावो हो सु उठे कीसा लाडु उछलता हा? वटीजता हा। ईणां रो चाकर नास ने परो गयो[20] ज्युं ओ ही परो जावतो सु पकड़ ने

---

1 रस्से (बंधन)। 2 राजपूतों की अनौरस संतान। 3 उच्च पद दिया। 4 लाठियों से पिटवाया। 5 नगारखाना की कोठरियों में अलग-अलग बंद कर दिया। 6 कैदियों के गले में डालने वाला बंधन विशेष। 7 उपद्रव। 8 जल्दी। 9 जामा वस्त्र का निचला हिस्सा। 10 सिलाई टूट गई, उधड़ गया। 11 चलता गया। 12 चलाया। 13 घाव। 14 दीवार के सहारे पीठ लगाकर खड़ा रहा। 15 अन्दर। 16 लोहा पोल। 17 अन्दर। 18 खून। 19 इस पर किसने चोट की? 20 भाग कर दूर चला गया।

लायो हैं । तीरण री खातर फुरमाई । सो तो दीठी पीरण रीस कांई फुरमावो? तरै आप अबोला[1] रह्या । पछै फुरमायौ - सुरा खीची रै डेरै ले जाय ने पाटो बंदावो । सो दोलतसिंघजी रे तो पाटा बंधीया ने जावतो हुवो ।

दुजे दीन म्हाराज फुरमायो—सीरदारां ने थालीयां ले जाय ने जीमावो । तरै रसोवड़ा सुं थालीयां 3 पुरस चाकर ले गया ने सोलेपोस वीस साथै जाय ताला खोलीया ने कयो–हजुर सुं थालीयां मेली है सो जीमो । तरै केसरीसिंधजी छतरसिंघजी तो जीमरण लागा ने देवीसिंघजी कयो—पांणी लावो जीउं हाथ धोवां । तरै कळसीयो[2] भर नै दीयो । तरै कह्यो हाथ में पांणी लेने कह्यो—फेर अन पांणी दुजै जनम खासां । यूं कहो ने जीमीया नहीं । ने बेड़ीयां जड़ ताला जड़ दीया । नै बारै ईमरती पोळ रै सीरदारां रै साथ रा उभा था, जीग्रां ने कह्यो—डेरे जावो नहीं तो ऊपर सूं पथर पड़सी । तरै साथ[3] गढ़ सुं उतरीया ने धायभाईजी री हवेली आडा[4] सीलैपोस दोय सौ 200 उभा था ने तवैले चवांरण सांईदास सीलैपोस अेक सो लेर उभो थो, ने म्हाराज जांणीयो अे सेर[5] लुटसी ने साथ देवीसिंघजी की हवेली मै डेरो घोड़ा खवास लेर नीसरीया । तरां छतरसिंघजी रा बेलीग्रां[6] कह्यौ–मारा तो घोड़ा खवास हवैली मै ईज छै । तरै कयो—थांने कुरण खावे छे ? खवासजी ने ले ने लेर नींबाज री हवेली आंरण भेळा हुजो के उठै केसरीसिंघजी रो ही साथ आय जावसी । ने मनसोवो[7] कीयो के भाखर ऊपर हालो । सुं उठे सब जासां ।

तरे दोलतसिंघजी भाटी लवैरा रो बोलीयो—भाखर ऊपर कीतरीक वार रेसां[8] । गढ़ ऊपर सुं गोलां सु मारसी । तरै साथरां कही—कठै जावां ? दरवाजा जड़ीया छै । तरै दोलतसिंघ भाटी कयो—हजार आदमी हां, सो दरवाजे हालो । ताला तोड़ नीकल जासां ।

तरै सोझतीयै दरवाजे आया । ताला झाड़[9] नीकल गया । पाली गया ने पाली रो ठाकुर जगतसिंघजी घरे ही हा ।

---

1 चुप । 2 लोटा । 3 साथी । 4 सामने । 5 शहर । 6 मित्र, साथी । 7 इरादा । 8 कितने समय तक रहेंगे । 9 तोड़कर ।

पछै देवीसिंघजी दीन छव हीज जीवीया[1], सनीपात[2] हुय मर गया। छठै दिन मैतर[3] जायगा जांडण नु[4] आयो। तरै सीलेपोसां जाय ताला खोल ने कीवाड़ उगाड़ै[5] तो आगै बेड़ीयां, हथकड़ीयां जंझीरा जड़ीया था सु अलगा पड़ीया[6] छै। तरै सीलेपोसां डरतां कीवाड़ आंछे पाछा खांचीया[7] सो अेक सीलेपोस रे अंगूठो बीच मैं आय गयो सु तुट ने आगो जाय पड़ीयो। ने पाछो आडो तालो झड़ दीयो[8]। दरोगां ने जाय ने केयो के देवीसिंघजी तो छूटो बेठो छै। तरै मालम कीवी। तरै फुरमायो—सेंठी बेड़ीयां जड़ावो[9]। तरे तरवार ले आदमी वीस होय ने कीवाड़ खोलीया सु आगे देखै तो मुवा पड़ीया[10]। तरै मालम हुई। तरे फुरमायो—गढ़ री सफील ऊपरां कर उतार दो।

ने आऊवा रा जेतसिंघजी कुसलसिंघजी रा ने कहो सु दाग देवे। तरै जेतसिंघजी रा ठावा आदमी[11] जाय रावटी नाडी दाग दीयो[12]।

लोक कहे देवीसिंघजी रे रामदेवजी री ईसट[13] थो सु उणां बेड़ीयां जंजीरा हथकड़ीया तोड़ी।

नींबाज रा दोलतसिंघजी ने छोड़ दीयो।

आसोप रा छत्रसिंघजी मास 1 अेक ने चल गया[14]।

रास रा केसरीसिंघजी वरस 3 कैद रया पछे चलीया।

राठोड़ कंनीराम रांमसिंघोत नु बीकानेर सुं बुलायो।

श्री जी दरवाजा सुधा सांमा पधारीया ने आसोप वडलु पटे लीख दीवी।

पछे सबलसिंघ देवीसिंघोत पोकरण सुं फोज कर पाली आया ने सांमसिंघजी आगे भेळो करीयोड़ो थो। देवीसिंघजी री खवास पाली में सती हुई। पाली में फोज हजार दस भेळी हुई[15]। चांपावत, कुंपावत, उदावत, भाटी,

---

1 छः दिन तक ही जीवित रहे। 2 सन्निपात बुखार हो गया। 3 मेहतर। 4 सफाई करने के लिए। 5 किंवाड़ खोले। 6 अलग पड़े हुए थे। 7 जोर से वापस खींचा। 8 दरवाजा बन्द करके ताला लगा दिया। 9 मजबूत बेड़ियां जड़ दो। 10 मृत पड़े थे। 11 खास-खास आदमी। 12 दाह संस्कार किया। 13 इष्ट। 14 गुजर गए। 15 इकट्ठी हुई।

जेसा, ईतरा भेळा हुवा ने जोधपुर सु धाय भाई वीदा हुवो। लोक हजार पांच सु डेरा बारे कीया[1]। नागोर सु फोज हजार 2000 आसोप कायम कर[2] ने बडलु आया। बडलु गोलीयां दीन 4 बाही[3] पछे रात रा नीकल गया। बडलु कायम कर फोज पीपाड़ आई ने धाय भाई कूच कीयो। तरे सबलसिंघ कयो—राड़ करसां। जरां जगतसिंघजी कयो--काथा[4] मती हुवो। थोड़ा धाय भाई ने आगो लो[5] पछै राड़ करसां ने तांड़ो[6] लूट लेसां।

पछं मुढ़ा आगे कूच कीयो, ने लारे धाय भाई री फोज सो छोटा पटायत था जीणां रे गांवां सु खेचल[7] कीवी। तरे सबलसिंघ कनां सु वीखरता गया ने धाय भाई कने आवतां गया जीणां ने धाय भाई पलेटता[8] गया। जीण सु दोनु फोज प(ब)रावर[9] तुलण[10] लागी। ने चांपावता जालोर रा प्रगना में डेरा कर राड़ करसां। तरे पाली रा जगतसिंघजी फेर कयो—बापु आगता[11] मती हुवो। मुवा सु वीखो पार नह पड़सी[12]। उठीने तो जोधपुर रो सर[13] छे, सु मरसी जीणां रा टाबरां ने मोटा कर लेसी[14] ने आंपणा साथ में मरसी जीण री मोकली कसर पड़सी[15]। आपा ने वीखो करणो छे[16]। सु जीण सु कजीयो हुवे न्हीं। जोधपुर में ठाकुर भाखरसिंघजी रायपुर रा रो कयो—पीपाड़ फोज छे जीका मेळो[17] ने 2 तोपां भारी मेलो सु जाय ने नींबाज खाली कराय देसु। जीण सु फोज वीदा करी। तोप बागण, नागण, अडग-बाण ने दोय आठीया[18] मेलीया सु फोज नींबाज लागी।

अेकण कांनी मोरचा लागा ने गोला बाव‍े ने केसरीसिंघ भाखरसिंघोत आदमी 700 ले ने आयो सु फोज रो जावतो करे[19]।

जीतरे वालु जोसी जेपुर गयो थो सु पाछो गीरतो[20] आयो। सु मेड़ता में लोक न्हीं[21]। दीखणीया रा घोड़ा 100 पींडत कने। वालुजी जोधपुर आया

1 बाहर डेरे किए। 2 निश्चित कर। 3 चार दिन तक गोलो-बारी की। 4 उतावले मत होओ। 5 धायभाई को थोड़ा नजदीक आने दो। 6 साज-समान। 7 परेशान किया। 8 शामिल करते गए। 9 बराबर। 10 तुलना। 11 उतावला। 12 मरने से संकट नहीं टलेगा। 13 समुद्र, सम्पन्नता। 14 जिनके बच्चों की परवरिश कर लेंगे। 15 अत्यधिक क्षति होगी। 16 विपत्ति का सामना करना। 17 भेजो। 18 छोटी तोप विशेष 19 व्यवस्था, देखभाल कर रहे थे। 20 लौटकर। 21 राजकीय अधिकारी आदि।

ने अरज करी—गरीबनवाज चाकर छे। जीकाने तो पछे ही समजाय देसां नें मेड़तो सुनो पड़ीयो छे सु उरो लो[1]। रामसिंघजी नु सीरदार मेड़ते लावे छे। परबतसर सुं कुच कर ने हरसोर अड़ बेठा छे[2]। रीयां खाली कर दो तो मेड़ते आवां। सो रांमसिंघजी मेड़ते आय ने सीरदार रांमसिंघजी रा चाकर छे। सु चेलो[3] भारी पड़सी। तरे बालु जोसी ने बीदा कीयो। सु नींबाज फोज में पंचोली रामकरण ने खीची सीवदांन कने आय ने मनसोबो करने घड़ी च्यार दीन थो जद मोरचो उठाय ने पड़ीयार जसा ने कयो—तोपां मोरचा सुं लावो। तरे मोरचो सु सीरकाई[4] ने माहे[5] सु लोक नीकलीया सु मोरचा में छाया करी सु लगाय दीवी ने गोलीयां री भाटक-भूटक हुई। भाखरसिंघ तो चंदोल रयो ने फोज रो कूच हुवो सु जेतारण आया। सु डेरा बोज तोपा तो जेतारण राखी ने छड़बड़ी फोज[6] हुय ने मेड़ता ने खड़ीया[7] सु रात आधी रा गांव कालु कने आय नीकलीया। सु कालु में फतेसिंघ रामसिंघोत थो तीण नें खबर हुई के फोज मेड़ते जाय छे। तरे आदमी दोड़ायो[8] सु पींडत ने मेड़ते जाय ठीक दीवी[9]। सु ठीक दीया कांई हुवे[10]। तुरत लोक कठा सुं आवे? जीतरे फोज आई सो ओडावारी[11] आया सो नीसरणी[12] न्हीं ने चढ़णी आवे न्हीं। तरे कयो—कीणी सीरदार रो मोचो[13] हुवे तो लावो। तरे सारा ही कयो—मोचो तो जेतारण है। तरे रोहीणा रा सीरदार मदनसिंघजी रे ऊँट में मोचो थो सु लाया ने सफील ऊपर चढ़ीया। चढ़ ने ओडावारी नींबडो[14] थो जीण रे डाला में बदणा घाल[15] फोज चढ़ी ने पींडत नास ने मालकोट[16] में बड़ गयो। पछे देराणी दरवाजो खोल ने फोज रा घोड़ा, ऊंट माहे लाया।

म्होर अेक मेड़तो लुटीयो पछे म्हाराज बीजेसिंघजी री आंण दुवाई[17] फीरी ने नागोर नु कागद मेलीयो। मेड़तो कायम कीयो छे। सु सोर, सीसो वेगो मेलजो[18] ने देसवाल थांणो छे ने ग्हेलोत लालजी रे पीण लीखीयो

1 अपने कब्जे में करो। 2 परबतसर से पस्थान कर हरसोर नामक गांव में अड़कर बैठ गए। 3 पलड़ा। 4 खिसका करके। 5 अन्दर से। 6 तोपों से रहित सेना। 7 चलाया। 8 दौड़ाया। 9 खबर दी। 10 समाचार देने मात्र से क्या होवे। 11 छोटी खिड़की। 12 सीढ़ी। 13 किले की दीवार पर चढ़ने का उपकरण विशेष जिसमें रस्से को पकड़ कर चढ़ा जाता है। 14 नीम का पेड़। 15 रस्से डालकर। 16 मेड़ता का किला। 17 शासन की घौषणा। 18 गोला-बारूद-सीसा आदि युद्ध सामग्री जल्दी भेजना।

साथ[1] ले वेगा आवजो। लालजी कने सीलेपोस थोड़ा था देसवाल रा धणी ने कयो—सु पाळा आदमी 40 चालीस ले लालसिंघ बादरसिंघोत आयो सु सारा प्हेली दीन वदते आंण प्होतो[2] ने सारा चांदावता रा गांव प्रवाणा[3] मेलीया ने लीखीयो—थारो पासो[4] छे, ने राज री चाकरी छै। खरची दरबार सु देसी। तरे ईतरा आया–ठाकुर सीरदारसिंघजी नींबड़ी रा, रा. बखसीराम नोखा रो, रा. सुरतांणसिंघ कूंपड़ास रो। दुजा ही भाटी भेळा हुय कर ने आदमी 700 सात सो लेर मेड़ते आया। ने रामसिंघजी हरसोर था सु ठीक हुई[5] के मेड़तो उरो लीयो[6]। तरे मेड़तीया केसोदासोत सुरतांणोत, माधोदा-सोत चांदावत रायमलोत, गोयनदासोत, रुघनाथसिंघोत सारां ने भेळा कीया। फोज हजार 7000 सात हजार भेळी हुई ने कूच कीयो।

ऊठी सुं चांपावत उदावत दस हजार फोज सुं सांमल हुवा। कूच कर मेड़ते आया। मालकोट कने डेरा कीया ने मेड़तै घेरो दीयो। सैर में पांणी रो कसालो[7] ने वैसाख रो महीनो, पांणी नहीं तरै तीजे दीन हलो करण[8] रो मनसोबो कीयो सु केसोदासोत ने रुघनाथोत सुरतांणोत ईणां ने कह्यो—थै ओड़ा वारी हलो करो ने चांदावत माधोदासोत, रायमलोत जीवण खां जमातदार ओ कुंडल[9] में आग्र हलो करसी सो कवरां (कमरां) बांध ने पोर 1 ओक रात गयां जीम ने[10] बहीर हुवा सो जुमा मसीत[11] मेड़तीया आंण बेठा ने हलकारां आंण खबर दीवी के पाछली घड़ी चार रात रैसी ने मालकोट में तोप छूटसी। तरे दोनां कांनी हलो हुसी तरे मोरचा केवाय दीयो के आज री रात हलो हुसी सो सारा सिरदार कमरां बांधीयां जावता सुं बेठा रहीजो ने रांमकरणजी सीवदांनसिंघजी घोड़ा साठ (60) सुं चोकी फीरे ने ओक केसरीसिंघ भाखरसिंघोत घोड़ा 80 असी सुं चोकी फीरे ने कह्यो—जठै ही हलो करो जठे ही मने आयो देखजो ने जीवण खांने तो रांमसिंघजी आप कने राखीयो सो मालकोट री बुरजा ऊपर जाय बैठा ने फतेसिंघ सेरसिंघोत ने कयो चांदावत ईसको[12] करे? तिण सु तोने[13] मेलीयो छै। पिण मांरी

---

1 फौज। 2 पहुंच गया। 3 परवाना। 4 दांव, मौका। 5 मालुम हुई। 6 कब्जा कर लिया। 7 अभाव। 8 हमला करने का। 9 तालाब का नाम। 10 रात्रि का भोजन करके। 11 जुमा-मस्जिद। 12 ईर्ष्या-द्वेष। 13 तुम्हें।

सोगन[1] छै। कुंडल री बावड़ी बारै नीकलजो मती। थांरे गोली लाग जाय तो हुं कांही करूं ? हलो[2] चांदावत आपे ही करसी।

पछै पाछली रात घड़ी 4(च्यार) रही ने मालकोट मे रेखलो[3] छुटो ने मेड़तीयां वेठा था सु वांकीयो[4] वजायो ने सीदु[5] दीरायो ने ओडाबारी[6] ऊपर हालीया। ओडाबारी माथै मोरचो गेलोत लालजी हा, जीणां कांनी आदमी 35 पैंतीस ने चांदावत दलेलसिंघ देसवाल रो जीण कनै आदमी 40 चालीस दोनुं डेरा मै आदमी 70 जांमकीयां[7] सीलगाय[8] ने उभा रहा ने लालजी कयो– बंदुकां पेली खाली कीजो मती। नेड़ा[9] आवे तरे भेळा हुजो ने वेतो होले[10] सीदु दीरावतां आवे हा सु पांवड़ा 100अेक सो ऊपर आया तरै गोलीयां छुटी सु मीनखां रो सांथरो[11] हुयग्यो। पीण सफीलतांई आय नीसरणीयां[12] तीन खड़ी कीवी जीण ऊपर चढ़ीया। सु बरछीयां रा ने तरवारां रा वोचा[13] दे ने पाछा कीया ने कुचामण रो ठाकुर घोड़े चढ़ीयो उभो थो तीण रे साथळ[14] रे गोली लागी, देसवाली राठोड़ी स्वाई रा हाथ री लागी। तरे पाछा वळीया ने नीसरणीया वारी ऊपर पड़ी रही पाछा सोगास कने जाय उभा रया ने मांय सुं[15] वेली उतरीयां माहे खींच लीवी ने कुंडल कांनी हलो कीयो[16] सु कुंडल री बावड़ी सु उठीया सु फतेसिंघ सेरसिंघोत ने महाराज रांमसिंघजी दोय आदमी मेलीया सु माधोदासोतां नु वरज राखीया[17] ने कयो—थे वावड़ी बारै नीसरजो मती[18], दोडण वाळा घणाई छै[19]। चांदावत वीसनसिंघ तो ईणा ने ले नै फतेसिंघ स्यामसिंघोत ले ने घोड़ीयां सु नीसरणीयां कुंडल में भुरज[20] रे खड़ी कीवी। सु भुरज मे मोरचा चांपावत कायमसिंघ गागुरड़ा रा धणी रो छे। चोकी फीरता था। जीके पीण आय गया ने गोलीयां छुटी सु चांदावत दोय(2) कांम आया[21] ने फतेसिंघ खाई ऊपर उभा, तरे भवांनी-सिंघजी सेवरीया रा कयो–थे सारा रींगता[22] तो वावड़ी बारै नीकलीया न्हीं ने थे कांई मुदे[23] अेकला मरो छो। मादो(धो)दासोत तो राजाजी ने वाला[24]

---

1 मेरी सौगन्ध है। 2 हमला। 3 छोटी तोप। 4 तुरही विशेष। 5 जोश दिलाने वाला राग। 6 छोटा दरवाजा विशेष। 7 पलीता। 8 सुलगा करके। 9 नजदीक। 10 धीरे। 11 देहान्त। 12 सीढ़ियां। 13 धक्का। 14 जंघा। 15 अन्दर से। 16 हमला किया। 17 मना करके रखा। 18 बावड़ी के बाहर मत निकलना। 19 भाग-दौड़ करने वाले बहुत हैं। 20 बुर्ज। 21 मृत्यु को प्राप्त हो गए। 22 रेंगता। 23 उद्देश्य, आधार। 24 प्रिय।

पीण घर रा नु तो सकोई वाला छं[1] । तरै भ्वानीसिंघजी धकेल ने पाछा बावड़ी ले गया । हला दोनु ही काचा[2] पड़ीया ने दुजे दीन म्हे[3] पीण हुय गयो सु पाणी दीन 10 रो आय गयो ने धायभाई कने कासीद[4] पीण मेळीयो—"मेड़ता में मां कने लोक थोड़ो छे ने समान पीण कोय न्हीं[5] । ने रांमसिंघजी फोज ले दोळे फीरीया छे सु यांरी ऊपर वेगो कीजो[6] । सु धायभाई चांपावतां लारे छो सु ईणां ने धबाया[7] सु जालोरी में वाड़ दीया ने पाछो गीरीयो के मेड़ता रो ऊपर करणो ।

चांपावत तो घणो जोर करसी तो[8] दस गांव बीगाड़सी । पीण मेड़तो सेंठो[9] कर ने ईणां ने ही समझाय लेसु ।

यूं वीचार ने कूच कीयो सु छाक मे थकी आंण छझाक डेरा कीया ने रांमसिंघजी ने हलकारा खबर दीवी—के धायभाई आयो । तरे रांमसिंघजी सारा ही सीरदारां ने भेळा कर मीसलत कीवी[10] । तरे सीरदार कयो—धाय भाई कने तोपखांनो छे । मांयला वारै पीण नीकलसी[11] सु कजीयो रास आयो न्हीं[12] । राड़ कर नीसरां जद आछो लागे न्हीं । सु फेर दीखणीया ने लासां[13] । ने पेलके जमी लीवी जुं फेर उरी लेसां[14] । ओ मनसोबो[15] कर ने प्रभाते कूच कीयो सु भेरूंदे जाय डेरा कीया । ने सीरदार आप-आप रे घरे जाता रया । नै धायभाई गांव नीलीया डेरा कीया ने पाधरो[16] प्रवतसर ने कूच कीयो ने रामसिंघजी प्रवतसर डेरा कीया । सु जालमसिंघ फतेसिंघ सेरसिंघोत ने फते-सिंघ स्यामसिंघोत दोनुं आसांमीया माधोदासोत री ने आसांमीयां 4 चांदावतां री रही । ने धायभाई नेड़ो[17] आयो तरे जालमसिंघोत बात करने धायभाई कने उरा आया[18] । भेरूंदो 1, थावळो 1, सेवरीयो 1—ओ गांव पटे दीया

---

1 सब कोई प्रिय लगते हैं । 2 बेग्रसर । 3 मेह, वर्षा 4 संदेशवाहक । 5 मेड़ता में मेरे पास फौज कम है और साज-समाज भी नहीं है । 6 सो इन पर (रामसिंह पर) हमला जल्दी करना । 7 दबाल डाला । 8 अपनी अधिक से अधिक शक्ति लगायेंगे तो । 9 मेड़ता पर मजबूत कब्जा करके । 10 विचार-विमर्श किया । 11 अन्दर वाले भी अब खुलकर पूरी शक्ति से बाहर आ जायेंगे । 12 यह लड़ाई इनके अनुकूल नहीं रही । 13 दक्षिणियों (मराठों) की फौज को लावेंगे । 14 जैसे पहले जमीन पर कब्जा किया था वैसे ही फिर वापस ले लेंगे । 15 इरादा । 16 सीधे । 17 नजदीक । 18 वापस आया ।

हजार 35,000 पेंतीस री रेख[1] पटे दीवी। ईंदरसिंघ खेरवा रो ठाकुर चाकर रयो। जोरावरसिंघ करमसोत ने चाकर राखीयो। खींवसर रा पटा स्वाय[2] डांवरी गांव जनाणो, खुड़खुड़ो, कजणाऊ 2 पुनासर, थावलो, पाचोड़ी सेगुराणी वाळ[3] ईतरा गांव रेख हजार 60,000) साठ री कर दीवी, ने गीरावड़ी सु नीकर जोरावरपुरो बसायो। धायभाई केरी आय डेरो कीयो। ने रामसिंघजी कूच कर ने रूपनगर गया। धायभाई प्रबतसर कायम कीयो[4] ने कयो—फतेसिंघ स्यामसिंघोत सु हेत हुवे[5] तो समाचार दो। चाकर राखसां। तरे भगवतसिंघजी फतेसिंघजी री मारफत[6] बात कर चाकर रया हजार 25,000) पचीस री दीवी। ने जीला रा गांव सारा ही दीया। प्रबतसर धायभाई कने आय डेरो कीयो ने रायण ठा. ने बोरूंदो रो सायबसिंघजी ने चाकर राखीया। ने मेड़तीयो केसोदासोत सुरतांणोत रुघनाथोतां रो जाव[7] हुतो थो जीतरे चांपावत गांव गीड़ता बीगाड़ता[8] सोजत आया ने धायभाईजी ने आय ने हलकारा खबर दीवी तरे पं. रामकरण ने वीदा कीयो। प्रबतसर सुं सीरदार साथे गयां तीणां री वीगत—

1 राठौड़ पीरथीसिंघ फतेसिंघोत, चांडावळ
1 राठौड़ पाड़सिंघ जेतावत, बगड़ी
1 राठौड़ मोबणसिंघ कुंपावत, चांदेळाव
1 राठौड़ फतेसिंघ स्यामसिंघोत बळूंदो
1 राठौड़ लालसिंघ रायमलोत रायण रा
1 रा. सायबसिंघ वीसनदासोत बोरुंदो
1 रा. केसरीसिंघ भाखरसिंघोत छीपीयो
30 नागोर रा पटायत आसामीयां 30
दुजी ही छोटी-मोटी आसामीयां वीदा कीवी।

धायभाई मारोठ में अमल कीयो[9] ने पं. रामकरण कूच कर मेड़ते आयो ने मेड़ता सुं कूच कीयो सुं तीजां[10] ऊपर केसरीसिंघजी सीख कर रायपुर

---

1 कर विशेष। 2 अतिरिक्त। 3 वापस लेकर। 4 कब्जा किया। 5 मित्रता हो तो। 6 द्वारा। 7 कुए के आस-पास की कृषि भूमि। 8 लूटपाट करते-करते। 9 मारोठ में रुके, विश्राम किया। 10 तीज-त्यौहार।

गया । कयो—बीलाड़े आंण भेळां हुसां[1] । ने फतेसिंघजी सीख कर बलुंदे आया । कयो—स्वारे बीलाड़े आंण भेळा हुसां । सु पोर अेक रात गया घरे आया ने प्रबात[2] रा उदावतां नींबाज सु चढ़ीया । असवार सात वीसी (140) ने पाळा[3] 200 सु । ने आ जांणी फतेसिंघजी तो घरे कोई न्हीं ने बलुंदे रो धीत[4] ले आयां सु प्रभात रा वीत[5] आखरीया[6] मांय सु लीयो तरे सीरडी[7] हुई । ने ठाकुर फोज मैं चढ़ण ने त्यार[8] हुवा था । घोड़ा जीण हुय गया था । घोड़ा 11 कने था सु सीरडी हुई तरे चढ़ खड़ीया ने आगे गया ने फोज नीजर आई । तरे कयो—हमे कांई कीयो चाहीजे ? तरे गुमांनसिंघजी अखावत कहो—कजीयो कीया वीना वीत छुटे न्हीं । तरे पागड़ा जोर करने बारे ही असवार भीळीया[9] सु जीकां दीना रो फतेसिंघ सांवत ने साथे वेली जीके ही सीव रा गण[10] हुवे जीसड़ा कांकण हथा सो वीत छुड़ाय लीयो ने सात वीसी असवारां ने बाजा[11], कुड़ी में वाड़ दीया, ने वीत ले पाछा आया ने पंचोली रामकरण रा डेरा भाख हुआ ने सोजत सुं चांपावत चढ़ीया बीलाड़ो लुटण ने सु दीन उगां प्हेलां जेतीवसरा मारग में लुंण[12] रा आगर[13] छे, जठै आय घंबीया[14] ने असवार 200 नु आडा[15] चाढ़ीया[16] के थे जाय ने वीत घेरो । सु हाकम[17] बारे आवसी तरे मार लेसां ने स्हेर लुट लेसां । तरे असवारा आंण वीत घेरीयो[18] ने सीरडी हुई ने अेक असवार रामकरण री फोज सामो[19] मेलीयो । बीलाड़े फोज आई छे सु ऊपर करो[20] तो वेगा आवो सो कालाउना[21] फोज आई ने म्हे ओसर गयो[22] जीतरे उभा रयां । जीतरे फेर असवार आयो कहो—बीलाड़ो लुटसी के वेगा आवो । तरे ईण घोड़ा खड़ीया जींतरे सींघवी जेठमल ने खीची सीवदांन चढ़ीयो सो असवार 100 ने पाळा 100 ले ने सो लुंण री आगरां कने ले गया ने रामकरण बीलाड़े बुजीयो[23] तरे कयो के जेठमल सु जगड़ो हुवे है तरे अे ही घोड़ा बड़गड़ाय[24] ने गया । लोक तो म्हे सुं ने नदी सुं लारे

---

1 विलाड़ा आकर इकट्ठे होंगे । 2 प्रभात, प्रातः । 3 पैदल सेना । 4 धन, वित्त (मवेशी) । 5 वित्त । 6 मवेशियों के एकत्र होने का स्थान । 7 पुकार । 8 तैयार । 9 भिड़ गए । 10 भगवान शिव के गणों के अनुरूप । 11 एक सौ चालीस असवारों पर जोरदार आक्रमण किया । 12 नमक । 13 ढ़ेर । 14 रुके । 15 आडा मार्ग । 16 प्रस्थान कराया । 17 अधिकारी । 18 पशु धन । 19 तरफ । 20 पीछे से आक्रमण करो । 21 गांव विशेष । 22 वर्षा प्रारम्भ हो गई । 23 पूछ-ताछ की । 24 दौड़ाकर के ।

तुट[1] रयो ने असवार 500-छव सौ सु गया ने नगारो वाजीयो[2]। ने चांपावत नगारो वजाय ने खड़ीया सु आगर रा गला[3] सु नीसांण नगारा नीकल रया। नगारबंध आसामीयां 15 पनरे छी। सु पुरो बांध पाळा मुढ़ा आगे देर खड़ीया[4] सु जेठमलजी ऊपर आंण पड़ीया। जेठमलजी तो कांम आया ने सीवदांनजी रे ल्हो लागा[5] ने आदमी 15 पनरे कांम आया। ने बाकी रा नाट[6] ने पाखती[7] रामकरण थो जीणा ऊपर खड़ीया सु आंण[8] तरवार बुही[9] सु चंडावळ ठा. प्रथीसिंहजी रे घोड़ा रो कान कट ने सुधी लीलाड़[10] लागी तरे ठाकुर घोड़ा सु हेटा पड़ीया[11]। ने उदावतां रो लोक पाळो[12] थो सु तरवार भीळीयो[13] सु प्रथीसिंघजी पुरचा-पुरचा[14] हुय गया ने रामकरणजी रे तरवार लागी ने कुंपावत धीरतसिंघ हरसोर रो कांम आयो। ने कुंपावतां री आसामीयां 3 ने बेली 4 कांम आया ने बाकी रा लोक री पूठ फीरी वो बीलाड़ा में बड़ गया[15]। ने बगड़ी रो ठा. पाड़सिंघजी उबे सेरीयां नाठा[16], ने लारै आयां जीणा सु जगड़ो[17] करता गया सु पाड़सिंघजी रे तरवार 4 लागी। पीण वेली आछा हुवा सु पाछा घीर-घीर ने झगड़ो कर कांम आया[18]। ने ठाकुर ने नींभाया सु वडेर[19] रा म्हेला में पेठ गया ने रामकरण दरवार री जायगा में उतरीयो ने फोज सारी गांव में आय गई अर लारे स्यामसिंघ देवीसिंघोत धावळीया था सु सारा गांवा में वाड़[20] ने तलाव ऊपर असवार 1000 अेक हजार सु उभो रयो ने कयो—सीरदार हलो करो—सु गांव भेळ देवां[21]। तरे सबलसिंघजी आघतरां[22] लागो। खड़ीयो आवे थो सु पाळा तीन डरतां बंदुकां तीनु सामी कर ने छोड़ दीवी सु अेक तो सबलसिंघजी री कनपटी में ऊपर लागी सु आंख दोनु नीसर गई[23] ने अेक काला केसां री लागी सु म्हाराज वीजेसिंघजी री तरफ आ जोरावर पछे पाळा तीन ही ने

---

1 पिछड़ रहा था। 2 रण वाद्य बजा। 3 पास से। 4 नगारबंद के 15 सैनिकों को समूह बनाकर पैदल सम्मुख चलाया। 5 तरवार आदि का घाव लगा। 6 दौड़कर के। 7 पास में, नजदीक। 8 आकर। 9 तरवार चली, तरवारों से युद्ध हुआ। 10 ललाट। 11 नीचे गिर गए। 12 पैदल फौज। 13 तरवारों से भिड़ गए। 14 टुकड़े-टुकड़े हो गए। 15 घुस गए, प्रविष्ट हो गए। 16 सीधे-संकरे रास्ते से दौड़कर। 17 झगड़ो। 18 परन्तु वे आदमी पुरुषार्थी हुए सो वापस धैर्य धारण कर आये और घमासान युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। 19 पूर्वजों। 20 गांव में प्रवेश करा करके। 21 लूट लेवें। 22 उतावळा। 23 दोनों आंखें बाहर निकल गईं।

मार लीया ने असवार दोड़ीयो के म्हारे गोली लागी है पीण थे बीलाड़ो तेस-मेस[1] कर दीजो, न्हीं तो दरगा में दावणगीर होसु[2]। पीण सबलसिंघजी रे गोली लागी तरे सारा जाता रया। कीण ने कजीयो करणो याद आवे? तलाव उपर उभा था ने मायला डेरा था। घड़ी-पलक सांस लेता था जीतरे चढ़ ने खड़ीया सो सारा भेळा हुवा। तरे सबलसिंघजी कयो— के बीलाड़ो मारीयो[3]। तरे दोलजी भाई कयो—हां बीलाड़ो मारीयो ने जेतीवस सु माचो[4] लाय ने उठाय ने सोजत ने वहीर हुवा सु खारीये सामी पालकी आई सु पालकी में घालीया[5] ने बीलाड़ा वाला जांणीयो के जगड़ो जीतीया हा, सु परा क्युं हुय गया[6]?

तरे पांच रुपीया दे ने हलकारो मेलीयो सु सबलसिंघजी री पालखी ले जाय मींदर आगे धरी। सु ठाकुर[7] उठ ने देवरा रा पगतीया[8] था, सु आद-मीयां रे हाथ ले पाळा चढ़ गया[9]। पछे पाछली रात रा जीव दोरो[10] तरे सामसिंघजी ने कयो—ईण तरा तो ईतरा-ईतरा ई दांणा पांणी। वीजेसिंघजी रो चाकर मती रेजे ने ओळभो देणी आवे तो दे[11]। ईतरे स्यामसिंघ कयो— ओळभो तो सीतारांमजी[12] सारू छे। पीण हुं जीऊं जीतरे वीजेसिंघजी रो चाकर न्हीं रहुँ। तरे हलकारा कने था[13] सु सबलसिंघजी री बेकुंठी[14] ले नीसरीया। तरे हरकारा बीलाड़े आय खबर दीवी ने दुजो हलकारो दाग दीराय[15] ने आयो। तीण ने ईनाम रा वीजेशाही 7 रु. सात रामकरण दीया ने कयो— म्हाराज वीजेसिंघजी री तपस्या खाय? गई।

पछे उणी सायत जोधपुर राईको चढ़ीयो। पछे कुंपावत री बात राम-करणजी कीवी। तरे जगरामजी कयो—के आसोप दो, तो चाकर रहुँ[16]। रामकरणजी कयो—आसोप तो कनीरामजी चाकर रया, सो उणां ने दीवी।

---

1 नष्ट-भ्रष्ट। 2 मरणोपरान्त भी मेरी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। 3 बिलाड़ा कब्जे किया। 4 चारपाई। 5 पालकी में लिटा दिया। 6 वापस क्यों चले गए। 7 ठाकुर सबलसिंहजी। 8 देवालय की सीढ़ियां। 9 हाथ पकड़ कर पैदल चढ़ गए। 10 जीव में घबराहट, बेचैनी। 11 उपालंभ देना चाहते हो तो दो। 12 ईश्वर, परमात्मा। 13 पास में था। 14 शव-यान। 15 दाह-संस्कार करके। 16 आसोप का पट्टा दो तो चाकर रहूं।

सो थानु आवे न्हीं ने अेवज[1] पटो वीजेशाही रु. 20,000) वीस हजार रो दीराय देसां। तरे ईणां कयो—अेवज् पटो कबूल करसां। पीण आसोप थकां कुरव[2] थो जीको देणो पड़सी। तरे श्रीहजुर में ने गोरधनजी ने लीख पक्की कर ने धायभाईजी ने कै[3] ने अेरु, गांव गछीपुरो, रड़ोद, रातकुड़ीयो, जालपुरो पटो हजार 20,000) रो लीखाय मंगायो ने आसोप थको कुरव थो सु ईनायत हुवो[4]। ने जगरामजी चढ़ ने रामकरणजी री फोज में उरा[5] आया ने जीला रा सीरदार था जीका ने पटो लीख दीया ने केसरीसिंघजी रायपुर रो ठाकुर घरे थो सु धायभाईजी कने के (कहे) ने गांव् काणेंचो उदावत गेनजी ने लीख दीनो ने जोधपुर सु म्हाराज फतेसिंघजी ने लिख दीयो सु संनदां[6] मेड़ते जोसी बालुरामजी कने गई। तरे वालुजी कयो—म्हाराज री संनदां मांनु न्हीं तो हरांमखोर बाजु[7]। धायभाईजी रो हुकम लोपु[8] तो मारीयो जाऊं। जरां दोनु कना सु दसतुरी रा रुपीया ले ने दोनां ने अमल री चीठीयां कर दीवी[9] सो दोनु कांणेंचे आया। उदावतां रो आदमी जाय केसरीसिंघजी ने कयो—तरे केसरीसिंघजी रीसाय रया[10], ने फोज में गया न्हीं।

तरै श्री हजुर सु केवाड़ीयो[11] फतेसिंघजी नु सदाई सांमधरमी केवो करा हां, ने हमार री वखत छे[12] आपणे राज मे कायदो छे। चांपावतां ने मुलक बारे[13] काढ़णा छे। जीण सु थे काणेंचो छोड़ दो, ज्यु केसरीसिंघजी पांच सो 500 आदमीयां सु फोज में आवे। ने थांनु दुजो गांव देसां। तरे फतेसिंघजी कयो—दरबार में कायदो हुवे तो मैं गांव राजी हुय ने छोड़ीयो। दरबार दुजो गांव देसी तो ठीक छे, न्हीं तो ईण पटा ऊपर हीज चाकरी करसु। तरे काणेंचो केसरीसिंघजी ने दीयो। तरे केसरीसिंघजी फोज में डेरो कीयो ने रामसिंघजी रे चीगदा साजा हुवा[14] ने कूच कीयो सु चोड़ासर डेरा कीया ने चांपावत तो सोजत बेठा सु असवार आवे[15] सु फोज दोळो फेरावो कर[16] जाय।

---

1 बदले में। 2 आसोप के पट्टायत के अनुरूप सम्मान। 3 कहकर। 4 बख्शीश किया। 5 वापस। 6 सनद। 7 कृतघ्न कहलाऊंगा। 8 आज्ञा का उल्लंघन करूं तो। 9 अधिकार पत्र दिए। 10 गुस्से हो गए। 11 कहलवाया। 12 अभी तो समय है। 13 राज्य सीमा से बाहर। 14 घाव ठीक हुए। 15 सैनिक सवार। 16 चारों तरफ चक्कर लगा करके।

पछे रींगता-रींगता[1] सोजत सु ग्रेक कोस डेरा कीया ने फोज चढ़ ने तोपखांनो ले सोजत जाय गोला वाय ने उरा ग्रावे[2]। पछे ग्रेक दीन तलाब में जाय ने घाट ऊपर तोपां मांडी ने रामकरणजी पाछा थका सु रूखां हेटे[3] उतरीया था ने फतेसिंघजी ने रायमलोत चांदावत वीसनदासोत ग्रे ग्रागा थका[4] उतरीया थां जीतरे मांय सु लोक नीसरीयो ने हलो कर ने दोड़ीया[5] सु तोपखांनो ग्रांण लियो[6]। तोपां खांची पीण सीरकी न्हीं[7]। जीतरे बेदो[8] सुण ने फतेसिंघजी चढ़ीया ने रायमलोत वीसनदासोत ग्रसवार सीतर-ग्रसी (70-80) पाळां ऊपर नाखीया[9] सु पाळा नास ने बाग रा चोभीता[10] में बड़ गया[11] ने कीतराक सीरदार मोदी री बावड़ी में बड़ ने बंदुकां जेली[12] सु ग्रे दरवाजा तांई जाय ने पाछा वळीया सु बाग में उणां रो लोक थो सु ग्राडे मारग गोलीयां सरू हुई। सु बेली तीनां रे गोलीयां लागी; तीन घोड़ां रे लागी। तरे डुमाणी रा सीरदार उमेदसिंघजी गोली वाही[13] सु उणा रो ठावो मीनख[14] बारी में गोली वाय बंदुक उठाई जीतरे उमेदसिंघजी रा हाथ री छुटी सो उण रा माथा में लागी, सो तड़ास[15] खाय गया।

जितरे ग्रे तोपां ऊपर ग्राय ऊभा रया जितरे सीलेपोस सारा ही ग्राय गया ने पाछी मजबूती हुय गई[16]। रामकरणजी घणा राजी हुवो[17] ने कयो—फतेसिंघजी न्हीं हुवे तो तोपां वे माहे खांच ले जाता तो फोज रो भुंडो लागतो[18]। सु धायभाईजी ने सुपारस लीखी[19] ने श्रीहजूर मे ग्ररजी लीखी जीण सु म्हाराज घणा राजी हुवा ने दीलासा लीखी ने कयो—थारा घर रो कांई केणो? थे तो सदीव रा सांमधरमी[20] हो। हमे भींतड़ा ऊपर घोड़ा चलावणा न्हीं ने धायभाईजी पीण दीलासा दीवी ने म्हारोठ रा मेड़तीया ने चाकर राख ने धायभाईजी कूच कीयो[21] सु सोजत ऊपर सु गांव ग्रटवड़े डेरा कीया ने चांपा-

---

1 धीरे-धीरे चलकर। 2 वापस ग्रा जाते थे। 3 पेड़ों के नीचे। 4 कुछ दूरी पर। 5 हल्ला-गुल्ला करके दौड़े। 6 तोपखाने पर कब्जा कर लिया। [7] तोपें खींची लेकिन खिसकी तक नहीं। 8 हमला। 9 पैदल सेना पर ग्राक्रमण किया। 10 बाग की चहारदीवारी। 11 घुस गए। 12 बन्दूकें सम्भाल कर मोर्चा ले लिया। 13 गोली चलाई। 14 खास ग्रादमी। 15 पछाड़ी। 16 फौज की स्थिति-सुरक्षा पंक्ति सुदृढ़ हो गई। 17 ग्रत्यधिक प्रसन्न हुग्रा। 18 फौज की बदनामी होती। 19 सिफारिश लिखी। 20 स्वामिभक्त। 21 प्रस्थान किया।

वतां ने ठीक हुई[1] के धायभाई आयो तरे जांणीयो दोनु फोजां भेळी[2] हुई है सो दोली[3] फीर जावसी तो पछे नीकलण दे न्हीं[4] ने मांहे सामान[5] पीण है न्हीं।

तरे रात आधी रा नीकल मगरा[6] में वड़ गया। पछे सोजत कायम कीयो[7] ने सिंघवी जोरावरमल ने हाकमी[8] दीवी ने रामकरण ने वीदा कीया। जालोर ने धायभाई चांपावतां लारे कूच कीयो[9] सु चांपावत तो घाटे उतर गया। गांव जाटण धायभाई डेरा कीया सु केई दिन मुकाम रयो[10]। रामकरणजी जालोर सु दीन च्यार गोली वाही[11] सु दीखणी[12] था सु नीकल गया। जालोर कायम कीयो ने गढ़ कायम कीयो[13]। पछे रामकरणजी तो आघो[14] सांचोर कांनी[15] कूच कीयो ने जालोर हाकम राखीयो ने फोजां गुड-रोड़घड़ सांचोरी में पइसो उघायो[16]। जालोर सु कूच कीयो तरे फतेसिंघजी छींपीया रो ठाकुर ने धायभाईजी कने बुलाय लीया।

संमत 1818 बरस जोसी बालुजी खारी रे ढावे वीदा कीयो ने धायभाईजी मेड़ते रेया। बालुजी साथे फोज हजार 3,000) वीदा कीवी। जवानसिंघ सूरजमलोत, माधोदासोत सारा लारे[17] वीदा कीया[18]। जावला रो ठाकुर वदनसिंघजी सुरतांणोत सारा वीदा हुआ। करणोत री आसामीयां सीलेपोस, पाळा तोपखांनो देर जोसीजी ने वीदा कीया सु पीसागंण डेरा कीया। पीसांगण ऊपर पेसकसी[19] रा रुपआ 20,000) बीस हजार ने गोयनगढ़ ऊपर हजार 7,000) सात कीया।

माथे रु. 11,000) कीयां जीणमें हजार छोड़ीया। दस हजार लिया ने गोलो खरवारे माथे कर ने हजार 20,000) मसुदा माथे कीया ने पछे वांदण-वाडे डेरा कीया ने देवलीया रा ने टांटोती रा सेरसिंघजी आगु बादरवाड़ा

---

1 मालूम हुई। 2 इकट्ठी। 3 चारों ओर। 4 निकलने नहीं देगी। 5 साज-समान एवं खाद्य-सामग्री। 6 टीबा। 7 सोजत पर कब्जा कर लिया। 8 हाकिम पद पर नियुक्त किया। 9 पीछा किया। 10 पड़ाव रहा। 11 चार दिन तक गोला-बारी की। 12 दक्षिणी फौज। 13 जालोर पर शासन जमाया और किले पर कब्जा किया। 14 आगे। 15 सांचोर की ओर। 16 पैसा वसूल किया। 17 पीछे। 18 प्रस्थान किया। 19 अग्रिम राशि।

माथे रु. 17,000) सतरे हजार कीया ने भणाय[1] ऊपर हजार 22,000) बाईस कीया। सारा सीरदारां भणाय री चोरासी ऊपर पेसकसी ठेहरी ने फेर वडली रो ठाकुर रुपीया दीया न्हीं। तरे धायभाईजी ने लीखीयो के मे अबे वडली ऊपर जासां[2] ने केकड़ी रे प्रगने[3] जासां सु आसांमी च्यार बडोड़ा सीरदारां नें मेलजो[4]। तरे धायभाईजी जोधपुर था, सु ईणा सीरदारां ने प्रवाणा मेळीया[5]।

1 रा. जालमसिंघ सेरसिंघोत

1 रा. स्यामसिंघ रो बेटो फतेसिंघ, छींपीया

1 रा. दलेलसिंघ अबेसिंघोत, मनाणो

1 रा. सालमसिंघ लखसीरोत, सरनावड़ो

मेड़ता रा हाकम ने लीखीयो ईणा ने तार्कीद कर[6] वेगा चढ़ावजो[7]। तरे फतेसिंघ त्यार हुवो ने पंचोली फतेरांम जोधपुर थो तीण ने लीखीयो मने खारी रे ढावे[8] मेले छे सु चाकरी ना, हां न्हीं क्हेणो पीण आंपणा काम री[9] धायभाईजी सु अरज करजो। तरे फतेरांम धायभाईजी री हवेली जाय कयो— ठाकुर ने वीदा करावों सु तो तयार छे। पीण आप फुरमायो के थारो गांव कवरीयाट थीं सो चोथे म्हीने लीख देसां सु वरस दोन हुवा ने अबेज काणेचो दीयो थो सु उही करे[10] पड़ीयो न्हीं। सु कांम रे वखत ऊपर तो चाकर रा क्हेणा रो धरम न्हीं। पीण खरची रो अेक दीन रो ही सलूक[11] न्हीं। जीण सु अरज करण में आवे छे। तरे धायभाईजी कयो—कवरीयाट रो हासल थाने दीरावां ने ठाकुर ने लीखो, सु वेगा चढ़े[12] सु दुजा ही सीरदार चढ़े। तरे फतेरांम कहो—दुरस[13] छे। कवरीयाट अेस[14] दोय हजार रो हासळ आयो छे। तरे नाथुरामजी कयो—हासल तो आठसै रुपीया रो छै। मेड़ता सु खबर मंगाई नें कीसनसिंघजी रा कांमदारा ने बुजीयो[15] छे। तरे धायभाई कयो—

---

1 भिणाय-गांव विशेष (अजमेर जिले के अन्तर्गत)। 2 वडली के ऊपर आक्रमण करेंगे। 3 परगना केकड़ी के ऊपर। 4 भेजना। 5 परवांना, लिखित आदेश। 6 तकाजा करके। 7 जल्दी ही प्रयाण हेतु भेजना। 8 खारी की सीमा में। 9 अपने काम (गांव के पट्टे आदि के विषय में)। 10 अनुकूल, लाभकारी नहीं रहा। 11 व्यवस्था। 12 शीघ्र चढ़ाई करो। 13 दुरुस्त, ठीक है। 14 इस वर्ष। 15 पूछा।

थें दोनु ही मत बोलो ने बारै सो[1] रुपीया दीरावां छा। सु ले लेवो ने ठाकुर ने चढ़ावो। तरे रुपीया 1200) री थेली मंगाय दीवी ने राजी हुवा सु केरीयो लीख दीयो। तरे फतेरांम मेड़ते आय ठाकुर ने चाढ़ दीया[2] सु जोसी री फोज में जाय भीणाय सांमल हुवा ने वीजी[3] आसांमीया तीनु[4] ही ना दीयो सु धायभाईजी बेराजी हुवा ने मनाणा रा पटा रा गांव जबत कीया[5]। ने जोसी बालुजी बडली डेरा कर बड़ली ऊपर पेसकसी लीवी, ने केकड़ी रे प्रगने डेरा कीया।

जूनीयां, सावर गुळगांव परो वगेरे सारा गांव पेसकसी ठेराई ने मेड़ु ने कादेड़ रे बाप-बेटा रे राय तो न्हीं थी[6] सु सीतर हजार 70,000) तो मेसं अभेर ठेहरीया[7] ने दोनु जायगां रुपीया 1,00,000) अेक लाख रुपीया ठेरीया। पछे कूच कर ने राजगढ़ आंण लागा[8]। तीन दीन-गोली बुही[9]। पछे हलो कर भेळ दींयो[10]। राजगढ़ थानो[11] राख ने अजमेर नु कूच कीयो बुंदी रा हाडा माय कर उदावतां री वात हुई ने चाकर रया। नींबाज रो ठा. दौलतसिंघ, रास वगेरे ईतरा ठीकांणा सुधा जोसी बालुजी री फोज में आंण डेरा कीया। तिण री विगत—

1 नींबाज दोलतसिंघजी

1 राठौड़ ········ सींघ रास रा

1 भारथसिंघजी, लांवीया

1 जगतसिंघजी, नींबोल

बालुजी कूच कर ने अजमेर फोज आंण लागी रुपीया 7,00,000) सात लाख ही धायभाईजी कने मेड़ते पावता कीया[12] ने फोज रो खरच चलायो। तीन दीन स्हेर में दीखणी लड़ीया। तोपां रा गोला लागा सो स्हेर री

---

1 बारह सौ, एक हजार दो सौ। 2 चढ़ा दिया, रवाना कर दिया। 3 दूसरे। 4 रा. जालमसिंह, दलेलसिंह, सालमसिंह। 5 मनाणां गांव का पट्टा जब्त कर लिया। 6 बाप-बेटे के पास तुरन्त देने की कोई व्यवस्था नहीं थी। 7 विलम्ब से लेना तय हुआ। 8 राजगढ़ आकर रुके। 9 तीन दिन तक गोलीबारी हुई। 10 अन्दर घुस गए। 11 फौज का थाना चौकी। 12 पहुंचा दिए।

सफील[1] रा कांगरा पड़ीया पछे स्हेर छोड़ ने गढ़ में वड़ गया[2]। स्हेर में म्हाराज श्री वीजेसिंघजी रो अमल हुवो[3]। आंण फीरी[4] कायम कीयो। फौज रा डेरा तो वीसलीया कनै था, ने वींटली दोला मोरचा लागा[5] ने दीखणी पटेल माधजी[6] कने आदमी म्हेलीयो के अजमेर रो गढ़ राठौड़ां घेरीयो छे, ने गढ़ में सामान न्हीं छे। सो ऊपर करो तो वेगो कीजो[7]। न्हीं तो गढ़ वींटली छूट जासी ने तीनु ही मुलक माय सु अमल उठ जासी[8]। मेवाड़, ढुंढाण, मारवाड़–अे सारा ही अजमेर सु दवेल[9] छे। ईण तरे लीखीयो जीण सु माधजी पटेल कूच कीयो ने पाछे कासीद मेलीयो, के दस दीन संठा[10] रहीजो, जीतरे हुं आयो।

गढ़ दोला मोरचा था सु दरवाजा रे धके टांटोती रा ठाकुर सेरसिंघजी रो मोरचो थो ने तीन मोरचा उठे फेर खारी रे ढावे रा मोरचा जोधां रा था ने आबाय ने वीसनदासोत रो मोरचो थो, तोपां पीण रोपी थी चांदपोल सायब प्रां जमादार थो तोपां पीण रोपी थी ने नुरचस में मारोठ रो हाकम ने सीरदार था जीण आगे प्रवतसर रा सीरदार था ने दीखणाद तरफ रसालो[11] ने रोजगारी[12] था सो घेरो करडो लागो[13] ने ईहुं जाणे के दस दीन सु गढ़ उरो[14] लेसां ने मायला[15] रे ऊपर समाचार आय गयो। सु संठा हुय गया[16]।

पछे दुजे दीन संमत 1818 रा जेठ सुद 10 ने गढ़ रे बारे नीसरीया सु मोरचा रो लोक दातण कुरला करण ने भाखर सुं नीचे आया ने बाकी रा सुता था सु लखीया कोय न्हीं[17]। ने मोरचां ऊपर आय बतलाया ने गोलीयां 3 तीन वाही ने तरवार भीळ गया[18] सु आदमी 4 कांम आया ने दुजां रा पग छुटा ने कातणकाय आंबावाय तांई आया सु ईणां ही मोरचा[19] उठाय दीया ने डुंगर चढ़तां वीसनदासोत जालमसिंघ काम आयो[20]। कातासणी रा बेली 3 फेर

---

1 शहर का परकोटा। 2 गढ़ में दाखिल हो गए। 3 राज्य शासन कायम हुआ। 4 दुहाई घोषित हुई। 5 पहाड़ी के चारों ओर मोर्चाबन्दी हुई। 6 पटेल माधवराव शिंदे। 7 राठौड़ों पर चढ़ाई करना हो तो शीघ्रता करना। 8 शासन समाप्त हो जाएगा। 9 दबने वाले, अधीनस्थ। 10 मजबूत। 11 जोधपुर शासन की फौज, रसाला। 12 दैनिक मजदूरी के सैनिक। 13 सख्त घेरा लगा। 14 अपने पास। 15 अन्दर वालों। 16 आश्वस्त हो गये। 17 सावधान नहीं हो पाये। 18 तलवारों से जूझने लगे। 19 राठौड़ी सेना का मोरचा। 20 वीरगति को प्राप्त हो गया।

कांम आया। दुजा चोधरी री बीरादरी रा वेली दोय काम आया तीना रे गोलीयां लागी सु घायल हुवा ने कोटवाल चहुंवाण कुसलो थो जीण ईंद्रकोट रो दरवाजो जड़ दीयो जितरे गोलीयां सु'ण चांदावत रतनसिंघ सबलसिंघोत ने दलेलसिंघ वादरसिंघोत जगराम माधोदासोत वेली 20 ले ने दोड़ीया सु ईंद्रकोट रो दरवाजो खुलाय ने कातणवाय जाय बंदुकां जाली[1] जीण सु उणां रो लोक पाछो हटीयो जीतरे फोज सु' लोक रो पीण ऊपर हुवो सु उणा ने गोलीयां सूं मारने पाछा गढ़ में वाड़ीया[2]। जीतरे जोसी वालुजी सारा सीरदार आया। सारो दीन अवाव् ऊपर बेठा रया। आथण[3] हुवो तरे जोसीजी कयो—अेक दीन अठे जवानसिंघजी रेसी[4]। अेक दीन फतेसिंघजी रेसी। पछे दुजे डेरे आया ने हलकारा कयो—दीखणीया री फोज नेड़ी[5] छे। तरे तोपां बडोड़ी जुताय[6] ने मेड़ता ने वहीर कीवी[7] ने जलेबी रेखला[8] राखीया ने दीखणीयां रा डेरा सावर हुवा ने वालुजी जोसी कुच कीयो। मोरचा उठाय दीया ने कुच कर भावते डेरा कीया। ने भावता सु पीसांगण डेरा कीया। उठे गांव रे कने डेरा कीया न फोज रे दोलो धुल कोट[9] करायो, खंदक दीराई, सेंठा हुय[10] ने रया। दीखणीया रा अजमेर डेरा हुवा ने धायभाईजी मेड़ते हा, सु गुलाबराय आसोपा ने बात करण मेलियो सु फोज में आयो। ने भावजी कुच कर ने बुधवाड़े आया। ने दुजे दीन कुच कीयो सु वालुजी री फोज नेड़ी आई ने गोला बुहा पछे गोयनगढ़ डेरा कीया ने सीरदार मील गया ज्यां री वीगत—

1 उदावत सारा फोज में था सु
1 सुरतांणोत वदनसिंघ वगेरे सारा जावला रा
1 केसोदासोत मेड़तीया बड़ू बुड़सु रा

यां सारा मील ने दीखणीया ने कयो—रात आदी रा म्हे चढ़ ने उरा आवां छां। वालु जोसी ने पकड़ लेसां, फोज मार देसां, तरे आडी रो देवाल[11] कोई न्हीं। सु उणा रा घोड़ा जीण हुवा[12] ने जोसी वालु ने खबर हुई। तरे

---

1 बंदूकें संभाली। 2 गढ़ में प्रवेश करा दिया। 3 सायंकाल। 4 रहेंगे। 5 नजदीक। 6 बड़ी तोपों को जुताकर। 7 रवाना की। 8 छोटी तोपें विशेष। 9 मिट्टी का परकोटा, दीवार। 10 मजबूत होकर के। 11 इसमें विघ्न डालने वाला। 12 घोड़ों पर जीनें कसी गई।

जवानसिंघ लेने ज़ोसी सीरदारां रा डेरे आयो ने सीरदार चढ़ खड़ीया[1] ने जोसीजी लारे[2] जावण लागा तरे जवांनसिंघजी कयो—जोसीजी आगा चालो[3] पीण आपे थोड़ा हां ने सीरदार घणा है सु मांने तो मार नाखसी[4] ने थांने पकड़ लेसी। तरे कयो—जोर करसां[5]। पछे उभा रया, जीतरे फोज तो आगी चढ़ गई। तरे जवानसिंघजी कयो—के दीन उगो तो दोला आंण फीरसी। पछे घेरो दे ने सारा ने मार नाखसी, ने थांने पकड़ लेसी, सु नीसरो[6]। सु मेड़ते मजबूती करसां। जरे जोसीजी कयो—फतेसिंघजी ने बुलावो। तरे आदमी आय समाचार कया तरे फतेसिंघजी घोड़ा जीण कराय ने डेरो डंडो ले चढ़ीया सु जोसीजी कने आंण भेळा हुवा। ने समेल रे मारग खड़ीया। जोसी जी रा सीरायचा ने जवानसिंघजी रा डेरा उभा रया ने फोज में भगी पड़ी[7] सु चढ़-चढ़ ने मेड़ता नु भागा[8] ने रेखला[9] कीतराक तो समेल रे मारग ने जुता, ने कीतराक उठे ही रया।

राठौड़ रुघनाथसिंघ देवलीया रो ठा. बजार में जाय डेरो कीयो सु रेह गयो[10]। ने जोसीजी ने जवानसिंघजी मगरा रे मारग हुय ने प्होर अेक रात गया बलुंदे आया। लारे आया जीणा ने धुलेट डेरा सवालां खोस लीया। पछे रात रा तो बलुंदे रया गोठ कीवी ने प्रभात रा मेड़ते आया। धायभाईजी ने घणी फीकर थी। जांणी के सारी फोज गारत[11] रही ने जवानसिंघजी ने वालुजी आया तरे धायभाईजी पुछीयो—फतेसिंघजी कठे? तरे कयो—उणां रा माणस[12] काढ़ ने आवसी। पंचोली कुसालचंद मांरे साथे[13] आयो छे। तरे धायभाई कुसालचंदजी बुलाय ने कयो—ठाकुर ने वेगा बुलावो[14]। तरे कयो—ठाकुर तो दिन उगां पेली आवसी। साथ भेळो[15] कर ले आवसी। काम री वखत छे[16] जीण सु चढ़ीयो पाळो[17] ले वेगा[18] आसी। जीण सु लारे[19] रहा छे। तरे धायभाईजी पोर-पोर रे आंतरे[20] च्यार

---

1 चढ़कर रवाना हुए। 2 पीछे। 3 आगे चलो। 4 मार डालेंगे। 5 अधिक शक्ति लगायेंगे, मुकाबला करेंगे। 6 निकलो। 7 भगदड़ मच गई। 8 मेड़ता के लिए भागे। 9 छोटी बैलगाड़ी। 10 रुक गया। 11 बर्बाद, बेकार। 12 उनके आदमी। 13 मेरे साथ ही। 14 जल्दी बुलावो। 15 साथियों को इकट्ठा करके। 16 युद्ध का अवसर है। 17 घुड़सवार और पैदल सैनिक। 18 जल्दी। 19 पीछे। 20 एक-एक प्रहर के अन्तर से।

कासीद[1] मेलीया ने लिखीयो - साथ लारां सु ही उरो आवसी । आप वेगा पधारो । जीतरे रात घड़ी च्यार गई ने जालमसिंघजी सेरसिंघोत रो डेरो बारे डांगोलाई ऊपर थो सु धायभाईजीं कयो—साथे डेरो माहे करो[2] । तरे कहो—मे तो डेरा बारे हीज राखसां ने डांगोलाई ऊपर मोरचा राखसां । जीण सु पांणी आपणे हाथ रहे ने घोड़ो जीण हुवो[3] ने धायभाईजी ने ठीक[4] हुई । तरे जवानसिंघजी ने बालुजी ने मेलीया ने कयो थे जाय उरा लावो[5] । वे केसी (कहेंगे) जुं खांण ने खरची देसां[6] । लारें हुंई आसु[7] । जवानसिंघजी बालुजी गया जीतरे वे तो चढ़ ने खड़ीया[8] । लारे सामदास धधवाड़ीयो ने अेक आदमी अेक सांढ[9] उभा था । तरे जवानसिंघजी कयो—ठाकुर कठे ? तरे कहो—अे नेड़ो हीज[10] जावे छे । डांगोलाई रा आगोर[11] में सु जाय ले आवो । तरे बालुजी कयो - ठाकुरां घोड़ा खड़ो सु जाय पुगां[12] । तरें जवानसिंघजीं कयो—आगा जावां तो मांनु मार नाखें[13] ने थानु पकड़ लेवे[14] । तरे सांमदानजी कयो—आसंग[15] कीनी सु आप सांमो देखे[16] । तरे जवानसिंघ बोलीया—जमी छोड़े सु चावे जुं करे[17] । तरें पाछा आय धायभाईजी ने कयो—वे तो परा गया[18] । तरे धायभाईजी ने सोच हुवो[19] ने सोरदारां ने बुलाया—

जोरावरसिंघ करमसोत, ईंदरसिंघ खैरवा रो ठाकुर ने जेतसिंघ आउवा रे ईणा ने बुलाय ने कहो—थे मांनु जोधपुर सुं ले आया हो सु जोधपुर तांई प्होचाय देवो । तरे जोरावरसिंघजी, ईन्द्रसिंघजी बोलीया—थे म्हारो अभरोसो[20] जांणो हों सु (थे) मे चाकर विजेसिंघजी रा हां । अठी उठी फीरे ज्यांरा माईता में भेळ[21] । तीर धणी आँख रेवे[22] जीतरे चाकर विजेसिंघजी रा हां ने आप जोधपुर दीसा[23] केसो सु मेड़तो में कांई न छे[24] ? साथ[25] गावां

1 पत्रवाहक । 2 डेरा अन्दर की तरफ सबके साथ करो । 3 घुड़सवार सैनिक तैयार हुए । 4 जानकारी मिली । 5 वापस लाओ । 6 जैसा वे कहेंगे वैसा खर्चा-पानी की व्यवस्था कर देंगे । 7 पीछे मैं भी आऊंगा । 8 चढ़कर चले गए । 9 ऊंटनी । 10 नजदीक ही । 11 तालाब में पानी आने का क्षेत्र एवं सीमा । 12 घोड़ा चलाओ सो जा पहुंचें । 13 मुझे मार डालेंगे । 14 तुम्हें पकड़ लेंगे । 15 हिम्मत । 16 आपके सामने देखें अर्थात् बराबरी करें । 17 अपना क्षेत्र छोड़कर जावें सो चाहे जैसा करे । 18 चले गए । 19 फिकर हुई । 20 अविश्वास । 21 मां-बाप में खोट है । 22 जब तक स्वामी का विश्वास । 23 जोधपुर को पहुंचाने के लिए । 24 मेड़ता में क्या नहीं है अर्थात् किस बात की कमी है? 25 साथी सैनिक ।

सु फेर बुलाय लेसां ने मजबूती करसां । अठे स्हेर कोट सजसां तरे धायभाईजी रे अबरोसो थो । बालुजी ने पकड़ावे तो मांनु ही पकड़ाय देवे सु सीरदार वचन दीयो ने सोगन[1] वाही, तरे मेड़ते मजबूती कीवी । जीतरे फतेसिंघ सांमसिंघोत आयो । सामी राईके ठीक दीनी[2] । तरे सांमा असवार चाढ़ीया ने कही –बजार हुय ने मां सु मीलन स्हेर माहे हुय ने दुदासर डेरा कर ने आप सु मीलसु । तरे फतेराम पंचोली बुलाय ने कयो—ठाकुर ने बजार में हुय ने तो ईण वासते बुलावा हां के अेक तो स्हेर रो लोक[3] देखे तो हमगीर हुवे[4] ने उणा रा हलकारा देखे तो जांणे मेड़ते लोक भेळो हुवे छे । ईण तरे जाय ने कहे के उठे मजबूती छे । तरै फतेराम ठाकुर ने धायभाईजी री हवेली लायो ने मुजरो कीयो, मीलीया, घणा राजी हुवा । ने दीलासा दीवी । कयो—आज मारवाड़ में ईसा राठोड़ छे । पछे दुदासर डेरो कीयो । पछे तीजा प्होर रा कासीद आयो ने कयो—दीखणीयां रे ने आपां रे वात ठेहरी[5] । नव लाख रुपीया पेसकसी रा ठेरीया ने गुलाबराय पाछो कुच कर अजमेर डेरा कीया ने माधजी पटेल ने कयो – रांमसिंघजी रो भंडारी थांरी फोज में छे सु पकड़ाय दो तो दोय लाख रुपीया ईजाफे[6] देवां । तरे पटेल हांकारो भरीयो[7] ने चांपावत सांमसिंघ जगतसिंघ सारा मेड़तीया ने ठीक हुई । तरे भंडारी ने लेर नाठा[8] ।

दीखणी तो कुच कर पाछा वळीया[9] ने चांपावत ने बारोठीया सीरदार घाटे हुय ने रायपुर केसरीसिंघजी ने ले साथे मारवाड़ में वड़ गया ।[10] धायभाईजी फोज लेर लारे हुवा सु गांव खंडप भवड़ाणी तांई माय नीसरीया । धायभाईजी लारे हुवो मजन दुनाड़ा सु चांपावत पाछा गीरिया । उदावत तो सारा घरे आया ने चांपावत चोरासी[11] कांनी गया ने धायभाई पाली कानी आया[12] । तरे कयो—चांपावत दस गांव मारसी पीण ईणा रो तो मूल उखेल ने वाय देसु[13] । पछे पाली फोज लागी सु दीन 3 गढ़ी में लड़ीया ने पछे गांव भेळ ने गढ़ दोला मोरचा लगाया[14] ने तोपां मारी[15] ने सुरंगा लगाई । सु

1 सौगन्ध । 2 ऊंटनी सवार ने सूचना दी । 3 मेड़ता शहर की जनता । 4 आश्वस्त होवे । 5 मराठों और अपने बीच समझौता हुआ । 6 अधिक । 7 स्वीकृति दी । 8 भंडारी को लेकर भाग गए । 9 वापस लौट गए । 10 मारवाड़ में प्रवेश कर गए । 11 चौरासी गांव विशेष । 12 पाली की ओर आए । 13 समूल नष्ट कर देंगे । 14 गढ़ के चारों ओर मोरचा लगाया । 15 तोपों से मार की ।

सफील हाथ 20 उड़ाई सु दीन 14 लड़ीया ने पछे सीटाया[1]। तरे बात कर ने हाथ पकड़-पकड़ सारा नुं बारे काढ़ दीया, ने गढ़ी कायम कीवी[2]। घोड़ा 84 चोरासी बछेरा घोड़ीयां दरबार में आया सु जोरावरमल सिं. ने मुंप ने रायपुर ऊपर कूच कर ने गया। सु केसरीसिंघ री बात कर ने चाकर राखीयो। फोज में डेरो आंण कीयो। नींबाज रा सीरदार ने कयो, तरे नींबाज रा दोलतसिंघजी बोलीया—के केसरीसिंघजी तो रोक में बेठा, ने हुं चाकर कीण तरे रेऊं? तरे रास रा केसरीसिंघजी ने तो जीमण में कीहुंई दीना सु काल प्रापत हुवा[3] गढ़ में केद थकां ने दोलतसिंघजी जवानसिंघजी चाकर रया। फोज में डेरो कीयो। चांपावत ने भं. स्वाईराम रा डेरा हरसोर था ने नागोर रा प्रगना में धसण[4] सु मन हो। फोज तो पाली लड़ती ही, जीतरे जांणी नागोर रा गांव लेसां जीतरे रात आधी रा कासीद आयो। पाली भीळी[5] ने घर-बाधो ही खोस लीयो[6]। तरे पाली रा ठा. जगतसिंघजी री तो कड़ीयां तुट गई[7] ने कहो—तीन पीढी तांई रजपूतां ने चराया, थांसु जगतां[8] रो घर गमायो ने उरा आया। जीतरे धायभाई री फोज आई सुणी तरे चांपावत ने भंडारी रूपनगर परा गया ने मेड़तीया आप-आप रे घरे गया, जीणां ने धायभाई चाकर राखीया ने मारोठ डेरा कीया।

कुचामण ठा. सोभागसिंघजी ने चाकर राखीया। चांपावत अजमेर हुय मारवाड़ में पेस गया[9] ने धायभाई नु ठीक हुई[10]। तरे भं. रामकरण ने वीदा कीयो ने चांपावत सवराड[11] था सु रांमकरण आय घेरीया। चांपावत कूच करण नु तयार हुवा। घोड़ा जीण हा जीतरे फोज आई सु सारा सीरदार बडला हेटे[12] बंदुकां पकड़ीया बेठा ने सेरीयो सांकड़ो[13] ने गोलीयां आंवे सु जोर लागे न्हीं। तरे वाड़ तुड़ाय सेरीयो कराय ने ठा. फतेसिंघ लालसिंघजी रायमलोत, सामसिंघ वीसनसिंघोत छींपीया रो ठा. जेतसिंघजी ईतरा सीरदार

---

1 शिथिल पड़ गए। 2 गढ़ी पर कब्जा कर लिया। 3 केसरीसिंह को भोजन में कुछ दे दिया जिससे मृत्यु को प्राप्त हो गया। 4 नागौर परगने में घुसने के लिए। 5 पाली में फौज प्रवेश कर गई। 6 बंधी-बंधाई व्यवस्था कब्जे में कर ली। 7 कमर टूट गई। 8 तुम्हारे देखते-देखते। 9 प्रवेश कर गए। 10 मालुम हुई। 11 सरवाड़ गांव। 12 बरगद पेड़ के नीचे। 13 तंग (संकरा) रास्ता।

जाव[1] में आय घोड़ा खड़ीया ने आगे फेर उंचला री वाड़[2] आई सु वाड़ तोड़ी जीतरे घणा सीरदारां रे गोलीयां लागी। गजसिंघ माधोसिंघोत फलोधी रो जीण रे माथा रे गोली लागी। वाड़ ऊपर कर माथो उघड़तो थो जीणरे माथा रे लागी। वाड़ तोड़ ने घोड़ा चलाया सु चांपावता वहीर तो हकाय दीवी[3] थी ने सारा वठला हेटे उभा गोलियां वावता[4] था ने घोड़ा नेड़ा आया[5] ने पाधरा मोडा हुय नीसरीया[6] ने लारे घालीया[7] सु घोड़ा 40 फोज में पड़ाऊ आया[8]। दसेक ऊंट आया वहीर रो वजार लुटीयो। कोस 3 तांई लारो कीयो पछे राईका आडा फीर ने[9] श्री दरवार री आंण दीराई[10], तरे उभा रया। चांपावता म्हेताजी रे गुडे डेरा कीया। फोज लारे आई तरे मगरा में पेस ने मेवाड़ में हुय जेपुर गया।

धायभाईजी वदनसिंघ जावला रा ठाकुर ने वात कर जेतसिंघ कुसालसिंघोत री वांह दीराई[11] ने चाकर राख ने कूच कीयो सु मेड़ते आया जीतरे राईके खबर दीवी – चांपावतां सु राड़ कर वहीर लूट मुलक बारे काढ़ दीया। तरे धायभाईजी तो मेड़ते बेस रयो[12] ने वजाज माणकचंद री छोकरी घणी फुटरी[13] थी जीण ने खवास कीवी[14]। पचीस हजार रो ग्हेणो करायो पांच गायणीयां राखी। नटवा राखीया सु गायणीयां ने सजावे छे। अेक-अेक गायण तीन-तीन रुपीया रो मेवो खावे।

रामकरण री फोज मेड़ते आंण भेळी हुई[15]। अेक भखरी रो ठाकुर न्हीं रयो। जायगा रो बळ[16] ने कयो—धायभाई चोरासी गोडाटी में सारे ही फीरीयो। पिपलाद में जणा च्यार कांम आया[17]। ने दुजा सु गोली कीणी सु बुही न्हीं[18]। गढ़ी रो जोर जांण चाकर रयो न्हीं[19]।

---

1 कुंए के पास के खेत। 2 ऊंचाई पर बनी बाढ़। 3 सैन्य सामग्री को प्रस्थान कर दिया था। 4 गोलियां चला रहे थे। 5 नजदीक आए। 6 सीधे दरवाजे से होकर निकल गए। 7 पीछा किया। 8 चालीस घोड़े कब्जे में आए। 9 सामने आकर। 10 सौगंध दिलाई। 11 सुरक्षा का आश्वासन दिया। 12 ठहर गए। 13 अत्यधिक सुन्दर। 14 उप-पत्नी बनाया। 15 शामिल हुई। 16 जगह की शक्ति। 17 चार व्यक्ति मारे गए। 18 गोली किसी से नहीं चली। 19 सुरक्षित गढ़ी का जोर समझकर भखरी के ठाकुर ने चाकरी स्वीकार नहीं की।

ने धायभाई कना कर 3 तीन वार नीसरीयो[1]। पछे सारा मुलक में चेन कर कूच कीया सु भखरी दोला मोरचा लगाया। गुलर रो ठाकुर ने हरीसिंघजी गढ़ी में धंसीया[2] ने नारसिंघजी नीकल दुंढाण कांनी गया। धायभाई जी जाय मोरचा लगाया। नागोर सु तोपां सींभूभांण कीलकीला[3] मंगाई सो ले जाय मांडी[4] सुधो गोलो सफील रे, सो सफील फोड़ पार हो जाय मांयला गढ़ी छोड़ खानीया में मोरचा दे ने लड़े[5]। पछे हलो कीयो। मोरचा में जाय, तरवार वाही। पिण माहला रजपूत मुचीया न्हीं[6]। हलो पाछो पड़ीयो तरे धायभाईजी कयो—हुं पीडां हलो करसुं[7]। गढ़ी भेळ ने दांतण करसुं[8]। तरे जोरावरसिंघजी करमसोत कयो—हलो कीयां गढ़ी भीळे न्हीं। माहे रजपूत भला-भला मीनख मर जासी। सु धायभाईजी वेराजी हुवा। पीण हलो माफः कीयो।

पछे दुजे दीन जोरावरसिंघजी रा तबेला में लाय लागी[9]। घोड़ा ऊपर छापां कीवी थी सु लाग गई. ने सीलेपोस ने फोज रा लोक बुजावण[10] ने दोड़ीया तरे आपरा आदमीया ने कयो—यां कने आंण उभा रहो[11]। डेरा छो बळता[12]। पछे म्हीना तीन तो लड़ीया पछे बात कर बारे काढीया[13]। हरीसिंघजी ने गुलर लीख दीवी[14]। भखरी री गढ़ी पाड नांखी[15]। धायभाईजी तीजा ऊपर चढण लागा[16] तरे फतेसिंघजी ने तो सीख[17] जोधपुर सुं आय गई थी ने धायभाईजी पीण कहो थो कें मे चढ़सां तरे लीया जासां। पछे चढण लागा। तरे गुलाबराय आसोपे कयो—ईण ने सीख देसो तो घणा जणा हरक करसी[18]। तरे धायभाईजी कयो—हमार तो थे अठे ही फोज में रहो। पछे

---

1 धायभाई भखरी के पास होकर तीन बार गुजरा लेकिन भखरी पर आक्रमण अथवा छेड़छाड़ नहीं की। 2 प्रवेश किया। 3 कीलकीला–तोप का एक नाम (विशेष तोपें)। 4 तोपें स्थापित की। 5 गढ़ी के अन्दर वाले सैनिक गढ़ी छोड़कर खानो में मोरचा लगा कर लड़ने लगे। 6 झुके नहीं। 7 मैं स्वयं आक्रमण करूंगा। 8 गढ़ी को कब्जे में करके ही कुल्ला-दातून करूंगा। 9 आग लग गई। 10 फ़ौज के सैनिक आग बुझाने के लिए दौड़े। 11 आंकर खड़े रहो। 12 डेरों को भले जलने दो। 13 बातचीत करके बाहर निकाला। 14 गुलर गांव का पट्टा लिख दिया। 15 भखरी की गढ़ी ढहा दी। 16 तीज के त्यौहार के अवसर पर प्रस्थान करने लगे। 17 विदाई की आज्ञा। 18 कई लोग घर जाने की इच्छा करेंगे।

थांने सीख देसां । तरे फतेसिंवजी कयो—मने तो हजूर सु सीख आय गई है । ने आप ही कहो थो—सु हुं तो अेक वार घरे जासु । धायभाईजी तो चढीया तरे साथे हुय गयो । धायभाईजी तो वेराजी हुवा सु कोस 4 च्यार तो साथे वुहा ने पछे वलुंदा ने टळ गया[1] ने जगजी मेड़ते आया ने गुलाबरायजी आसोपे चुगली खाई के नाथा जसरूपोत कने रामसिंघजी रो दीनो धन छे सु वीस हजार रुपीया री गरज सजसी[2] । तरे असवार चढ़ीया सु नाथाजी ने पकड़ लाया ने घर जवत कीयो । फतेसिंघजी ने अठे ठीक हुई[3] । तरे फतेरांम पंचोली ने जोधपुर मेलीयो ने अरज कराई के म्हांराज प्हेली तो रामसिंघजी रा चाकर था ने हमार खांवदां कने आयो थो[4] ने जांणतो हो जीव सुं जीतरे वंधगी करसुं[5] । खांवदा मे तो चूक[6] न्हीं । म्हारी प्रालवद[7] री बात छे । धायभाईजी दोखे (धोखे) राख ने नाथां ने पकड़ीयो ने जवत कीयो सु घर में कांई माल नीकलीयो—

धांन मण 4, वगतर 2, वंदुक 3 अो डेरो घर में नीसरीयो । रजपुतां रे घर में धन कठे ? रामसिंघजी कद खजांनो सुंपीयो थो ? ईण वासते अरज करण में आवे है के सगा-गनायतां[8] में भूंडा[9] दीसे । केद तो म्हाजनां ने हुवे[10] । रजपूतां ने केद कीसे लेखे हुवे[11] ? ईण तरे गोरधनजी खीची अरज करी । तरे हजुर प्रवानो[12] धायभाईजी ऊपर[13] लीखाय दीयो के नाथा जसरूप ने सीख देजो[14] । तरे धायभाई पाछो लीखीयो—दरवार रो फायदा तो न्हीं देखणो, ने फतेसिंघजी ने राजी राखणा । तरे फेर हजुर सुं लीखीयो । नाथेजीं नु फतेसिंघजी रे डेरे म्हेल देजो । तरे फतेसिंघजी नु मेड़ते बुलाया ने धायभाई जी सुं मुजरो करण हवेली गया ने मुजरो कीयो । तरे पं. रामकरण कयो— तरे नाथा ने फतेसिंघजी रे डेरे म्हेलीयो ।

जोसी बालुजी धायभाईजी री चुगली खाई के—मुलक[15] में पईसो पेदास करां[16] जीतरो धायभाई उड़ावे है । ने खवास[17] राखी तीण रे बीस हजार रो

---

1 फंट गए, मुड़ गए । 2 आवश्यकता की पूर्ति होगी । 3 फतेसिंह को इस बात की खबर मिली । 4 आप जैसे स्वामी के पास आया था । 5 जब तक जिंदा रहूंगा तब तक आपकी सेवा करूंगा । 6 गलती । 7 प्रारब्ध । 8 सगे-सम्बन्धी । 9 बदनामी । 10 कैद तो महाजन बणियों की होती है । 11 कौनसे अपराध । 12 परवाना । 13 धायभाईजी को । 14 विदा की आज्ञा । 15 अपने शासन में । 16 धन एकत्र करते हैं । 17 रखैल ।

ग्हेणो[1] है। कुरसी[2] बैठे छे। घोड़ा छव् वीसी[3] राखे छे सु अेक-अेक घोड़ो तीन-तीन रुपीया रोजीना री रातब[4] खावे है ने मुंहोणोत सुरतराम रे ने धायभाई रे पीण डोड पड़ गई[5] सो ईण ही मोकली[6] कही कै राजा तो धायभाई छै ने सीरदारां ने आपरा कर लिया छे। तरे म्हाराज रे अबरोसो पड़ीयो[7] ने धायभाईजी नु जोधपुर बुलायो ने म्हाराज रा डेरा बारं हुवा सो मेड़ते पधारण रो मच्कुर[8] पड़ीयो ने धायभाई कनां सुं रसालो उरो लीयो[9]। घोड़ा मंगाय लीया ने डेरा बारे कीया। सारा सीरदारां ने बुलाय ने कूच मेड़ता कीयो[10] सो ठाकुर फतेसिंघजी अरज कीवी - के हुं गोठ[11] करूं छूं, सो मारे घरे पधारीजे। तरे हजुर फुरमायो—ठाकुरां थारे हाथ भीड़ छे[12] ने लागत[13] हुसी। तरे ठा. अरज कीवी—आ लागत सु त्रुत[14] छे। तरे फुरमायो—ठीक छे, त्यारी करो।

तरे बलुंदे गोठ हुई। महाराज पधारीया। घोड़ा नीजर कीया। पगमड़ा[15] कीया। महाराज घणा कुसी हुवा[16]। गोठ चोखी[17] हुई ने गांव काणेचीयो बखसीयो[18]। पछे म्हाराज डेरा पधारीया ने दुजे दीन जेतसिंघजी भगोतसिंघोत गोठ दीवी। धायभाईजी री मनवार[19] कीवी, पीण आयो न्हीं ने कहो—हाथी रा खोज में ग्होह् आय गया।

म्हाराज पधारीया। तरे सारा ही आया। पछे मेड़ते पधारीया ने बूंदी परणीजण नु पधारीया। ने जगजी धायभाई नु साथे लीयो सु मन में उदास थको वैवे[20]। उनाला री रुत[21] थी ने मारग में वेणो[22], सु धायभाई रथ में बेठो। सु रथ रे कस[23] रा पड़दा सु दोय ऊंट पखाल[24] पाणी री भरीयोड़ी वेवे सु रथ रे दोलो[25] पाणी छीड़कीजतो जावे ने हवा री जायगा देखे जठे उतर पड़े। आथण रा डेरा आवे[26] तरे दुसमण चुगली करे के—देखो,

---

1 सोने-चांदी के आभूषण। 2 गद्दी पर। 3. 120। 4 दाना-पानी। 5 आपस में तनाव बढ़ गया। 6 अत्यधिक। 7 अविश्वास हुआ। 8 सलाह-मशविरा। 9 सेना एवं सैन्य सामग्री वापस ले ली। 10 मेड़ता के लिए प्रस्थान किया। 11 भोजन की गोष्ठी। 12 आपका हाथ तंग है। 13 व्यय, खर्च। 14 समयोचित। 15 सम्मान किया। 16 अत्यधिक प्रसन्न हुए। 17 अच्छी। 18 बख्शीश में दिया। 19 मनुहार। 20 अनमना सा चल रहा था। 21 ग्रीष्म ऋतु। 22 चलना। 23 खस। 24 चमड़े की मशक। 25 चारों ओर। 26 सायंकाल में जब डेरे लगते।

उमीर[1] म्हाराजा तो तावड़ा[2] में ही हाले[3]। ने हजुर री मरजी तर-तर खंचती गई[4]। पछे थेट[5] बुंदी गया ने सांमेला री वखत[6] श्रीहजुर फुरमायो—के धायभाई ने कहो सु असवारी रे अगाड़ी हालो। तरे घोड़ा रे म्हेणो घाल पोसाख कर ने आगे खड़ण लागो[7] सु सहेर रा लोक-लुगायां जांणीयो—के राजा ओहीज[8] छे। तरे हलकारां मालम कीवी। जरे म्हाराज फुरमायो—जगजी ने कहो सु असवारी रे लारे घोड़ो खड़ावे। पछे म्हाराज तो चंवरी में पधारीया ने धायभाई डेरा उरो[9] आयो। जीण सु म्हाराज वेराजी[10] हुवा ने फुरमायो—देखो—जगो ही उमीर हुवो है। पछे मेड़ते पधारीया ने धायभाई कना सु सरायचा[11], घोड़ा खास मंगाय लीया। बीस घोड़ा बारगीर[12] ने दोय घोड़ा खासा[13] राखीया ने कयो—सीरदार धायभाई रे डेरे जावे तीन रो गांव जबत कर लेवो—

पछे म्होणोत सुरतराम ने दीवाणगी दीवी[14] ने जोसी बालु ने कैद कीयो ने जैतसिंघजी सु घणो राजीपो[15]। दीन में दस बार वतलावे। ने धायभाई तो रीस पाछी मारी[16] जीण सु ओगण उठ[17] ने संमत 1821 रा सावण में चल गयो[18]।

म्हाराज हायड़ीजी[19] ने ले नैं जोधपुर पधारीया ने राज रा काम में खीची गोरधन म्होणोत सुरतराम रो चलण ठेरीयो[20]। सिंगवी भींवराज ने मेड़ता री हाकमी दीवी ने मेड़ता रा डेरा ही जावला रा ठा. वदनसिंघजी दोली चोकी बेसाण[21] दीवी ने जावला ऊपर फोज चढ़ी सु जावलो कायम कीयो नें जालरे गढ़ी फोज लागी। सु म्हीनो अेक लड़ीया पछे काढ़ दीया ने वदनसिंघजी दोली चोकी थी ने जेतसिंघजी रो वजन थो, तीण सु केवायो। तरे वदनसिंघजी ने तो कवायो। कांम पड़सी तरे हुं थारे भेळो हुं ने हजुर में

---

1 अमीर। 2 धूप। 3 चल रहे हैं। 4 शनैः शनैः कृपा कम होती गई। 5 ठेठ। 6 विवाह पूर्व वर-पक्ष व वधू-पक्ष के व्यक्ति के परस्पर मिलन की रस्म हेतु प्रस्थान के समय। 7 हांकने लगा। 8 यही। 9 वापस। 10 नाराज। 11 तम्बू। 12 किराये के अश्व सहित सैनिक। 13 दरबारी अश्वारोही सैनिक। 14 दीवान पद पर नियुक्त किया। 15 रजामंदी। 16 गुस्सा पी गया। 17 शारीरिक विकार उत्पन्न हो गया। 18 देहान्त हो गया। 19 हाडी रानी। 20 गोरधन खीची और सुरतराम मुंहणोत की बात शासन में चलने लगी। 21 चौकसी बैठा दी।

मालम कराई — मांरो वचन हे सु हमे कांई हुकम फुरमावे ? तरे फुरमायो— थारो वचन है तो अे के जठे पोचाय दो[1]। तरे जेतसिंघ रे भाई सेरसिंघजी रूपनगर तांई म्होचाय दीया[2]। सु जेपुर गया ने म्हाराज जोधपुर पधारीया।

संमत 1822 रे बरस दीखणी पटेल माधजी उजीण[3] सु मारवाड़ ऊपर कूच कीयो[4] ने वारठजी ने बात करण मेलीया[5] सो मंदसोर जाय भेळा[6] हुवा ने बात करी। रुपीया बीजैसाही 3,00,000/- तीन लाख देणा कीया। खांनु वात बारे रयो। पटेल माधजी तो कूच पाछो कीयो। ने खांनु ने ले चांपावत मारवाड़ सांमो कुच कीयो[7] तरे पटेल माधजी नु वारठजी कयो—मैं तो आप सु बात कर लीवी ने फेर मुलक ऊपर फोज खांनुजी ले जावे छे। ने म्हारा सीरदार बारोटीया[8] लारे छे। तरे पटेल कयो—थांसु खांनु ही न्हीं ढ़बसी[9] तरे मुलक कीकर[10] रुखवालसो[11]। फोज कर ने कांकड़[12] ऊपर मजबूती करो। जरां जोधपुर सु म्होतो सुरतराम वीदा हुवो। साथे आठु ही मीसलां रा सीरदार वीदा हुवा। मेड़ते सिंघवी भींवराज कनै जवांनसिंघजी फतेसिंघजी था ने भाटी जेतसिंघ वालरवा रो थो ने बाकी मेड़तीयां री आसांमीयां थी। फोज हजार दोय सु कूच कीयो। मारोठ जाय डेरा कीया। बड़ी फोज सुरतराम ले आंण भेळो हुवो ने होली रे दीन दीखणीयां नु कूच कर ने नीटूती[13] आया। अठां सु आंपणी फोज गई ने फोजां रो लोडो[14] मीलीयो ने कजीयो[15] हुवो। जीण ऊार हरोळी[16] में फोज सि. भींवराज री थी ने जवानसिंघजी फतेसिंघजी रा घोड़ा उठीया सु तरवार भीळीया। चांदावत नाथोजी कांम आया। ने भाटी जेतसिंघजी वालरवा रो कांम आया। ने दीखणीया रा पग छुटा[17]। अेकर टाको चांपावत कीयो। पछे वे ही नाठा। पछे म्होणोत सुरतराम रा घोड़ा उठीया सु दीखणीया री वहीर[18] लुंटी। खांनु नास[19] अजमेर पेस[20] गयो। म्हाराज री फते हुई। पछे खांनु तो पाछो

---

1 यह जहां कहें वहां पहुंचा दो। 2 पहुंचा दिया। 3 उज्जैन। 4 मारवाड़ पर आक्रमण हेतु प्रयाण किया। 5 भेजा। 6 इकट्ठे। 7 चांपावत राठौड़ों ने खांनु को लेकर मारवाड़ पर आक्रमण हेतु प्रस्थान किया। 8 विद्रोही सरदार। 9 तुमसे खांनु ही जब नियंत्रण में नहीं आएगा। 10 किस तरह से। 11 सुरक्षा। 12 सीमा। 13 स्थान विशेष। 14 झुण्ड। 15 लड़ाई। 16 हरावळ—सेना की अग्रिम पंक्ति। 17 मराठों के पांव उखड़ गए। 18 सेना। 19 भागकर। 20 प्रवेश।

परो गयो ने चांपावत सांभर परा गया ।

म्होणोत सुरतराम रो डेरो गांव पीह हुवो । पीह उदावतां ऊपर पेसकसी रा रुपीया बीजेशाही 20,000) बीस हजार ठेरीया । जवांनसिंघजी ने गौड़जी गोठ कीवी । माहे[1] बुलाया जिणसु रायपुर ठाकुर केराजी हुवा के उदावतां रै घरे मादोदासोत कींहुं[2] जाय ? पछे रात आधी रा सिं. भीवराजजी ने फोज दे चाढ़ीया[3] सु दीन उगते[4] वसी री गढ़ी जाय घेरी । मोवणसिंघ चढ़ संभ उभो रयो[5] । पछे बात कर रुपीया ठेरीया । पछे फतेसिंघ बात कर चाकर राखीयो । पटो हजार 10,000) दस रो दीयो । मोवणसिंघजी फोज में डेरो कीयो । पछे चांपावत सांभर सु डीग परा गया । जाट रा चाकर रया ।

संमत 1822 रा वरस में[6] रेख-बाब[7] लागी । सु आदा[8] तो सीरदारां रुपीया भरीया ने आदा भरणा में सीरदारां घोड़ा दीया । जठा पछे रेख-बाब सरु हुई । सु तीजे वरस लाग जाय छे । पछे सुरतरांमजी कूच कर जोधपुर आयो ने भीवराजजी मेड़ते आया । पछे श्रीहजुर मु कजीया रा समाचार जोधपुर में पुछीया तरे म्हाराज फुरमायो के भीवराज रा घोड़ा उठीया[9] । जु वेली थांरा घोड़ा उठता तो खानु ने मार लेता ।

सुरतरांम अरज करी—मे तो सीरदारा ने कयो, पीण सीरदार घोड़ा चलाया न्हीं[10] । खंचवी वागा रया[11] । तरे ठा. जेतसिंघजी नु फुरमायो—खांनु जीवतो रैह गयो मु दुख रैह गयो सु मार लीयो हुतो तो दुख मीट जातो । तरे जेतसिंघजी आउवा रा अरज कीवी के म्हाराज में तो मोकलो कयो[12]—पीण सुरतरांम घोड़ा खड़ीया न्हीं । तरे म्हाराज दोनां नु रुबरु जगड़ाया[13] जद सुरतराम अरज कीवी के खांनु ने मार लेणो छे । पीण सीरदारां तंन दीयो न्हीं[14], ने जेतसिंघजी घोड़ा उठाया न्हीं, ने फते हुई है तो जवांनसिंघजी फतेसिंघजी कीवी छै, ने मेड़तीया कीवी न्हीं । तरे जेतसिंघजी कयो—म्हाराज मांने[15]

---

1 अन्दर । 2 क्यों । 3 फौज देकर आक्रमण के लिए विदा किया । 4 सूर्योदय के समय । 5 सन्नद्ध होकर खड़ा रहा । 6 जमींदारों से लिया जाने वाला सैनिक कर । 7 लगान । 8 आधा । 9 भींवराज के घुड़सवार सैनिकों ने जोरदार हमला किया । 10 सरदारों ने आक्रमण नहीं किया । 11 घोड़ों की लगाम खींच कर खड़े रहे । 12 पर्याप्त कहा । 13 प्रत्यक्ष बहस कराई । 14 मरनें के लिए उद्यत नहीं हुए । 15 मु ।

सुरतरांम साथे बीदा कीया सु माने जस[1] कठा सु ं आवे । सु आप तो नीजरा दीठो[2] है के मेड़ते आपांणी फोज में लोही[3] दीठो तरे सुरतरांम कायल[4] पड़ गयो । लोही दीठा सु ं मु ंछी[5] आवे । मेड़ते अपणी फोज में लोही दीठो । तरे ओ मू ंछी आय हेटो पड़ीयो[6] थो सो हाथी रा हौदा में नाखीयो[7] थो । मेड़ता री फोज में तो मांझी[8] भींवराजजी था ने मांरे मांझी आगा[9] येही, सु मांनु जस कठा सु ं आवे । ईण तरे हजूर मे दोनु ं मोकलां जगड़ीया[10] । पछे म्हाराज सुम[11] दीराय अबोला[12] राखीया ने दरवार बोड़ दीयो[13] । जठा पछे सुरतरांमजी ने जेतसिंघजी रे दोख पड़ीयो[14] सु सुरतरांम दीवाणगी छोड़ दीवी ने खीची गोरधनजी तीरथां गया[15] सु आय गया । तिण सु सुरतरांमजी रा पग पाछा मंडीया[16] ।

संमत 1822 रा वरस में घासमारी छोड़ी[17] । म्हाराज गुसायां ने मानीया । कसाईवाड़ो मने हुवो[18] । सेहर में दारू मने हुवो[19] ।

म्हाराज हजूर आतमारामजी रा दरसण करण नु ं पधारे तरे गुसाईंजी कयो – म्हाराज अबे ऊ तो मसांण[20] छे । सु थे राजा लोक जावो सु छोत[21] लागे । मुवा रो तो पछे मसांण छे । जठा पछे समाद[22] रो दरसण करणो मोकुब[23] कीयो ने गुसायां रो ईवकार वधीयो[24] । तबेला री जायगा बाल-कीसनजी रो मींदर करायो । आ वात संमत 1822 रा बेसाख री छे ।

संमत 1822 रा काती में दीवाली पाछले दीन अनकोट[25] ऊपर म्हाराज सायब श्रीजी सुवाप[26] पधारीया । पछे मीगसर भेळा ह्वे डोडीयां रे ब्याव कीयो । ने लारे सिंघी दोलत फोज हजार 3000 तीन हजार ले रामदेवरो

---

1 यश । 2 आँखों से देखा है । 3 गहरे घावों से बहता खून । 4 कमजोर । 5 मूर्च्छा । 6 नीचे गिर गया । 7 डाल दिया । 8 नायक । 9 अगवानी । 10 खूब लड़े-झगड़े । 11 सौगन्ध । 12 चुप । 13 विसर्जित कर दिया । 14 मन-मुटाव, द्वेष भावना उत्पन्न हुई । 15 तीर्थ-यात्रा । 16 वापस पैर जम गए । 17 मवेशियों की चराई पर लगने वाला कर माफ कर दिया । 18 पशु-वध निषेध हुआ । 19 शराबबन्दी हुई । 20 मरघट । 21 सूतक, छूत । 22 समाधि । 23 स्थगित । 24 गु ंसाइयों का प्रभाव बढ़ गया । 25 अन्नकूट महोत्सव । 26 गांव विशेष ।

मारीयो[1] ने प्होकरण में स्वाईसिंघजी टावर हो, ने सुरजमलजी फोजदार थो पीण जगड़ो करण री आसंग[2] हुई न्हीं। देवरो मार कतल कर बंध पकड़ रात रो तो मुकाम राखीयो ने प्रभात रा कूच कीयो। तीण री खबर फलोधी आई। तरे हाकम सिंघ. हींदुमल चढ़ीयो पीण कजीयो[3] करण री आसंग हुई न्हीं। पछे सींघी तुरक बीजणोट डेरो कीयो जठे रामदेवजी चेसटा[4] दीखाई तरे बंध लुगायां टाबर पकड़ीया था सु छोड़ दीना। श्रीहजूर में खबर गई के रामदेवरो मारीयो तरे नागोर मेड़ते हुकम पाथो[5] के फलोधी लोक[6] मेलजो ने फलोधी हाकम नें हुकम प्होंथो[7] फोजबंधी करजे ने प्रगना री जावतो[8] राखजे। कांकड़[9] मजबूती राखजे। नागोर सु लोढो सुरतांणमल असवार पांच सौ सु चढ़ीयो। आसांमीयां—1 चांदावत, 1 करमसोत, 1 कुंपावत, 1 चांपावत, 1 जोधा रतनोत ईतरा लेर चढ़ीयो। मेड़ता सु सिंघवी मोखमदास रैं साथे चांदावत सुरतांणोत असवार अढ़ाई सो सु मेलीयो सु फलोधी जाय सांमल हुवा।

पछे म्हीना दोय तो फलोधी रया। पछे टेकरा ऊपर बारू चढ़ीया सु नार मगरे चढ़ी गया। डेरा कीया पछे मालदेवोतां री तो बात ठेहरी[10]। पछे कोरड़[11] रे जोड़[12] दुदीये बेरे[13] डेरा कीया। मुकाम दीन 10 रया। उठे सीरदार सीकार रमीया[14]। घणा सुर[15] हीरण मारीया। पछे फलोधी आया। पछे दीन दसेक सु राज री फोज चढ़ी सु सीरड़ा[16] दोला आंण फीरीया। पछे सीरड़ा वात ठेहेरी। चोरीयां कीवी सु पाछी दीवी। वरस दीन रा उजाड़ रा जांमन[17] दीया। पछे फोज पाछी फलोधी आई। दीन दसेक सु चवड़ा ऊपर तीजो प्होर रा फोज चढ़ी सु रातो-रात दीन उगतां चवड़ा गया ने प्होकरण ने प्होर अेक प्हेला खबर हुई सु गांव सूनो कर ने नास गया[18]।

नागवलोल फोज फीरी सु घास लकड़ी लूट लीवी। वेरा ऊपर डेरा कीया। दीन 15 मुकांम रया पछे प्होकरणा री बात ठेहरी। चोरीयाँ पाछी

---

1 रामदेवरा पर कब्जा किया। 2 हिम्मत। 3 युद्ध, लड़ाई। 4 चमत्कार। 5 पहुंचा। 6 सेना आदि। 7 पहुंचा। 8 सुरक्षा। 9 सीमा की कड़ी सुरक्षा। 10 निश्चित हुई। 11 घास विशेष। 12 घास के लिए छोड़ी गई भूमि। 13 मीठे पानी का कुआं। 14 शिकार खेली। 15 सुअर। 16 गांव विशेष। 17 जमानतें। 18 भाग गए।

दीवी। पछै नागोर रा लोक री तो श्रीहजूर सु सीख आई सु नागोर गया, ने दुजी फोज आगो गई।

पछे सीवकोटड़ो कायम कीयो। कोटड़े गोरधनजी खीची रे कंवर[1] री सगाई कीवी। पछे गोरधनजी तीरथां कांनी गया था सु जाट रो राज[2] देख ने आया था। सु कयो—जाट ने आंपे अेक हुय जावां तो दीखणीया ने नरबदा उरे आवण देवां न्हीं। तरे पंचोली परसादीराम ने छतरसाल रुघनाथसिंघोत ईणा ने म्हेलीया। उकील[3] नागोर सु तीरां रा दसता[4] सोगायत दे मेलीया[5]। सु दीठा जाय जाट जवारमल सु मीलीया ने कयो—आपां सारा हींदसथांन[6] रा राजा अेक हुवा तो दोखणीयां सु जगड़ो[7] कर मुलक वांट लेसां। तरे जवारमलजी कयो—म्हाराज विजेसिंघजी ने हुं अेक हुवा तरे दुजा ने तो जोर घाल[8] अेक कर लेसां।

सु संमत 1824 रा प्होकर[9] पुनम[10] ऊपर कूच कीवी सु पीकरजी आया। सु मारग में जेपुर रा गांव त्रिगाड़ीया[11] जीण सु राजा माधोसिंघजी बेराजी[12] हुवो ने डील पीण कुसी नहीं थी[13] ने नल सुजीयोड़ा[14] था। ने जाट प्होकरजी आय डेरा कीया। तरे म्हाराज विजेसिंघजी पीण[15] प्होकरजी पधारीया नें जाट केवायो सुरजमलजी री कांण[16] छे। सु प्हेली थांरे डेरे में नहीं आंवा। सु म्हाराज जवारमल रे डेरे पधारीया। खुत्री कुसी कीवी[17]। हाथी 2, घोड़ा 4, बंदुकां 2 नीजर कीवी[18]। पछे दुजे दीन जवारमल डेरे आयो। तरे म्हाराज घोड़ा 2 दीया।

पछे फीरंगीया रो तमासो देखण ने असवार हुवा सु बूढ़े प्होकर पधारीया। फीरंगीया रो बाड़ो[19] मंडीयो थो। अेकण कांनी तो राठोड़ां री फोज ऊभी रही ने अेकण कांनी जाटां री फोज उभी रही। पछे तोपां छुटी सु उपरां

---

1 क्रुमार। 2 भरतपुर का राज्य-शासन। 3 वकील। 4 बाणों के पीछे लगने वाला हिस्सा। 5 भेंट स्वरूप देकर भेजा। 6 हिन्दुस्थान। 7 झगड़ा। 8 दबाव डालकर। 9 पुष्कर। 10 पूर्णिमा। 11 लूट-खसोट की। 12 नाराज। 13 शरीर अस्वस्थ था। 14 नाड़ियों में सूजन थी। 15 वह भी। 16 सूरजमल के देहान्त के शोक में अफसोस जाहिर करना, मातमपुर्सी। 17 सान्त्वना देकर खुश किया। 18 जवाहरमल ने महाराज विजयसिंह को दी। 19 घेरा।

उपरी[1] घणी छुटी । सो तोपां रा भड़कां[2] सु हाथीं मसत[3] होय नीसरीयो ने सीरदारां घोड़ा आडा घालीया ने भाला वालां[4] हाथी ने रोकीयो । तरे झाल ने ठोकरां वाही ने मोरो[5] कीयो सो जवारसिंघजी होदा मांय सु डीगीया तरे म्हाराज विजेसिंघजी बांय पकड़ झालिया[6] जितरे मावत[7] आया सु च्यारुं पगां बदणाद[8] ने डग बेड़ीयां जड़ दीवी[9] पछे नालकी[10] लगाय ने पेला तो जवारसिंघ ने उतारीयो पछे म्हाराज विजेसिंघजी उतरीया । खासे[11] असवार हुवा । जवारसिंघ कयो—ईण हाथी ने तोप रे मुंडे उड़ाय[12] देवो । तरे म्हाराज विजेसिंघजी कयो—के गुणेस छे । सु मारणो न्हीं । तरे ध्होकर गुरां नु पुनारथ कर दीयो[13] ।

पछे दीखणी अजमेर सु नासता था[14] । तरे म्हाराज फुरमायो—अजमेर तो म्हारी दीवी छे । सु थे बेठा रहो । मे कहां जद जाजो[15] । पछे जेपुर उकील मेलीया ने माधोसिंघजी ने कवायो के—थे ही आय ने सांमल हुवो सु दीखणीया रो मजकूर बांधां[16] । दीखणीया ने नरबदा पार उतरण दां न्हीं । उजीण[17] तो थांने देसां ने गुजरात मे लेसां, पुरब जाट ने देसां । मुलक री तीन पातीयां[18] कर लेसां । तरे माधोसिंघजी कयो—मारो तो डील आछो न्हीं ने मांने बात में सांमल राखणो हो तो प्हेला मासुं बात कर पछे जाट ने बुलावणो थो । हमे तो आ बात कोय न्हीं । तरे म्हाराज गीरदास सुरतसिंघोत नुं जेपुर मेलीयो । ने माधोसिंघजी कयो—हमे थे केसो[19] जुं ही करसां । तरे माधोसिंघ जी गीरदास नु बुलाय आपरो डील हो सु दीखायो ने कयो—म्हारो सरीर ईण तरे है सु कीण तरे हालणी आवे[20] ? ने जाट कयो—कंबा ने खारी[21] उरी देवो न्हीं तो मुलक खराब करसुं, जिण सु माधोसिंघजी दलेलसिंघ रावत ने बुलाय कहो—बाबाजी म्हारा डील री तो आ गत छै ? नै जाट सु पड़पां[22] न्हीं । सु

---

1 एक पर एक । 2 तोपों की भड़भड़ाहट से । 3 मस्ती में आकर, चौंककर । 4 भाले वाले सैनिकों ने । 5 हाथी के मुख पर लगाये जाने वाला लोहे का उपकरण विशेष । 6 बांह पकड़ कर संभाल लिया । 7 महावत । 8 रस्से, बंधन । 9 पांवों में बेड़ियां लगा दीं । 10 सीढ़ी । 11 महाराजा की खास सवारी का घोड़ा । 12 तोप को आगे करके उड़ा दो । 13 गुरू को पुन्यार्थ दिया । 14 भाग रहे थे । 15 जाना । 16 सलाह-मशविरा कर योजना बनावें । 17 उज्जैन । 18 भाग, हिस्सा । 19 कहोगे । 20 किस तरह चलना संभव होगा ? 21 कंबा और खारी गांव विशेष । 22 निपट सकेंगे ।

हमार दोय दीन कंवार ने खारी जाट ने देवा छां । तरे दलेलसिंघजी कयो—मा[1] जीवता तो अेक ही गांव देवां न्हीं । ने मा मुवा पछे आपरै सुळे[2] जुं करजो । तरे माधोसिंघजी जेगढ़[3] जाय रु. 52,00,000) बावन लाख रुपीया अेक घोड़ो दीयो ने कल[4] मजली[5] । सो कोटा सुं हजार 3000 फोज आई । ने उदेपुर सुं रांणाजी 30,000 तीस हजार फोज मेली । दीखणीया 10,000 दस हजार फोज मंगाई ने कछवाहां हजार पचास 50,000 भेळा हुवा । सारी फोज हजार 70,000 भेळी हुई । तरे माधोसिंघजी कयो—सवेर[6] जगड़ो करो । तरे दलेलसिंघजी कयो—सवेर तो राठोड़ भेळा छे । सो कजीयो रस आवे न्हीं[7], ने कजीयो कीया सु राठौड़ ने कछवाहा सारा पार पड़ जासी[8], ने जाट सावतो[9] रे जासी । तरे भटजो ने उंकील मेलीयो ने कयो—दावे जु[10] कर ने राठोड़ां ने फांटजो[11] । तरे भटजी आय म्हाराज वीजेसिंघजी ने आसरीवाद[12] दीयो ने माधोसिंघजी कया जीके समाचार कया । तरे म्हाराज भटजी ने फुरमायो—के मैं तो सारी हींदसथांन[13] री मरजाद[14] री बात करता था ने सारा राजस्थानां[15] ने दुख देवे छे । ने फोड़ा घाले[16] छे । जीण री मरजाद बांधता[17] था । सु म्हाराज माधोसिंघजी री सला[18] हुई न्हीं । तरे भटजी अरज कीवी—के म्हाराज री डील आराम न्हीं । तीण सु पधारणो हुवो न्हीं दुजे आप पधारो ने वे कीहुं न्हीं पधारे ? डील री अड़चल मुदे[19] न्हीं पधारीया । ने फेर गीरदासजी म्हाराज रो डील दीठो छे । तरे म्हाराज फुरमायो—थे लोक[20] भेळो कीहुं कीयो ? तरे भटजी अरज कीवी—फोज तो जाबता रे वासते कीवी छे । जाट ने आप सीख दीरावो तो मे फोज बीखेर देसां । तरे म्हाराज फुरमायो—के थे जाट सुं जगड़ो करसो तो मे साथ पोचावण ने जासां[21], थांसु जगड़ो करसां । तरे भटजी कयो—म्हारे तो म्हारी लार छुड़ावणी है[22] । म्हारी तो पाच[23] कजीयो करण री न्हीं । आप कीहुं मेनत[24]

---

1 हम । 2 आपकी समझ आवे । 3 जयगढ़ । 4 युद्ध । 5 योजना बनाई । 6 कल प्रातः । 7 युद्ध माफिक नहीं पड़ेगा । 8 परस्पर जूंझ जायेंगे । 9 साबुत । 10 ज्यों-त्यों करके । 11 जाटों से विभक्त कर देना । 12 आशीर्वाद । 13 हिन्दुस्थान । 14 मर्यादा । 15 पूरे राजस्थान के शासकों को । 16 कष्ट देते हैं । 17 मर्यादा बनाये रखने को योजना । 18 सहमति । 19 शरीर की अस्वस्थता के कारण । 20 फौज । 21 पहुंचाने के लिए जायेंगे । 22 हमें तो जाटों से हमारा पीछा छुड़ाना है । 23 शक्ति । 24 मेहनत, परिश्रम ।

करावो । मारे कने वचन लीजे नें जाट नें सीख दीजे । तरे म्हाराज देवलीया तांई जाट रे लारें पधारीया ने जाट ने कयो—मजल दोय तीन मैं थारे साथ हालसां[1] ने पछे पाछा वळसां[2] । तरे जाट जकारसिंघ कयो—म्हाराज मांनु[3] कीसो[4] डरें छे ? कछवाहा रो कांई मुंढो[5] ? सु मांसु जगड़ो करे । राड़ हुवै तो तांड़ो[6] लूट वीखेर देमु ने जेपुर लूट लेमु । ने बोलावा[7] सु हुं कीताक मुलक फीरसु । आप पाछा पधारीजे तरे जाटवो उठी नु कूच कीयो । तरे ईणां रे साथे मेलींया—

1 मुंहता मनरूप ने नागोर री फोज दे साथे मेलीया ।

1 सिंघवी सीवचंद ने सोजत री आसांमीया दे साथे मेलीया ।

दोनु जायगा रो लोक 3000 तीन हजार साथे मेलीया ने म्हाराज वीजेसिंघजी पाछो कूच कीयो सु सांभर पधारीया ने सांभर सुं मारोठ पधार डेरा कीया ।

म्हाराज माधोसिंघजी आपरा सीरदारां नें बुलाय मुजरो करायो ने कयो—सारा कछवाहां री मूंछ मूंड ने[8] जाट जाय छे सो देखां कीसाक हुवो छो[9] ? तरे सारा सीरदार बोलीया—बादा की आसंग कांई के आंबेर का जाड़ा[10] के खेह[11] लगाय ने जावे । रजपूतां का हाथ देखसी । तरे हरसराय घुरसराय दलेलसिंघजीं सारा कछवाहां ने ले ने कूच कीयो सु वीस कोस नीबरांणे डेरा कीया । ने उठां सुं कूच कीयो सु कोस 5 गया । ने हलकारां खबर दीवी के जेपुर री फोज आई ने चंडोल सु कजीयो हुवे छे । तरे तुंवरा रो गांव मोवड़ो छो । जठे जायं ने असवारी उभी राखी ने तोपखांनो पाछो घेर मुंढा आगे दे ने उभा रया ने जीवणी अणी[12] तो मुगल दीली तुरक थो ने डावी बाजू[13] फारासीस समरू मुसामदत उभा था । ने वीचे जाट रो घरू लोक रयो । जीतरे तो फोज आय चोदंत[14] हुई ने गोला सरू हुवा । ने गोला सुं जेपुर

---

1 चलेंगे । 2 लौट आयेंगें । 3 मुझे । 4 कैसा । 5 क्या औकात है ? 6 सेना । 7 दूसरों की सुरक्षा की छायां । 8 कछवाहों की शक्ति को चुनौती देते हुए । 9 कैसे अपनी शूर-वीरता का परिचय देते हो, यह मैं देखना चाहता हूं । 10 आंबेर के क्षेत्राधिकार के प्रदेश । 11 लूटपाट व आगजनी करके । 12 दाहिनी ओर । 13 बांयी ओर । 14 आमने-सामने ।

रा लोक में तुतड़ा उड़ीया[1] ने पाछा सीरकीया[2] ने जाट री तोपखांनो नेड़ो[3] मांडीयो[4] ने फेर गोला री मार ईजाफे हुई। तरे अद कोसेक फेर पाछा सीरकीयां ने जाट रो तोपखांनो फेर नेड़ो माडीयो ने गोलां री मार घणी हुई। इतरे सेखावत भोलसिंवजी नोर्लसिंघजी राजसिंघ घोड़े चढ़ अे तो फ़ोज हजार बीसेक सु अेक वाळो आय गयो थो सु वाळा में बड़ गया। समरू रा गोला ऊपरां कर ने नीसरबो कीया। कछवाहा रो तोपखांनो पुगो न्हीं ने बाण रो मारको दीयो। पछे लिछमणसिंघ कयो—दलेलसिंवजी रथ में वेढ़ा हो ने लोक गोलां सु कायल हुवो छै। लोक पाछो पलटीयो तो जाट थांवरो जेपुर जासी ने बुढ़ापो थारो बीगड़ जासी। तरे दलेलसिंघ रथ सु उतर घोड़े चढ़ीयो। जीतरे गोलो आयो सु पापड़ा रो मांस चाटीयो पीण संभ ने घोड़े चढ़ीयो ने हरसराय घुरराय राजावत, नाथावत, खंगारोत ईणा रा घोड़ा हालीया सु जाटां री जीवणी बाजु मुगलां ऊपर। तरे जाट राठोड़ां ने मुगलां री ऊपर मेलीया जीतरे तरवारां भीळीया ने मुगल रा पग छुटा ने पुठ फीरी सु घोड़ा राठौड़ां ऊपर आय पड़ीया सु पुरो बीखेर दीयो सो मुगल तो नास गया ने राठौड़ तरवार भीळीया सु कछवाहा रा ईतरा कांम आया —

दलेलसिंघ 1, लिछमणसिंघ 1, हरसराय 1, गुरसरांय 1 ने और ही कछवाहा कांम आया। ने नीसांण रो हाथी[5] जाटां रो कछवाहा घेर लीयो ने राठौड़ां रा ईतरा कांम आया —

राठौड़ सुरतसिंघ पदमसिंघोत खांप माधोदासोत मेड़तीया;
चांपावत गांव ओडीट रो ठाकुर केसोदासोत री आसांमीयां दोय;
पातावतां री आसांमीयां कांम आई।
राठौड़ जोधा रतनोत सीरदारा रा वेली 10 कांम आया।
जजाल वरदार[6] जणा 12 वारे कांम आया।
नागोर रो मुतो मनरूप रे ल्होह लागो।
सोजत री आसांमीयां 2 दोय कांम आई।

---

1 जयपुर की सेना के चींतड़े उड़ने लगे। 2 खिसके। 3 नजदीक। 4 स्थापित किया। 5 भरतपुर का राज्यांकित हाथी। 6 बन्दूकधारी सैनिक।

ने जाट रो हाथी मुड़ीयो सु पूरो फोज रो बीखेर गयो। तरे मुगल ने बुजा ही लोक रा पग छुट गया[1]। तरे जाट जवारमल हुकम दीयो के डेरा खेड़ा कर देजो। सु डेरा तो खेड़ा उभा था ने वहीर उभी थी सु दस हजार मुगल नाठोड़ा[2] गया सु वहीर लूट ने दीतां नीसरीया जीण सु फोज में भगी पड़ गई। सु जाट जवारमल तो पांच हजार असवारां सु उभो ने फरासीस समरू ने मुसो हजार पांच सु साबत उभा रया। ने दीन वधतेक[3] जाट रा घोड़ा उठीया सु कछवाहा रा हाथी 4(चार) घेर लीया ने कछवाहां रा पग छुटा सो नींब रे थांणे जावता पग मंडीया[4]। कोस च्यार नाठा ने रात पड़ी सो खेत में उभा रया ने सेंदाना[5] बजाया। अर राईको पण मेलीयो के डेरा जाय मजबूती करावजो। जद राईको जाय डेरा री जायगा देख पाछो आयो ने मालम करी के म्हाराज डेरा री जायगा तो डोडा पड़ीया ने बाजरी री गुणां[6] पड़ी है ने लोक थो सु नांठ गयो[7]। तरे जाट बोलीयो के कांम आया। सु पुठ[8] तो फीरे न्हीं। तरे जाट कने भला आदमी था जीकां अरज करी के थे—कांम कीहुंव आवो छो जिवता रेसां तो राड़ फेर करसां, ने मर गया तो दुसमण रा चांपा[9] हुय जासी ने परवड़ा[10] गीणावसी ने पुठ फेरण रो केवो सो कीसा कजीया में पुठ फेरी है? तरे डेरा री जायगा वाळा[11] ऊपर आया ने घोड़ा नु पाणी पायो, लोगां पीयो जठे हजार ने खीखोक थो, कमर खोल ने सुतो[12]। तरे साथ रा ताकीद दीवी ने कयो—फरासीस ने कवो सु वहीर हुवे तरे समरू कयो—के मारी तोप रो पईड़ो भांज गयो है सो छोड़ ने जाऊं न्हीं। तरे जवारमल कयो—तोपां तो भळे[13] घणी देसां। तरे तोप में मोगरी अड़ाय फाड़ नाखी, ने वहीर हुवो। काबा[14] जातो ठेरीयो ने कछवाहा नींबरे थांणे भेळा हुआ ने मनसोबो कीयो के लोकायत किसीक[15]? दलेलसिंघजी कांम आया। तरे जाट जेपुर आयो सो हमे स्वारे राड़ करसां। सो मरीयां पछे दावे जीहुं हुवो[16]। जीतरे हलकारा खबर दीवी के जाट री फोज तो नाट गई। तरे कयो—प्होर रात गयां तांई तो सेदानो बजावता। तरे दुजे कयो—

---

1 पांव उखड़ गए। 2 भागकर चले गए। 3 सूर्यास्त होते-होते। 4 पांव जमे। 5 वाद्य विशेष। 6 बाजरी के सूखे डंठलों का ढेर। 7 भाग गए। 8 पीठ। 9 दुश्मनों को माल-पानी मिल जाएगा। 10 यशगान। 11 नाला। 12 कमरबंध खोलकर सो रहे थे। 13 और। 14 धार्मिक स्थल। 15 सेना की स्थिति कैसी है?. 16 कुछ भी हो।

जाट री फोज नाठी। तरे जांणीयो—जाट कांम आय गयो। तरे कछवाहा प्रभात रा खेत ऊपर आया ने डेरा तोपां लुटी जाटां ताही। म्हाराज विजेसिंघजी रा डेरा मारोठ मे हीज रया सु खबर आई के जवारसिंघजी री फोज नाठी तरे म्हाराज घणो फीकर कीयो ने भटजी ने बुलाय ने कयो—के थे कहो तो जाट सुं राड़ करां न्हीं दुजो हुवे तो घणां थोक करां[1]। पण त्रिमण हे सो फोज माय सु परो[2] जा। भट ने सीख दीवी।

तरे म्हाराज कूच कर मेड़ते पधारीया, ने पछे फागुण रे म्हीने म्हाराज माधोसिंघजी धाम पधारीया[3]। पछे डीग रे उली कांनी बारे(12) कोस ऊपर कछवाहा री फोज ही, सु नाठी। सु जेपुर उरी आई ने नागोर री फोज जाट रे साथे थी सो वेसाख रे म्हीने सीख कर ने आवती थी। तरे कछवाहां दीखणीया नु कयो के जाट कनां सुं धन ले ने राठौड़ जाय छे सु थे राड़[4] कर ने धन उरो लो। तरे दीखणी कूच कर ने आगा आया, ने हलकारा खबर दीवी के दीखणी आवे है। तरे नागोर री फोज सांगानेर सु रात रो कूच कीयो सु दोफार रा डेरा गांव वचुण कीया ने खांणो दांणो कर ने रात रा चढ़ीया सु छोटी नरांण डेरा कीया ने रूपनगर उरा आया। पछे प्रबतसर डेरा हुवा ने दीखणी लारे आया। तरे थाटा[5] ऊपर फोज जाय उभी रही ने थाटा में पेसण दीया न्हीं[6]। पछे मुं. सुरतराम मेड़ते आया, म्हाराज सु बात कीवी दीखणी पाछा गया। तरे नागोर री फोज मेड़ते आई। सारा सीरदार श्रीहजुर में मुजरो कीयो। पछे म्हाराज कंवार श्री फतेसिंघजी कोटे म्हाराव जवांनसिंघजी री वेटी परणीजण ने पधारीया। पाछा पधारीया फोज हजार च्यार साथे थी।

और उदेपुर सुं रांणा अड़सीजी रा उकील आया, ने कयो—म्हारो ऊपर करो[7]। मै थांनु खरच देसां। तरे म्हाराज श्री विजेसिंघजी तो जोधपुर पधारीया ने सिंघ. फतेचंदजी भींवराजजी साथे सारी फोज वीदा कीया ने नागोर री फोज परदेस सुं आई थी जीण नुं ही साथे मेली[8] सो गांव भागेसर डेरा घणा दीन तांई रया।

---

1 कड़ी कार्यवाही करता। 2 फौज से निकल दूर जाओ। 3 स्वर्गवास हो गया। 4 लड़ाई करके। 5 घाटी। 6 प्रवेश नहीं करने दिया। 7 मेरी सुरक्षा-सहायता करो। 8 भेजी।

रांणो रतनसिंघ कुंभलमेर सुं उकील मेलीयो के रांणे अड़सीजी थाने रुपीया देसी जीतरा ही मे देसां, पीण थे अड़सीजी री मदत मत करो। तरे रतनसिंघजी खजांनो मेलीयो। तरे भांडेसर सु फोज बीखेर दीवी ने मुसदीयां नु जोधपुर बुलाय लीया ने रतनसिंघजी री खरची खींवसर महेली[1] जिणसुं करमसोत जोरावरसिंघजी भाई-बेटा सुधां कुंभलमेर गया ने सांमीया री जमात[2] राखी थी, सु वरस दोय तांई रोजगार दीयो पछे स्हेरो नावे ठीकांणो थो सो दाब लीयो, पछे दीखणी आय उदेपुर लागा।

पछे संमत 1825 री साल छव-सात म्हीना तांई घेरो रयो। पछे पायगीयो[3] आय ने मील गयो। तरे रतनसिंघजी नु तो सांमी[4] ले कुंभलमेर परा गया ने पटेल दीखणी थो सु उजीण गयो ने पायगीया सु रीस हुयी, ने पायगीयो कयो—के माधजी नु तो मैं बेठांण दीयो थो ने हमे दुसरा ने बेठांणसुं। पछे मेवाड़ रा सीरदार नुं ले ने कूच कीया सु उजीण जाय कजीयो कीयो सो पटेल नु अवखो लियो[5]।

जीतरे सांमीया री फोज हजार दसेक आय गया। जीणसु पायगीया ने मार लीयो ने सायपुरा[6] रा राजा उमेदसिंघजी कांम आया ने फेर दूसरा ही सीरदार कांम आया।

उदेपुर रा राणा राजसिंघजी देवलोक हुवा ने काका अड़सी टीकै बैठा। पछे राजसिंघजी रे बेटो हुवो सु जनमतांई कुंभलमेर ले गया किला मे ने नांव रतनसिंघ दीयो। कीतराक सीरदार तो अड़सीजी सांमल रया ने कीतराक रतनसिंघजी सांमल रया, ने मेवाड़ में वड़ो फीतुर[7] उठीयो। जीण सु जोधपुर रा म्हाराज श्री वीजेसिंघजी कने संमत 1827 रा वरस में राणा अड़सीजी उकील मेलीयो ने कयो—म्हारी मदत करो थानुं गोढवाड़ देसुं तरे गोढवाड़ उरो लीखत नीरदावा[8] रो कर दीयो। राणे अड़सीजी पछे फोज मेली सो वाली में जाय अमल कीयो ने प्रगना में अमल कीयो। पछे देसुरी सोलंखी

---

1 भेज दी। 2 स्वामी (साधु) लोगों की जमात। 3 सन्देशवाहक, दूत। 4 स्वामी लोगों को। 5 संकट में डाल दिया। 6 शाहपुरा। 7 उपद्रव। 8 गोडवाड़ पर से दावा हटा लिया।

ठा. वीरमदे संभोयो सो फोज जाय लागी ने म्हाराज डेरा बारै कीया। बीका-नेर सु' म्हाराज गजसिंघजी ने बुलायां पछे दोनु' राजा श्रीजी दुवार[1] जाय डेरा कीया। उदेपुर सु अड़सीजी आय ने म्होणोत सुरतरांम, करमसोत जोरावरसिंघजी सु' वात करण मेलीया। अड़सीजी कने जीण मु आउवा रा जेतसिंघजी बेराजी हुय गया के करमसोत ही मुलक री मांमलत[2] करसी तो रीड़मल कांई कांम करसी[3] ?

ईण तरे ठाकुर बेठा जीण सु' सुरतरांमजी ने जोरावरसिंघजी अेकल पालखी बैठ ने जेतसिंघजी रे डेरा कने हुय ने नीसरीयां। पछे बात वीसटालो[4] तो अड़सीजी मानीयो न्हीं। ने पाछो कूच हुवो। तरे अेक दीन जेतसिंघजी जोरावरसिंघजी आया। तरे जेतसिंघजी बोलिया, म्हाराज पधारीया ने बात मानी न्हीं। तीण सु दरबार ने आछो न लागे तरे हजुर फुरमायो—कांई करां? ठाकुरां आपां तो दोनु कांने आछो करता थां पिण अड़सीजी माने न्हीं। तरे जेतसिंघजी कहो--दोनु' राजा आपां ने माने न्हीं सो आसंग[5] कांई ? पीण वात में केहीक आया न्हीं, ने मीलवा वीना जाब हुवे न्हीं[6]। तरे जोरावरसिंघजी बोलीया के आपरो मूडो हो कने हीज थो। तरे जेतसिंघजी कयो—करमसोत आगे ही भांजगड़[7] कद कीवी ही ? ने हमे म्हाराज धावली रा चोरां ने मोटा कांमा में घालीया सु रस कद आवे ? तरे जोरावरसिंघजी कहो—ठाकुरां देख ने बोलो--थारो ही दादो ही दोय हजार रो पटायत थो जीण ने धणीया मोटै नाव कीयो[8], ने खींवसर तो सात पीढ़ी रो ठीकांणो है ने करमसोत कीण सु घड़तां[9]। तरे जेतसिंघजी कही--ईसड़ा ही खावंद[10] छे। सु हरामखोरा नु' मुढ़े लगावे[11] तरे जोरावरसिंघजी कयो—के हरामखोर तो जीके सु म्हाराज अभे-सिंघजी रा बेटा सु' जमा गमाई[12]। जीके हरांमखोर म्हाराज रामसिंघजी कने लु'ण री तासीर[13] दोड़ीया जीके हरांमखोर हुसी जीका आगे ही सजा पाई है ने फेर पावसी। तरे जेतसिंघजी कयो—दरबार में बेठो छे। दुजु घणा ही

---

1 नाथद्वारा। 2 पंचायती। 3 रिड़मल के वंशज क्या काम करेंगे ? 4 मध्यस्थता। 5 विचार। 6 मिले बिना विचार-विमर्श होवे नहीं। 7 जोड़-तोड़। 8 सम्मान बढ़ाया। 9 किससे कम हैं। 10 स्वामी। 11 मुंह लगाते हैं। 12 जमी-जमाई प्रतिष्ठा गंवाई। 13 नमक हलाली।

थोक करू[1]। तरे जोरावरसिंघजी कयो—ठाकुरां ईसड़ी मन में मत राखो आपरा मन मे छे तो आपरो साथ ले ने आवो। ने हूँ ई मारा घर रो साथ ले आसु पींड़ा रे[2] मन में हुवे तो अबार ही दोढ़ी वारै हालौं। रामजी करसी जूं हुसी।

तरे श्री हजुर म्हाराज साब ऊठ बेठा हुवा ने फुरमायो—मांरी आंण छे[3] बोलीया तो। पछे जोरावरसिंघजी ने सीख दीवी सु डेरे आया।

पछे ललो-पतो[4] कर जेतसिंघजी ने सीख दीवी सु कूच कर घाटे उतरीया ने सोजत सूं म्हाराज गजसिंघजी ने सीख दीवी सु बीकानेर पधारीया ने महाराज श्री वीजेसिंघजी जोधपुर पधारीया।

संमत 1829 में म्हाराज रामसिंघजी धाम पधारीया[5]। सु नावे दरीबे हाकम उपादीयो मनरूप था जीणा ने खबर हुई के रामसिंघजी देवलोक हुवां। तरे मेड़तीया केसोदासोत सुरतांणोत रुघनाथसिंघोत नु भेळा कर ने हजार 2,000 दोय सु कूच कीयो सु सांभर जाय कायम कीवी[6]। ने हजूर में कासीद मेलीयो सु नोवत तीन वखत री बंध[7] रही। ने मनरूप ऊपर घणा राजी हुवा ने खींची गोरधनजी ने कयो—म्हाराज ईसड़ा मीनख चाहीजै। सीतर कोस जमी समाचार आवे जीतरे कुण जांणे कांई हुवे? तरे मनरूप ने सांभर री हाकमी सीरपाव मेलीयो ने जेपुर दोढ़ीदार आईदान नुं मेलीयो। सु रामसिंघजी लारे वीरंमभोज कीयो[8] ने गया गंगा घाल पींड भराया ने रसालो ने घोड़ा हाथी था, जीने संभाल ने लाया सु हाथी, घोड़ी ने ठाकुर सेवा मेड़ते राखीया ने दुजो डेरो जोधपुर मेलीयो ने साथे चाकर हा जीणां ने सारा ने खांवण ने कर दीयो[9] ने प्रोयत[10] जगुजी रा बेटा ने गांव जाजीवाल दीनी ने भंडारी आया न्हीं जीका ने ही वारे रुपीया 12) रोजीना कर दीया सु सांभर सु पाया गया[11]।

पछे म्हाराज विजेसिंघजी रो प्रताप वधीयो[12] ने मुलक में घणो चेन हुवो[13]

---

1 मजा चखाऊँ। 2 आपके स्वयं का। 3 मेरी सौगन्ध है। 4 पोट-पाट कर। 5 स्वर्गवास हो गया। 6 कब्जा किया। 7 बन्द। 8 ब्रह्मभोज किया। 9 खाने-पीने की व्यवस्था कर दी। 10 पुरोहित। 11 प्राप्त कर रहे। 12 बढ़ा। 13 अमन-चैन हुआ।

ने जवांन पीण चोखा हुवा[1]। बीजेशाही रु. 1) ग्रेक रो धान मण 2 हुवो ने रईयत सुखी हुई ने प्रगना में हाकम ईतरा जणा नु म्हेलीबा। तीण री विगत—

नागोर—मु. मनरूप
मेड़ते—सिं. धनराज
प्रबतसर—भं. सुखराज
मारोठ दोलतपुर—सिं. ताराचंद
डीडवाणे भं. माणकचंद
फलोधी सिं. हीन्दुमल
सीवाणे—भं. फतेराम
जालोर—सिं. जोरावरमल
वाली—सिं. मांनमल
सोजत—सिं. खूबचन्द

पाली—सिं. धनरूपमल। जीण पाली ने स्हेर बसायो। वीस हजार घरं री बसती हुई ने ग्रागे पांच सौ रुपीया सायर[2] मास 1 (ग्रेक) में बेसता हा[3]। पछे पाली दीसावर[4] हुय गयो सु मुलक-मुलक रा बजार मेड़ता[5] ने रु. 500) रोजीना सायर में बेठण लागा। मुलक सारा में ग्राबादांन[6] ने ग्रांण दीरायां[7]। हीरण खोला हुता मगरा बीत[8], खुला चरे ने सांढीया रा टोळा[9] चर-चर ग्रावे। पीण कोई नांव लेवण पावे न्हीं। ईसो ग्रेमल दसतुर जमा-योड़ो। म्हाराज तो भगती रे वस होय श्रीजी री सेवा[10] करे सु कसाईवाड़ो मेट दीयो[11] ने सीकार मने कर दीवी ने मुसायब ईण मुजब था—

दीवाण—सिंग. फतेचंद
बगसी—सिंग. भींवराज
हाकम—खीची गोरधन रो।

1 युवा-पीढ़ी ग्रच्छी बनी। 2 चुंगी करं, उत्पादन कर तथा राहदारी की देखभाल करने वाला विभाग। 3 प्राप्त होती थी, ग्राय। 4 व्यापारिक केन्द्र। 5 बाजार लगते थे। 6 ग्रामदनी। 7 शांति कायम रहने की घोषणा। 8 पालतू मवेशी। 9 मादा ऊंटों के समूह। 10 इष्ट देव का पूजा-पाठ। 11 समाप्त कर दिया।

सु ईणा ने बुज[1] ने कांम करे। गोरधनजी ने म्होणोत सुरतरांम रे हेत[2], जीण सु गोरधनजी कयो—सुरतरांमजी दरबार रो काम करो। तरे सुरतरांमजी कयो—के सरबोसरब मारो हुकम हुवे[3] तरे मारो कांम चले। ईतरो हुकम हुवे तो पांच थेली रोजीना गढ़ चाढ़ूं ने घेरा री चाकरी थी ज्यांने ही कीहुंई मीलीयो न्हीं[4]। ज्यांरी ताछ[5] नीकले है। जिण सु म्होणोत सुरतरांमजी ने राव पदवी रो सीरपाव[6] दीयो—हाथी, पालखी दे ने सीरे तोरे[7] कीयां ने ईतरा प्रगना में आपरा आदमी म्हेलीया।

जोधपुर री हाकमी तो स्वाईरांम ने दीवीं। नागोर री हाकमी सिंग. मानमल ने दी। मुढ़ा आगे कांम करतां भं. सोभाचंद मेड़ता री हाकमी मु. लालचंद ने दीवी। दुजा ही प्रगना में सुरतरांमजी रा आदमी गया—

1 सिंग. भागचंद

1 भं. प्रसादीराम

1 लोढो सुरतांणमल

1 सिंग. खूबचंद—

अे मुढ़ा आगे ठावा[8] आदमीया में रया ने सिंग. भींवराजजी सु राजी न्हीं सु बखसी री खीजमत सिंग. हींदुमल ने दीराई, ने गोरधनजी ने कयो—के भींवराज ने कैद करो जरां कांम चले। तरे गोरधनजी अरज कीवी। तरे हजुर फुरमायो—ईण में कांही चुक[9] काढ़ ने कैद करां? पीण सुरतरांमजी रा मुलायजा[10] सुं भींवराजजी ने सीवांणे मेल दीया सु कुल राज रा कामां में हुकम सुरतरांम रो चले।

श्री म्हाराज प्रभु री बंधगी करे सु रात घड़ी च्यार रहे तरां तारत[11] पधार दातंण कर सीनान करे। पछे प्रभु रे मींदर चाकरी करे। पछे सेवा कर प्होर दीन चढ़ीयां पछे पोसाख पधरावे। पछे असवारी कर मींदरां पधारे। पछे दोफार[12] रा थाळ पधरावे: पछे घड़ी दोय आराम करे। पछे

---

1 पूछ करके। 2 स्नेह, मित्रता। 3 सर्वत्र मेरा हुकम चले। 4 कुछ भी नहीं मिला। 5 असर, प्रभाव। 6 एक प्रकार का सम्मान। 7 सबसे ऊपर। 8 खास। 9 गलती। 10 लिहाज। 11 संडास। 12 दोपहर।

उठने राज काज रे वासते मुसदीयां रो दरबार कर ने सारो जाव नींवेड़[1]। पांणी ऊपर सिला तोरे ने देसां-परदेसां रा म्हाराज रा दरसण करण ने आवे ने कहे—कलु[2] में राजा परीक्षत ज्यु[3] छे। सुरतरांमजी रे ने आउवा रा ठाकुर जेतसिंघजी रे दोख[4] सुरतरांम सीरे तोर[5] हुवो। तरे जेतसिंघजी सीख मांग घरे गया ने भाटी कीसनसिंघ जोधपुर (जेतसिंघजी) ईणा री अेक वात सु सुरतरांमजी अटवड़ो फालको जबत कीयो[6], ने कीसनसिंघजी सु बेराजीपो ने कीणी जुटी[7] (झूठी) लगाई ने कयो थांने मारसी के पकड़ लेसी। तरे दीन वदते[8] घोड़े चढ़ ने स्हेरपना री कोट कने धुड़ रो धड़ो[9] आंदी[10] सु चढ़ गयो हो जीण ऊपर सु नीकल चाखा[11] परा गया ने प्रभात रा श्री हजुर मालम हुई के कीसनसिंघ भाटी नाठ गयो[12]। तरे चाखां आदमी म्हेल[13] कवो थांने कुण कांई कही ? सो ईसड़ो बीचारी। तरे कयो—ईण री अकल नीकल गई[14]। पछे गुसाईजी सु वात कर पाछा हवेली में आया।

संमत 1831 रा आसाढ़ में म्होणोत सुरतरांमजी रे कानां लारे[15] दुखणो[16] हुवो सु तीन दीना में देह छोड़ी[17]। लारे अेक लुगाई ने अेक खवास सत[18] कीयो ने स्वाईरांम टीके बेठो।

पछे जेतसिघजी ने खवास पासवान मेल[19] बुलाया। तरे कयो—भाटी कीसनसिंघजी रा गांव लीख दो। तरे सारा ही गांव लिख दीयो। तरे जेतसिंघजी सारो कबीलो[20] ले जोधपुर आया। हवेली में डेरो कीयो पीण आप मुरादा हाले[21] मंडोवर गोठ[22] कीवी। खाजरू[23] मारीया दारू मंगाया, पातरीयां रा तायफा[24] बुलाया ने हंगाम करता था[24], जितरे दोय हलकारा मंडोवर गया तरे हलकारा ने ही दारू पायो ने कयो–देखो जीसड़ी श्री हजुर में मालम

---

1 समस्याओं का समाधान, शासन कार्यवाही निर्णय देना। 2 कलजुग। 3 राजा परीक्षित के समान। 4 मुनमुटाव, अनबन। 5 सर्वेसर्वा। 6 अटबड़ा और फालको के गांव वापस छीन लिए। 7 झूठी सूचना। 8 सूर्यास्त के समय। 9 रेत का टीबा। 10 आंधी 11 गांव का नाम। 12 भाग गया। 13 चाखां। 14 बुद्धि मारी गई। 15 कानों के पीछे। 16 फोड़ा 17 स्वर्गवास हो गया। 18 सती हुई। 19 भेजकर। 20 घर-परिवार एवं नौकर चाकर। 21 मनमौज के अनुसार व्यवहार। 22 गोष्ठी। 23 बकरे। 24 पातरियों की मण्डली। 25 मस्तियाँ कर रहे थे।

कराय देज्यो[1]। तरे हलकारा कयो—मे तो राजा रा चाकर हां, जीसा ही आपरा चाकर हां। ईण तरे मोटी-मोटी वातां करे सो श्री हजुर ने आछी लागे न्हीं।

आसोपो गुलाबराय दीखणीया रो उकील थो जिणरी मुंतै लालजी चुगली खाई, जीणसु गुलाबराय ने बुलायो सु हजुर आयो। गुलाबराय रे ने जेतसिंघजी रे हेत[2] सु रात रा डेरे जाय वातां करे सु हलकारा जाय मालम करे।

गोरधन खीची रे बेटो हुवो। सारा सीरदारां ने गोठ जीमण[3] बुलाया सो सारा ही जीमीया[4]। अेक जेतसिंघजी आया न्हीं ने कयो—खीची तो घणां[5], ने रोजीना बेटो हुसी, सो मे कीण रे घरे जीमता फीरां। तरे गोरधन जी पीड़ां[6] जाय लाया। पीण[7] जीमीया न्हीं। घड़ी अेक वेस[8] परा गया[9] जीण सु ठाकुर रे गोरधनजी सु ही दोख वधीयो[10]।

पछे सावण रे म्हीने गोरधनजी तो नागोर गया ने श्री हजुर में अरज लीखी—जेतसिंघजी, कंवर जालमसिंघजी सु मीलीया ने सट-पट[11] करे है ने आसोपा गुलावराय री ने ईणा री सला अेक छे[12]। गुलावराय कहे छे—दीखणी तो मांरी[13] मुठी में छे। क्हेसां[14] तरे पटेल नुं 20,000 हजार फोज मुं बुलाय लेसुं, ने आपां चावसां जीहुं कर लेसां[15]। ईण तरे मालम हुई। तरे म्हाराज रे ही अवरोसो पड़ीयो[16]। तीण मुदे[17] सिंग. खूबचंद नुं ने गुलावराय ने जेतसिंघजी कने मेले[18]। अे जेतसिंघजी रे डेरे आवे। तरे खूबचंदजी ने तो वारे वेसांण देवे[19]। गुलावरायजी वातां कर चुके पछे खूबचंदजी ने माहे[20] बुलावे ने जेतसिंघजी खातरदारी करे। जेतसिंघजी केवे—कीसनसिंघजी रा बेटा ने अटबड़ो लीख दीनो—गढ़ी पाड़ी जीका कराय दो[21] ने साख लुटी पाछी

---

1 जैसा आप अपनी आँखों से देख रहे हो, वैसा ही वृत्तान्त महाराजा साहब को बता देना। 2 मेल-जोल। 3 प्रीतिभोज। 4 भोजन किया। 5 बहुत। 6 स्वयं। 7 परन्तु। 8 बैठ करके। 9 चले गए। 10 द्वेष बढ़ गया। 11 गुफ्तगू। 12 गुलावराय आसोपा और जेतसिंह की सलाह एक है। 13 मेरी। 14 कहेंगे। 15 हम लोग जैसा चाहेंगे वैसा कर लेंगे। 16 अविश्वास पैदा हुआ। 17 इस प्रसंग में। 18 भेजा। 19 बाहर बिठा देते हैं। 20 अन्दर। 21 गढ़ी को ढहाया उसे वापस बनवा दो।

देवो[1] । मारे वासते[2] लुचा आदमी[3] क्हेता हा के जेतसिंघजी पाछो जोधपुर आवे न्हीं, सो हरामखोर हुसी न्हो डरसी । कुसलसिंघजी रा जायोड़ा[4] ने ले ने आयो हुं । हमे खांवदां[5] री सला हुवे ज्यूं करो, सु अे तो चाकरी रो जोर करे ने खूबचंदजी गोरधनजी री मरजी सो हजुर में अभरोसो[6] घालतो गयो के ईणां ने मारीयां हीज[7] राज में फायदो है न्हीं तो पटेल री ने ईणा री ने गुलाबराय री तीनां री अेक सला छे । सु फीतुर[8] उठसी ।

पछे संमत 1831 रा भाद्रवा सुद 9 बड्योड़ा सीरदारां[9] ने गढ़ ऊपर बुलाया सु दोड़ी आंख्ण बेठा[10] ने रामपुरा रा भाटी उरजणोत सरफर[11] दोढ़ी में फीर ने जेतसिंघजी ने पीण हजुर में बुलाया । तरे रसोड़दार दरोगे कयो— थाल त्यार है सो अरोग ने[12] पधारो । तरे ठा. कयो–पाछा आय ने जीमसां[13] । सो तयारी कर घोड़े असवार हुय गढ़ ऊपर गया ने दोढ़ी गयां जीतरे फेर सांमो[14] आदमी आयो के श्री हजुर पधारो[15] । तरे अेकला हीज खाबका रा म्हेल[16] में गया ने आगे म्हाराजा तो वीराजीया था ने ठाकुर नीचे हुय मुजरो करता था[17] जीतरे[18] वीजेरांज ग्हेलोत बाथ घाली[19] सो पकड़ ने कटारी उरी लीवी[20] ने सिग. खूबचंद स्वाईरांमजी री कटारी थी जीका वाही[21] सु बगलां री लागी[22] ने दुजी फेर वाही सु कारगीर[23] हुय गया ने हेटो पड़ीयो ने गेर जबां बोलण लागो[24] तरे गले लीही कर काढ़ी[25] । ने प्होकरणा व्रि. कालुराम जोधपुर रो वासी जेतसिंघजी रा काम-काज़ में फीरतो थो जीण ने ठाकुर री लोथ देखाळी[26] ने श्री हजुर फुरमायो—देख रे थारे घाली मुवो छे[27] । हमे हेलो मार कह, सु बेली डेरे जावे[28] ।

---

1 फसल लूटी उसे वापस दो । 2 मेरे लिए । 3 बदमाश आदमी । 4 कुशलसिंह का पुत्र । 5 स्वामी । 6 अविश्वास । 7 मारने से ही । 8 उपद्रव । 9 बड़े-बड़े सिरदारों को । 10 आकर के मुख्य द्वार बैठे । 11 झट-पट, फुर्ती से । 12 भोजन करके । 13 वापस आकर भोजन करेंगे । 14 सामने । 15 महाराजा विजयसिंह के पास पधारो । 16 जनानी ड्योढ़ी के महल । 17 नीचे सिर झुकाकर अभिवादन करते थे । 18 उसी वक्त । 19 गलबहियां डाली । 20 जेतसिंह की कटारी ले ली । 21 वार किया । 22 बगल में लगी । 23 घायल । 24 अपशब्द बोलने लगा । 25 गले में कटारी से गला चीर दिया । 26 जेतसिंह की लाश दिखाई । 27 तुम्हारी वजह से मरा है । 28 अब आवाज देकर के कहो, सो जेतसिंह के साथ वाले डेरे को जावें ।

तरे खावका रे जरोखे आय[1] काळुराम हेलो मारीयो—के ठाकुर फुरमावे है वेली सारा डेरे जावो। ठाकुर जीम ने हेटा[2] पधारसी। तरे सारा ही गढ़ सुं हेटा उतरीया। उण बखत ईतरा सीरदार दोढ़ी हाजर था–

1 खेरवो ठा. ईंद्रसिंघजी

1 ठाकुर सवाईसिंघजी पोहकरण

1 ठा. करणसिंघजी खींवसर

अे दोढ़ी बेठा था जीणां ने माहे बुलाय ने फुरमायो—देखो सीरदारां। अे ठाकुर पड़ीया छे। तरे खेरवे ठाकुर ईंद्रसिंघजी कयो—गरीबनवाज ! दरबार री मरजी मुजब न्हीं हालसी[3], जीकां में आहीज हुसी[4] ने करणसिंघजी ने मुरछा हुई। तरे श्री हजुर सु लुंग मंगाय ने दीया ने कह्यो—थे कीहुं[5] डरो। अे ठाकुर तो वेमरजी चालता था जरां कांई करां। घणाई दीन धकाई[6] पीण चाला[7] करता रहे न्हीं। तरे ईण तरे भुगते। ने सिंग. खूबचंद ने बीदा कीयो ने कयो—आउवा वाला ने स्हेर बारे काढ़ दो, न संबे तो मार नाखो[8]।

फतेसिंघ सेरसिंघोत डेरे थो जीण ने कवाड़ीयो[9] के हजुर सुं फुरमायो हे के थे वेठा रहो। थारो पटो मुलायजो हे, जीहुं रेहेसी[10]। थे कहो जीण रो वचन[11] दीराय देवां। तरे सेरसिंघजी बुधसिंघजी कयो—हमार तो च्यार दीन दांणा पांणी मने हुवा है[12]। आ कहे ने सेरसिंघजी बुधसिंघजी कमरां बांध जाय कींवारा[13] तोड़ सीलगाय[14] घोड़ा चढ़ हवेली रा कींवाड़ खोल ने सारो साथ बारे नीसरीयो। अेक करमसोत नागड़ी रो बेठो रयो। दरबार रो साथ ने सीरदार कबरां[15] बांधीया, गलीयारा में ऊभा रया ने अेक सोजतीया दरवाज़ा रो मारग राखीयो जीण मारग वहीर हुवा[16]। तरे भाटी आईदान कयो—बारे नीकलीया तो फोड़ा घालसी[17]। सो कहो तो गोलीयां री दे'र

---

1 झरोखे में आकर। 2 नीचे। 3 जो दरबार की इच्छानुसार आचरण नहीं करेंगे। 4 उनके साथ में ऐसा ही होगा। 5 क्यों। 6 बहुत दिन निभाया। 7 चालबाजी। 8 नहीं संभले तो मार डालो। 9 कहलवाया। 10 वैसा ही रहेगा। 11 वचन। 12 खान-पान का निषेध है। 13 कपाट। 14 सुलगा कर। 15 कमर। 16 रवाना हुआ। 17 दुःख देंगे।

हेटा नाखां[1] थारां कांई रूदा[2] सु थे ईसड़ो कहो। ने पेले दीन सोजत रा हाकम ने हुकम पुगो थो के भाद्रवा सुदी 10 ने ग्राउवो कायम कीजो[3]।

सु सिंग. वनेचंद ग्रसवार पांच सो ले'र चढीयो सु ग्राउवे ग्राय कयो—सोजत चोरी हुई है ने खोज ग्राया है[4] सु ग्रागा[5] काढ़ो। सु कंवर सीवसिंघजी तो माता रे थांन[6] गोठ कीवी थी सु साथ[7] तो सारो कंवर माथे थो ने हाकम कोट[8] में जाय दरवाजा में पेस गयो[9] ने कुंपावत, जेतावत दरवाजा ऊपर चढ़ गया तरे जेतसिंघजी री मां दोऊ ग्राय कंवरदान खीची थो जीए ने बुलाय कयो—मने ईतरा दीन हुवा देखती नु के कुंपावत जेतावत ग्राउवा री पोल में कदे ही न्हीं ग्रावता। सु हमे ग्रे पोल ऊपर चढ़ीया सु जेतसिंघजी रे डीले कुसले न्हीं[10]। जितरे प्रधान ने हाथ पकड़ दरवाजा बारे काढ़ दीयो ने ग्राडा-कीवाड़ जड़ दीया[11] ने कंवर सीवसिंघजी ग्राया। तीणां नु कयो के ग्रागा ग्राया तो गोलीयां री देवांला। तरे कंवरजी प्रबारा नीकल गया[12] ने जोधपुर सु ग्राया[13] जीके ही मेवाड़ में गया। ने जेतसिंघजी रे लारे सतीयां हुवरण लागी सु हाकम हुवरण दीथी न्हीं। के श्री हजुर रा हुकम वीना हुरण देवा न्हीं। तरे चांपावत भारतसिंघ उरजनसिंघोत सवराड़ रो ठा. उठे थो जीए वनेचंद जी ने कयो–राजा खावां[14] में ही सतीयां वरजी[15] छे? श्री हजुर रो ग्रोलंभो[16] मने छे। ग्ररज कर लेवे तरे वनेचंद कयो—हुं तो नीरदोस[17] छुं। जीतरे भारथसिंघजी ने दोढ़ी[18] बुलाया ने जेतसिंघजी री मां ने ठाकुरांणीयां कवायो के ईतरा चांपावत छो ने दुजा ही राठौड़ छो सु मांने सतीयां हुरण दो[19] के मे सराप[20] देसां। तरे भारथसिंघजी कयो–मा सतीयां भला ही सती हुवो कुरणी वरजे न्हीं[21]। तरे सारा सीरदार जाय दाग दीयो[22]। दोय घोड़ा सतीयां ने दीया ने ग्राछी तरे दाग दीयो।

पछे भींवराजजी रे वेटा ग्रखेराज रे नांवे प्रवतसर री हाकमी हुई ने

---

1 गोलियों की मार से नीचे गिरा दें। 2 तुम्हारी किस चीज पर कब्जा किया है? 3 ग्राउवा पर कब्जा करना। 4 सोजत में चोरी करने वाले इधर ग्रा गए हैं। 5 दूर। 6 माताजी के मंदिर। 7 फौज। 8 गढ़। 9 प्रवेश कर गए। 10 जेतसिहजी का शरीर कुशल से नहीं है। 11 बन्द कर दिया। 12 वाहर से वाहर ही चले गए। 13 जेतसिंह के साथ वाले जों जोधपुर से ग्राए। 14 रुवाब, सपनों में। 15 निषेध। 16 नाराजगी। 17 निर्दोष। 18 जनानी ड्योढ़ी। 19 हमें सती होने दो। 20 शाप। 21 कोई नहीं रोकेगा। 22 दाह-संस्कार किया।

भींवराजजी ने हुकम प्होथो[1] के तु प्रवतसर जाईजे[2]। प्रगनो खराब छे[3]। सु ग्रावादांन[4] हुवे। तरे भींवराजजी मालम कराई। हुकम हुवे तो मुजरो कर ने जाऊं ने मरजी हुवे तो प्रवारो जाऊं। तरे फुरमायो—मुजरो कर ने जा। तरे सीव्राणा सु चढ़ीया सु जोधपुर ग्राया। मुजरो कीयो, ने लोकायत जाणीयो– गोरधनजी ग्रठे न्हीं ने सुरतरांमजी चल गया ने भींवराजजी ने बुलाया। सु हमें ईणा रो चलण हुसी[5]। सु भींवराजजी दोढ़ी जाय[6]। तरे दोय सो ग्राद-मीयां री जलेव हाले[7]। स्वाईराम टाबर प्रसादीराम खूबचंद कारूंदा सु जाब न्हीं उपजे[8]। तरे म्हाराज फुरमावे के भींवराज ने बुजो[9]। ने भींवराज बुजे सु सारी वात सुं वाकब[10], सु हरेक ही काम हुवे सु पेस चढ़े[11]। सु हमे म्हाराज तो प्रवतसर जावणो तो फुरमावे न्हीं। ग्रठा रो कांम रो सुख ग्राय गयो ने भींवराजजी गया न्हीं। तरे भींवराजजी रो कांम खुलासा रो छापो जम गयो[12]। म्हाराज रो पुरो राजीपो[13]। तरे प्रसादीरामजी खूबचंद, स्वाईराम रा नांव रो कागद गोरधनजी रे नांवे[14] लीखीयो– माने तो भाड़ा में घीसे है, ने कांम भींवराजजी करे है। तरे गोरधनजी हजुर में लीखीयो—स्वाईरांम तो टाबर[15] है सु कांम चलेला न्हीं[16]। सु सारो कांम भींवराज ने सुंपीजे[17] ने मन में ग्रा जांणी के ग्रेक बार ईणां ने कांम सोंपाय ने पछे कोई ग्रोलंभो काढ़[18] ने पटकाय देसुं[19]। तरे हजुर सु फुरमायो—तु भींवराज काम ले[20]। तरे भींवराजजी ग्ररज कीवी के हमार तो[21] कांम स्वाईराम रे हीज रेण दीजे[22], तरे फेर फुरमायो--राज रो खरावो हुवे छे[23]। सु तु कांम कर। तरे भींवराजजी भं. गंगाराम ने नागोर गोरधनजी कने मेलीया[24] ने कयो – हजुर सु कांम वही फुरमावे छे सु ग्राप वचन दीरावो[25] तो कांम मारे सुं धके[26]।

---

1 पहुंचा। 2 जाग्रो। 3 परगने की व्यवस्था ठीक नहीं है। 4 ग्रामदनी। 5 शासन में काम इनकी (भींवराज) की सलाह से होगा। 6 दरबार की हाजरी में जाते थे। 7 दो सौ ग्रादमियों का लवाजमा साथ चलता था। 8 समस्या का समाधान नहीं बता पाते थे। 9 भींवराजजी से पूछो। 10 वाकिफ; जानकार। 11 ग्रागे प्रस्तुत हो। 12 भींवराज की स्पष्ट कार्य प्रणाली की छाप जम गई। 13 पूर्ण प्रसन्न। 14 नामे। 15 बच्चा, ग्रबोध। 16 चल नहीं पायेगा। 17 सुपुर्द कर देना चाहिए। 18 गलती, चूक की शिकायत करके। 19 नीचे गिरवा देंगे। 20 जिम्मेदारी संभाल कर काम करो। 21 ग्रभी तो। 22 रहने दीजिए। 23 राज्य का काम बिगड़ रहा है। 24 भेजा। 25 ग्राप ग्रपनी सहमति एवं सहयोग का वचन दो। 26 मुझसे कांम सम्भले।

तरे गोरधनजी कयो—मे तो चाकर हां, मांरो कांई बचन ? बचन तो धणीयां[1] रो चाहीजे। गंगारामजी ने तो ईण तरे कहे ने बोलमावे[2] ने हजुर में ताकीद कर ने लीखे के कांम भींवराज ने सुपीजे। तरे हजुर ताकीद फुरमावे तरे भींवराजजी अरज कीवी के हुकम हुवे तो गोरधनजी सु मीली-याऊं[3]। तरे फुरमायो—ठीक है। तरे भींवराजजी नागोर गोरधनजी कने आया ने गोरधनजी कना सु बचन मांगीयो। ने गोरधनजी बचन देवे न्हीं। ने हजुर सु लीखे—भींवराज ने सीख वेगी देजो ने बचन वीना[4] भींवराजजी उठा सु चढ़े न्हीं। रोजीना कासीद[5] आवे तरे गोरधनजी बचन दीयो—वीना चूक थांने कोई बीगाड़े न्हीं[6], थां वीचे ने मां वीचे रांमजी है। तरे बैठ ने जोधपुर आया ने दरबार फुरमायो–दीवांणगी ले। तरे अरज कीवी दीवांणगी तो फतेचंद रे है सु तो मारो हीज है। मने तो मारी खीदमत बखसी[7] दीराईजे तरे बखसी रो सीरपाव[8] हुवो। ने कांम करता भींवराजजी ठेरीया। ने खूबचंद जी ...... कामदार सु पाली आंण बेठो थो। सु वीसनसिंघ सु मील उणा ने मिल पकड़ रु. 52,000) बावन हजार माथे कीया, जणा दीया कनां सु। फेर रुपीया लीया सो अेक लाख रुपीया पेदास कीया[9]। ने स्वाईरामजी ने गोरधन जी ने कवायो[10] के थे बैठा ही मारो परकर[11] खोसे[12] है। तरे गोरधनजी नागोर सु चढ़ीया सु जोधपुर हजुर आया[13]। ने भींवराजजी ने मोळा घाल[14] कोटड़े[15] सासरे गया ने कोटड़ीयां ने गढ़ीयां[16] कराय दीवी।

पछे पासवानजी[17] रो हुकम वदीयो[18] सु संमत 1830 री साल गंगाजी जाय पाछा आया।

पछे संमत 1832 में पासवानजी वाग री[19] नींव दीराई बावड़ी रो झालरो करायो।

---

1 स्वामी महाराज का। 2 बातों में उलझाये रखे। 3 मिल आऊँ। 4 वचन के बिना। 5 संदेशा। 6 गलती के बिना तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ेगा। 7 निजी सलाहकार। 8 बखसी का पद इनायत हुआ। 9 राजस्व वसूली करके धन एकत्र किया। 10 कहल-वाया। 11 धन-सम्पत्ति। 12 छीनते हैं। 13 महाराजा विजयसिंहजी के पास आया। 14 ठंडा-मीठा करके। 15 कोटड़ा गांव विशेष। 16 कोठरियां व गढ़ी। 17 महाराज विजयसिंह की पासवान गुलाबराय। 18 बढ़ा। 19 शहर के बीच स्थित मांयला बाग।

सं. 1833 में खीची गोरधनजी दुवारकाजी गया ने ईतरा साथे हा—

ठा. फतेसिंघजी, ठा. जालमसिंघजी, खीची रावत, ठा. अखेसिंघजी जाणेवाड़े, ठा. जेतसिंघजी बाकरा रो, ईतरा साथे था सु दोढ़[1] म्हीना में जाय पाछा आया।

अेक रावत खीची पाछा आवता चढ़ लीयो ने पासवांनजी रो चलण वधीयो। कंवरजी फतेसिंघजी, कंवरजी भोमसिंघजी, कंवरजी सीरदारसिंघ जी—तीनु कवरां ने सीतला[2] साथे नीसरी सु संमत 1835 रा में भोमसिंघजी सीरदारसिंघजी अे दोनु सीतला में चल गया[3]। सीरदारसिंघजी रे लारे कंवराणीजी चवांणजी सत कीयो। सु लखण पोल नौसर कागे[4] दाग हुवो[5] ने दुजा दीन भोमसिंघजी रे लारे भटीयांणी सायवसिंघ री बेटी सती हुई। जीण मालम कराय सवीं[6] पोलां नीसरीया[7]। सु मंडी में श्री गणेसजी रे मींदर दरसण कर आपरो ग्हेणो[8] थो सु चढ़ायो ने घाटी ऊपर अेक भंगी रहेतो तीण ने रुपीया 300) तीन सो रो ग्हेणो दीयो तीण री साळ[9] मारग में कराई ने पातरीयां ने ग्हेणो देता हा सु पातरीयां ग्हेणो लीयो न्हीं, मंडोवर दाग हुवो[10]।

म्हाराज भींवसिंघजी चवांणा रा भाणेज था सु रांणी चल गया तरे सेखावतजी प्हीहर[11] गया सु पोतां ने साथे लीयां गया था ने फतेसिंघजी रे सीळ[12] मांन[13] दीयो ने कुसले उठीयो[14]। पीण बरस पांच पछे केठादरड़ो वीकार उठीयो सु गुल[15] तो नह दीराया ने दारू सरू कीयो[16]। पीण दारू सु वीकार हटीयो नहीं।

संमत 1834 रा वेसाख में पासवांनजी रे बेटा जेतसिंघजी ने कंवर फतेसिंघजी साईना[17] था सु रमता[18] लड़ीया। तरे पासवांनजी ने सेखावतजी[19]

---

1 डेढ़ महीना। 2 चेचक। 3 चेचक की बीमारी से मर गए। 4 किले के लक्ष्मण दरवाजे से निकलकर कागे श्मशान में। 5 दाह-संस्कार हुआ। 6 सभी। 7 निकली। 8 आभूषण-गहने। 9 खुला वड़ा कमरा। 10 दाह-संस्कार हुआ। 11 मायके। 12 चेचक। 13 ठीक होने लगी। 14 स्वस्थ हो गए। 15 दग्ध (डाम) कराना। 16 शराब पिलाना प्रारम्भ किया। 17 हम उम्र। 18 खेलते-खेलते। 19 महारानी।

सा ही लड़ीया । तरे पासवानजी पालखी में वेस[1] बाग[2] में उरा आया। जठा पछे बागहीज[3] रेहेण लागा ने म्हाराज ही रात रा बाग रहे ने बाग री म्हेला री नींव लागी सु ताकीदी सु म्हेल त्यार हुवा ।

संमत 1834 रा काती में कंवरजी फतेसिंघजी रो डील चाक न्हीं[4] । सु काती सुद 3 रे दीन स्वाईराम म्होणोत सुरजकुंड जाय ल्होह री ढाल-कबांण वालो सांमी[5] रहेतो जीण ने पालखी वेसांण[6] ने लाया । तीण ने थीरमा री साल उढ़ाई[7] वीजे. रु. 100) अेक सौ दीया । सांमी कयो—कंवरजी ताजा हुय जासी[8] । सो सांमी गढ़ सो नीचो उतरीयो ने कंवरजी काती सुद 3 दोफारा रा देवलोक हुआ । मंडोवर दाग हुवो । कवरांणीयां तो छव[9] थी । पीण सत कीणी कीयो न्हीं । म्हाराज ने सेखावतजी[10] री पुरी फीकर[11] हुई ।

संमत 1834 में दीखणी आंबाजी[12] फोज लेर ढुंढाड़[13] में आया ने उकील लीखीयो के मजबूती राखजो । आंबा ने पटे सो देणो न्हीं । आंबा सरीखा तो पटेल घणा छै । जीतरे आंबाजी रा डेरा खारी रे ढावे[14] हुवा ने कवाड़ियो[15]–खीरणी[16] लावो के संब्रो[17] । तरे जोधपुर सु सींघवी भींवराज ने संमत 1834 रा काती सुद 1 रात घड़ी 5 गयां विदा कीया, सु सेखावतजी रे तलाव डेरा कीया । सीरदार था जीका ने खावका[18] बुलाय मुजरो करायो वींदा कीया ने फुरमायो के भींवराज साथे वीदा करां हां सो अछी तरा[19] चाकरी करजो । तरे सीरदारां अरज करी के चाकर तो चाकरी नु हीज है सु तन मन सु चाकरी करसां ।

पछे कूच कीयो सु मेड़ते आया । उठे सारा सीरदार भेळा हुआ । फोज हजार 15,000 पनरे भेळी हुई सो कूच कर ने आलणीयावास डेरा कीया । तरे फोज वाळा आंबाजी नु कहेतो ढुंढाड़ लुट ने फोज धपाई[20] छे । सु राठौड़

---

1 पालखी में बैठकर । 2 मांयला बाग । 3 बाग में ही । 4 शरीर स्वस्थ नहीं । 5 लोहे की ढाल-कबांण धारण करने वाला स्वामी । 6 पालखी में बैठाकर । 7 बढ़िया किस्म की शॉल भेंट की । 8 स्वस्थ हो जायेंगे । 9 छः । 10 महारानी शेखावतजी । 11 चिन्ता । 12 आंबाजी हिंगले । 13 जयपुर रियासत का क्षेत्र । 14 खारी गांव की सीमा में । 15 कहलवाया । 16 चौथ (कर) । 17 युद्ध के लिए संभलो । 18 जनाना महल । 19 अच्छी तरह । 20 तुष्ट हो गए ।

लुट लेसी । तरे आंबेजी कूच कर ने मेवाड़ में परा गय्या ।

संमत 1834 में रायपुर छीपीये खेड़ भीळी हुई थी[1] ने नींबांज ने निलावे सींव रो जोड़[2] थो। सु जेतारण रो हाकम जाय ने जोड़[3] नीवेड़[4] सींव[5] ऊपर नेखम थापीया[6] था जीका रायपुर वाळा उखेल नाखीया[7] । गाडा में गाल[8] रायपुर ले गया । जीण सु नींबाज वाला लगाई[9] सु कयो—दुजा रा ई नेखम रोपीया है सु उखेले नहीं । सु राज रो हाकम नगारो नीसांण ले गया फीर नेखमा रोपीया[10] सु उखेल लीया । जीण सु दरबार वेराजी हुवा । चाकरी ही करे नहीं ने चोकी देता[11] हा जीणा ने ही बुलाय लीया ।

बीकानेर म्हाराज श्री गजसिंघजी रे ने कंवर राजसिंघजी रे बाप-बेटा रे झोड़[12] थो तीण मुदे मोणोत स्वाईरांमजी नु वीदा कीया । सो नागोर जाय डेरा कीया ने सारा सीरदार आया, सांमल हुवा । फोज बणी, जीतरे महाराज गजसिंघजी रे आपस में दुरस्ती ठेर गई[13] । जरे केवाड़ियो[14] के हमे फोज मती मेलाजो[15] । तरे खीची गोरधनजी कयो के फोज भेळी हुय गई है तो मसुदा कांनी[16] जावो, पईसो उगावो ने रायपुर रा ठाकुर ने ही समजावो[17] । जद नागोर सु कूच कर ने फोज मेड़ते आई ने रायपुर रा ठाकुरां ने चवांणा रा कामदार मेलीया । वात करण नु ने फोज मसुदा कांनी गई ने उण सुं पईसो उगाय पाछा आया ने ईस डेरा कीया । ने रायपुर केसरीसिंघ खेड़ भेळी कीनी[18] लोक हजार 2000 भेळो कीयो । तरे सींभुसिंघजी चवांण नु वीसटाले[19] केवायो—के चाकरी करो । तरे सींभुदानजी ठाकुर केसरीसिंघजी नु कयो—ठाकुर चाकरी करो, चाकरी वीना 35,000 पेंतीस हजार रो पटो आपनु[20] कुण खावण देसी[21] । तरे केसरीसिंघजी कयो—मारे तो माथो अेक हीज हे । दूजो फेर हुवे तो जोधपुर आऊं । माथो फेर पाछो उगे[22]

---

1 छींपीया और खेड़ रायपुर के साथ सम्मिलित थी । 2 नींबाज और निलाव की सीमा जुड़ी हुई थी । 3 सीमाएं जोड़ने वाला मैदान । 4 निपटा कर । 5 सीमा । 6 सीमा पर पत्थर गाड़ दिए थे । 7 उखाड़ दिए । 8 डाल करके । 9 शिकायत की । 10 दुबारा सीमा पर पत्थर लगाया । 11 पहरेदारी करते थे । 12 तकरार । 13 संबंध सुधर गए । 14 कहलवाया । 15 अब फौज को मत भेजना । 16 मसूदा की ओर । 17 समझाओ । 18 लोगों को इकट्ठा किया । 19 मध्यस्थता । 20 आपको । 21 खाने देगा । 22 उत्पन्न ।

नहीं। तरे सींभुदानजी कयो-जाखू[1] सु ं डरो मती। वचन दीराऊं। तरे केसरीसिंघजी कयो—वचन तो देवीसिंघजी, केसरीसिंघजी, छत्रसिंघजी नु ं दियो थो। श्री हजुर सु ं श्रीरांमजी विच मै दीया था[2] सो उण सवाय[3] कोही वचन हुवे छे? जिका सु उव[4] हुई सो थे जाणो हीज छो, ने फोज सु डरावो सु[5] साजादा[6] री फोज सु ं डरा नहीं। ग्रेकण दीन में जोधपुर बीचे ने मेड़ता बीचे चांनणो कर देसु ं[7]। सारी धरती में डोवा[8] वजाण दु ं नहीं। तरे चारण सींभुदान पाछो ग्राय ने केहयो—विसटाळो तो माने कोय नहीं। तरे सवाईरामजी ने सोभाचंद जी ने गोरधनजी खीची ने लीखीयो के रायपुर रा ठाकुर वात बिसटालो माने कयो नहीं। सो कहो तो मोरचा लगावां। तरे गोरधन जी बीचारीयो[9] के स्वाईराम पेली हीज[10] फोजबंधी कीवी छे ने मेगराज रो कांम छे सु फितुर[11] उठ जासी तो भरम नीकळ जासी। जीण सु पाछा लीखीयो के दोळा थांणा राख ने[12] जोधपुर उरा[13] ग्रावजो, ने सीरदारा नु हाल सीख दीजो[14]। तरे घोड़ा 400 तो गांव काळु राखीया ने घोड़ा 300 बीलाड़े राखीया। दुजा ही थांणा मजबुती सु राख फोज विखेर जोधपुर परा गया। जद सु केसरीसिंघजी सीरजोर[15] हुवा था।

गोरधनजी जाणीयो हमार दीखणी ग्रांबा री फोज नेड़ी[16] ग्राई है ने ग्रे फितुर करसी। जीण सु केसरीसिंघजी रा परधान[17] सेवा मांगळीया नु बुलाय ललो पतो कर[18] गांव जबत[19] हा जीका पाछा लीख दीया, ने सींघी भींवराजजी रा डेरा गांव पीपलीये सु श्री हजुर मे ने गोरधनजी नु लीखीयो के दीखणी तो पाछो परो गयो ने फोजबंधी मोजुद है सो लीखो तो रायपुर ने समजाय देऊं[20]। ग्रेक दोय महीना रो कांम हे ने ईणा सु ग्राघो काढ़सो[21]

---

1 ग्राक्रमणकारी। 2 महाराजा विजयसिंह ने श्रीराम धर्म की दुहाई देकर वचन दिया था। 3 ऊपर, सवाया, सिवाय। 4 परेशानी। 5 डराना। 6 जोधपुर के राजकुमार। 7 चमत्कार दिखा दूंगा। 8 वांद्य। 9 विचार किया, सोचा। 10 पहले ही। 11 उपद्रव। 12 चारों तरफ थांने कायम करके। 13 वापस। 14 विदा कर दो। 15 हौंसला बढ़ना। 16 नजदीक। 17 प्रधान। 18 जैसे तैसे समझा बुझा कर। 19 जब्त। 20 रायपुर को सबक सिखा दूं ग्रर्थात् ग्राक्रमण कर दूं। 21 ग्रागे स्थगित करोगे।

तो अेसी जोर हुय जासी[1] ने कीणी वखत में दगो देसी[2], ने हमार आसो न छे[3] सु तोड़ नाखसुं । तरे पाछो लीखीयो के थारे आसंग[4] मे नेतो आवे छे तो ठीक छे । तरे जेतारण रा हाको[5] मेलीयो ने हाकमां ने केवायो—मांगळीयो सेवो सनद लायो छे । तो गांव री अमल[6] री चीठी करजो मती, ने साथ भेलो कीजो, ने उदावतां ने बुलाय ने कयो—थे केतां हा[7] राज रो नगारो नीसांण देवो तो ठाकुरा ने रायपुर बारे काढ़ देवां । सु सारी मारवाड़ ने हुं साथे छु । थे साथे भेला कीजो । तरे ईणा सीरदारां सीख दीवी ।

वीगत—

1. ठाकुर दोलतसिंघजी नींवाज
1. ठाकुर जवानसिंघजी रास
1. ठाकुर भींवसिंघजी लांवीया
1. ठाकुर जोतसिंघजी छीपीये

——
4

ऊंठ[8] रोही[9] में छुटा था सु मंगाय ने दोफारा रा कुच कीयो सु हाथी गोड़े[10] डेरा कीया । परभात रा उदावत चड़ीया[11] पाळा[12] लेर सारा भेळा हुवा[13] । पीण सारी फोज जाणता हा के केसरीसिंघजी चोड़े कजीयो करसी[14] । फोज नैड़ी[15] लगाई तोई पीण बारे निसरीया नहीं तरे जूंठा वीचे ने रायपुर बिचे बरकड़ी कर[16] ने डेरा कर दीया, ने फोज रीकई (रुक) गई सु जोड़[17] में घास री ढुंगरीयां[18] थी सु ऊंठा में घाल लाया । डेर-डेरे घास गाड़ी 15 पनरे लीवो जीतरे माय सु नीसरोया सु खाखला[19] री ढुंगरी वांधी सुलगाय दीवी[20] । तरे फोज माय सु लोक नीसरीयो सो उणा रा लोका नु पाछा गांव में बाड़ दीया[21] । तरे सिंघवीजी सारा ने सोगन[22]

---

1 इनका जोर व हिम्मत अधिक बढ़ जायेगी । 2 धोखा करेंगे । 3 अभी उसकी क्षमता व उसे सहारा नहीं है । 4 विचार । 5 हाकम । 6 कब्जा । 7 कहते थे । 8 ऊंट । 9 जंगल । 10 स्थान विशेष । 11 घुड़ सवार । 12 पैदल सैनिक । 13 एकत्रित हुए । 14 खुले मैदान में युद्ध करेंगे । 15 नजदीक-नजदीक । 16 फौज की सुरक्षा व्यवस्था करके । 17 घास का मैदान । 18 ढेर । 19 भूसा । 20 जला दी । 21 गांव में वापस प्रवेश करने के लिए विवश किया । 22 सौगंध ।

कढ़ाय पाछा घेरीया ने कयो आज अमावस छे। स्वारे[1] मोरचा लगावसां तरे लोक पाछा आया ने रात घड़ी 4 च्यार गया जोड़ में घास री ढुंगरीयां थी जीका थोरीयां ने मेल[2] नें ठाकुर वळाय नाखी[3]। पछे परभात रा जोम ने[4] सिंघवीजी चढ़िया सु आथुणी कांनी[5] मोरचा दीना। तोपां मांडी ने रात पड़ी तरे मोरचा में लोक राख[6] ने डेरा आया, ने परभात रा उदावत था जीणा ने कह्यो—थारे तळाव रा मोरचा लो। तरे सारा उदावत भेळा हुय ने तळाव ऊपर चलाया तरे मोरचा छोड़ दरवाजा में पेस गया, ने मोरचो उदावतां कायम कीयो। तरे केसरीसिंघजी नु ठीक हुई[7] के तळाब मोरचो उदावत कायम कीयो। तरे आप पींड़ां दरवाजा बारे[8] आय ने लोका भेळो[9] कीयो ने हमगीर कीयो[10]। पाड़ोसीआं आगे पघ[11] पाछा देवां नहीं। जीतरे नींबाज रा दोलतसिंघजी आदमी मेलीयो ने सींघवीजी नु केवायो[12] के मारो ऊपर कीजो[13]। मारे ऊपर म्हाय(मांय)[14] सुं लोक नीसरसी[15]। तरे सींघवी जी करणसिंघजी, भोमसिंघजी नुं मेलीया ने देसुरी रो लोक ले ने सींघवीजी जोधराजजी नु मेलीया। पछे आदमी 200 दोय सो पाळा ले ने सींघवीजी देखण ने आया। सुरे तळाव आया सु गढ़ घाटा रा मारग सु गोळीयां आवे जठे वेलदारां नु बुलाय मकी री कड़ब थी जीण रो पुळो पिंडां उठायो ने सिरदार सारा उभा[16] था जीका सारा पुळा उठाया। तरे सींभुदानजी रा बेली उभा था जीको कयो—सीरदारां ने क्युं दोरा करो[17]। मे म्हांय[18] जावां छां सु वात करां। तरे सींघवीजी कह्यो ठीक छे। थे[19] जावो। तरे दोय जणा म्हाय गया। सो केसरीसिंघजी दरवाजे उभा था ने लोक नु बारे काढ़ीया हा[20] सो चवांण सींभुदान रो बेली करमसोत भोमे कहै तो अेकला थारा भाई नहीं छे? फोज गणी[21] छे, ने भींवराजजी पींडां उभा[22] छे सु मीठी करलो[23]। पीण केसरीसिंघजी मानी नहीं। तरे करमसोतां ने तळाव ऊपर

---

1 आने वाले कल, प्रातः। 2 थोरी जाति के लोगों को भेज करके। 3 जलवा दीं। 4 भोजन करके। 5 पश्चिम की ओर। 6 सैनिकों को रखकर। 7 मालूम हुई। 8 बाहर। 9 इकट्ठा। 10 अपने पक्ष में किया। 11 पग, पैर, पांव। 12 कहलाया। 13 मेरी सहायता करना। 14 अन्दर से। 15 निकलेंगे। 16 खड़े थे। 17 कष्ट दे रहे हो। 18 मांय-अन्दर। 19 आप। 20 बाहर निकाला था। 21 घणी-अधिक। 22 स्वयं खड़े हुए हैं। 23 बात ठंडी-मीठी करलो।

राखीया । उदावता कने राखीया, ने देसुरी रा लोक ने राखीयो ने सींघवीजी पाछा मोरचा आया ने म्हाय(मांय) सु गोळा वाया[1] सु सींघवीजी केहतो[2] ठाकुर आछो हीज काम कीयो ने तोपखाना नु हुकम दीयो सु तोपखानो सरू हुवो—सु टापरा[3] रे लागे सु कांवळीया वेवे जु[4] केलु[5] उड़े ने मीनती भाता में गोळा नीकळ जाय ने च्यारू कानी मोरचा दीया । कीतराक दीन लड़ीया । पछे ठाकुर रायपुर केसरीसिंघजी रायपुर छोड़ मगरा में गढ़ है, जठे[6] परा गया । रायपुर में दरबार रो अमल हुवो[7] ने ठाकुर केसरीसिंघजी गढ़ में लड़ीया ने मेवाड़ सु रसत आवती सो राज री फोज वाळा बंद कर दीवी । तरे फोज मुसयपा(वा) सु विसटाळो कराय गढ़ छोड़ ने मेवाड़ में परा गया । सो केसरीसिंघजी तो मेवाड़ में हीज चलीया । पछे केसरीसिंघजी रो बेटो फतेसिंघजी नु माहाराज वीजेसिंघजी म्हेरवान होय पाछी रायपुर ईनायत कीवी ।

मादजी[8] पटेल फोज ले जेपर ऊपर कूच कीयो । तरे जेपुर रा माहाराज सला-वीचार[9] म्हाराज श्री प्रतापसिंघजी लाचार हुय जोधपुर रा माहाराज वीजेसिंघजी नु लीखीयो—मासु[10] अेकला सु रूके जीसा, ईण वखत रा दीखणी है नहीं, ने म्हाराज माने दीखणीया वीमाड़ दीयो[11] तो मा वीगड़ीयां पछे आपने ही वारी उरी आवसी[12] । सो मारी मदत कर आप फोज मेलावो[13] तो राठौड़ ने कछवावां[14] भेळा हुय ने दीखणीया ने पघ[15] पाछा दीराय देवां । फेर कीतराक दीन आप ऊपर आवण रो मनसोवो करे न्हीं । तरे माहाराज वीजेसिंघजी फोज दे सींघवी भींवराज ने वीदा कीयो । तरे आ खबर पटेल माधजी सुणी । तरे जोधपुर रो उकील प्रो. जीवराज माधजी कने हो जीणने माधवजी केईतो[16] के जेपर री मदत सु सारू जोधपुर सूं फोज वीदा हुई छे । सो जेपरीया वासते माहाराज मासु क्यूं दुसमणी खड़ी करे है[17] । तरे उकील कय्यो के जेपर री मदत करण सारू न्हीं मेली है । माहाराज ने अंदेसो[18] है के

---

1 चलाया । 2 कहा । 3 छोटे-छोटे कच्चे मकान । 4 जिस प्रकार मादा कौवे उड़ती हैं । 5 खपरैल । 6 जहां । 7 दरबार विजयसिंह के शासन का अधिकार हुआ । 8 महादजी शिंदे । 9 विचार-विमर्श । 10 हम लोगों से । 11 बर्बाद कर दिया तो । 12 आपके राज्य पर भी आक्रमण कर सकते हैं । 13 भेजो । 14 मारवाड़ के राठौड़ एवं जयपुर के कछवाहा राजपूतों की फौज । 15 पग-पांव । 16 केतो(कयो). कहा । 17 मुझसे क्यों दुश्मनी मोल ले रहे हैं । 18 सन्देह ।

कदास[1] जेपर फेसेलो हुवां पछे माधजी मारवाड़ ऊपर आवरण रो मनसोवो कर लेवे तो भरोसो कई, ने जेपर सु जोधपुर री अमलदारी[2] नजीक है सो जोधपुर सु फोज मेलां[3] जीतरे मुलक लुटीज जावे। जीरण सु मेड़ते फोज मेलाही है[4]। तरे पटेल कय्यो--थांरा मुलक ने कई डर छे? थांरो अेक डोरो (रा) जाय तो दोय डोरा म्हे देरणा[5]। थां वीचे ने मा वीचे[6] श्रीरांमजी है। मारवाड़ रो वीगाड़ नह करां। तु म्हाराज ने लीख दे सु जेपर री ऊपर नहीं करे। तरे प्रोहत जीवराजजी कयो--ठीक छे। हुं लख देसु[7]।

पछे भींवराजजी उठा सु कूच कर सांभर डेरा किया। लोक 20,000 बीस हजार भेळो हुवो ने पटेल ने ओरूं ठीक हुई[8]। तरे उकील जीवराजजी नु बुलाय कयो थारी फोज सांभर आई है। सो थे जेपुर रो ऊपर करो छो। तरे उकील कहतो—कीसनगढ़ ने म्हारे मेल नहीं छे[9] ने थारी फोज नेड़ी[10] छे सु कही वाला[11] फीतुर करो तथा कांकड़ रे गावां रो बिगाड़ करे[12] जीरण सु हजरती ने कोळ सांभर आयो वतावे छे ने सेखावाटी रा गांव ग्रानी रा हपदानी[13] लोक हजार 4,000 च्यार सुं पड़ीयो छे जीरण कने जेपर सुं उकील मेलीयो के सु मारे कने उरो आव, खरच मैं देसां। तरे हपदानी कयो—थारी तो बात मानु नहीं ने माहाराज वीजेसिंघजी रा वचन दीरावो। तरे भींवराजजी ठावा आदमी मेल वचन दीया ने 10,000 दस हजार रुपीया मेलीया ने केहतो जेपर आय डेरा करो के रहोला[14] जठे सूं खरच रा रीपीया 1500 सौ तो मैं देसां ने पनरे सो माहाराज प्रतापसिंघजी देसी ने रूपीया हजार 3,000 तीन रोजीना दीया जासां[15], ने पटेल ने भांज देसां[16] तो थाने आगरो ने डीग ले देसां। तरे हपदानी कूच कर ने जेपर आयो ने राठौड़ साँभर सु कूच कर जोबनेर डेरा कीया, ने उठा सुं नरूकां री पचार डेरा कीया। तरे माधजी पटेल उकील प्रोयत जीवराज ने फर कयो—तु केतो हो[17] ऊपर जेपुर वाला री फोज करां न्ही, सो थारी फोज जेपुर आई है जरां

---

1 हो सकता है कि। 2 शासन, रियासत। 3 भेजें। 4 भेजी है। 5 हम देंगे। 6 आप और मेरे बीच। 7 मैं लिख दूंगा। 8 और भी समाचार मिले। 9 मित्रता नहीं है। 10 नजदीक। 11 कई बार। 12 सीमा पर के गांवों में लूट-पाट करते हैं। 13 मिर्जा इस्माइल बेग हपदानी। 14 रहोगे। 15 देते रहेंगे। 16 पराजित कर देंगे। 17 कहता था।

प्रोहीतजी कयो— के जाणतो थो आहीज हो, सगा[1] है ने गले आंण पड़ीया, जीण सु फोज आई है। तरे पटेल कयो—के मारवाड़ ऊपर मुम[2] करण री तला[3] कवाय जाउं सो थे लीख दो सो फोज पाछी सांभर परी जावे[4], के अजमेर परी जावे। तरे जीवराज कयो—अवे तो राजा छे सो मारे सारे[5] कोय न्हीं।

तरे पटेल कयो—वांमण छे। दुजो तोप रे मुढे दे उड़ाय देऊं। रायजी पटेल कयो—हमार कजीयो मत करो। डीग हालो परा। पछे च्यार म्हीना पछे राठौड़ परा जासी। जठा पछै आवसां सो दोनु मुलकां ने समजाय[6] देसां, ने हमार तो राठौड़ ने कछवाव अेक छे ने राठौड़ री तरवार उ-(हुं)स[7] में जुले[8] छै सु राड़ करसां तो पग मांडसी न्हीं[9], ने दोय महीना रे छेड़े[10] बीखर जासी। तरे फेर भेळा हुवे कोय न्ही। तरे पटेल मुथराजी[11] नु पाछो कूच कीयो ने राजा कूच कर कागलीया रे बाग में डेरा कीया ने उठे राठौड़ कयो— के आपणी तो सजी छे[12], ने पटेल ने मुलक बारे काड[13] दीयो ने जेपुर री लार[14] छुड़ाय दीवी। हमे लारे क्यु जावो? तरे (ह)बदानी कयो—थारी तो लार छुटी। पीण माने कीसी जायगा वेसाणो[15]? सो कूच करो। सु लारे जाय ने राड़ करां[16] ने दीखणीया ने नरबदाजी पार लोपाय देसां[17] ने आगरो खाली कराय लेसां। जरां जांणीयां कांकड़ ताही लारे जासां। तरे कागलीया रा बाग सु कूच कर ने वसी डेरा कीया ने उठा सु वासके डेरा कीया, उठे मुकाम कीया। तरे नवाब केहतो लोक रो तसीयो[18] लो। तरे तीनु फोज चड़ी[19] सु न्यान्यारपुरा उभा रया। नवाब राठोड़ां री फोज देख ने राजी हुवो ने कयो के आछी लोक री साबुती है[20]। ईण री तल-वार कुण जाले[21]? दीखणीयो रो मुढ़ो कांही सु ईणा री तरवार झाले[22]?

---

1 रिश्तेदार। 2 मुहिम। 3 इत्तला-सूचना। 4 दूर चली जावे। 5 मेरे वश की बात। 6 समझाय-समझा देंगे, सबक सिखा देंगे। 7 हूंस-जोश में। 8 झूले-लटक रही हैं। 9 हमारी फौजों के पैर नहीं जमेंगे। 10 अनन्तर। 11 मथुरा। 12 अपना काम तो सफल हुआ। 13 काढ़। 14 पीछा। 15 बैठाओगे। 16 झगड़ा-युद्ध करें। 17 पार उतार देंगे। 18 तसवियो-जायजा। 19 चढ़ी। 20 अच्छे सैनिकों का संगठन (मजबूती) है। 21 झेले। 22 दक्षिणी फौज की क्या औकात जो इन राठौड़ों की तलवार झेल सके।

उठा सु कूच कर ने दस डेरा कीया । पटेल ने माचेड़ी रे राव नु वोहोरोजी कयो—आपे मुढा आगे जावां छां ने लारे अे आवे छे, सु जाणसी । पटेलजी डरीया सु कूच करने परा गया । तरे पटेल केहतो, अे दावजी ज्यु जाणो[1] । दोय महीना पछे देख लेसां । तरे राव जाणीयो, पटेल तो डीग परो जावसी ने म्हारो मुलक खराब कर देसी ने गढ़ पाड़ नाखसी[2] । जीण सु राव ने वोरो जी खेच करने कयो[3]—ईणा आगे पुठ दीखावो छे । सु मुलक माय सु अमल[4] उठ जासी ने पातसाही रा विड़द लीया वेहा छा[5] । सु आगरो ने दीली कुंण खावण देसी । जरे पटेल कूच कर ने लालसोट रा डुंगरा[6] में आया । रायजी पटेल, आंबोजी, भाउजी, मोखलो वरजीया[7] पीण राव प्रतापसिंघजी नु बेराजी कर ने पाछो कूच कीयो, ने हलकारा आंण[8] खबर दीवी दीखणीया री फोज रो पाछो कूच हुवो सु चाकसु कांनी आवे छे । तरे राजा प्रतापसिंघ जी ने राठौड़ां कूच कर भीणियाणे डेरा कीया ने उठा सु कूच कर ने माधोगढ़ डेरा कीया । माधोगढ़ राजसिंघ हमीरदेव रा बेटो छो सु आप जोर छो[9] । तीण ने घेरीयो[10], तरे चाकर राखीयो ने तीन हजार रूपीया दीना ने अेक घोड़ो भारी नीज़र कीयो । उठा सु कूच कर ने तुगे डेरा कीया । तुगे कछवावा आण सांमल हुवा । भींवराजजी रा वचना सु ने पटेल डुंगरा री भड़ देख[11] ने रामगढ़ पेली कांनी[12] डेरा कीया । सु कानी कानी सु राठौड़ कछवावा चढ़ीया सु उभा रे[13], सु फोज में रसत[14] जावण देवे नहीं, ने पेली अेक हजार आदमीयां सु धायभाई ने मेलीयो सु डीग मे बेठो रहे ने दोड़बो करे सु रसत बन्द कर ने मारवाड़ रा थोरी बावरी था जीका ने मेल सु नेड़ा जाय बेस ने परभात रा फोज बारै घोड़ो ऊठ[15] पोठीया[16] नीसरे सु ले आवे । जीको माल (उ)उणारो ने फेर ईनाम दीरावे जीण सु च्यारू कांनी रा फोज दोळा उभा रैवे । कोई नीसरे जीण ऊपर रगड़ो[17] करे । राठौड़ घोड़ा लाबे जीणा ने

---

1 इनके मन में आवे चाहे जैसा समझें । 2 गढ़ ढहा देंगे । 3 जोर देकर कहा । 4 शासन का कब्जा । 5 पातशाही का विरुद धारण किए हुए हैं । 6 पहाड़ियों । 7 बहुत कुछ मना किया, रोका । 8 आकर के । 9 स्वयं शक्तिशाली था । 10 घेराबन्दी करके अधीनस्थ किया । 11 पहाड़ों की मजबूत आड़ देखकर । 12 रामगढ़ के दूसरी ओर । 13 चारों ओर राठौड़ों और कछवाहों के सैनिक खड़े रहे । 14 खाद्य-सामग्री आदि । 15 ऊंट । 16 माल ले जाने वाला बैल । 17 झंझट ।

सींघवीजी ईनाम देवे, ने अेक दीन सेणा ने वावरी मारवाड़ रा भेळा हुय ने गया । सु हाथी घास लेण ने गयो, गेग्ने[1] ले गया जीण ने सिंघवीजी ईनांम रा रू. वीजेसा. 150) डोड सो दीराया ने हाथी रो नाव ममारख दीयो ने हाथी ऊपर नीसांण रहे छे। अेक दीन थोरी गया सु अेक रेखलो[2] ने अेक झोड़ी[3] ले आया ने पटेल री फोज में पुरी तंगी । सु आटो[4] रू. वीजे. 1) रो तीन सेर वीके ने दांणो च्यार सेर वीके ने घास असल में ही न्हीं जीण सु पनीमुजा[5] घोड़ा ने नाखे[6] जीण सु घोड़ा थक ने बेस के पड़ गया[7], ने लोक कायो[8] हुय गयो, ने ईसमालवेग चढ़ ने चोकीया सु कजीयो कर आवे सु नीराट काया[9] हुवा ।

तरे सारा भेळा हुय ने मनसोवो कीयो के हमे राड़ कीयां बीना खरावो है। तरे पटेल कयो—कछवाहां तो समदा[10] है सो बीस कछवाहा ने दोय दीखणीं हुवे तो भारा माथे दे टोळ लावां[11] । पीण राठौड़ां रो डर छे। तरे प्रतापसिंघजी कयो–राठौड़ां रे तो तरवार रो वल छे। सो तोपां री झंजीरी[12] दीराय देसां । सु आवतां-आवतां गोळा सु उड़ जासी, तरवार भीळण[13] दो कोय न्हीं । औ मनसोवो कर ने पटेलजी ने आंबाजी (वाजार) तो लारे डुंगर में हीज रया ने छड़ी फोज ने तोपखांनों लेर कूच कीयो सु वीदरके डेरा कीया । दोनु फोजां रे छेती कोस 3 री ने हपदानी पलटणीया रा लोक ने रुको मेलीयो के थे कजीयो कीहुं करो ? अेक लाख रु. 1,00,000) पेला देसां ने पछे म्हीने रो म्हीनो खरचीयां देसां । नवाव देतो ज्युं दीया जावसां । ईण तरै वेत[14] वांधी थी पीण दीखणीयां आंछो[15] कर ने राड़ ठेराई । पलटणीयां रा दरोगा ने कंयो—राड़ कर ने फते करो । थांरी चढ़ी-चढ़ी खरची चुकाय देसां । तरे हलकारा खवर दीवी के स्वारे दीखणीया राड़ करण ने चढ़ ने आवसी तरे हपदांनी राजा रे डेरे आयो ने भींवराजजी ने बुलाया ने मनसोवो[16] कर ने राड़ करणी ठेराई ।

---

1 घेरकर । 2 छोटी व हल्की बैलगाड़ी । 3 जोड़ी-बैलों की जोड़ी । 4 आटा, चून । 5 मूंज की सूखी घास, पतेल । 6 डालते । 7 कमजोर हो गये, उठने-बैठने में अशक्त हो गए । 8 तंग, परेशान । 9 अत्यधिक परेशान । 10 आसान । 11 घेरकर ले आवें । 12 झड़ी । 13 भिड़ना । 14 शर्त तय की 15 उतावळ । 16 विचार-विमर्श ।

पछे संमत 1837 रा सावण सुद 13 सनीसर री राड़ ठेरी, ने सारा आप-आप रा डेरा आया। पछे डेरा सु भींवराजजी कवायो के स्वारे[1] वार आछो[2] न्हीं है, सु राड़ न्हीं करसां। पीरसु अदीतवार[3] नु राड़ करसां। तरे म्हाराज कवायो के मैं तो थे क्हेसो जु करसां। पीण नबाब ताकीद करे है सु उण ने कहो। तरे सींघवीजी नबाब ने कवायो। तरे नवाब कयो के राड़ तो स्वारे हीज हुसी। आपां न्हीं करसां तो दीखणी आय ने करसी। सो नेड़ा आय ने तोपां मांडसी[4] तो कजीयो बीगड़ जासी, पग छूट जासी। आपे काईं करां। दीखणी आपे ही करसी। तरे सींघवीजी डेरे-डेरे डीव[5] मेल ने कवायो के स्वारे राड़ छे।

सु पाछली रात प्होर रही ने नगारो करायो ने डेरा-डेरा चोपदार फीरीयो। लोक दांतण-कुरला कर अमल ले ने हुसीर[6] हुय गयो ने घोड़ा जीण हुवा। ईतरे दुजो नगारो फेर हुवो ने दीन उगां प्हेली जीम ने चढ़ता हीज हुवां जीतरे हपदानी तो जांजरके[7] चढ़ीयो उभो थो सु तोपखानो जाय रोपीयो[8] सु उठी सु[9] दीखणो आया ने गोळा सरू हुवा। तरे राजा री ताकीद सु ने दीखणीया सुना गांव थो जठे जाय उभा रहा। सु गोळा वहे छे। राठौड़ ही चढ़ ने राजा सुं मुजरो कर ने जीवणी बाजु उभा रहा। सु गोळा री दोनुं कांनी भींक[10] पड़े छे। सु राड़ हुंता-हुंता दोफेर[11] सु दीन चढ़ीयो ने पटेल री फोज में सामी[12] हजार 5,000 (पांच हजार) सो आगा बदीया[13] ने आपणे कांनी गांवा रा टापरां[14] छां जीणा वारे आंण, बांण बावे[15] सु फोज में आंण-आंण पड़े। तरे आंपणे कानी वीसन[16] सामी था जीके ही बांण चलावता था, ने सीरदारां दोलतराम हलदीयो आय कहो आगा उभा रहो। तरे पावंडा 100 उभा राख ने राजा कने उभा राख ने परो गयो, ने उठे लोकां री मार घणी हुई सु घोड़ा, उठ(ऊँठ) फुटे पीण उभा मार खायबो कीया[17]। जीतरे अमल रो बखत हुवो सु अमल रा पावाडीया[18] होका[19] पावे छे ने चढ़ीया उभा छे। मन में उंण वखत घणी हमगीरी[20] छे ने गोळा पड़े सु

---

1 प्रातः। 2 शुभ। 3 परसों रविवार। 4 तोपें लगायेंगे। 5 संदेश। 6 सन्नद्ध 7 बड़े तड़के। 8 स्थापित किया। 9 उधर से। 10 बौछार। 11 मध्याह्न। 12 स्वामी साधु। 13 बढ़े। 14 कच्चे मकान। 15 बांण (तीर) चलाते। 16 वैष्णव। 17 खड़े-खड़े मार खाते रहे। 18 अफीम के पिलाने वाले। 19 हुक्का। 20 अपनायत।

गीड़ा[1] पड़े ज्युं पड़े । पीण खातर[2] में न्हीं । उभा वातां करे छे । जीतरे बीसन सामीया रे पडवे[3] कांनी आगा गया ने सामीया ने सांमीयां नु गोळीया वाही, ने सांमी भागतां नु देख ने हाको कर ने थोडीया[4] तरे भगत[5] पाछा नास ने पाळां माहे पेठा[6], ने भंडारी सोभागचंद घोड़ा 500 पांच सो सु उभो थो, सु भगतां रे ऊपर सारु[7] घोड़ा चलाया सु घोड़ा देख ने दीखणीया रो तुगो[8] हजार 5000 पांच रो उभो थो तीके सामीयां रे ऊपर घोड़ा चलाया । तरे भंडारी गंगाराम कने मेड़तीया सुरतांणोत, केसोदासोत, रुघनार्थसिंघोत खारी रा ढावा रा जोधा सो लोक 4000 च्यार हजार थो जीका रा गोड़ा[9] चालीया, ने फतेंसिंघजी बखतावरसिंघजी कने चांदावत था जीणा रा ही ने मादोदासोत रा ही घोड़ा 600 छव सो साथे सो ईणा रा ही घोड़ा हालिया ने उदावत था जीणा रा ही घोड़ा चालीया ने वाळो लागीयो[10] । मुढ़ा आगे नीसांण तीरगा फरकता थका नगारा ऊपर डंका पटकता थका चालिया जावे छे । जीण वखत में फतेंसिंघजी कहतो—बगतावरसिंघजी घोड़ा धीरा खड़ो[11]। सारा साथ ने भेळा राखो[12] ने दीखणीया री तोपां पाछ साधी[13] सु राठौड़ ऊपर फीरीया सु गोळा अेक लाख ने असी वुहा । पीण अे तो नेड़ा आया ने घोड़ा ढवीया[14], ने ठाकुर फतेंसिंघजी के—हमे राम रा नांव लेवो, ढवो मती । तरे घोड़ा चलाया सु तरवार भीळीया सु तरवार री ईसी कड़ाकड़ बाजी सु अगाड़ी सामी धके[15] आया । तरवारां की कड़ाकड़ बाजी जाणे जणे होली री गेर में डंडीया री कड़ाकड़ बाजे जुं तरवार री जींख बाजी[16] । सु पेली सामी धके आया जीका ने बाढ़ ने हेठां नाखीया[17] सु अतीत[18] 500 पांच सो खेत आया, ने वाकी रा नाठा ने उणा रे आगे पटेला तीन जिका ने बाढ ने तोपखांनो उरो लीयो[19] । उठा आगे भेड़ चर दीखणीया पांच हजार 5000 असवारां सुं धके आयो जीण ऊपर रीठ[20] बाजी सु मुदे भडेचार थो जीका ठाकुरां फतेंसिंघ रे धके आयो के ठाकुरां बरची[21] फेरी । भड़ेच तीर खांचीयो ने तीर छुटो सु हाथ में वागें थी

---

1 ओला । 2 परवाह । 3 पड़ाव, डेरा । 4 दौड़े । 5 स्वामी । 6 प्रवेश कर गए । 7 स्वामियों की मदद के लिए । 8 सेना का अग्रभाग । 9 घोड़ा । 10 सेना का सैलाव उमड़ा । 11 धीरे हांको । 12 सभी लोगों को सम्मिलित रखो । 13 तोपें पुनः सक्रिय हुई । 14 रुके । 15 सामने । 16 झन्कार बजी । 17 काटकर नीचे पटक दिया । 18 साधु-स्वामी । 19 अपने अधीन किया । 20 शस्त्र-प्रहार । 21 बरछी ।

सु डावे हाथ ऊपर तीर आयो सु उबी हथाळी वेर ने[1] घुदा में नीकल दगली री बांह में आवतो रयो ने ठाकुर हाक ने बरछी बाही[2] सु भड़ेच रे काला केसां लागी सु मांकड़ी फुट घोड़ा री काठो फुट खोगीर फुट घोड़ा रे पोतवाला रे जाती उकसी, ने रूपजी बगसीरामोत रो घोड़ो कांम आयो। तरे गजे मांगलीये उतर घोड़ो दीयो। रूपजी चढ़ीयो ने गजो मांगलीयो कांम आयो। जालमसिंघ रतनसिंघोत री घोड़ी रे गोळो लागो। अेक गोळी लागी तरे मांगलीये सुरते घोड़ो दीयो सु सुरतो घोड़ी चढ़ीयो सु तीन पगां रे पांण घोड़ी उरे आई।

ईतरा कांम आया।

विगत—

1 राठौड़ रायसिंघ हींदुसिंघोत

1 राठौड़ दलेलसिंघ जोरावरसिंघोत ढावा रो

1 राठौड़ दलेलसिंघ सगरामसिंघोत तीग रो

1 राठौड़ नाथुसिंघ जालमसिंघोत गोड़ावड

1 बलु दे ठा. रो धायभाई बगतो

1 फीट केसवो माला रो

1 वड़ु ठा. सुरताणसिंघजी केसोदासोत

1 बोडावड़ ठा. मोबतसिंघजी

3 वोड़ावड़ रा बेली 3 घायल हुवा

8 बुडसु ठा. रा बेली 3 काम आया, 5 घायल हुवा

1 सेखावत चैनसिंघजी रै तीर लागो

1 चांदावत सेरसिंघ रे हाथ रे गोळी लागी

1 चांदावत पदमसिंघ वीटण गोळी मुढा रे लागी

1 चांदावत सलोसिंघ रे गोळी लागी

1 राठौड़ हरूप जगसिंघोत नथावड़ी रो

1 राठौड़ उदेसिंघ भगोतसिंघोत डुमांणी

1 राठौड़ सीवसिंघ गनेसिंघोत

1 राठौड़ नवलसिंघोत सुरजमलोत, रायण

---

1 चीर करके। 2 चिल्ला कर बरछी चलाई।

1 मागलियो गजो वलुंदा रा डेरा रो
2 देसवाल आदमी दो कांम आया
3 वेडु तीन वडु रा कांम आया 1 घायल
1 ठाकुर जीवणसिंघजी मारोठ रुघनाथोत
5 मेड़तीया रुघनाथसिंघोतां री आसामीयां
3 खारी रा ठावा रा जोधा आसांमी कांम आई 3
1 सेखावत लालसिंघ
1 चांदावत कायमसिंघ रे भालो लागो
1 अखावत बुधसिंघजी गोळी लागी
1 चरबादार सरगरो नव बेली कांम आया
1 लालसिंघ हींदुसिंघोत सेड़ाऊ
1 चांदावत नथलसिंघ दलसिंघोत पछवाड़ी
1 चांदावत सेरसिंघ सायबसिंघोत सेजावाड़ी वासणी
1 मालमसिंघ नवलमल डुवाणी रा रायमलोत
1 चांदावत सायबसिंघ जुंझारसिंघोत
8 राठौड़ वखतावरसिंघ जवानसिंघोत माधोदासीत

1 जेतमाल कांम आयो	1 पीड़ा जागीरदार
1 सीपाई सेहते	4 वेली घायल हुवा
—	—
2	5

2 ईडवा रा ठाकर रा वेली 2—कांम 1, घायल 1
1 उदावत जवानसिंघ वनेसिंघोत
5 उदावतां री आसांमीया पांच घायल हुवा
1 मेड़तीया रूपसिंघोत
20 कुचामण ठा. सुरजमलजी रा बेली

8 कांम आया 12 घायल हुवा

2 छीपीये अमरसिंघजी रा बेली 2
3 चांपावत वलुओत गीरदासी रा बेली
10 खारी रा ढावा री आसांमीयां बेली घायल हुवा

सु जगड़ो करतां तीन-तीन तो तोपखानां ऊपर लाया ने 3 तीन वाड़ा

पालटणीया रा तोड़ीया ने दीखणीया ने मुढा आगे घेर लीया सो डेरा तांई मारता-मारता ले गया । पीण जीवणी मीसल रा सीरदार आंपणी फोज में हा सु खंचनी वागां रयां ने कछवां रा घोड़ा उठता तो पटेल ने लुट लेता । पीण ऊपर हुवो न्हीं, तीण सु डेरा सु पांवडां दोयसेक रया जीतरे रो सोबादार घोड़ा हजार पांच 5000 डेरा सु आसुदां आय गया ने राठौड़ां रा पाछा वळीया, ने दीखणी सालड ने लारे हुवा सु खारी रे ढावा रा सीरदार था जीकां रा पग छुटा, ने दीखणीया रा खेठा वाला वाळा तांई तरवार वैती आई । जीण सु घायलां री लोथां उठी न्हीं, ने चांदावत माधोदासोत उदावत अे पाछा हालीया । जठी हीज वीखा-वीखा[1] आयवो कीया, जीण सु दीखणी लारो कीयो न्हीं, ने आया ज्यां ने जाव[2] दीयो जीण सु होळे वाळे आया सु वाळा ऊपर सिंग. भींवराजजी उभा था जीण पागड़ो छाड़ीयो[3] जठे सारा सीरदार आंण ढवीया[4] ने ठा. फतेसिंघजी रे तीर लागो थो जीण सु लोही वेहतो थो जीण सु सींघवीजी उपरणी[5] दीवी ने कयो—ठाकुरां हाथगले[6] बंधालो, ने कयो—हमे कांई कीयो जोईजे ? तरे फतेसिंघजी कयो—जमा खातर राखो । हमके घोड़ा उठावसां ने भांज देसां । तरे राईका ने चोपदार दोड़ाया सु केईक सीरदार डेरा ने खड़ीया था ज्यांने पाछा लाया । सु सारा ही वाळा ऊपर भेळा हुवा ने दीखणीया री लोळ[7] वदी थी जीण ऊपर घोड़ा फेरीया के पाछा मचक गया ने राठोड़ां रो तोपखांनो मंडीयो थो सो गोळा छुड़ा (छुटा) ने दीखणीया ने घणी मार हुयी । पड़ीयार जगरूप कीरतजी तोपां ऊपर भलो गाढो रयो ने कमरबंधी फाड़ ने थेलीयां सींवी, ने वरसतां म्हे में गोळा चलावता रया सु गोळा गया सुं घोड़ा असवारां ऊपर गया । सु घोड़ा रो ने आदमीयां रो सखरग[8] हुय गयो जीण सु दीखणी आंतरो खाय गया ने राजा ने ठीक हुई । तरे राजा कयो—के राठोड़ां रो ऊपर करो तरे दोलतराम हलदीयो ने पाड़सिंघ खंगारोत उणीयारा रो राव घोड़ा 300 सु आय भींवराजजी सु ने सीरदारां सु मील दीलासा देर पाछा गया । तावड़ो[9] घणो थो सु घणा घोड़ा जाई हुवा[10] पीण पछे छांटा आ गई[11] जीण सु हवा हुय गई ने

---

1 कदम-दर-कदम । 2 जवाब । 3 घोड़े से नीचे उतरे । 4 ठहरे । 5 वस्त्र विशेष । 6 हाथ में कपड़ा बांधकर गले से लटकाना । 7 पंक्ति । 8 विनाश । 9 धूप । 10 घोड़ों की हानि हुई । 11 हल्की बरसात हुई ।

गौळां री राड़ हुयवो कीवी । दीखणीया रा घोड़ा ही घणा मारीजीया ने आदमी ही 2,000 खेत पड़ीया, ने राठौड़ां रा बेळी 500 खेत पड़ीया । पछे दोय आसामीदारां ने हपदानी कने मेळीया सु हपदानी हाथी चढ़ ने दोय पीपळ था जीणा री छाया उभो थो जीतरे ईणा जाय मुजरो कीयो, ने कयो—बगसीजी मुजरो कयो है । मारो भलो ऊपर कीयो मारा घोड़ा हालीया जद आपरा घोड़ा ऊठता तो केण ने दुख रेतो ? डेरा लूट लेता ने पटेल ने मार लेता । तरे नबाव कयो—थे आछा कीया । मांने बुजीयो हुतो[1] तो साथे ही घोड़ा चलावता । पीण जीसड़ो थांरो भरोसो थो जीसड़ी राठोड़ तरवार वजाई । थे थारी बारी काढ़ी हमे मारी वारी है, ने बगसी ने कहीजो—जमा खातर राखजो । अबे घोड़ा चलाऊ हुं, हमे मार देसु । पलटणीयां आया सु मीलीया छै । सु माहाराज रा घोड़ा ऊठसी तरे तोपां उठीने फेर देसी, ने पलटण ने मार लेसां ने लुट लेसां । जीतरे गोळो आयो सु पीपळ रे डाळा रे लाग हेटो पड़तो । हाथी चढ़ीया नबाव रे छाती रे लागो सु ऊपरलो धड़ उड़ गयो । तरे खीजमतदार लारे बैठो थो जीण चादर ओढ़ाय दीवी ने ईसमाल-बेग नु समचो[2] दीयो सु ईसमालबेग रुपीया री थेलीयां दोय-तीन मंगाय ने गोलमदाजा नु ने लोक नु ईनाम दीयो । तरे आगे लड़ता जीण सु स्वाय लड़ण लागा[3] गोला दीन वदीयो जठा तांई बेवो कीया ।

दीखणीया रा घोड़ा आदमी घणा फुटा ने दीखणीया रा गोळा अेक लाख ने असी हजार बुहा सु सारा राठौड़ां ऊपर बुहा । जीणा ने कीहुंई गीणीया न्हीं[4] । झगड़ो घणो भारी कीयो । घणां राठौड़ कांम आया । सु राड़ करता दीन वद गयो तरे दीखणीया आप रा डेरा ने वहीर हुआ, ने कछवाहां, राठौड़ां सेदानांव जाय ने डेरे आया । घायल था जीका ने पाटा वंधाया, कांम आया जीका ने दाग दीरायो ।

दुजे दीन पटेल सारा पलटणीयां ने दरोगो थो जीका ने बुलाय ने कही—तरवार सुं तो राठौड़ कछवाहा सु पड़पां न्हीं[5] ने गोळा सु मार डेरा उठाय दो । सु फोज वाला रसत लावे । मुंगीवाड़ा सु लोक हेरांन है[6] । तरे दरोगां

---

1 पूछा होता । 2 समाचार, सन्देश । 3 अधिक उत्साह से लड़ने लगे । 4 जिसकी किसी ने परवाह नहीं की । 5 मुकाबला नहीं कर सकेंगे । 6 मंहगाई से लोग परेशान हैं ।

कयो—मांरी चढ़ी-चढ़ी चुकाय दो तो में राड़ करां। तरे पटेल कहो—मे खरची चुकाय दां थे राड़ करो।

तरे पलटणीयां सारी तोपां 500 लेर वाड़ो बांध नीसरीया सु डेरा सु कोस अेक आंण उभा रया। अठी सु म्हाराज प्रतापसिंघजी ने राठौड़ां ने लेर भींवराजजी चढ़ीया सु जाय गोळा सरू कीया ने दीखणीयां खरची देवण में राखीया सु नां तो खरची दीवी न आवण दीया। तरे प्होर 1 (एक) गोळा बुहा ने ईसमाल बेग रो ठावो[1] आदमी रुको[2] ले ने गयो जीण कयो—अे तो खरची थांने देवे न्हीं ने फेर राड़ कर जीतसो तो पईसो अेक थांने देवेला न्हीं। तो थे परदेसी लोक हकनांयक[3] कीहुं मरो हो? थे म्हारे कने उरा आवो[4] सु थारो चढीयो-चढीयो रोजगार मे थाने चुकाय दां ने अेक लाख रुपया थानु ईनाम रा देसां। तरे पलटण[5] रे दरोगे कयो—राजा रो वचन तो मे मांना न्हीं ने राठौड़ां रो ने भींवराजजी रो वचन दीरावो।

तरे उणां रा दोय ठावा आदमी जाय भींवराजजी सु मीलीया। तरे सींघवीजी बचन दीयो ने कयो—तोपां पाछी पुठ लारे[6] घेर दो तो मे सारा दीखणीयां ने लुट लेसां। तरे पलटणीयां कयो—आज तो म्हारा दरोगां ने उणां आवण न्हीं दीवा छे। सु स्वारे थांसु आंण मीलसां गोळा वाय ने।

पाछा पटेल ने ही अबरोसो पड़ीयो ने दुजे दीन सारा ही बाड़ो[7] बांध ने वहीर हुवा। तरे पटेल कयो—थांनु खरची तो जरां देऊं राठौड़ां ने भजाय देवो। तरे पलटणवाळा नु कयो—न्हीं तो तोपखांनो सारो उरो देवो[8]। तरे पलटणीयां कयो—चढ़ीयो रोजगार उरो दो, न्हीं तो म्हे म्हारा मुळक में परा जासां। यु वहे ने वहीर हुवा ने वीसटालु फीरवो कीया[9]। यु करतां दीन वदते[10] आंपणी फोज चढ़ी उभी थी ने ईसमाल वेग चढ़ीयो उभो थो ज्यां नु नेड़ा आय गया। जरां दीखणीयां रा वीसटालु आया था जीके पाछा नाटा[11] ने पलटणीयां में ईसमाल बेग जाय उभो रयो। पलटण वाला कयो—थे कहो

---

1 खास। 2 पत्र, चिट्ठी। 3 निरर्थक। 4 मेरे पक्ष में। 5 इस्माइल बेग का सैन्य दल। 6 पीछे की ओर। 7 लश्कर। 8 वापस दो। 9 मध्यस्थता करने वाले आते-जाते रहे। 10 सूर्यास्त होने तक। 11 वापस भाग गए।

जठे डेरो करां । जरे राजाजी ने भींवराजजी दोलतरांमजी कयो—आज तो अलगो ही डेरो करावो कीसी ठीक? धंगो फीसाद[1] हुय जावे, स्वारे देख लेसां । पछे फोज सु अदकोसेक[2] डेरो करायो ने ईसमाल बेग कने रयो ने दीन ददते म्हाराज प्रतापसिंघजी भींवराजजी कने गया ने पलटणीया रा दरोगा मुजरो कीये, तोपां छोड़ी, हवाई घणी कीवी[3] ने दीखणीया री फोज में गोळा सुणीया तरे डरीया, जांणीयो के पलटण उणां सु मील गई । सु स्वारे[4] राठौड़ ने राजा नबाव पलटणीया भेळा हुय ने आसी, ने मारीया जावसां । काले[5] राठौड़ां घोड़ा अेकला ही चलाया था सु फोज चल-वीचल हुय गई ने हमे ईतरा भेळा हुवा है सु जरूर लूट लेसी । ईण तरे दीखणीया री फोज में भगणो पड़ीयो[6] ने डेरो डांडो[7] बांधण लागा ने फोज रा मुसायबा ने ठीक हुई[8] ने चोपदार मेल ने डेरो हेटो नखावे[9] जीतरे दुजो जणो बांध उभो रहे । ईण तरे माहोमाह भागणो पड़ गयो ।

तरे जांणीयो अठे तो पग मंडे न्हीं । तरे पटेलजी कने सारा भेळा हुय ने फेर राड़ करसां । रात प्होर गया सारा डेरा बांध वहीर हुवा सु पटेल री फोज कने आया ने सोर गोळां री पेटीयां थी जीणां मे वासते[10] पड़ गयो ने पेटीयां उड़ गई जीणसु भड़ीका बाजीया[11] ने आगला ही डेरा में भगणो पड़ गयो । सु लोक मते-मते[12] डेरा बांध वहीर हुवा । तरे पटेल कहो हुं तो नीसरू न्हीं, अठे कांम आसु[13] । तरे रायजी, पटेल, भाऊजी, आंबाजी—अे पांच आदमी भेळा हुय ने कयो—के आपां तो दीखणी हां सु आपां नु भाजणा री अेब न्हीं[14] । जीवसां तो घणी ही राड़ करसां । तरे पटेल ही चढ़ नीसरीयो[15] ने रात आधीक रा फोज में भगी पड़ी सु हेरांन हुवा[16] ।

राजा ने भींवराजजी पलटणीयां नु दीलासा दे ने मीठाई रा गाडा मेलीया ने दीन री उगाळी[17] हलकारां आंण खबर दीवी के पटेल नास गयो ।

---

1 क्या पता कोई धोखा-घड़ी हो जाय । 2 आधे कोस दूरी पर । 3 सलामी की तोपें बहुत छोड़ी । 4 कल प्रातः । 5 विगत दिवस । 6 भगदड़ मची । 7 डेरा का सामान । 8 मालूम हुई । 9 नीचे रखवाने लगे । 10 अग्नि । 11 धमाके हुए । 12 स्वेच्छानुसार । 13 यहीं पर मर मिटेंगे । 14 अपने को भागने में कोई शर्म नहीं । 15 चढ़ करके भाग गया । 16 भौंचक्के रह गए । 17 सूर्योदय के समय ।

तरे राजी हुआ ने तोपां छोड़ी ने नगारो कराय ने चढ़ीया सु म्हेली गया ज्याँरे डेरो जाजमाट[1] हाथ आयो ने दीखणीया री वहीर में वेदो पड़ीयो[2], भगी पड़ी सु कीतराक डेरा नाख-नाख नाटा[3]। सीरदारां कयो—लारो करो सु लुट लेसां। पीण कछवाहा चालीया न्हीं। दोलतरांम राजा लारे हाथी चढ़ीयो जीण चोपदार मेल कवायो -के बगसीजी! दीखणी जाय छे, सु लारो करो। तरे भींवराज कयो—दोलतरांमजी ने राजाजी ने अठे रेहेण दो ने थे आवो सु आपां हालां। तरे दोलतरांमजी कयो—मारे काजीजी गया है। तरे भींवराजजी कह्यो—मारे बादरसिंघजी गया है। असवार हजार 1000 अेक सु पाड़सिंघजी गया। सु कोस च्यार गया था। फोड़ा घोड़ा 2 लाधा जीके लेर अेक बाग आयो जठे छाया उतरीया ने राठौड़ां रा घोड़ा 500 सुं बादर-सिंघजी गया सु कोस 10 दस सुं गोळा रा गाडा लाया। अेक गाडो सोर रो लूटीयो ने गाडा 4 सागड़ी[4] ले गया, ने नास गया। दीखणीया रा डेरा री जायगां राठौड़ां रा ने राजा रा डेरा हुवा।

पछे उठा सुं जोधपुर नु श्री हजुर सायबा नुं कागद लीखीयो। सीरदार कांम आया ने घायल हुवा त्यांरी वीगत लीखी, ने पटेल रात रा भागो त्यांरी वीगत लीखी। म्हाराज री फते हुई ने राजा प्रतापसिंघजी लीखीयो। म्हा-राज पांच राठौड़ हा जीके आछा हुवा ने फते कीवी बादो[5] नास गयो। कछ-वाहा रे आंबेर रही। सु म्हाराज कर ने के पांच राठौड़ कर ने जमी रही है[6] सु राठौड़ां ने, ने भींवराजजी ने दीलासा लीख ने मीलावसी। सु राईका कासीद हालीया सु चौथे दीन आंण बधाई दीवी। सु कासीद राईका ने ईनाम दीयो ने म्हाराज घणां कुसी हुवा[7]। मुछां हात दे ने बोलीया—के मारवाड़ नर समंद[8] केवे, सु सांची है। अबके राठौड़ां म्हाराज गजसिंघजी वाली राड़ कीवी[9]।

---

1 डेरे का सामान। 2 दक्षिणी फौज के पलायन में बाधा पड़ी। 3 डेरे छोड़-छोड़ कर भाग गए। 4 गाड़ीवान। 5 व्याधि। 6 यह जमीन महाराज के प्रभाव से और पाँच राठौड़ों के बलबूते पर सुरक्षित रही। 7 महाराजा अत्यन्त प्रसन्न हुए। 8 वीर पुरुषों का सागर। 9 अबकी बार राठौड़ों ने पूर्व महाराजा गजसिंहजी की तरह युद्ध में वीरता दिखाई।

पछे सारा सीरदारां ने खास रुका ने प्रवाना लीखीया, ने लालजी मुंहता ने मेलीयो, ने फोज खरच मेलीयो। तीण रो मुसदीयां ने कयो। तरे सींघवो खूबचन्द अरज कीवी के—मुलक में बाब घालीया खरची पूगसी[1]। तरे म्हाराज फुरमायो—के सीरदार तो परदेस में लड़े छे, खरच खावे छे, ने उणा रा गांव में डंड[2] कीण तरे घालां? तरे खूबचन्द अरज कीवी—के सीरदारां ने तो बेराजी करां न्हीं ने रुपीया उगाय लेसां[3]। पीण दोय गांव देणा पड़सी। तरे म्हाराज अरज कबुल कीवी। तरे गांव पांचलो ने ककड़ाय महेसदासजी नुं दस हजार रो पटो दीयो, ने प्हेली तफो[4] आसोप, बडलु मेलियो। सु ईणां रा कामेती[5] आगे हुय ने ताजी[6] आसांमीया वताई। तीणां कना सुं बांध-बांध रुपीया लेवे। हजार बीस दोनु ही गांव में उगाय लीया ने दुजा ही सीरायतां रा गांवां[7] मांय सुं बाब उघाय लीवी। सारा ही मुलक में बाब उघाय लीवी। सो सु सीरायत तो परदेस में बेठा माथा कटावे, चाकरी करे ने लारे गांवां में डंड लीयो। जीण दीन सुं मारवाड़ ने काळो[8] ने तरे-तरे री बाब पड़ी।

दुजे दीन म्हाराज प्रतापसिंघजी ने राठौड़ां पटेल लारे कूच कीयो सु भांडारेल डेरो कीयो ने पटेल तो नाटो सु डीग गयो ने अे दूजे दीन गांव ढढुबी डेरा कीवा। उठां सुं मांनपुरे डेरा कीया ने मांनपुरा माथे अेक लाख रुपीया कीया ने बालाखड़ी ऊपर अेक लाख रुपीया कीया ने उठा सुं रामगढ़ डेरा कीया सु उठे मुकांम रया।

ठा. फतेसिंघजी रे ल्होह[9] लागा था सु पाटा खुलीया तीण री कुसी[10] कीवी। मीठाई मंगाई, अमल गळीयो। डावी मीसल रा सीरदार सारा ही आया ने सामोद रा राव ईन्द्रसिंघजी नुं बुलाया। घोड़ो भंवर रूपा रा ग्हेणा सु[11] रावळजी ने दीयो ने दुजे दीन बखतावरसिंघजी कुसी कीवी ने रामगढ़ रा डेरा ही फोज में मांदगी[12] आई सु उठा सुं कूच कीयो सु जटवाड़े डेरा कीया ने पटेल डीग सूं नाठो सो अलवर गयो। सु अठे डूंगरा री वेढी जायगा[13]

1 कर विशेष लगाने पर ही खर्चे की पूर्ति होगी। 2 कर रूपी दण्ड। 3 रुपये वसूल कर लेंगे। 4 राजस्व वसूली दल। 5 कामदार लोग। 6 समृद्ध। 7 हिस्से के गांवों से। 8 अनिष्टकारी। 9 घाव। 10 खुशी। 11 काला घोड़ा चांदी के आभूषणों से सुसज्जित करके। 12 बीमारी। 13 पहाड़ियों का दुर्गम स्थल।

थी, जठे डेरा कीया । जठे हलकारा खबर दीवी के पटेल ग्रलवर रे गढ़ गयो है तरे जटवाड़े डेरा रया, ने नवाब ईसमाइल बेग नु वीदा कीयो । ग्रागरा नु सु कूच कर ने गयो ने दीखणीया रायजी पटेल रणजीतसिंघजी जाट फोज हजार दस सु ग्राडा फीरीया ने ईसमाइल वेग कने हजार पांच लोक फोज थो सु दोळा ग्राय फीरीया, ने जगड़ो हुवो । प्होर 1 गोळा बुहां । पछे ईसमाइल बेग घोड़ा उठाया ने तलवार भीळीया के दीखणीया रा पग छूटा सु पुठ फीर गयी । तीन कोस तांई मारता-मारता बुहा । पछे कूच कर ने गरे[1] गया ।

पछे ग्रागरे जाय स्हेर में तो ग्रमल कीयो ने गढ़ दोळा[2] मोरचा बेसाणीया ने राजा प्रतापसिंघजी ने भींवराज मनसोबो कीयो के प्हैला नरूका[3] रा घर छुड़ाय पछे ग्रलवर लागसां । सु जटवाड़ा सुं ग्रेक मंजल कूच कर ने जांमडोली डेरा कीया । जांमडोली री गढ़ी छुड़ाई । दीन दस गोळा बुहा ।

पछे सींघवी धनराज मेड़ता सुं ग्रजमेर ग्रायो । सु स्हेर कायम कर लीयो ने दीखणी बीटली[4] चढ गया सु बीटली दोळा मोरचा दीया । नागोर हुकम प्होथो[5] सु तोपां चार मेली ने पांच सो ग्रसवार ने पांच सो पाळा म्हेलीया । तोपां ग्रसवार म्हेल ने म्हेतो रायचन्द ग्रायो ने जालोर हुकम प्होतो सु सींघवी जोरावरमल रो बेटो फोज हजार 2000 दोय ले ने मेड़ते डेरा कीया था । ग्रजमेर रे गढ़ म्हीना दोय लड़ीया ने धांन नीठ गयो[6] । तरे पटेल कने कासीद मेलीयो ने लीखीयो—सामान नीठ गयो है सु के तो ऊपर कीजो, न्हीं तो गढ़ छूट जासी । तरे पटेल ठावा ग्रादमी था, तीणा नुं पुछीयो तरे कीसनगढ़ रा उकील था जीण कयो—मारवाड़ रा सीरदार तो सारा ग्रठे है ने लारे पाळा हजार 2000 दोयेक भेळा कर लीया है ने गढ़ घेरीया बेठा हुसी सु ग्रठा सुं लोक हजार 5000 मेल देवो सु हजार तीनेक मारो हुसी सु ग्रजमेर फोज है तीन ने बाढ नाखसी[7] । सु नास ने मारवाड़ में वड़ जासी[8] तो मुलक लूटसां तरे ग्रठे फोज है तीका परी जासी ने लारो छूटसी ।

पछे जेपुर रो राजा ग्रेकलो रेहे जासी । जीण ने जेपुर में वाड़ देसां ।

---

1 ग्रागरा । 2 चारों ग्रोर । 3 कछवाहा राजपूतों की एक शाखा । 4 पहाड़ी । 5 पहुंचा । 6 समाप्त हो गया । 7 काट देंगे । 8 प्रवेश कर जाएंगे ।

पछे आपरी सला हुवे ज्युं करां। तरे सगळा रे दाय आई[1] ने अंबाजी ने वीदा कीयो। सु हजार 7000 जालवा रा वसता जीण ने वीदा कीया ने कीसनगढ़ रा हरोळ हुवा[2] सु वीस-वीस कोस रो कूच कीयो सु कीसनगढ़ आय ने उठीने भींवराजजी ने हलकारा आय ने खबर दीवी के मारवाड़ ऊपर आंबो आयो[3]। तरे भंडारी गंगाराम ने मेलीयो ने खारी रा ढावा रा जोधा रुघनाथसिंघ ने मेड़तीया ने राजा ने क्हे ने मेलीया ने कयो—मारवाड़ ऊपर आंबो गयो छे। सु कीहुंईक थेई लोक भेळा हुवो[4]। तरे कुसालीराम हळदीया रो बेटो नु वीदा कीयो। साथे घोड़ा दोय सो साथे पलटण मेली।

सीकर रा ठा. देवीसिंघ हेत ईरादा रे तावे[5] चढ़ीयो। आंबोजी कीसनगढ़ सु चढ़ीयो ने अजमेर धनराज ने खबर हुई। तरे जोधपुर नु राईको चाढीयो। दीखणीया री फोज मारे ऊपर कीसनगढ़ वाळा लाया है सु ऊपर वेगो कीजो ने कीसनगढ़ री फोज ने आंबोजी सु दीन उगते अजमेर आया सु दुजो मोरचा सु ऊठ ने स्हेर में उरा आया ने नागोर रा पाळा 200 दोय सोक बारे था[6] ने देवळीया रुघनाथसिंघजी री खवास रो बेटो आदमी 20 वीसेक सु वारे गयो। सु दीखणी आया सु दीखणी आवता रा घोड़ा उठीया सु मोरचा भेळ दीया। गुमांनसिंघ खवास रो कांम आयो ने पाळा आदमी 50 पचास कांम आया ने आदमी 50 घायल हुवा। बाकी रा आंण कोठ में पेठा[7] ने स्हेर ऊपर हला तीन कीया सु पाछा मार दीया[8]।

पछे वीसळीया कांनी डेरा कर ने गढ़ ऊपर सेमान चढ़ीयो ने स्हेर ऊपर हला हुवा। तीणा ने पाछा काढ़ीया सो फेर आया न्हीं, ने हजुर सु सींघवी अखैराज ने वीदा कीयो ने सीरदारां रा कंवर था तीणा सु हजुर सूं प्रवाणा मिलीया—के आछो साथे ले सींघवी अखैराज सांमल हुईजो। खरची दरबार सु दीरीजसी ने जोधपुर सूं ठा. दुरजणसाळजी घाणेराव 1, ओजो (झो) रामदत्तजी 1, सींघवी अखैराजजी 1 प्रवारा मेंड़ते आया ने सीरदारां रा कंवर आपरा बुथा मुजब[9] साथ ले आया।

---

1 सबके पसन्द आई। 2 आगे हुए। 3 अंबाजी इंगले (मराठा)। 4 कुछ तुम्हारे सरदारों को भी एकत्र करो। 5 स्नेह बढ़ाने की दृष्टि से। 6 दो सौ के लगभग पैदल सैनिक बाहर थे। 7 प्राचीर में प्रवेश कर गये। 8 तीन हमले किए सो निष्फल कर दिए। 9 क्षमता के अनुसार।

बलुंदे कंवर ठा. फतेसिंघजी रो बेटो धीरतसिंघजी, घोड़ा 50 लेर सांमल हुवो ने मेड़ता सुं जालोर री फोज कूच कीयो सु पोकरजी[1] डेरा कीया ने नागोर सुं भंडारी सीवचंद घोड़ा 200 दोय सो सु सांमल हुवो ।

तरे आंबेजी अजमेर सुं कूच कर कावड़ डेरा कीया । सु कावड़ री गाटी (घाटी) में चांदावतां री बंदुकां बीसेक थीं सु आथंण तांई[2] गोळी वुही । पछे दीन उगे दीखणी कीसनगढ़ गयो ने अखैराजजी, ओजा(झा)जी गगवाणे डेरा कीया । कीसनगढ़ रा राजा आंबाजी ने कयो—के मारवाड़ रो काजु लोक[3] तो ढुंढाण में छे ने अठे भंगत भेळी[4] करने आया छे । सु मांरो ही लोक साथे हुसी, सो चालो फोज लूटसां

सु म्हाराज श्री वखतसिंघजी रे ने बादरसिंघजी रे घणो हेत थो । बादरसिंघजी ने राजा म्हाराज वखतसिंघजी कीना था ने म्हाराज वीजेसिंघजी ही खातर मोकली राखी[5], पीण प्रतापसिंघजी तोड़ने गांव् गगवाणे अखैराज जी रा डेरा था जठे दीन उगे फोज लेर आया । तरै अखराजजी ने ठीक हुई । दीखणी आया तरे नगारो कराय ने डेरे चढ़ीया उभा रहा, रेखला छोड़बो कीया[6] । आंबाजी फोज दोळो कावो[7] देवे ने रामसर ने खड़ दीया[8] ।

दुजे दीन भंडारी गंगाराम फोज हजार 2000 दोय ले ने आण भेळो हुयो सु ईणा ही लारे कूच कीयो । सु दीखणीया तो सरवाड़ डेरा कीया ने राठौड़ां खीरीया डेरा कीया । सु खीरीया कीसनगढ़ री ही, सु फोज रो आदमी गांव में चीज वसत नु जावे तीण ऊपर गढ़ी में आदमी था जीणा गोळीयां बाही । सु भंडारी गंगाराम कनें चढ़ीयो उभो थो ने डेरा खड़ा हुता था[9] । कीतराक सीरदारां कमरां बांधी थी केई बेठा था, जीतरे आय हलकारा खबर दीवी के आंबाजी री फोज आई, सताब सूं चढ़ो[10] । तरे अखैराजजी चढ़ ने अेक अणी वणाई[11] ने अेक अणी ओजा(झा)जी ने स्वाईसिंघ जी लेर चढ़ीया ने जालोर री फोज कने जावता सारु ने अखैराजजी ने ओजा

1 पुष्कर । 2 संध्या तक । 3 फौज के खास-खास सरदार । 4 साधारण फौज । 5 महाराजा विजयसिंहजी ने भी खूब सम्मान रखा । 6 छोटी तोपें दागते रहे । 7 फौज के चारों ओर चक्कर काटकर । 8 हांक दिया । 9 डेरे खड़े किए जा रहे थे । 10 शीघ्रता से चढ़ो । 11 सेना बनाई ।

जी, भंडारी गंगारामजी—अे दोय अणीया वणाई ने उभा रया जीतरे दीख-णीया री फोज दीठाले हुई[1] ने दीखणी ही तीन तुगा कर ने अेक तुगो तो अखैराजजी ऊपर ने दुजो तुगो अोजाजी री फोज ऊपर ने तीजो तुगो डेरा ऊपर—अे तीन तुगा ईण तरे खड़ीया सु जांणीयो के डेरा लूट लेसां। तरे फोज में भगी पड़ जासी। सु डेरा ऊपर चलाया सु जालोर री फोज हजार 2000 दोय बगतर पाखर सिळे कीयोड़ा उभा था ने डेरा में सींघवी सुरजमल थो सु ही राठौड़ां रो चाकर हुवे जीसड़ो हुसीयार थो[2], जीण ही सांमा खड़ीया। सु दीखणीया रे ने ईणा रे लालो लागो मिलीयो[3] ने तरवार ने बरछीया रा घमोड़ा[4] सरू हुवा ने दीखणीया रा पग छुटा[5] ने आंबाजी री दोय अणी अखैराजजी, अोजाजी ऊपर आया सु राठौड़ अेकण जागा उभा रया सु दीखणी आया, तरवार भीळीया सु छेड़े-छेड़े उभा रया[6], ज्यां रे तर-वारां लागी बीच में भीदीया न्हीं[7]। सु तरवार वावता-वावता पुठ में[8] आय गया सु सूतरी रा नगारा कने[9] अळाय रो भाटी उभो थो, सु कांम आयो।

तीणरी विगत—

1 भाटी पटे पांचोठीअळ रो

1 अेक सूतरी ऊपर नगारची थो सु कांम आयो

10 आदमी 10 दुजा था सु कांम आया

1 अेक चांदावत सुंदरसिंघ अोळादण रो जीण रे सात लोह लागा

1 करमसोत बुगरड़ा रो काम आयो ने बुगरड़ो जबत था सु हेलो मार ने स्वाईसिंघजी ने कयो—थे परधांन छो, देखो हुं बुगरड़ो लीया मरूं छूं।

20 आदमी बीसेक घायल हुवा

1 ठा. फतेसिंघजी रो बेटो धीरतसिंघजी रे भेळी तरवार वाही।

भंडारी गंगारामजी कयो—बाप फतेसिंघजी तो तुगा री राड़ में जस लीयो ने बेटो अठे लड़े छे। ईसा चाकर जोईजे ने चाणोद रा ठाकर वीसन-

---

1 दिखाई देने लगी। 2 राठौड़ों की शूर-वीरता की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही होशियार था। 3 आमने-सामने के घुड़सवार भिड़ गए। 4 प्रहार। 5 पांव उखड़ गए। 6 दूर-दूर पर खड़े रहे। 7 भेदन नहीं हुआ। 8 पृष्ठ भाग में। 9 नगाड़ों वाले ऊंटों के पास में।

सिंघजी रो ने ओजा(झा)जी रो घोड़ा ऊँचा आया सु दोनुं ही हेटा पड़ीया। जीतरे जालोर री फोज दीखणी ने मुंहडां आगे कर लीया सु 3 तीन तुगा री अेक अणी[1] हुई ने आंवेजी रा ने कीसनगढ़ीया रा पग छुटा ने लारे मोरा बेठा[2] सु कोस अेक तांई वाढ़ीया[3]। पछे आगे नदी आय गई। तरे म्हाराज री आंण दीराय ने सीरदारां ने उभा राखीया।

दीखणीया रा आदमी 150 कांम आया ने आदमी 120 अेक सो बीस घायल हुवा। दीखणी ईसी तरवार री झाट[4] देखी, जांणी सब राड़ घेर लीवी तो अेकण ने ही जीवतो जावण देवे न्हीं, ने कीसनगढ़ वाळा ने कयो—थे केता था[5] के मारवाड़ में रजपूत कोई न्हीं। तरे म्हाराज प्रतापसिंघजी कयो—जांणता तो आहीज हा, पीण मारवाड़ नरसमंद केबे है सु सांची है। आंबोजी रा घायल तो सवराड़ हीज[6] रया ने पींडा नाठा सु परा गया[7] ने आंपणी फोज श्रीनगर खाली कराय सांमसर गयां, ने रायसर री गढ़ी में चांदावत लड़ता था सु दोळा मोरचा लागा ने तोप लगाई। दीन दसेक लड़ीया पछे धीरजी बात कर बचन कर ने वारे काढ़ीया ने गढी खाली कराय चांदावतां ने चाकर राखिया।

पछे कूच कर ने डेरा अजमेर गया। पछे गढ़ बीटली में मीरजो लड़तो थो। जीण जांणीयो आंबोजी तो परो गयो ने गढ़ में धांन[8] थोड़ो है जीण री खबर ईणा ने पड़ गई तो मार ने छोड़सी। तीण सु सेख ईमांम अली री मारफत बात ठेराई के मीरजा रा घोड़ा दरबार में आय गया था तीण मांय सु 45 पैंतालीस घोड़ा पाछा देणा ठेरीया ने रुपीया बीस हजार रोकड़ दे ने बारे काढीया ने सावरम[9] घटीयाली तांई पांचाय दीयो।

करकेड़ा रो राजा अमरसिंघ जोधपुर बैठा था जीणा ने म्हाराज वीजेसिंघजी फुरमायो के रूपनगर थांने ईनायत कीयो तीण रो मुजरो[10] करो ने फोज मुसायवां[11] नु लीखीयो—के रूपनगर ने कीसनगढ़ खाली करावजो। तरे बलुंदे ठाकुर रो कंवर धीरतसिंघजी रो डील[12] आछो न्हीं सु सीख मांग

1 सेना। 2 सेना की पंक्ति। 3 काटते हुए। 4 झपट, प्रहार। 5 आप कहते थे। 6 मैदान में, युद्ध-स्थल में। 7 स्वयं अंबाजी भाग कर चले गए। 8 अनाज। 9 पाखर-कवच शुदा घोड़े। 10 नज़राना, भेंट। 11 फौज प्रभारी। 12 शरीर।

घरे गयो ने फोज रो कूच कीयो सु कीसनगढ़ जाय घेरो दीयो सो ओजो(भो) जी ने स्वाईसिंघजी रूपनगर लागा[1] ने अखैराजजी ने गंगारामजी की कीसनगढ़ मोरचा दीया ने तोपां लागी सु गोळा री झोंक उड़े ने जोधपुर सु म्होणोत ग्यांनमलजी ने दोढ़ीदार आईदानजी नु मेलीया ने तोपां 2 कीलकीला ने बाघण मेली सु अे दोनु तोपां छुटे सु गोळा भीत माय हुय ने नीसरे। पीण रजपूत आछा सु लड़बौ करे। पीण हमे तीन जायगा खरची मेलनी पड़े[2] ने खजांनो रुपीया न्हीं तीण सु मुळक में बाब नाखी[3] सु सींघवीजी कयो–रुपीया उघवीजे[4] – जीतरे दीन लागे ने खरची फोज में हमार[5] जोईजे तरे बीकानेर रा राजा सूरतसिंघजी ने कवायो के थे राजसिंघजी रा बेटा ने उथाप[6] ने राजा हुवा छो सु हमार मारी गरज करणी पड़सी, न्हीं तो आप राज करसो न्हीं। तरे सुरतसिंघजी पाछो कवायो – के मांने राज रो टीको मेलावो[7] तो हुं थाने लाख रुपीया देसु। तरे बीकानेर टीको मेलीयो। तरे सुरतसिंघजी तीन लाख रुपीया मेलीया सु तीनु ही फोजा में खरची मेली ने भींवराजजी री फोज रा डेरा रीणी हुवा था सु फोज में मरी पड़ी[8] सु रोजीनां आदमी अेक 100 सो मरे।

ने पटेल रा डेरा अलवर था सु जांणीयो के अठाऊं[9] डुंगरां[10] बार नीसरीया तो राठौड़ कछवाहां लूट लेसी। तीणा सु मनसोबो कीयो के फोज तो पड़ी है ने हुं अजमेर हुय ने कोटे बूंदी हुय उजीण[11] परो जासुं। तरे अलवर सुं कूच कर ने डुगाणा बारे नीसरीया ने हलकारां खबर दीवी के पटेल डुगाणा रे बारे घाटे हुय नीसरीयो ने अजमेर जासी। तरे उठा सुं कूच कीयो सु सीकंदरे डेरा कीया ने उठा सु कूच कर दोसे[12] डेरा कीया ने उठा सुं मनोरपुर डेरा हुवा। पीण फोज में मरी रा मुदा[13] सु आछा-आछा राठौड़ मरे। पटेल कासीजी सुं पींडतां ने बुलाय लुंण[14] रो होम करायो। सु पींडतांई कयो—राठौड़ां रो राजा तो परमातमा है सु चले न्हीं ने कछवाहां ने तो मारलां। तरे पटेल कयो—राठौड़ां ने कायल करो सु लुंण रो होम सु राठौड़

1 रूपनगर पहुंचे। 2 भेजनी पड़ती थी। 3 कर विशेष। 4 वसूली तक। 5 अभी। 6 उखाड़ करके। 7 शासन की मान्यता भेजो। 8 महामारी फैली। 9 यहां से। 10 पहाड़ियां। 11 उज्जैन। 12 दौसा। 13 महामारी के कारण। 14 लोबान।

मरे ने कछवाहा मरे न्हीं । सु फोज ऊपर उपद्रा[1] उठीयो । मनोरपुर डेरा हा । तरे पटेल जांणीयो के अठी नु राठौड़ आडा आय गया । तरे मेवात में हुय ने डीग हुय ने आगरे लाय ईसमाइल वेग सु राड़ कीवी । सु ईसमाइल बेग सगस[2] रयो ने ईसमाइल वेग फोज में[3] कासीद मेलीयो के मारो ऊपर करो[4] । तरे भींवराजजी ने राठौड़ां कयो—चालो । ईसमाइल वेग रो ऊपर करां । पीण राजा प्रतापसिंघजी रा वाभरा री सराय डेरा सु परणीजण ने तुरा (तुंवर) री पाटण परा गया ने दोलतरांम हलदीयो कयो–मांरी तो ईसमाइल दीखणीया सु भुंडो है[5] सु दोनुं ही पार पड़े तो दुख मीटे[6], सु ऊपर कीयो न्हीं, ने पटेल दो राड़ कीवी ने तीजी राड़ पटेल रा पग छुटा ने ईसमाइल बेग री फते हुई ने पटेल गोद गवालेर[7] परो गयो ने ईसमाइल वेग धोलपुर कायम कीयो[8] ने आगरा रे कीले लड़वो कीयो[9] ।

राजा प्रतापसिंघजी कीणी डर सुं नवाब नीजव कुली ने बुलायो । तरे नवाब कयो—राठौड़ बचन दे, तो आऊँ । तरे भींवराजजी कना सुं वचन दीयो तरे नीजब कुली फोज हजार 5,000 पांच सु आयो ने हलदीयो नन्दराम ने मुता लालजी नु दीली पातसाजी[10] कने मेलीया । पातसाजी सु अरज कराई के आप कूच कर ने बारे[11] पधारो सु पातसाई रो तरतोज[12] करां । फोज कूच कर ने वसी डेरा कीया । वसी डेरा रोहोल रो ठा. सीवजी काल कीयो[13] ने राजा कयो–नबाब ने के कछवाहां ने मार ने कीरंडी[14] लीवी है सो खाली कर देवो, न्हीं तो मार नाखसां । तरे नवाव नीजब कुली राठौड़ां री फोज कने आय डेरा कीया । तरे राठौड़ां कयो—म्हारो बचन छे ने ईण तरे रोहो[15] तो मारो वचन न्हीं दीरावणो थो । तरे कयो—पलटणीया जाय छे सु तोपां खोस लेसुं[16] । तरे नबाब ने राठौड़ां राख लीयो ने नबाव रो पाळो लोक[17] ने पलटणीया कूच कीयो । तरे राजा ने ठीक हुई । तरे नगारो कराय ने हलदीयो दोलतरांम ने जोगराज म्हेता सामीया रो हीमत बाहादर चढ़ीयो ने भींवराज

---

1 उपद्रव । 2 सख्त-मजबूत । 3 राठौड़ों की फौज में । 4 मेरी सहायता करो । 5 मेरे लिए ईसमाइल बेग मराठों से भी खराब है । 6 दोनों ही कट मरें तो दुःख मिट जावे । 7 ग्वालियर । 8 धौलपुर पर कब्जा किया । 9 और आगरा के किले हेतु लड़ता रहा । 10 बादशाह । 11 बाहर । 12 बादशाह का प्रभाव बढ़ाने का उपाय । 13 देहान्त हो गया । 14 गांव विशेष । 15 रहो । 16 छीन लेंगे । 17 पैदल फौज ।

ने कवायो । तरे भींवराजजी ही नगारो करायो । तरे सीरदारां कयो—नगारो कीहुं[1] ? तरे कयो—पलटणीया ऊपर चढां । तरे कयो—पलटणीयां में कांई चुक[2] ? रोजगार नहीं दीयो तरे जाय छे, सु में तो ईणा सु कजीयो करां न्हीं ? तरे राठौड़ तो चढ़ीया न्हीं, ने कछवाहा जाय पुगा ने पलटणीया बाड़ो बांधता गया ने गोळा वावता गया ने चालता गया । तरे कहो—घोड़ा उठावो सो घोड़ा उठाय नेड़ा[3] गया तरे गोळा सु झींकीयां सु घोड़ा दसेक भगाय ने दोढ़ा[4] उतर गया । पछे पलटणीया तो घाट बारे नीसर गया ने कछवाहा भूंडा दीस ने[5] पाछा डेरे ग्राया । पछे कोई केता[6]—ग्रा बंदुक पलटणीया री दीसे है तरें चीड़ ने लडण लाग जाता[7] ।

पछे पातसाजी दीली सु कूच कीयो सु रेवाड़ी ग्राया ने ग्रठी ने म्हाराज प्रतापसिंघजी कूच कीयो । डेरा कीया । जेपुर री फोज हजार 40,000 चालीस हजार भेळी हुई । सारा कछवाहां ग्रांण भेळा हुग्रा ने राठौड़ां री फोज 15,000 पनरे हजार थी जीका सातरी ने नबाव नीजब कुली री फोज 10,000 दस हजार, ने पातसाहजी कने फोज 7,000 सात हजार—ईनरो लोक भेळो हुवो । कीणी फोज में बेचाकी[8] न्हीं ने राठौड़ां री फोज में उपद्र[9] सु रोजीना 80 वेकुंठीयां नीसरे, लोक मरे ।

पछे म्हाराज प्रतापसिंघजी पघे लागा ने ईण मुजब नीजर हुई—तिणरी वीगत—

म्हाराज प्रतापसिंघजी जेपुर	म्होर 100)
सींघवी भींवराजजी रे	म्होर 100)
भं० सोभाचन्द	म्होर 10)
हलदीयो दोलतरांम	म्होर 20)
मोटा सीरदार पटायत	म्होर 5)
	जुमला म्होरां 235)

1 नगारा किस लिए कराया ? 2 क्या गलती है ? 3 नजदीक । 4 तिरछा । 5 बदनाम होकर के । 6 ताना मारते । 7 चिढ़ करके लड़ने लग जाते । 8 बीमारी-अस्वस्थता । 9 महामारी का प्रकोप ।

म्होरां नीजर हुई ने दोय जणां नीजर करी न्हीं ने कयो—म्हारे तो म्हाराज वीजेसिंघजी रो मुजरो चाहीजे। म्हारे पातसाहजी सु कांई काम न्हीं—

वखतावरसिंघ जवानसिंघोत 1 फतेसिंघ स्यामसिंघोत 1

पछे भींवराजजी माडाणी[1] ले गया। तरे ईणा रो मुजरो कीयो। पछे ईण मुजव[2] नीवाजस[3] हुई—वीगत—

म्हाराजा प्रतापसिंघजी नु सीरपाव 1, तरवार 1, हाथी 1।
सिंग० भींवराजजी नु सीरपाव 1, तरवार 1, हाथी मुकनो 1।
सीरदारां ने आसांमी दीठ[4] थीरमो जोड़ा नग 2 गो सृपेस अेक दीयो।

पातसा सु अरज कीवी के हजरत कूच कीजे सु दीखणीया ने नरवदा पार लोपाय देसां[5] ने पातसाही रो तोही[6] वादसा[7]। तरे पातसा कयो—आंबेर-जोधपुर तो तखत रा पाया छे[8]। ईण वात री थांने लाज छे।

पीण म्हाने तो पटेल वीजे. रु. 5000) रोजीना देतो थो तरे म्हारो कारबार चालतो थो। सु तो थे पटेल ने वीगाड़ दीयो ने हमे थे दोय-दोय तखत रा बंदा छो। सु थे दोनु राजा पांच हजार रुपीया दीया जावो ने पछे सला आवे[9] जठी ने[10] कूच करावो सु प्रगना आवे सु थारा छे। तरे भींवराज-जी तो कयो—हजरत, हुं तो चाकर छुं। सु रोजीनो[11] देसी तो म्हाराज श्री वीजेसिंघजी देसी। तरे कयो–तु राजा ने लीख—तरे कयो—दुरस[12], हुं लीखसुं। पछे डेरे आया। तरे सारा सीरदारां ने राजा बुलाया। राठौड़-कछवाहा-मुसदी सारा भेळा हुवा। तरे राजा कयो—पातसाजी तो ओ जबाव दीयो। हमे आपां कांई सला करां। तरे सीरदारां कयो—हमार तो पांच हजार रुपीया कुण रे देण ने छे ने दीखणी तो हींदु छे ने तुरक असर[13] जात छे। म्हाराज जेसींघजी तो मेनत[14] कर पातसाही गाली छे[15] ने पींडा पसो

---

1 जबर्दस्ती। 2 इस तरह। 3 पुरस्कार। 4 प्रति सिरदार। 5 नर्बदा नदी के उस पर जाने के लिए मजबूर कर देंगे। 6 तोई–वर्चस्व। 7 बढ़ायेंगे। 8 शाही शासन के आधार-स्तम्भ हैं। 9 जैसी इच्छा होवे। 10 जिधर को। 11 प्रतिदिन की मांग। 12 दुरुस्त, उचित। 13 असुर। 14 मेहनत। 15 शाही शासन की प्रतिष्ठा कायम की।

छो। सु दुख में कीहुं पड़ा छां[1] ? तरे राजा कयो –हमे पातसाजी ने पाछो कांई जवाब देसां ? तरे दोलतराम हलदीयो कयो—ईणा ने तो हुं पाछा दीली मेल देसु[2]। तरे सारा कयो–ठीक छे। पछे दुजे दीन दोलतरांम पातसाजी री हजूर जाय[3] ने अरज कीवी के हजरत उजीरी[4] तो ईसमाइल बेग ने दीराईजे। तरे नीजब कुली कयो—उजीरी तो म्हारी छे। सो पातसाजी सीरपाव देवे तो मैं आज पातसाजी ने लूट लेसां[5]। तरे दोलतरांम कयो—हजरत आप तो पाछा दीली पधारीजे। हमार सीरपाव दीयो म्होमाह[6] मे फीतुर पड़सी ने आपां दीखणीयां नु तोड़णा छे[7]। सु आगरो ईसमाइल वेग लीयो छे ने आगरो गढ़ खाली हुसी तरे मे दोनु राजा सांमल होय दीखण ऊपर मुहम करसां[8]। आप दीली पधारीजे। तरे पातसा कयो—मे खावां कहीं[9] ? तरे जुटी[10] हुंडीयां लाख दोय री कर दीवी ने कयो—जोधपुर नु लीखीयो छे। सु म्हाराज विजे-सिंघजी दोय लाख रुपीया देसी। ईण तरे जुटा बुता दे[11] सीख दीवी[12]। सो राठौड़ां री फोज में तो बेचाकी घणी थी[13] सो ईतरा सीरदार काळ कीयो[14]–

1 जालमसिंघ रतनसिंघोत गांव मुघणो
1 लालसिंघ हींदुसिंघोत गांव दुदड़वास
1 वखतावरसिंघ जवानसिंघोत रीयां रा
1 बगड़ी रो ठाकुर जाणीवाणा रो सीरदार रतनसिंघ।

बलुंदा से फतेसिंघजी कंवर धीरतसिंघजी री सुणावणी आई[15] सु ठाकुर पुरा उदास ने मीसल सारी उदास ने लोक रे बेचाकी घणी। डेरे मीनख मरे। भाटी साहबसिंघ कुचेरा रो काळ कीयो ने 25 पच्चीस आदमी डेरा में था सु तीन आदमी रया ने ईण तरे लोक घणो मुवो, ने सीख हुई तिण दिन भौमसिंघ बादरसिंघोत नें ताव चड़ीयो। सु अेक मंजल तो घोड़े चड़ीयो ने दुजे दीन डोली[16] कीवी। तीण रा मंजल[17] अेक रा रु. 2॥) अढाई

---

1 आप लोग स्वयं फंस रहे हो। 2 भेज दूंगा। 3 हाजिरी में जाकर के। 4 वजीरी। 5 अगर ईस्माइल बेग को बादशाह वजीरी देते हैं तो मैं आज शाही फौज को लूट लेंगे। 6 परस्पर। 7 मराठों को परास्त करना है। 8 मराठों पर आक्रमण हेतु चढ़ाई करेंगे। 9 खावां कांई ?—हम क्या खावें ? 10 झूठी—फर्जी। 11 झूठा आश्वासन देकर के। 12 विदाई दी। 13 बीमारी बहुत थी। 14 मृत्यु को प्राप्त हुए। 15 मृत्यु की सूचना आई। 16 पालखी। 17 मंजिल—एक दिन की यात्रा।

लागे ने डोलीग्रां घणी जोईजे[1] सु कितराक ने तो डोलीयां में ने कीतराक ने गाड़ीयां में घालीया ने मुवा जीने दाग दीवे[2] ने गाड़ीयां व़हीर हुवे । सु उठा सु कोटपूतली डेरा हुवा ने उठा सु ं भभोरा री सराय डेरा हुवा । उठा सु मनोर-पुर डेरा हुवा । उठा सु भोमसिंघजी रो डील गणो वेचाक हुवो[3] । तरे गुदी[4] रो डाब दीयो ने रात ग्रांरो[5] ग्रागम जतायो ने परभाते कूच हुवो सु राजा तो खड़व कर[6] जेपुर गया ने राठौड़ां रे भोमियाजी रे ग्रारेण डेरा हुवा । उठा सु ं कूच हुवो जीण दीन कोठारी सूमल[7] ने ताव चढ़ीग्रो ने जेपुर बदड़ा रे दरव़ाजे डेरा हुवा । तीन मुकाम रया । पछे सांगनेर दरव़ाजे डेरा कीया । उठा सु सूमल्ल कयो—सु उठे ही लोक घणो मुवो ।

पछे राजा सीख दीवी । कुरव री ग्रासामीयां ने ग्रेक-ग्रेक सीरपाव तरवार दीनी ने सींघवी भींवराजजी ने सीरपाव 1, घोड़ो 1, हाथी 1 देर सीख दीवी । पछे कूच कर नला ऊपर डेरा कीया । उठा सु ं कूच कीयो पचारमेर ने उठा सु सांभर मुकाम 4 रया । पछे कितराक लोक ने घर री सीख दीवी ने भींवराजजी ठांणी डेरा कीया ने कीसनगढ़ फोज लड़ती ही । भंडारी गंगा-राम, सींघवी ग्रखैराज सु ं मीलण ने ग्राया । पछे ग्रजमेर ग्राया छे । ग्रजमेर मुकाम रो गढ़ बीटणी दीठी । पछे पोखरजी डेरा कीया । उठे कीतराक सीर-दारां ने सीख दीवी । ठाकुर फतेसिंघजी ने सीख दीनी सु केरीया डेरा कीया । गांव रे बारे डेरा कीया । सारी मीसल ने सीख दीवी । ग्रमरसिंघ तो मेड़ते हुय ने नोखे गया । दलेलसिंघजी, भींवसिंघजी, गांव राहण में हुय ने देसवाल गया । सारा ही ग्राप-ग्रापरे गरे[8] गया । सारा ने कुसबखतीया हुई[9] ।

फतेसिंघजी ग्रेक दीन तो केरीये रया । पछे बलु ंदे गया । सींघवी भींव-राज मेड़ते हुय जोधपुर गयो । श्री हजुर सु ं मुजरो हुवो । पटेलां ने भजाय ने ग्राया सु सारा मुसदीया सु ं सीरामण[10] हुवे जीतरी मरजी[11] । जीण सु सींघवी खूबचन्द चुगली खाई । हजुर में ग्ररज कीवी—गरीव़नीवाज पटेल ने जावण देता नहीं । पीण भींवराज ने ग्रेक लाख रुपीया दीया जीण सु ं लारो

---

1 चाहिए । 2 दाह-संस्कार करके । 3 शरीर ग्रत्यधिक रुग्ण हुग्रा । 4 गर्दन । 5 इनका । 6 घोड़े को तेज चला करके । 7 सिरेमल । 8 ग्राप-ग्राप के घर । 9 कुशल-क्षेम हुई । 10 कलेवा । 11 इच्छानुसार ।

कीयो नहीं[1]। तरे पटेल जीवतो गयो। सु फेर दुःख रे गयो। तरे म्हाराज फुरमायो—के भींवराज कदेही[2] रुपीया लेवे नहीं। तरे खूबचन्दजी, रास ठाकुर जवांनसिंघजी नु साईद[3] उठाया ने ठाकुरां ने कयो—थांने वधारा में[4] गांव देसुं। थे सायद भर दो। पछे खूबचन्द अरज कर ने ठाकुर जवानसिंघजी ने राणीवाला लीखाय दीयो। तरे जवानसिंघजी ने हजुर बुलाया, अरज कीवी, तरे लारे फोज चढ़ी हुती तो पकड़ लेता। तरे हजुर ही सांच जांणी ने भींवराजजी सु कींक[5] मरजी खची[6]। तरे भींवराजजी फतेसिंघजी नुं कागद दे ने बुलाया ने हरीसिंघजी गीरदासजी ने बुलाया। पछे फतेसिंघजी ने कजीया री वखत समाचार बुजीया[7] के ठाकुरां लारे फोज बढ़ी हुती तो पटेल रो दुख मीट जातो। तरे फतेसिंघजी अरज कीवी—पटेल किसा राड़ मांय सु भागा हा[8]? खेत तो दीखणीया रे हात रयो छे। पलटणीया मील गया तीण सुं भागा ने साठ हजार लोक उण कने थो सो दस हजार असवार लोक लारे जातो तो कीसा मार लेता? उलटा जोतीयोड़े कजीये कोई दुख हुतो, ने आगरा सु ईसमाइल बेग राड़ कर ने नीसरीयो तरे म्हाराज प्रतापसिंहजी केयो—हमे पुठो तावो नरबदाजी पारय देवा। तरे दोलतराम कयो—ईसमाइल बेग सेड[9] हुवो तो दीखणीया विचे ही[10]। ओ तो हींदु हो सु ईणा रो ने आपणो धरम अेक छे, ने तुरक वधत रे फोड़ा घाले[11]। सु दोनुं ही खाड में पड़ो। आपां तो आपरी लार छुड़ाई।

म्हाराज भींवराज सु राजी हुवा ने फतेसिंघजी सुं राजी हुय गांव तीलवासणी धामी[12] सो न्हीं लीवी। फेर काखड़की धामी जीका ही न लीवी। तरे माहाराज खास रुको लीख दीयो के चेत महीने फालको लीख देसां।

कीसनगढ़ फोज लागी थी। पोस रे महीने सुं सात रे महीने लड़ीया। पछे पेली तो रूपनगर छुटो ने पछे कीसनगढ़ रे ताखड़ा[13] लागा। रूपनगर में

---

1 पीछा नहीं किया। 2 कभी भी। 3 साक्षी के लिए। 4 जागीर की वृद्धि हेतु। 5 कुछेक। 6 विश्वास कम हुआ। 7 फतेसिंहजी से लड़ाई के समय के समाचार पूछे। 8 पटेल कौनसी लड़ाई से भागा था? 9 मदोन्मत्त। 10 मराठों से भी बुरा होगा। 11 तुरकों की शक्ति बढ़ना कष्टदायक होता। 12 तिलवासणी गांव देने का प्रस्ताव रखा। 13 प्रबल वेग से।

म्हाराज वीजेसिंघजी रो जीड़ो[1] रूपीयो ने कीसनगढ़ रा ओसकीया[2]। तरे वात कीवी। तीन लाख रूपीया पेसकसी रा ठेरीया, सु दोढ़ लाख रूपीया तो रोकड़ दीया ने पचास हजार रो भरणो दीयो ने लाख रूपीया री खंदीयां[3] दोय कीवी।

भंडारी गंगारामजी राजाजी ने साथे ले ने आया। सु प्हेली तो सोयलांणे खीची गोरधनजी सुं मीलीया। गोरधनजी वचन ले'र जोधपुर आया। बहुजी रे तलाब डेरा कीया।

पछे दुजे दीन तीजा प्होर रा म्हाराज प्रतापसिंघजी हजुर में मुजरे आया ने सीरदारां री आसांमीया पांच-सात ही, ने अेक म्हाराज ईतरा जणा ने माहे जावण दीया, दुजा बारे उभा रया। म्हाराज प्रतापसिंघजी हात ऊपर रूमाल नाखीयो। श्री हजुर दोलतखांना रा पायां री जाजम तांई सामा पधारीया। प्रतापसिंघजी नीचा हुय मुजरो कीयो। तरे दोढ़ीदार आईदांन हात ऊपर सुं रूमाल उरो लीयो। तरे मीलीया ने सीरदारां मुजरो कीयो, नीजर नीछरावळां कीवी ने पछे कुरसी वीराजीया ने पुछीयो तू कीतराक वरसां में हुवो? तरे प्रतापसिंघजी सांमा बेठा था सु हाथ जोड़ ने कयो—तरे गरीब परवर वरस 25 पचीस में हुवो। तरे श्री हजुर फुरमायो - तु म्हाराज बादरसिंघजी कने रयो थो? तरे प्रतापसिंघजी कयो--गरीबनवाज हुं माफ करयो थो। ईतरा समाचार पुछ उठ उभा हुवा ने सीख दीवी सु डेरे आया पछे कयो—थे राईकेबाग डेरा करो। तरे सेखावतजी रे तलाब बीचे ने राईकेबाग बीचे डेरा कीया ने पटेल कने कुसालीरांम व्होरो थो जीण कने चोधरी म्हेरा ने मेलीयो। गोद गवालेर पटेल थो जठे म्हेरो मीलीयो। थारे माथे पेसकसी रा रूपीया ईतरा वरसां रा छे जीका री तो भरती कर देसुं ने आगा सुं थांरे कने खीरणी मांगु कोय न्हीं ने थे अजमेर लीयो सो थाने ममारथ[4] ने अेक हजार घोड़ा री चाकरी रो ने जेपुर रो ऊपर छोड़ दी, ने म्हांसु वात कारासु। मेरे[5] तो मोखली लीखी पीण मानी कोय न्हीं ने म्हेरो साथ ले ने आयो ने श्री हजुर में मोकली अरज कीवी। अबार पटेल सुं बात करावो तो फायदो है।

1 झंडो-झंडा। 2 मैदान छोड़कर भाग गए। 3 किश्तें। 4 ममारख—मुबारक। 5 म्हेरा चौधरी।

तरे म्हाराज गोरधनजी खीची ने पुछीयो । तरे गोरधनजी अरज करी—वात करावो तो सला है[1] । अदबे दीखणीया सु आपां पङ्या न्हीं[2] ।

पीण पासवानजी ने सींघवी खूबजी कयो—राठौड़ ने कछवाहा अेक है ने ईसमाइल बेग भेळो छे तरे भुंढो कांई[3] ? अठी उरो आवे म्हाराज रो ईधक प्रताप छे सु नार[4] ने छाली[5] अेकण घाट पीवे सु जोर करण पावे न्हीं । सारा हींदुसथांन रा सीरोमण छे । बावन तो छोटा-मोटा राजा ईणा री चाकरी मे छे ने गजनी रा पातसा रो उकील ने सींध रो पातसा स्वाकड़े पुरब सुजात-दोलां रो उकील दीखण हेद्रावाद रो उकील तुरका-हींदवा रा घर 105 अेक सो पांच उकील जीके आप-आप धणीया ने हकीकत हुवे सो लीखे, ने जोधपुर लोड़ी[6] दुवायका[7] वणाई । जायगा-जायगा प्रभु रा मींदर छे, झालरा बाजे । समे-समे रा प्रभु रा दरसण हुवे । प्रभु-कथा ने चरचा हुवे । सोनो रूपो मारग में पड़ीयो रेवे तो कोई उठावे न्हीं, धणी'ज उठावे ।

अजमेर रा डूंगरा में मेर दोड़ता था[8] सु सींघवी धनराज ईसो अमल दसतूर जमायो[9] सु बांमण बाणीयो थोरियां रे गळे[10] सोय रहे पीण कोई पलो खींचण पावे नहीं[11] । पीण कोई ऊंचो माथो कर सके न्हीं । गोरधन खीची तो मुसायब ने ईतरा जणा काम करता -

सिंग. भींवराजजी, सिंघ. ग्यांनमलजी, सिं. खूबचन्दजी, भं.—सोबाचन्द-जी, मुतो लालजी ।

पछे संवत 1846 रा खीची गोरधनजी तो मांदा[12] पड़ीया ने पासवानजी रो हुकम वधीयो[13] ने पासवांनजी रे मुढा आगे पीड़ीयार भेरजी[14] रो हुकम ठेहरीयो ने आसोप ठा. महेसदासजी सु राजीपो खूवजी रा आवे जेसु....।

पछे वोहोरो कुसालीरामजी नु जेपुर मेलीया । राजा सु दुरसती[15] कराय

---

1 बात करो, हमारी सहमति है । 2 तुलना में मराठों से हम लोग कम नहीं हैं । 3 बुराई क्या है ? 4 नाहर, शेर । 5 बकरी । 6 छोटी । 7 द्वारका । 8 मेरों का दबदबा था । 9 ऐसी शासन व्यवस्था की । 10 नजदीक । 11 छूने तक की हिम्मत नहीं करते थे । 12 बीमार । 13 शासन में प्रभाव बढ़ गया । 14 परिहार भेरजी गुलाबराय का रथ हांकने वाला सेवक । 15 मित्रता ।

दीवी ने रुपीया ठेराय ने राजा प्रतापसिंघजी ने ही सीख दीरावण लागा। तरे कीणी चाकर माहले अरज करी[1] के ईणा ने सीख न्हीं दीराईजे तो सला[2] छे। तरे फुरमायो—ये कांई करसी ? सीख परी दीवी।

पछे पटेल गोद गवालेर रे प्रगने मांय सु खरची मंगाय नै चढ़ी-चढ़ी खरची लोक ने दीवी ने चुकाय हमगीर कीया[3] ने चाकर राखीया ने पलटण सजाई[4]। तोपां लबारे तालुके ने दोढ़ हजार पाळां लबाई-जवाई रे तालुके कीया[5]। पलटण सजाई। जीतरो ही रसाली मांगीयो जीतरो ही डबाई रे हवाले कीयो। सारा फोज रा ने हमगीर कर ने कयो—ईणा री पाग तो राठौड़ां खोस लीवी[6] सु हमे थे बंधावजो जरां बांधसी। तरे सारा ने उबो ही[7] कयो—जमा ख(खा)तर राखो। सीव[8] आछा ही करसी।

पछे हुलकर धोलपुर आयो। तरे ईसमाइल बेग जेपुर जोधपुर ने लीखीयो के मारे हात आगरो कीलो आयो न्हीं छे ने खरची पीण थोड़ी छे। सु राजा दस हजार लोक मेलो[9], पछे हुं दखणीयां नु सर कर लेसु[10]। थे म्हेला बैठा राज करो।

तरे जेपुर वाला ने तो वोरे वरज दीया[11] सु उतर दीयो ने म्हाराज वीजेसिंघजी मुसदीया नु ने ठा० महेसदासजी नु पुछीयो—काही कीयो चाहीजे[12] ? तरे कयो—फोज तो न्हीं, ने खरची मेलाईजे। तरे तीस हजार री हुंडीया दीली ऊपर कराय ने पंचोली उकील थो, तीण कने मेलीयो।

गुलाम कादर रोहलो फोज हजार 16,000 सु डीग आय मारी[13] ने धोलपुर सु आगरे चढ़ ने ईसमाइल बेग सु आय जगड़ो कीयो। सु नवाब सेंठो रयो[14] ने गोळा सु झींड़ीया[15]। तरे डेरो डबाई ने बुलाय माधजी पटेल कहो—ईण आगे पग छूटा तो[16] हमके घर कठे ही न्हीं ने दीखणीया था जीणा ने

---

1 अन्दर के किसी नौकर ने आकर निवेदन किया। 2 प्रस्ताव। 3 प्रसन्न किया, अनुगामी बना लिया। 4 सेना सुसज्जित की। 5 तोपों तथा डेरों का सामान लाने-ले जाने के लिए डेढ़ हजार रुपये नियत किए। 6 इनकी प्रतिष्ठा को राठौड़ों ने कम कर दिया। 7 खड़े-खड़े ही। 8 भगवान् शिव। 9 भेजो। 10 मराठों को जीत लूंगा। 11 वोहरे ने मना कर दिया। 12 क्या करना चाहिए। 13 डीग पर आकर कब्जा कर लिया। 14 मजबूत रहा। 15 गोलों की बौछार। 16 पैर उखड़ गए तो।

हमगीर कीया । जरा सारा ही कयो—सवारे मार देसां के मर मीटसां ।

डीग सु गुलाम कादर ही आय सामल हुवो । तरे ईसमाइल बेग कयो के दीखणीया कांनी मुलक छुड़ासां । सु आपणे आधो-आध छे ।

पछे प्रभात रा पटेल नगारो कराय चढ़ीयो सु आय ने राड़ कीवी । तोपखानो आंण माडीयो[1] सु दोफारा तांई तो गोळां री झींक उड़ी । पछे गुलाम कादर रा पग छुटा सु सारी फोज रो लोक गोळ कर ने नीसरीया[2] । दीली गया, ने ईसमाइल बेग प्होर 1 फेर लड़ीयो । पछे तीजा प्होर रा घोड़ा चलाया ने तरवार भीळीया । सो दीखणी डीगीयो न्हीं[3] ने नवाब पुठ फीरी[4] ने दीखणी लारे हुवो सु पाछो तोपखांना ने आवण दीयो न्हीं ने मुढ़ा आगे जमना[5] आय गई । तरे पाणी में घोड़ा घालीया सु असवार छव बीसी सात बीसी सु पार हुवा । दुजा सारा मार दीयो । डेरा, तोपां, हाथी सारा दीखणीया खोस लीया । पटेल री फते हुई ।

गुलाम कादर दीली आयो ने ईसमाइल बेग ही दीली आयो सु गुलाम कादर तो आवतो ईज लाल कोट[6] में वड़ गयो ने पातसा अली गेरवर नु पकड़ लीयो, ने धन सारो ही सोध ने उरो लीयो[7] । पातसाजी री आंखीया फोड़ नाखी[8] । दोय सायजादा मार नाखीया ने हुरमा[9] थी सु रोक-रोक तसती[10] दे ने उरी लीवी ने जोधपुर रे उकील थो सु रांम-रांम करण नु गयो[11] ने बुजीयो—थे कने उकील थो सु कठे छै ? ने लोक थो सु कठे गयो ? तरे नवाब कयो—पईसा कने कोय नहीं दुजु लोक करसां जेज[12] कोय नहीं । तरे उकील कयो नहीं[13], तीस हजार रुपीया तो हुं देसूं । जोधपुर सुं हुंडीया आई छे । तरे ईसमाइल बेग कयो–तीस हजार रुपीया सूं पनरे हजार लोक कर लेसूं । पछे रुपीया दीना । तरे दुजे दीन दस हजार री हाजरी आई नु ईता ही दीली में तुरक ग(घ)णा ।

---

1 तोपखाना आकर स्थापित किया । 2 वृत्त बनाकर बाहर निकले । 3 मराठी फौज डटी रही । 4 पीछे मुड़े । 5 यमुना नदी । 6 लाल किला । 7 सारा धन ढूंढकर अपने कब्जे में कर लिया । 8 बादशाह की आँखें फोड़ डालीं । 9 बेगमें । 10 तसदीक । 11 राम-जुहार करने के लिए गया । 12 फौज तैयार करने में देर नहीं लगती । 13 ऐसा मत कहो कि पैसा नहीं है ।

पछे दीखणीआ ने ठीक हुई। गुलाम कादर पातस्याजी री आंखीयां फोड़ नाखी ने बेदम करीआ[1]। तरे पटेल अठा सु कूच कीयो ने ईसमाइल बेग कने ठावा आदमी[2] मेलीया ने कयो गुलाम कादर पातसा सु हरामखोरी हे ने हुरमखांनो[3] लुटीयो सो तु ही ईण रे सामल नहीं हुवे ने मांरे सांमल हुवे तो गुलाम कादर सु समजा[4]। तरे ईसमाइल बेग कयो –रायजी पटेल बचन देवे ने कीहुक खरची देवे[5] तो हुं थारे सामल हुय जाऊं। तरे रात रा रायजी पटेल आयो ने तीस हजार रुपीया लायो ने बाहो बचन दीयो[6] तरे ईसमाइल बेग तो दीली रयो ने गुलाम कादर कूच कर ने जमना पार डेरा कीआ ने लालकोट लूटीयो सु धन सु अबरी[7] हुवा सु गाड़ीयां ऊंठ भर ने पगथड़े[8] माल वहीर कीयो। तीण री दीखणीयां ने ठीक[9] हुई तरे कयो–हरांमखोर जावण पावे नहीं।

पटेल फोज चढ़ी सो तीस कोस री खड़ी रातो-रात दीखणीयां रे फोज आई। तरे वढ़ ने नाठो ने लारा सु दीखणी था, कजीओ हुवो ने रोहीला रा पग छुटा ने लारे दीखणी घोड़ा घालीया ने गुलाम कादर अेक गांव आय गयो थो जीण में नास ने बड़ गयो। तरे गढ़ी घेर लीवी। डेरा धन हो सु लूटीयो ने दीन वधियो जठा तांई तो रयो ने रात रा गढ़ माय सु नीसरीयो सु लारे फेर दीखणी हुवा सु न्यारा-न्यारा दीखणी वीखर गया सो कोस 20 ऊपर दीन उगो[10] सु गांव में बामण रो घर थो जीण में जाय बड़ीया[11] ने बामण ने मोरा[12] दीवी ने कयो कीणी ने वताहीजे मती[13]। रात पड़ीया नीकल जासुं। सु उण बांमणा रा बाप ने आगे[14] गुलाम कादर मारीयो थो सो बांमण ओळख लीयो[15] जीतरे दीखणी आया ने गांव रा सुं तकरार कीवी[16] ने कयो, थांरा गांव में रोयला[17] वड़ीया है सु काढ़ दो। तरे उण बांमण कयो–गुलाम कादर तो हुं बताऊँ। दीखणीया कयो वताव तोने बधाई देसां। तरे बताय दीनो। तरे दीखणी पकड़ पटेल कने ले गया। पछै पटेल

---

1 अशक्त कर दिया। 2 विश्वसनीय आदमी। 3 जनानखाना। 4 गुलाम कादर पर आक्रमण करें। 5 कुछ खर्ची देवे। 6 कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करने का वचन। 7 तृप्त। 8 पगडंडी के मार्ग से। 9 मालूम। 10 सवेरा हुआ। 11 घुस गया। 12 मोहरें, अशर्फियां। 13 बताना मत। 14 पूर्व में। 15 पहचान लिया। 16 गांव वालों से तकरार की। 17 रोहिला–गुलाम कादर।

गुलाम कादर री ग्रांखीयां कढ़ाय चोरंगो कराय[1] ने मराय नाखीयो[2] ने ईस-माइल बेग ने कयो—दीली तो छोड़ दे ने नीजब कुली हेटे मुळक है सु तोनु दीयो। तरे ईसमाइल बेग फोज हजार दस 10,000 हजार सु कूच कर रेवाड़ी ग्रायो। रेवाड़ी में ग्रमल कर ने गोकलगढ़ उरो लीयो ने खरची दीवी ने कूच कीयो। नीजबकुली ग्रायो ने दोनु रे राड़ हुई सु नीजबकुली ने घेर लीयो।

पछे मारवाड़ रा उकील तुर[3] करणसिंघ ने भं. वीरधीचंद था जीणा ईणा ने कयो—थे दोय नवाव दीली रा घर मे रयो छो[4] सु माहो-माह मती मरो। तरे दोनु जणा कयो—मानीयो ने ईण मुजब ग्राजीवका वाधी[5]।

कणोट तो नीजबकुली रे राखी। रेवाड़ी गोलगढ़ ईसबकुली रे रया ने फेर ईतरा प्रगना धाबीया[6]—

1 रेवाड़ी
1 गोलगढ़
1 कोटपुतली
1 कटी
1 नारनोल
—
जुमले 5

ईसमाइल बेग हरीयाणा ऊपर कूच कीयो। सु हरीयाणा रा मुळक ऊपर पेसकसी लीवी ने खरची री बेबुदी[7] हुई ने लोक फेर राखीयो सो सु बीस 20,000 हजार लोक हुवो ने पांच पलटण राखी जिण रा साढ़ा पांच हजार पाळा ने तोपां नग 40 ही। हमै भटी जुरड़ जट्ठ सिख था जिकां ऊपर पेसकसी लीवी ने पळ मुथरा हो जिण फोज वंधी रो मनसोबो कीयो ने उठे जोधपुर, जेपुर रा उकील था जिकां लिखीयो के जाबतो राखजो ने लोक हम-गीर राखजो। थां ऊपर फोज ऊपर ग्रावसी। तरे बोरो कुसालीरांम जेपुर थो पटै ने थे सेठा[8] हुवो। कछवावा तो मांरे सारे[9] छै। सो राठौड़ां सु सांमल

---

1 हाथ-पांव कटवाकर। 2 मरवा डाला। 3 तंवर। 4 रह रहे हो। 5 निर्धारित की। 6 ग्रधीन किए। 7 व्यवस्था। 8 मजबूत रहो। 9 कछवाहा तो मेरे कहने में हैं।

हुरा दु नहीं । अेकला राठौड़ है जिणां सु थे समज लीजो[1] ।

अे समाचार उकील लीखीया ने जोधपुर हजुर माराज श्री विजैसिंघजी सु मालम हुवा । तरे म्हाराज सींघवी खूबचंद ने भींवराज ने पुछीयो—कांहि कीयो जोईजै[2] ?

तरे खूबचंद अरज कीवी के ईसमाइल बेग कने आदमी मेलीया चाहीजे, देखो उणरी कांही मरजी है । तरै ईसमाइल बेग कने आदमी मेलीया ने हक-दार उण रो उकील थो जिण कनां सु फेर लीखायो । तरे ईसमाइल बेग कागदां री हकीकत सुण ने लीखीयो थांरो तो चाकर छुं, मे हमार दीख-णीयां रो रोजगार खाय सेठो होय उ छुं[3] ।

जोधपुर, जेपुर फोज आसी[4] तरे आंण सांमल हुय जासुं । अे समाचार मालम हुवा । तरै खूबचंद सींघवी कयो—हमार अे समाचार कवे है[5] पिण कदास[6] तु कांम पड़ीयां नहीं आवे तो वचन लेवो । तरे फेर कागद मेलीया ने लीखीयो के कदास वैगो कांम पड़ै ने थे अलग हुवौ तो जीण रो जतन[7] कांही ? तरे ईसमाइल बेग कयो—थांने अबरोसो[8] हुवे तो दस हजार लोक जोधपुर रो ने दस हजार फोज जेपर री ने दोय लाख रुपीया मेलो तो हुं छुं ने पटेल छे । थे दोनुं राजा सुख सुं राज करो । अे समाचार सुण ने.......... कीवी के लोक मेलीजे दस हजार लोक उठे ....।

साहमल ने सींघवी वनेचंद ने वीदा कीया । नागौर री दरवाजे डेरा कीया ने ....।

आगे सींघवी भींवराजजी तरफ सुं सींघवी सुरजमल ईसमाइल बेग कने गयो सु बीस हजार तो रुपीया ले गयो थो ने दोय हजार फोज थी ने फेर ईणां ने विदा करण रो हुकम दीयो । तरे भींवराजजी अरज कीवी के फोज मेल ने पेलीज[9] कीहुं छेड़ो । दीखणी मुलक ऊपर आवसी तरे देख लेसां । तरे खूब-चंदजी अरत(ज)करी के फोज नहीं जासी तो दीखणी ईसमाइल बेग ने हीज

---

1 निपट लेना । 2 क्या करना चाहिए ? 3 अभी तो मराठों का रोजगार खाकर के सशक्त हुआ हूं । 4 आएगी । 5 कहते हैं । 6 कभी काम पड़ने पर । 7 उपाय । 8 अविश्वास । 9 पहले से ही ।

आपां ऊपर वीदा करसी, ने साथे दीखणी हुसी ने आपां ने म्हावोमाव (माहो-माह), लड़ावसी ने भींवराजजी कयो—कांम पड़सी तरे ईसमाइल बेग नु हुं बुलाय लेसूं । पिण पेली फोज अठा सु मत मेलो । ईण तरै दोनु जणां अरजां कीवी[1] ।

तरे श्री हजुर तकरार कर नें फुरमायो के दोनु जणा भेळी सला मिलाय[2] ते अरज करो । कोई कीहो केवै कोई कीहो केवै ।

पछे खीची गोरधनजी नु कागद मेलीयो ने भींवराजजी पंचोली सांवत-रांम ने गोरधनजी कनै मेलीयो । गांव सोयलांणै था जठै सो गोरधनजी ने तरा-तरा सु वाकव कीया[3] ।

पछे गोरधनजी जोधपुर आया ने खूबचन्दजी सुं वातां हुई (हुवा) । तरै खूबचन्दजी झूठ-सांच कर गोरधनजी ने डेहकाय दीया[4] । फोज वीदा करणी ठेराई[5] । भींवराजजी घणी लटी तोड़ी[6], पीण मांनी नहीं ।

पछे लोढा साहमल नुं तो असवार हजार 1000 अेक सु पैली वीदा कर दीयो सु नवाब सु जाय भेळो हुवो ने सुरजमल कने हजार 2000 दोय फोज ही सु ही साहमल जुमै[7] कीवी ने सुरजमल ने सीख दीवी सु मारोठ आयो ने वनेचंद कूच कर ने नागौर आयो सु महीनो 1 हुवो । सिरदार घरे हा सु आया नहीं, ने खूबचंदजी नीत[8] अरज करै के फोज भेळी हुई नहीं । तरै हजुर सुं हाकमां ने ताकीद कराई पिण सिरदारां रे आवण री जेज[9] तरे हाकम तफा[10] मेलीया—आदमी 10, तांगो 1, ऊंठ 1, घोड़ा 4 । तिणां री खुराक रा रुपीया 3) ने तलब रा रुपीया 13) जुमला 16) रोजीना लागै सु ईण तरै तकरार कर माडांणी[11] सिरदारां नुं लाया ।

पछे सिरदार जाय डीडवांणै भेळा हुवा, ने जोधपुर सुं पाली रा ठाकुर

---

1 खूबचन्दजी और भींवराजजी सिंघवी ने निवेदन किया । 2 सलाह-मशविरा करके । 3 इस विषय के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी । 4 गुमराह कर दिया । 5 ईसमाइल बेग के पास फौज भेजना तय हुआ । 6 इस कार्यवाही को रोकने के बहुत प्रयास किए । 7 जिम्मे । 8 नित्य । 9 विलम्ब । 10 दबाव डालने वाले अधिकारी गए । 11 जबरदस्ती ।

जगतसिंघजी ने माडांणी विदा कीया सु गांव सोयल्लांणे गया। ईण तरे ठोड़-ठोड़ मुकांम करता[1] मनचाड़े गया जितरे फोज तो पाटण प्होती[2] सो फोज हजार 3000 तीन तो आगै सामलजी[3] कने थी ने हजार तीन 3000 चनेचंदजी कने थी। जुमला छव हजार फोज हुई 6000, ने जेपुर री फोज हजार 1000 एक सु कुसालीरांम हलदीया रो बेटो मुसायब थो ने सांमोद रा ठाकुर साथै था। नाथावत सो[4] फोज देख ईसमाइल वेग कयो—के ईण फोज सुं पटेल मरसी ? हुं गुजरांन करतो हो[5] सु मनु ही खराब कीयो[6]। हमै लिख ने दोनु जायगा सुं फोज हजार 10,000 मंगावो नहीं तो हुं तो खराब होसुं[7], पिण थे ही भुंडा दीससो[8]।

तरे जोधपुर, जेपुर ने लिखावट हुई। तिण री पटेल नु खवर हुई के नवाब ईसमाइल वेग जेपुर, जोधपुर एक हुवा। जिण ऊपर डबाई ने फोज दे विदा कीयो ने भाऊजी रो दादो लखोजी नु फोज हजार 50,000 पचास दे ने विदा कीयो, ने पटेल ने तकुजी ग्रेक हुवा, ने तकुजी रो बेटो कासीरांम फोज हजार दस सुं साथै हुवो। मुथराजी सुं कूच हुवो।

सींघवी खूबचंद नबाब रा कागद श्री हजुर मैं मालम कीया ने भं. गंगाराम ने विदा कीयो। खारी ढावा रा जोधा साथै ने चोरासी रा सिरदार मेड़तीया रुघनाथसिंघोत सुरतांणोत, उदावतां री आसामीयां भवांनसिंघजी लांबीया, ने खेजड़ला रा ठाकुर भाटी उरजनोत सारां सुं भंडारी गंगारामजी जाय जेपुर डेरा कीया। महाराज परतापसिंघजी सुं मुजरो कीयो नें कयो—आपरी फोज मेलो। सो आज सवार करवो कीया[9]। पिण बारै कुसालीरांम फोज मेलण दीवी नहीं।

दीखणी कूच कर पाटण आया। संवत् 1846 रा जेठ सुद 11 नु दीखणी चढ़ीया। पाटण डेरा था सु नबाब ने राठौड़ चढ़ घाटा ऊपर तोपां मांडी। राड़ हुई सो डबाई रो लोक गोळां सु घणो मुवो। खेत नबाब रै हाथ

---

1 स्थान-स्थान पर विश्राम देते हुए। 2 पहुंची। 3 साहमलजी। 4 वह। 5 मैं अपना गुजारा कर रहा था। 6 सो मेरी व्यवस्था खराब कर दी। 7 बर्बाद होयेंगे। 8 तुम्हारी भी बदनामी होगी। 9 आजकल-आजकल करके टालते रहे।

रयो । नबाब ईसमाइल बेग सेर हुवो[1] ।

जोधपुर में खीची गोरधनजी रो कांम मोळो पड़ीयो[2] ने पासवांनजी[3] राजी के गोरधन ज्युं भेरा[4] ने करसुं ।

जितरे पाटण सु लोढ़ा साहमल रा ने सींघवी वनेचंद रा कागद आया के पाटण री राड़ में फते हुई[5], ने गंगाराम भं. हाल जेपुर हीज बेठो छै । ग्रे कागद खूबचंद मालम कीया । तरे गंगाराम नु ताकीद पुगी[6] के जेपुर री फोज री हाल जेज हुवे तो तुं तो पाटण ताकीद सु जावजे । तरे गंगारांमजी जेपुर सु कूच कीयो पाटण सांमो[7] । तरे दीखणीयां जांणीयो—तीन राज ग्रेक हुवा है सु पड़पां नहीं[8] । सो पलटणीयां ने फाडां[9] तो ठीक छै । सो पलटण रा दरोगां सु मील ने[10] कयो—थांनु तीन लाख रुपीया देसां ने आगा सुं दुणो रोजगार देसां[11] । थे चढ़ी फोज तोपां उठो फेर दो ।

तरे ईसमाइल बेग नु खबर लागी के पलटणीयां मीलीया[12] । तरै कयो—थै दीखणीयां सु मीलीया हो । तरे पलटणीयां रीसाय ने बहीर हुवा[13] ।

तरे नबाब कयो—तोपां खोस लेसां । तोपां ईलियार वेग रे हवाले थी सु कयो–हमार झगड़ा रो मोसम छै । सु पलटणीयां सु हाल .... ईलीयारवेग ऊपर रीस कर ने कयो ... . ।

तरै रीसाय ने ईलीयारवेग जोधपुर सांमो निसरीयो[14] । तरै लोढ़ा साहमल नु खबर हुई के पलटणीयां छांड़ ने जाय छै, ने नबाब लारे चढ़े छै । तरै साहमल चढ़ ने पलटणीयां नु जाय पुगो[15] सु घेर ने पाछा लायो । खातर तसली कर ने लायो[16] ।

तरे नबाब साहमल वनेचंद रे डेरे आय हरीसिंघजी वगेरा नु बुलाय

---

1 ईसमाइल बेग का हौंसला बढ़ा । 2 गोरधनजी का प्रभाव कम पड़ गया । 3 गुलाबराय । 4 पासवानजी का नौकर । 5 पाटण के युद्ध में जीत हुई । 6 शीघ्रता के निर्देश पहुंचे । 7 पाटण की ओर । 8 सामना नहीं कर पायेंगे । 9 तोड़कर अपनी ओर मिला लेवें । 10 मिल करके । 11 पहले की अपेक्षा दुगुनी वृत्ति देंगे । 12 भाड़े की फौज मराठी फौज से मिलने की खबर लगी । 13 गुस्सा खाकर के चल दिए । 14 जोधपुर की तरफ निकला । 15 जाकर पहुंचा । 16 सम्मान और विश्वास दिला करके वापस लाये ।

कयो- थे पलटणीयां नु पाछा लाया हो सो आछो कांम नहीं कीयो। अै दीखणीयां सुं मिलीयोड़ा छै। सु हुंतै कजीयै दगो देसी[1]। तरे साहमल कयो–पांच हजार आदमी है। तिणां नु वेराजी मत करो, ढ़ाब लो[2] सो नबाब रे बरजतां[3] साहमल राख लीया। पछै गंगाराम भं. पिण[4] तीन हजार फोज लै पाटण सांमल हुवौ।

असाढ़ वद 8 दीखणी चढ़ीयो। नबाब तोपखांनो घाटी ऊपर मांडीयो, सो गोळा सरू हुवा। मारवाड़ री फोज हजार 9000 नव ने सांमी रांमानंदि मुहरथ 500 पांच सो लेर चढ़ीया। नबाब, साहमल, वनेचंद, गंगाराम सांमी जेपुर रो लोक पलटणीयां सारा डाबी जीवणी[5] अणीयां वंणाय[6] राड़ सरू कीवी ने नबाब असवार तीन सौ सुं पलटणीयां ऊपर आंण उभो[7]। तरे पलटण रा दरोगां साहामल नु कह्यो—म्हांरे लारे नबाब चढ़ीयोड़ो उभो छै सो मांसु बिगाड़सी। सो मैं दीखणीयां सुं लडां के नबाब कांनी जाबतो राखां।

तरे साहामल नबाब नु कयो—नवाब साथै थांरा लोक में[8] उभा रहो। अठे तो मै उभा छां हीज। तरे नबाब कयो—थे भोळा छो। पलटणीयां दीखणीयां सु मिलीयौड़ा छै। सु हुं अठे उभो छुं जितरे तो अे गोळा बावै छे[9]। पछै अे खाली भुटका करसी[10] ने पछै थां सांमी मोरचा मांड देसी[11]। तरे राड़ बिगड़ जासी। पिण साहमल मांनी नहीं तरे नबाब उठा सुं आपरे लोक सांमा खड़ीया।

तरे दीखणीयां नु खबर लागी के नबाब तो आपरा लोक में परो गयो। तरे तोपां सरकाई सु गोळां री मार घंणी लागी ने घोड़ा फुटण लागा[12]। सांमोद रो रावळ ईन्द्रसिंघजी रे घोड़ा रे गोळो लागो। माधोदासोत नाहरसिंघ फकीरदास रे गोळो लागो सु माथो उड़ गयो। नबाब 2 बार घोड़ा उठाय-उठाय दीखणीयां नु हटाया परंत पलटणीयां मिलीयोड़ा सु खाली

---

1 चालू युद्ध में धोखा देंगे। 2 रोक लो। 3 नबाब के विरोध के बावजूद भी। 4 भी। 5 बायीं-दाहिनी। 6 सेना के विभाग बना करके। 7 आकर के सामने खड़ा हुआ। 8 अपनी फौज के साथ खड़े रहो। 9 गोला चला रहे हैं। 10 खाली बारूद से तोपें दागेंगे। 11 बाद में तुम्हारे सामने मोरचा लगा देंगे। 12 घोड़े जख्मी होने लगे।

तोपां चलावे । दिन वदतां डेरां में बेदो पड़ीयो[1] । सु मुळक रा मैणा, भील, डूंगर में भेळा हुवा सु फोज रा डेरा बजार सारा लूट लीया ने पछै पलटणीयां, राठौड़ां ऊपर तोपां फेर गोळा मारणा सरू कीया । राड़ बिगड़ गई । नबाब रो ने दुजा डेरा सारा लुटीज गया । तोपखांनो वगैरे सारा लूटीया गया ।

तरे नबाव तो असवार 200 दोय सै सु निसरीयो । एक सौ सु निजबकुली नीसरीयो । जेपुर री फोज ही नाठी[2] । राठौड़ तो कीतराक तो पाटण में बड़ गया[3] । गंगाराम भंडारी असवार 200 सु मारवाड़ सांमा खड़ीया[4] । उरजनोत भाटीयां री आसामीयां ने चांदावतां री आसांमीयां दरवाजे सांमल हुवा । तरे अमरसिंघजी कयो—हमें आपां नु काहु कीयो जोईजै[5] ? तरे सारां मनसोबो[6] कीयो के हमे अठे हकनाक[7] मरसो तोपां नेड़ां निचै आवसां । सारा मते-मतै नास गया[8] सो हमे आपां सारा सांमल रहो । मरसां तो सारा भेळा हीज मरसां । सो भेळा होय नीसरीया सु कोस 1 तांई दीखणीयां लारो कीयो[9], भाटक-भुटक हुई[10] । पछै सरूपसिंघजी बगसीरांमोत पाछो वळीयो[11] सु लारे आवता जिकां ने हटाय दीया ।

पछै उठा सु आगा हालीया सु आगे चांपावत इंद्रसिंघजी सांमसिंघोत जाता था । पछै दिन उगो सु असवार 400 भेळा हुवा ने पाटण में वड़ीया था[12] सु सेर[13] रा कोट ऊपर उभा रात रा गोळीयां वायबो कीया[14] ।

पछै दिन उगां दीखणी आया ने तोपां मंडी तरे कुंपावत हरीसिंघ ने उदावत भांनसिंघ आदमी 500 पांच सौ सु किला में गया सो पांणी लादो नहीं[15], सो तिरसां मरै[16] । तरै उण कीला[17] सुं डूंगर चढण लागा । तरे वनेचंद साहमल ने कुचांमण रा ठाकुर ईणा मनसोबो कीयो—आपां अठे कांही खाय ने लड़सां[18] ? तरे भवानीसिंघजी हरीसिंघजी कने आदमी मेल

---

1 बाधा-विपत्ति पड़ी । 2 भाग गयी । 3 घुस गए । 4 मारवाड़ की ओर प्रस्थान किया । 5 अब हम लोगों को क्या करना चाहिए । 6 विचार-विमर्श । 7 निरर्थक । 8 सभी अपना-अपना मौका देखकर भाग गए । 9 पीछा किया । 10 छुट-पुट लड़ाई हुई । 11 पीछे घूमकर सामना किया । 12 घुसे थे । 13 शहर । 14 चलाते रहे । 15 मिला नहीं । 16 प्यासे मर रहे थे । 17 किला । 18 क्या खाकर लड़ेंगे ?

केवायो—के थे उरा आवो[1] सो आपां नीसर जावां। सो असवार हजार 2000 ने पाळा 500 सु खेतड़ी आया। वागसिंघ गोठ दीवी ने डूंगर चढ़ाया था सो म्हां अबखो[2] सो घोड़ा पाछो उतरे नहीं, ने लारां सु दीखणीयां री मार हुई तरे घोड़ा तो डूंगर ऊपर हीज छोड़ीया ने पाळा हुय उतरीया। सो छोटा घोड़ा 20'क (वीसेक) तो निभीया। भाटी, चांदावत जेपुर आया। उकील पुरोहित जीवराज थो जिणसु अमरसिंघजी वगेरे सारा सिरदार मिलीया। सारो अेवाल वरतीयो[3] सो कयो। तरे जीवराज ईणां री जबांनी सुण जोधपुर कागद लीख म्हेलीया। हजुर मालम हुवा। तरै खूबचंद मालम कीवी अे सिरदार तो हुते कजीये[4] निसरीया दिसे छै।

तरे भींवराजजी अरज कीवी के अेड़ा चांदावत वगेरे नहीं सु हुते झगड़े निसर आवै ....। गंगाराम रा मिण कागद[5] मारोठ सु आया .... समाचार लीखीया। म्हाराज नु फिकर हुवो .... कागद ले'र आय मालम कीया .... दतो पाटण में गढ़ संभाल्यो हे, ने लड़े छै नै गंगाराम नीसर उरो आयो छै, जितरे भं. गंगाराम रा कागद विगत वार आया के सारा मते-मते नीसरीया सु सहामल ने वनेचंद डीडवांणै आय गया छै। भींवराजजी अरज कीवी पादरा[6] आया छै सु तो घोड़ा पुरण[7] ले ने आया छै, ने पाटण में बड़ीया जिके घोड़ा गमाय ने आया छै। सो ईणां मुसदीयां रे म्हावोमाव (माहो माह) में आपस रो दोख[8] जिण सु राज रे कांम रो खरावो हुवे।

पछे दीखणीयां उली कांनी कूच कीयो ने जेपुर म्हाराज प्रतापसिंघजी नु खातर कर दी के राठौड़ां सांमल मत रेजो[9]।

जोधपुर सु सींघवी भींवराज फोज ले विदा हुवो सु मेड़ते आया, डेरा कीया। सहामल नु जेपुर मेलीयो ने वनेचंद सुरजमल ने जोधपुर बुलाय लीया।

पछै दीखणी कांकड़ आयां। मारोठ री फोज मेड़ते उरी आई। परबत-

---

1 पास आओ। 2 हमारे लिए कठिन। 3 सारे सामान की विगत बतायी। 4 चलते युद्ध में से। 5 गंगाराम का भी पत्र। 6 सीधे। 7 सही सलामत। 8 द्वेष। 9 मत रहना।

सर में लोक थो सु स्हेरपने गढ़ में संभीयो[1] । पछे सांभर नांवे[2] दीखणी अमल कर ने परबलसर लागा । सो 2 दिन लड़ीया । पछै रात रा निकल गया नै गढ़ मैं ईतरा जणा संभीया—1 चांपावत भारथसिंघ उरजणसिंघोत हरसोलाव

1 मेड़तीयो अमांनसिंघ बुडसु

1 मेड़तीयो देवसिंघ गुलर

सु गढ़ दोळा मोरचा दीखणीयां रा सांकड़ा[3] लागा ने गोळां सु घास री वागरां लग गई[4] । तरै फड री[5] फेर वात करी ने दीखणीयां री फोज मै सिरदारां नु ले गया ने घोड़ा उरा लीया । दोळी चोकीयां बैस गई । पछै चांदावत बादरसिंघ ने डबाई ने सूंप दीयो[6], कयो—ओ भींवराजजी रे मांनतो[7] है । पछै दुजा सिरदारां ने तो डबाई सीख दीवी सो पाळा-पाळा मेड़ते आया । चांदावत बादरसिंघ ने डबाई पुछीयो—तु कीण तरै छै ? तरै बादरसिंघजी कह्यौ हुं तो रजपूत छूं । सो खावण ने देता हा जरां चाकरी करतो हो । तरे डबाई सीख दीवी तरे गांव डाभड़े उरा आया ।

पछै दीखणी परबतसर थांणो राख ने अजमेर सांमो कूच कीयो । अजमेर में सींघवी धनराज ने खारी रे ढावे रा सिरदार पिण था—

1 भिणाय वागसिंघजी
1 टांटोती गुलाबसिंघजी
1 देवलीये वागसिंघजी
1 मसुदे भोपालसिंघजी

अे तो चार सिरदार सेर[8] मे ने अलेदाद खां जमादार गढ़ ऊपर । गढ़ में सामान आछी तरे हो ।

पटेल 3,00,000) तीन लाख रुपीया लगाय हणुमांनजी रो जाप प्रीयोग[9] करायो । हडुमांन पताका कराया ने भाऊजी डबाई कने कासीद मेले के पटेल री जमीत[10] हुलकार री फोज ने डबाई हींदुसथांन रो सोबो सारो भेळो हुवो

---

1 सन्नद्ध हुआ । 2 नांवा कस्बा विशेष । 3 पास-पास । 4 घास के भंडार में आग लग गई । 5 समझौते की । 6 सौंप दिया । 7 विश्वसनीय, खास । 8 शहर । 9 अनुष्ठान । 10 सेना, फौज ।

छै ने फेर केसो ज्यु[1] करसां। तिण राठौड़ां आंपणी परगड़ी[2] खोस लीवी छै। दीली री पातसायत करतो सु राठौड़ां बिगाड़ दीवी छै। सो वेर[3] लैणो छै ने हडुमांन पताका देखाळ देजो[4] सो उणां ने भय पड़ जासी, सो लड़ाई करसी नहीं। पछै अजमेर दीखणी आया। आंनासागर मुरायला था जिणां कजियो जालीयो[5] सो डबाई री तोपखांनो आयो ने झगड़ो हुवो। न्याहत मांहलां रा पग छूट गया ने सोर[6] उठीयो—तिण सुं आदमी दसेक बळ गया[7] ने स्हेर रा तुरकां दरवाजा खोल दीना—स्हेर भीळ गयो[8] तरे सींघवी धनराज जी ने सिरदार गढ़ बीटली में वड़ गया। घोड़ा सेमांन (सामान) था सु दीखणीयां रे हाथ आया। न्याहत हेरांन हुय बात कर ससतरां समेत[9] सीख दीवी। घोड़ा असबाव ले जावण दीया नहीं। दिन दसेक दीखणी बीटली ने गोळीयां वाही। पछे मेड़ता ने कूच कीयो। पोकरजी[10] डेरा कीया ने मेड़ते फोज ने खरची जोईजे ने बाब[11] घालै सु तो मुळक सुनो पड़ीयो। तरै म्हाजनां ऊपर रुपीया 1,00,000 अेक लाख डंड रा घालीया ने बारला डेरां पासवांनजी कयो—राज रो धन के तो में खाधो छे[12] के गुसायां खायो छे, के गोरधन खीची खायो छे। सु गुसांईजी ने दीनो छे, सु तो श्री परमेश्वरजी नीमत[13] दीनो छे। सु पाछो मांगणी आवे नहीं ने हमे तीन लाख रुपीया तो हुं देसुं ने तीन लाख ही गोरधन देसी। तरे गोरधनजी नु कहो—तीन लाख रुपीया री सरबरा[14] करो। तरे गोरधनजी कयो—में तो रुपीया भेळा कीया नहीं, सो कठा सुं देऊं। तरे पासवांनजी कयो राजी हुय ने देसो तो ठीक, नहीं तो देसो ज्युं लेसां। तरै गोरधनजी आय नौकर ने रथ में बेस ने गांव कड़वड़ जाय बैठा ने पासवांनजी ने ठीक हुई[15]। तरै सीलेपोस 25 पचीस लारे चढ़ीया ने कयो—ज्युं आवे ज्युं ले आवो। तरै सीलेपोस कड़वड़ जाय गोरधनजी ने कयो—आपने हजुर याद कीया है, सो पधारो। तरे गोरधनजी कयो—हुं कीसी कोठार फाड़ ने आयो छुं। हुं तो अतीत[16] हुय जासुं सु पाछो कोय हालुं नहीं। तरे सीलेपोसां कयो—अेक बार तो धणी बुलावे हे सु हालीयां ईज

1 आप कहोगे जैसे। 2 पगड़ी। 3 बदला। 4 दिखा देना। 5 झेला, संभाला। 6 बारूद। 7 जल गए। 8 शहर में सैनिक घुसकर लूट-पाट करने लगे। 9 शस्त्रों सहित। 10 पुष्करजी। 11 कर। 12 खाया है। 13 निमित्त। 14 व्यवस्था। 15 मालूम हुई। 16 तपस्वी, विरक्त।

सजसी[1] । पछै सला आवे ज्युं करो । तरे रथ में बेस ने नीसरीया सु फोज में आय पोकरण रा ठाकुर सवाईसिंघजी रे डेरे उतरीया । सिलेपोसां जाय ने कयो—गोरधनजी आया छै । सवाईसिंघजी रे डेरे छै । तरै पासवांनजी सीलेपोसां ऊपर रीस कर कयो—सवाईसिंघजी रै डेरे क्यूं जावण दीया ? सो जोध .... पिण सवाईसिंघजी रा मुला .... पछै खांनपांन सिरदारां उठै हीज मंगाया ने सींघवीजी तो सिरदारां नु मोकलो कयो[2]—कमरां खोलजो मती ने घोड़ां रा कायजा काढ़जो मती[3] । आज च्यार पोर रात री मेहनत छै । (20) बीस बरस चाकरी करो के आज च्यार पोर रात री वंदगी ..... ।

पिण होणहार रो तावो[4] ने लोक सोयला सु बाल मंगाय घोड़ा बांद दीया ने बंदुकां रा झूला दे दीया[5] ने जांजमां वीछी सु सिरदार कमरां खोल नें सोय रया ने भींवराजजी बेठा रया ने रात पड़ी ने डबाई रो तोपखांनो पाळा आदमी खांच ने नेड़ी लीयाया[6] । आंपणी फोज रा ओळखीया नहीं[7] ने डबाई जांणीयो, तोपां नेंड़ी ले जावां सु ईणा ने ठीक पड़सी । तरै तो सांमा[8] गोळा बावसी ने तोपां नेंड़ी लेण देसी नहीं जीण सु 2 आदमी रुको दे ने मेलीया । जीणां सींघवीजी कने आय ने कयो के मांने डबाई सा मेलीया छै[9] । तरे सींघवीजी, गीरदासजी, म्हेसदासजी, गंगारामजी ने बुलाया ने उणां नु कयो—डबाईजी थांने कयो हुवे सु कहो । तरे उणां कही—डबाई सा ओ रुको दीयो है नें कयो है हींदुसथांन में अेक राजा म्हाराज विजैसिंघजी रया छै । दीखणीयां ईणां सु डरता खरची देवै छै । सु म्हाराज रो खरावो हुतां ने 2 वरस हुवा छे खरची दीनां ने हमार दोय महीना दीना छै । सोच न करो राड़ पड़पां नहीं ने रुको वांचो ईण में समाचार लीखीया छै । सु रुको तों फारसी में लीखीयोड़ो थो सु मुनसी कने मेलीयो ने उणां दोनुं आदमीयां ने रुपीया 10) मोताज[10] रा दीया । अेक आदमी साथै दीयो ने कयो—डबाई सा केसी[11] ज्युं कर लेसां । सवारे ठावा आदमी मेलजो, उणां ने सीख दीवी ।

---

1 चलना ही पड़ेगा । 2 खूब कहा । 3 घोड़ों के जीन और लगाम आदि मत खोलना । 4 वशीभूत । 5 कोत बनाई । 6 खींच करके नजदीक ले आए । 7 अपनी फोज वालों ने पहचाना नहीं । 8 सामने । 9 भेजा है । 10 ईनाम । 11 कहेंगे ।

फोज री लोक केईक तो खोटवो[1] काढण गया ने केईक दातंण सीनांन रे वासते डांगावास रे तळाव गया, केई ग्रमल करता था केही सुता ही हा। घोड़ा उभा था जीतरे डबाई रा ग्रादमीयां ने पोछावण नु गयो थो सु ग्रापणी फोज सु पांवड़ा पचास-साठ गयो ने पांवडा सो हेक[2] ऊपर तोपां वधती दीसी के ग्रादमी पाछो नाठों[3] के उणां नाठते री पागड़ी पीछेवड़ो कोस लीनो[4] सु नास ने पाछो फोज मै ग्रायो ने सींघवीजी ने कयो – फोज ग्राई। हुं देख ने ग्रायो छु। गलारीया[5] मै तोपखांनो ग्रायो। जरां सींघवीजी बाजोट ऊपर ऊपर वेठा था सु कमर बांधण लागा ने तोपां ऊपर ग्रादमी मैलीयो के गोळा सरू करो ने लालजी हींदुसिघोत ने ग्राईदांन दोढ़ीदार कनै ग्रादमी मैलीयो के सावचेत हुवो[6] ने तोपखांनो सरू करो। तरे ग्राईदांनजी कयो—कोस ग्रेक तांई तो फोज कठे ही ग्रावती दीसे नहीं। मारो ग्रादमी ठावो देख ने ग्रायो छै। तरे लालजी कयो – कोस तो घणो छै ने फोज तो माथा ऊपर ग्राई छे। साव-चेत हुवो जीतरे सींघवीजी नगारो डंको करायो ने वनराजजी था सु तीन तोपां छुड़ाई ने दीखणीयां री ग्रेक सो साथै छुटी ने घड़ा[7] पड़ै ज्युं गोळा पड़ै ने कीतराक घोड़ा-वाळा बधीया था सु चमक-चमक ने वाळां लीयां[8] ही डेरां ने नाठा तरै बेली[9] उठ-उठ ने दोड़ ने घोड़ा लारे गया। सु बंदुकां रा जुला तो पड़ीया ही रहा ने सावचेत हा सु घोड़ा चढ़ीया।

पीण पचास घोड़ा था जीकण कने दस-बारे रया। पीण गोळा रो मारको घणो। जीण सु पग ठेरण दे नहीं ने सींघवीजी चढ़ ने कयो—ग्राई-दांनजी सु भेळा हुवो[10]। तरे ग्राईदांनजी रे तोपखांने गया सु ग्राईदानजी लाधा नहीं[11]। पाळा ऊभा था ने गोळा वावता था। तरे चांपावत उमेदसिंघ-जी कयो—तळाब हालो[12] सु सिरदारां सु सांमल हुवां ने घोड़ा उठावां। तरे सींघवीजी वगेरे तळाव ग्राया ने तळाब में माधोदासोत ने उदावत ने गोडवाड़ रो लोक ने मेड़तीयां जीकां घोड़ा चलाया सु पलटणीयां रो वाड़ो[13] तोड़

---

1 नित्य कर्म (शौचादि)। 2 एक सौ के लगभग। 3 वापस दौड़ गया। 4 छीन लिया। 5 शहर की सीमा पर। 6 सावधान हो जाग्रो। 7 ग्रोला। 8 बंधन समेत। 9 घोड़ों की देखभाल करने वाले। 10 ग्राईदानजी के पास एकत्र होग्रो। 11 मिले नहीं। 12 चलो। 13 घेरा।

तोपखांने जाय तरवार बजायी ने अठीने महेसदासजी हरीसिंघजी ने सादुलसिंघजी सारा कुंपावत ने चांपावत 1 ठाकुर जगतसिंवजी, 1 ठाकुर सुरजमल जी, 1 ठाकुर भवानीसिंवजी, 1 ठाकुर सीवसिंघजी सु चांपावतां कुंपावतां घोड़ा चलाया सु डबाई रे तोपखांने ऊपर जाय तरवार बजायी। डबाई तो तोप हेटै[1] पेस गयो[2] ने अठी ने ईणां रा घोड़ा हालीया।

1 भंडारी गंगारामजी, 1 सींघवी सुरजमलजी, महेसदास सालमसिंघोत मारोठ, कुचांमण रा ठाकुर रुघनाथसिंघोतां री आसांमीयां, माधोदासोत सुरतांणोत।

नाळ सागर[3] सु चांपावतां करनोतां रा घोड़ा हालीया सु दीखणीयां रो पुरो................ जीण ऊपर तरवार बुही[4] ने दीखणीयां रा पग छूटा· सो गांव पांच डोळी[5] तांई नाठा। पछे दीन उगो ने दीखणीयां दीठो सु असवार घोड़ा ने लारा सु·· ······· जाव में गया उठे सिरदारां ने दी नहीं। तरे घोड़ा सु उतर ने बेस रया। उमेदसिंघजी चांपावत घोड़े सु उतर ने हाथ पकड़ीयो ने घोड़े चढ़ाया। तरे कयो वनराज के· ······· वनराज नीसरीयो ने वनराज बडोड़ी तोप ऊपर आय गोळा वबाड़ै[6]। जरां आसांमीदार दस जणा रया जीणां हाथ खांच घोड़े चढ़ाया ने कयो सींघवीजी नीसरीया ने तळाब मे छै, जठै हालो। जीतरे सोर री गाड़ीयां उड़ी[7] सो रेवत रो चांदावत बळीयो। दोय आदमी दूजा बळीया। चांदावत 2 वनराज कने सेवो रामसिंघोत ने गागुरडा रो सरूपसिंघ रे लोह लागा। सींघवीजी सु वनराज भेळो हुवो ने सींघवीजी नु ले वुहा[8] सु बेजपारे आगोर आया[9] ने सीरदारां घोड़ा उठाया था सु पलटणीयां ऊपर तरवार बुही। तरे गोळा छूटता रे गया[10]। तरे कीणी केही[11] फते हुई। तरे सींघवीजी पग मांडीया ने घोड़ा-घोड़ा दीठा तरे दीखणीयां चावलीया ने चारू कांनी सीरदारां ने घेर लीया जठे माधोदासोत

---

1 नीचे। 2 घुस गया। 3 तालाब विशेष। 4 चली। 5 गांव विशेष। 6 गोले जोर-जोर से दागने लगे। 7 बारूद की गाड़ियों में विस्फोट हुआ। 8 सिंघवीजी को साथ लेकर चले। 9 छोटे तलाब विशेष की जल संग्रह सीमा के पास आए। 10 रुक गए। 11 किसी ने कहा।

चांदारूण रो कनीरांम कांम आयो। नरसिंघदास ईडवा रो कांम आयो। कीतलसर रा दोय कांम आया[1]।

आलणीयावास रो फकीरदासजी कांम आयो। माधोदासोतां री आसामीयां 20 कांम आयी। फेर ईतरा कांम आया—

1 ठाकुर विसनसिंघजी चांणोद रा ठाकुर बेली दस सुं।
1 ठाकुर सिवसिंघ देवला रो लोह लागा[2], बेड रो ठाकुर कांम आयो।
1 बोयल रो जसवन्तसिंघजी कांम आयो ने बेली पनरे खेत पड़ीया।
1 जोधो जालमसिंघजी पाटोदी रो कांम आयो, बेली 5 सुं।
बीकानेर वालां रा बेली वीस 20 कांम आया।
सेखावत जालमसिंघ बलाड़ा रो बेली 12 बारे कांम आया।
अलीयार वेग रा सीपाई 10 कांम आया।
सेख इमांम अली रा बेली 5 कांम आया।

जोधणी मीसल मै—

ठाकुर मैसदासजी आसोप रा कांम आया, बेली 2 कांम आया, बेली 3 खेत पड़ीया।

ठाकुर मालमसिंघजी नाडसर रो कांम आयो।
ठाकुर हरीसिंघजी रे भाला 2 लागा ने आसांमी 3, बेली 4 कांम आया।

ठाकुर जगतसिंघजी पाली रा चांपावत कांम आया। आसांमी बेली 10 दस कांम आया।

ठाकुर सुरजमलजी हरीयाडांणा रा तीणां रा बेली कांम आया।

ठाकुर भारथसिंघजी उरजनसिंघोत सुदणी रो कांम आयो।

अेवासी रो ठाकुर कांम आयो, चांपावतां री आसामीयां 10 दस कांम आईं।

आउवा रा ठाकुर सींवसिंघजी रे लोह लागा ने खेत पड़ीया सु सहैर रा म्हाजनां उंचाय ने ले गया। बेली पांच कांम आया।

---

1 वीरगति को प्राप्त हुए। 2 शस्त्राघात हुआ।

1 इंदरसिंघजी सीमसिंघोत रे लोह लागा तरवार 1, गोळी 1 साथल[1] रे लागी। बेली 7 सात कांम श्राया।

भंडारी गंगारामजी कने मेड़तीयो श्रजीतसिंघ 1 जवांनसिंघोत कांम श्रायो।

कुचांमण रा ठाकुरां रो भाई ने बेली 12 बारै कांम श्राया।

बोरूंदा रो ठाकुर साहबसिंघजी रो बेटो जेपुर सु श्राय कांम श्रायो।

काको सुरजमल कांम श्रायो, बेली 3 तीन कांम श्राया।

1 भाटी पाड़सिंघ बीकुकोर[2] रो कांम श्रायो।

1 चांदावत सिरदारसिंघ इंद्रसिंघोत पटे गांव चोकड़ी।

1 चांदावत मांनसिंघ लालसिंघोत पटै दुदड़ावस।

1 सुरतसिंघ रो बेटो कांम श्रायो वनराज कने।हो सु पटे गांव हीदास। चांदावतां री श्रासामीयां च्यार 4 कांम श्राई।

1 सालमसिंघ बादरसिंघ रे लोह लागा।

1 दलेलसिंघ बादरसिंघोत रे गोळा री चोपेट लागी ने भगत रामानंदी 50 ने वीसनसांमी 50 कांम श्राया।

म्हैसदास लालसिंघोत रै माहारोठ रो गोळो लागो ने श्रासांमी 7 सु कांम श्रायो।

1 सींघवी सुरजमल कांम श्रायो।

पड़दार, चाँदखां ने बेटो दोय कांम श्राया।

सींघवी भींवराजजी बेजयारे श्रागोर पग मांडीया[3] तरे सींघवीजी ने देख ने श्रसवार 400 च्यार सौ भेळा होय गया। तरै सींघवीजी भैरो चाकर[4] पांणी पावतो हो जिण कह्यो—सींघवीजी! श्रौ मोसर[5] कदेई श्रावसी नहीं, लारे श्रापरे बेटा छै ने थे खादी पीदी छै[6] नै मारवाड़ ने कांम पड़ीयो छै ने धणी रा माथै हाथ छै, कांम श्रावो तो[7] श्रमर हुय जावसो ने दे'रो[8] भरोसो कांई? सु मरणा मै खूबी है, चावल चढ़ जासी[9]। तरै सींघवीजी पाव घड़ी ठैरीया। तरै साथ वालां जांणीयो के भींवराजजी कांम श्रावसी सो घोड़ा चढ़तां हीज हुवा श्रसवार चालीसेक रया। पछै चांपावत उमेदसिंघजी कयो—

1 जांघ। 2 बीकमकोर गांव विशेष जो श्रोसियां के पास हैं। 3 पांव जमाये। 4 भैरों नामक सेवक। 5 विशेष श्रवसर। 6 श्रापने जीवन का सुख भोग लिया है। 7 वीरगति को प्राप्त करोगे तो। 8 शरीर का। 9 पूजनीय हो जाश्रोगे।

के सींघवी थांनु कुण मारसी ? दीखणी थांनु पकड़ लेसी ने कुपीत[1] करसी ने दीखणी सेर हुसी ने कैसी[2] के फोज रो मुसायव पकड़ लीयो ने मारवाड़ रो ने राठौड़ां रो भुंडो[3] लागसी ने केसी—सींघवीजी सुं नासणी आयो नहीं[4] जरां पकड़ लीयो सो काढवा करण[5] में खूबी है। तरे सींघवीजी नागौर ने खड़ीया[6] ने सीरदार तरवार बाय पाछा वळीया[7] सु आगे डेरा लुटै छै ने पाछा वळता रे मारे वेस गया[8] सु कोईक सिरदार देजेयो[9] दुदासागर रा आगोर में हुय ने नागोर ने नीसरीया ने कीतराक डेरां कने हुय ने अजमेरी दरवाजै आया सु दरवाजो जड़ीयोड़ो[10] थो सु गंगारामजी हरीसिंघजी आया। तरे तो दरवाजो खोल ने ईणां ने मांह[11] ले ने पाछो जड़ दीयो[12]। नीसांण रो हाथी बारे रयो ने बीड़दसिंघजी मालमसिंघ बैरवी रा अे दुदासर में हुय ने नागोरी दरवाजै आया सु घोड़ा बेली तो बारै हीज रया ने भांजड़ वालां जाटां बनणां[13] सु खेंच ने तीन सिरदारां ने मांय लीया। 1 मालमसिंघजी कुंपावत, 1 भारथ-सिंघजी चांपावत ईणां घोड़ा पावण ने[14] डांगावास रे तळाब मेलीया था सु गोळा छुटा। तरै घोड़ा चमक[15] ने जाता रया। तरै हाथ मै तो होको[16] ने पाळा रांयण रे दरवाजै आया सु दरवाजो जड़ीयोड़ो थो तरे जाटां ने कहो—मांने बनणां नाख ने[17] मांय लेवो जीतरे दीखणी आय गया सु जेर पीहर री जायगा कने दोनुं सिरदार कांम आया ने चांदावत कलजी तरवार बाही ने पाछा नाळसागर हुय'र आया ने उठा सुं सेहर सामां खड़ीया। तरे करनजी कयो—कलजी रो बाळो[18] दुखे छै सु उठी ने हालो, तो कलजी ने काढ़ो। तरे कुपड़ास ने देसवाल रा घोड़ा 20 सु पाछा नाळसागर आया। जीतरे तो डेरा भीळ गया। डेरां में फोज आय भीळी। तरे पाछा सोजतीये दरवाजे आय गया ने दुमांणी रा सिरदार बीछड़ गया हा सो जोधपुर रे मारग मीरजा रे बाग तांई जाय पाछा आया।

दलेलसिंघजी 1, भोमसिंघजी 1, देवसिंघजी 1, करणसिंघजी 1, अे

---

1 दुर्व्यवहार। 2 कहेंगे। 3 अपयश। 4 भागना आया नहीं। 5 पलायन। 6 प्रयाण किया। 7 मुड़े। 8 वापस मुड़ते हुए की मार के कारण बैठ गए। 9 झटका मार करके। 10 बन्द। 11 अन्दर। 12 बन्द कर दिया। 13 रस्से। 14 घोड़ों को पानी पिलाने के लिए। 15 चौंक करके। 16 हुक्का। 17 फेंक करके। 18 नारू रोग।

घोड़ा 20 सु मेड़ता मे पेठा[1]। नागोरी दरवाजे आय ने घोड़ा बांद ने दरवाजा ऊपर सफील चढ़ ने गोळीयां बावरण ने लागा। तरे दरवाजा री दलेची मैं 1 मालमसिंघ, 1 बीड़दसिंघ बेठा था ने दुजी दलेची में सवाईसिंघ ईंदरसिंघोत बैठो थो। तरे कयो बड़ी बात हुई। दोनु डावी मीसल रा सिरदार आया छा। सो लोक हमगीर करो ने दीखरणी नेड़ा आवै छै। सु बंदुक झालो[2] तरै मालमसिंघजी कयो—मारा तो घोड़ा बेली बारे उभा छै। जीका ने मांह लेरणा। तरे दरवानां ने कयो—ताळा खोलो। तरे कयो कूचीयां[3] पड़ी छै। तरे मालमसिंघजी पथर सु ताळा तोडरण लागा। तरे भोमजी कयो—ताळा तोड़ो मती। कूंची लाय ने खोलो। तरै मालमसिंघजी घोड़ी चढ़ चांतरे आया। कूचीयां लाय ने अेक सोर सीसा री भाथड़ी[4] लाया सु कूची भोळप सु[5] भूल दुजी आय गई सु ताळो खुले नहीं। तरे पथर री दे ने बारी रो ताळो खोलीयो। तरे घोड़ा बेली मांय आया। लोक नाठा सु आथुरणी[6] मारग गयो ने रैखला 4 ने तोपां 20 बीस पड़ीयार नागोर ले गया ने दुजा नग मेड़ते रया। बीड़दसिंघजी रा घोड़ा बैली मांह आया। तरै कयो—कठै पधारो छो? तरे मालमसिंघजी कयो—दलजी छै। अठै हीज बैठा जावतो राखजो[7]। मैं सफील-सफील फीर ने[8] जाबतो राखां छां ने लोक ने हमगीर करां छां। तरै बीड़दसिंघजी कयो—काकाजी चढ़ ने उरा आवो, सेर भीळ गयो छै[9]। सु मालकोट जासां सो मां सांमल रेजो[10]। जरां चढ़ ने मालकोट आया सु भीड़ घरणी[11] सु बीड़दसिंघजी सवाईसिंघजी तो कोट में बड़ गया ने चांदावत बारै उभा रया ने डुमांरणी रा सिरदार तळाब दैरांरणी ऊपर उभा था। दीखरणी नेड़ा आया तरै घोड़ा छोड़ सफील चढ़ गया। घोड़ा जाता रया ने मालकोट लोक बड़ीयो सु पाळा हजार 5,000 पांच उभो थो ने भीड़ घरणी घोड़ां चढ़ीयां रा गोळां सु गोडा[12] फुटै। ईसी भीड़ सु पड़ै तो जमी तांई पुगे नहीं। बीच में हीज मसलीज जावे। हमै सुरज मथारे[13] आयो, दोफार हुवा, तावड़ो[14] घरणो, पवन आवै नहीं ने लारे हलां[15] मारे। छरेरी[16] मांडीयो तो सारां ने भुंडी तरै मारसी। सु माल-

---

1 प्रविष्ट हुए। 2 संभालो। 3 चाबियां। 4 गोला-बारूद वाला चमड़े का थैला। 5 असावधानी के कारण। 6 पश्चिम की ओर। 7 सुरक्षा रखना। 8 घूम करके। 9 शहर में मराठों की फौज घुस गई है। 10 हमारे शामिल रहना। 11 घरणी—बहुत। 12 घुटने। 13 मस्तक पर। 14 धूप। 15 धक्का। 16 छर्रे छोड़ने वाली तोप।

कोट तो वडौड़ा सिरदारां सु भरीज गयो। पछै दरवाजो जड़ दीयो। तरे माहोमांह कहो—मरदां चौड़े हालो तो सोरा[1] मरां। तरै पाळा उभा था जीणां अेक जायगा कोट चाडीयो[2] छो जठै छड़ीला[3] दीना था सु खांच ने काढ़ लीना सु अेक असवार नीसरे जीतरी सैरी[4] हुई सु पाळा 200 ने घोड़ा 200 बारै नीसरीया। तरै पवन आयो, जरां जीव सोरो हुवौ ने सारां कहो हमै घोड़ा खड़ो, तोपां आपां लारै आवै नहीं ने असवार आसी तो जाब[5] देसां। जीतरै फलोधी रो चोपदार थो जीण कहो भंडारी गंगारामजी आवे छै। तरे दलेलसिंघजी कयो—जरां तो बड़ी बात छै। घड़ी 1 उभो रहो जीतरे पंचोली 2 चोपदार 1 आसांमीदार आय ने कयो के भंडारीजी तो आवै। तरै भवंरांणी रै मारग गया नै सीरदार मालकोट रे दरवाजै ऊपर चढ़ीया देखता हा जीयां कहो[6]—तमासो देखसो सु पांवडां तीनसेक[7] गया ने दीखणीयां रा घोड़ा 200 आया पसवाड़ै[8] ने गोळीयां छोड़ी सु अेक दीखणी वडीयो जिण रो घोड़ो उरो लीयौ ने दुजां कयो—गाडां लूट सारा गडां ने जाण दो तरै दीखणी नास गया ने उणां आगा खड़ीया सु कोसेक तांई वीखां-वीखां खड़ीया[9] पछै बड़ गड़ां नाख दीया[10]। तरे दलेलसिंघजी भोमसिंघजी कयो—हमै तो सिरदारां वीखां खड़ो तो पाळो लोक नीभ जाय। पीण कयो—मांनीयो नहीं, जिणसु मतै-मतै वीखर गया ने देवीसिंघजी खुमांणसिंघजी असवार दसेक तो गांव मुगदड़ै गया ने बागर घास री थी, सुलगाय ने जोधपुर नु खड़ीया दुजा वड़गांव रे तळाब पांणी पीवण गया।

पछै खेजड़ले रया ने……… । अठी ने सींघवी भींवराजजी वनराजजी ने दोढ़ीदार आईदांनजी असवार वीसेक सु……ने पछै सुरजमलजी कुचांमण रा ठाकुरां ने अलीयार बेग अे घोड़ा वीसेक सु भेळा हुवा। आईदांन दोढ़ीदार नु गाळीयां काढीया जाय ने कयो—सीरदार सारा नास गया। तरै कुचांमण रा सुरजमलजी कयो—के नाठा तो आया जावां छां सिरदार तो सारा कांम आय गया छै। धणीयां री जाजम खाली हुय गई छै जीणा ने ही ठा तो हुतां

---

1 आसानी से। 2 परकोटा टूटा हुआ था। 3 कंटीली झाड़ियां। 4 संकरा रास्ता। 5 प्रत्युत्तर। 6 जिन्होंने कहा। 7 तीन सौ के लगभग। 8 पार्श्व में, बगल में। 9 धीमी चाल से चलाये। 10 तेज चाल में घोड़े डाल दिए।

कीण तरै लड़े छै[1] । आप तो गोळां रा भंडाका सुण ने नाठा छो । पीण दोय घड़ी दीन चढ़ीयां तांई तरवार वेती थी[2] तरे आईदांनजी अबोलो रह्यौ[3], ने रूपजी बगसीरांमोत ने पैमो वड़गूजर दोय असवार नागोर रे मारग जाता था ने खेजड़ला रा ठाकुर देईदासजी दोय घोड़ा सुं आय गया ने हरसोलाव रा ठाकुर गीरदासजी अेकलो घोड़ै चढ़ीयो आय गयो ने पगरखीयां पड़ गई ने घणा उदास पागडां मे डवरांणा पग[4] तरै रूपजी कयो—आप जमे खातर राखो । नागोर रा गांवां सु वाकब[5] छुं । पादरा[6] ले जासु पछै गांव नींबीड़ी गया । पांणी पीयो, घोड़ां ने पांणी पायो । उठा सु बहीर हुवा ने गीरदासजी रो घोड़ो थाक गयो, चाले नहीं । तरै रूपजी बगसीरांमोत कयो—मारे घोड़ै असवार हुवौ तरै गीरदासजी कयो—थारे घोड़ै चढूं नहीं तरै रूपजी घोड़ा सु उतर गयो ने हट[7] कीयो । तरै गीरदासजी कयो—तुं तो टाबर छै ने मे तो खादी पीदी छै । थे खड़ो परा[8], लारा सु हुं हवलै-हवलै[9] आऊँ छूं । तरे देई-दासजी कयो—थांने छोड़ ने कीकर जासां ? तरै भाटी उतर ने घोड़ी दीनी ने पेमो गीरदासजी रो घोड़ो खेंचीयो पछै पड़ ने जीव नीसर गयो[10] । तरे कयो—सझाई[11] छोड़ ने जाऊँ नहीं तरै तंग खोल ने सझाई उरी लीवी पछे मूंडवे आय तळाव ऊपर उतरीया सु भूखां मरे । तरै रूपजी मींदर में जाय सांमीजी नु कयो—माहाराज परसाद हुवे तो बगसावो[12] । तरै सांमीजी च्यार लाडू दीया सु लाय ने गीरदासजी नु दीया तरे कयो में तो दातंण सीनांन कीयो नहीं, सेवा कीवी नहीं[13] तरे नोरा[14] तो मोकला कीया पीण गीरदासजी तो कीं खायो नहीं ने रूपजी ने भाटी अेक 1 लाडू खायो । पछै नागोर आया । लालसागर ऊपर उतरीया ने रूपजी अमरसिंघजी रो डेरो बांकी बुरज में थो सु बारा सु हैला पाड़ीया[15] । तरै अमरसिंघजी गास[16] रा भारा मेलीया । मेखां, दांतण मांचा बीछावण ने रोटीयां मेलीं । पीण गीरदासजी रा नो'रा तो मोकला कीया, पीण रोटी खाई नहीं ने देईदांनजी ने भाटी जीमीया ।

पछै सींघवी भींवराजजी बुताठी कुचेरा में हुय ने सकर तळाव रात पोर

---

1 उन्हें मालूम तो हो कि किस तरह लड़ रहे हैं । 2 तरवार चलती थी । 3 चुपचाप रहा । 4 नंगे पैर । 5 जानकार । 6 सीधे । 7 हठ । 8 आप घोड़े को आगे हांको । 9 धीरे-धीरे । 10 प्राणान्त हो गया । 11 घोड़े का साज-सामान । 12 इनायत करो । 13 पूजा-पाठ नहीं किया । 14 निहोरा, मनुहार । 15 बाहर से आवाज दी । 16 घास ।

1 गयां आय डेरा कीया, ने सारा सिरदार नीसरीया था जीके दीन उगतां पैहली सारा भेळा हुवा ने हाकम भंडारी सोबाचंद ने ठीक हुई। तरै सींघवीजी कनै गयो ने कयौ – सैर में डेरो करो पीण सींघवीजी आया नहीं। उठे हीज डेरा राखीया।

पछै सींघवीजी ने आया सुणीया तरै सीनांन कर रोटीयां खाईं पछै सींघवीजी ने ही सारा सीरदार आय ने लाया सु अजमेरी दरवाजै डेरा कीया ने सारा ही सीरदारां पीण पाखती डेरा कीया। नवाब ईसमाइल कने जवांनसिंघजी साहमलजी जेपुर सूं मेड़ते लावे था ने राड़ बीगड़ी सुणी तरे डीडवांणे डेरो कीयो।

पछे नागोर सुं कागद गया तरे नागोर चेनार डेरा कीयो। पछे तीजे दीन पोर 1 एक दीन चढ़ीयां राईकौ मेड़ता सुं जोधपुर श्रीहजुर मै मालम हुई–के खीची गोरधनजी ने ठाकुर सवाईसिंघजी फतेसिंघजी नु बुलाय कयो–के मेड़ते राड़ बिगड़ गई। हमें कांई कीयो जोईजे ? तरे सवाईसिंघजी कयो–राड़ बिगड़ी तो कांई हुवो ? गढ़ कोट सजसां ने फेर कजीयो करसां[1]। तरै श्रीहजुर फुरमायो के मांणस[2] काढो तरे गोरधनजी कयो –राजलोक कंवरां[3] ने जरूर मेलावो तरे म्हाराज फुरमायो—कठे मेलसां। तरै फतैसिंघजी कयो–दुजी जायगा क्युं मेलीजै, जालोरहीज मेल दीजे तरे हजुर फुरमायो—ठाकुरां थांरा ही कबीला[4] अठे हीज छै सो थैई[5] मेल दो। तरै ईतरां ने गढ़ सुं उतारीया—

1 राजलोक सारा ही।

2 कंवर सेरसिंघजी ने सावंतसिंघजी दोनु ही भाई।

सूरसिंघजी सांवतसिंघजी रा

भींवसिंघजी भौमसिंघजी रा

मांनसिंघजी गुमांनसिंघजी रा

---

1 गढ़ व परकोटों को मजबूत करके पुनः लड़ाई के लिए तैयारी करेंगे। 2 परिवार की औरतें व बच्चे। 3 राजघराने की रानियें व राजकुमार आदि। 4 कुटुम्ब। 5 आप भी।

ईणा ने ले ने नाजर गंगारामजी रथां, पालखीयां मै वेसांण[1] ने गढ़ सु उतार पासवांनजी रे बाग[2] लाया। तरै पासवांनजी कयो हुं तो हालु नहीं[3], साहबजी रेसी[4] जठे रहसु। तरे सवाईसिंघजी गोरधनजी कयो—अबार तो पधारो थोड़ो ही चेन[5] हुसी तरै बुलाय लैसां। तरे पासवांनजी कयो—के थै अरज करी तो थांनु म्हाराज री आंण छै हुं तो श्रीजी साहबजी रैसी जठे रेसु। तरे पासवांनजी तो जोधपुर हीज रया ने राजलोक कंवरां ने ले ने नाजरजी बहीर हुवा[6]। जालोरी दरवाजा बारै डेरा दाखल हुवा। तरै कंवरजी भींव-सिंघजी नाजरजी ने वुलाय ने कयो के हजुर मै मालम करो के मांने जालोर मेलो हो सु मै कीसा टाबर छां। मांने ही अठे हीज राखीजै ने फोज में बीदा कीजै[7] सु दीखणीयां सु जाय ने कजीयो करसां। तरे नाजरजी अरज करी—तरै फुरमायो कै—थांनै जालोर मेलां छां सु उठे हीज जावतो[8] राखजो ने कीतराक सीरदारां ने मुतसदीयां रा ही कबीला जालोर गया ने ठाकुर फतै-सिंघजी रा कबीला भादराजण[9] मेलीया ने सेवा गीरधारीजी[10] री बीकानेर पधारीया ने गुसांईजी जेसलमेर पधारीया। पछे दुजे दीन दोफार रा देहल पड़ी[11] सु बारै डेरा था सु मांहे लावण लागा सु दरवाजां भीड़ गणी[12] घोड़ा डेरा मांय लाया ने हजुर मु चोपदार फतैसिंघजी ने वुलावण ने मेलीयो[13] सु फतैसिंघजी कबीला पोछावण[14] ने कोस पांच गया था सो 3 आदमी मेलीयो के वेगा आवो। पीण पाछा मोड़ा[15] आया सो दरवाजा भड़ीज गया[16] सो रात रा जालोरी दरवाजे रया। सवाईसिंघजी रो डेरो बारै हीज थो।

म्हाराज ही जालोर पधारण नु तयार हुवा सु हाथीयां, घोड़ां ऊठां जिण रया[17]। पछै फतैसिंघजी परवात[18] रा आय ने अरज करी—आप हमार[19] जालोर पधारो सो हमार कांई ताव[20] पड़ीयो। तरे गोरधनजी कयो—महा-राज बीनां पासवांनजी जाय नहीं। तरै फतेसिंघजी केहौ—पासवांनजी बेठा रहो कांम पड़सी तरै पछे हीज काढ़ देसां। पीण म्हाराज जोधपुर छोड़ ने

1 बैठा करके। 2 महिलाबाग। 3 चलूं नहीं। 4 रहेंगे। 5 शांति का वातावरण। 6 प्रस्थान किया। 7 सेना के साथ युद्ध में भेजें। 8 सुरक्षा—मजबूती। 9 भाद्राजून। 10 गिरधारी भगवान् की मूर्ति सेवा पूजा हेतु। 11 भय की आशंका। 12 घणी, बहुत अधिक। 13 भेजा। 14 पहुंचाने के लिए। 15 विलम्ब से। 16 बन्द हो गए। 17 जीण कसे हुए रह गए। 18 प्रभात। 19 अभी। 20 त्वरा, उतावली।

जाय तरै भरम[1] जाय छै। तरे हाथी, घोड़ा, ऊठां ऊपर सु जीण पाछा उतारीया।

पछै जोधपुर री सावुती बंधी[2] नेड़ा वेरा था सु तो बूर दीया[3]। साळ, छतरी, कोट सु नेड़ा लगाव थो सु पड़ाय नाखीयो[4]। पचासा[5] कराया परगना मे नेड़ी छी सुलगाय दीवी, मजबूती संभाई[6]।

नागोर नवाब ईसमाइल वेग ग्रायो थो तिण रा डेरा उठै हीज रया सु असवारी कर कोट देखण नु आयो। कोट देख ने कयो—जायगा आछी, पीण कोट दोळो[7] माटी रो धूड़ कोट फेर करावो[8] सु कराय्यो। ईसमाइल वेग रा डेरा हुरलावां कराया पीण बिगड़ी फोज[9] थी सो घोड़ा हजार 1000 अेक ने पाळा हजार 2000 दोय था पीण तरवार बंदुक कीणी कने नहीं। नागोर आया पछै खरची धांन घास मुलकमांह सु लाय खादो[10] खरची पाछी पड़ी तरै बंदुक तरवार वासंण कपड़ो फोज वालां लीनो ने घोड़ा पीण मारवाड़ मांय सु खरीदीया। डेरा सिरायचा[11] दरबार सु दीया ने वाईस नग (22) तोपां रा दीया। नवाब री फोज सांतरी[12] कर लीवी ने दीखणी मेड़ते था सु जोधपुर ने कुच कीयो सु खवासपुरै चौकड़ी डेरा कीया।

तरै पासवांनजी गोरधनजी सवाईसिंघजी फतेसिंघजी भेळा हुय मनसोवो[13] कीयो। तरे बुधसिंघजी चांपावत ने बात करण नु मैहलीया[14] सो दीखणीयां री फोज में जाय डेरो कीयो। दीखणी जीयाजी, भाऊजी सु मीलीया। नागोर सु सिरदार चढ़ै सु कहीयां[15] मारे ने घास पचासा[16] मुलक मै था सु बागरां[17] बलाय नाखी[18]। उणां री फोज में घास धान रो कसालो[19]।

दीखणीयां कने उकील भंडारी भवांनीदासजी थो जीण ऊपर श्री हजुर साहबां री रीस थी जीणसु दीखणीयां भेळो जाय हुवो ने वेटा केद में था सो भांनीदासजी[20] सु बुधसिंघजी मीलीया ने कयो—भंडारीजी चाकरी

---

1 विश्वास। 2 सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किए। 3 नजदीक-नजदीक के कुए पाट दिए। 4 ढहा दिए। 5 घास के ढेर। 6 सुरक्षा की चौकसी कराई। 7 चारों ओर। 8 परकोटे के चारों ओर धूड़ के टीबे और बनवाओ। 9 साज-सामान से रहित फौज। 10 खाया। 11 छोटा तम्बू वगैरा। 12 अच्छी। 13 विचार। 14 भेजा। 15 कैसे। 16 घास के ढेर। 17 घास का भण्डार। 18 जला डालीं। 19 कमी। 20 भवानीदास

कर देखावो तो ग्रा बखत छै[1]। सो चाकरी कर देखाग्रो तो जोधपुर बड़ता कर देसु[2]। मालकोट में सिरदार बड़ीया था ने भेळा गंगारामजी था सो उण रात तो नीकल जावता तो उरा ग्रावता। पीण ईंदरसिंघ सांमसिंघोत रे लों लागा[3] था ने मोरचा बेस गया था ने तोपां मंड गई सो दीन 3 तो लड़ीया ने गोळा सुं कोट रा कांगरा[4] पाड़ीया[5] तरै गंगारामजी कयो—के सिरदारां नीकलो। जीवता नीसरसो तो धणीया[6] रे ग्राडा ग्रावसो[7] तरै हरीसिंघजी सिंभुसिंघजी बीड़दसिंघजी सारा ही कयो—हमै कुण नीकलण देसी। तरै गंगारामजी कयो—वात कर ने नीसरो। पछै गंगारामजी च्यार ग्रादमीयां सु डबाई कनै ग्राया ने ग्रादमी साथै कवायो के गंगाराम थां कने ग्रावै छै। तरे डबाई कयो—ग्रावो, तरै गंगारामजी डबाई सु मिलीया सो डबाई बैसांण राखीयो जितरै सीरदारां रो रूको ग्रायो के थै तो जाय बेस रया, मांनु काढ़ो सो रूको दीखणीया रे हाथै ग्राय गयो जिणसु दीखणी सेर हुय गया। डबाई बात करण रो कयो तरै दीखणी भाऊजी कयो–हाल, बात मत करो। तरै डबाई कयो—भीतड़ो छै[8] ने रजपूत राठौड़ छै। सो तुरत हटसी नहीं ने ग्रापां नु खरच लागसी। तरै कयो ससतर[9] तो ले जावण दो ने घोड़ा तो ले जावण दां नहीं। तरै सीरदारां कयो—सीरदार दीठ ग्रेक-ग्रेक घोड़ो ले जावणो। तरे सिरदार सात वीसी[10] घोड़ा चढ़ मालकोट सु नीसर उभा रया, तिण री विगत—

1 उदावत निंबाज, 1 छिपीयो, 1 ग्रमरसिंघ लांबीया, 1 भांनीसिंघ नींबोल, 1 नारसिंघ वांसीयै रा, 1 ठाकुर नींबेड़ो, 1 गलणीया वगेरे रा 21 ईकवीस उदावत है—

खांप कुंपावतां री ग्रासामीयां 12 विगत मांढा रे ठाकुर वगेरे बारे[11]।

माधोदासोतां री ग्रासामीयां 10, 1 बीड़दसिंघ, 1 मालमसिंघ, 1 ईन्दरसिंघ, वगैरे दस।

---

1 जोधपुर दरबार के प्रति वफादारी दिखाने का यह ग्रवसर है। 2 जोधपुर में प्रवेश व ग्रावास की व्यवस्था करा देंगे। 3 शस्त्रों के घाव। 4 कंगूरा। 5 गिराये। 6 स्वामी। 7 समय पड़ने पर काम ग्राग्रोगे। 8 डरा हुग्रा है। 9 शस्त्र। 10 एक सौ चालीस। 11 बारह।

जेतावतां री श्रासामीयां 5 केसरीसिंघजी वगैरे ।

श्री दरबार रा मुतसदी कीलेदार भाटी चवांण परदेसी तुरक घोड़ा 70 ।

डवाई री पलटण दरवाजै श्राय उभी रही। मालकोट मांय सु संभालो ले ने[1] नीकलण देवे । श्रेक गांव कुड़ी रो मढलो[2] सोरदार बाप ने बेटो वारै नीकलण लागा तरै नीसरण दीया नहीं के थांरो नांवो य्यादासत[3] में मंडीयो नहीं । तरे मढले कयो—हुं तो मारी घोड़ी छोड़ जाऊँ नहीं, तरै सिरदारां कयो—थांरी श्रेक घोड़ी रे वासते सारा मरां नहीं । पछै सिरदार तो नीसर गया ने मढलो बाप बेटा रय्या सो घोड़ी खांचि सो ले जावण दोवी नहीं । तरे बेटे लारा सुं तरवार काढ़ी ने घोड़ी बाढ़ नाखी[4] ने जगड़ो[5] कर कांम श्रायो ।

पछे सिरदार उठा सु नीकल बळुंदे श्राया, तलाव ऊपर उतरीया । बळुंदे में मुतो[6] मांनो थो जीण सरबरा[7] श्राछी तरा सु कीवी ।

पछै उदावत तो नींवाज गय्या ने हरीसिंघजी बीड़दसिंघजी श्रौर ही फुटकर लोक था सु बळुंदे हुय जोधपुर श्राया । ईंदरसिंघजी दीन दसेक सुं श्राया । दीवणीयां री फोज में भंडारो भांनोदास थो जिण बुधसिंघजी नु कयो—ठाकुरां पासवांनजी ने सवाईसिंघजी रो वचन दीरावो तो हुं बात कराय दीराऊं । तरं बुधसिंघजी वचन दीराया पकावट[8] श्री हजुर री तरफ सुं कराय दोवी ने भांनोदास रा 2 बेटा कीलांणमल, वगैरे था जिणां नु कैद मांय सुं छुड़ाय दीया ।

ज्यां दिनां सीघंवी ग्यांनमल रे दीवांणगी थी ने सींघवी चेनमल मुसायब ने सवाईसिंघजी मु पासवांन जी रो राजीपो सु श्रेक दिन मैं पांच-पांच फुलां री मालावां बगसे[9] ने रसोवड़ा सु थाळ मेलै ने दीखणीयां री कही ऊपर सोंघवी ईंदरराजजी चढ़े ने ठाकुरां फतेसिंघजी रा वेली चढ़ै जिणमै

---

1 तलाशी लेकर के । 2 मध्यम श्रेणी का । 3 याददाश्त-फेहरिश्त । 4 घोड़ी काट डाली । 5 झगड़ा । 6 मुंहता । 7 श्राव-भगत, खातिरदारी । 8 पक्की बात । 9 फूलों की मालाएं इनायत करते ।

पंचोली जोरावरमल चढ़े सु घोड़ा पनरे-वीस लेर चढ़े सु अेक दिन अे जसपाळी उतरीया ने दीखणीया री कही साथीण आई ने खोडां[1] धांन रा काढीया सु घोड़ा ऊँठ पोठीया धांन सु भरीया ने पचासा वीखेरीया[2] ने ऊँठ घास सु भरीया। जीतरे हलकारां जसपाळी आय खबर दीवी के साथीण लुटे छै ने आदमी हजारेक साथे छे। तरे हाकम सिरदारां ने बुलाय बुजीयो—के आपां तो तीन सौ असवार छां ने कहीं साथै अेक हजार असवार बतावै छै—सु कांई कीहो चाहीजे। तरे सीरदार बोलीया—आपां थोड़ा छां सु कजीयो कीयां घासण आवसां[3]। तरै लोक वैतरे[4] जांणसी, जीतरे जोरावरमलजी बोलीया—हमे थोड़ा घणा जांन ने कांनो लेसां[5] तरै कांई आछो लागसी। हमैं तो खड़ावो ज्यु स्यांमजी म्हाराज करसी[6], ज्यु होसी। जमे खातर राखो[7], मार उड़ासां। जीतरे दांनजी भवानीसिंघोत बोलीयो कै पंचोली केवे तो ठीक है। तरे आगा खड़ीया सु कईक तो भरीज ने बहीर हुई ने रावत गांठ कीयां उभा था, जीतरे अे गया ने चौनीजरां हुई[8] सारा केण लागा फतेसिंघजी रे पंचोली सारां ने मराया ने उणां ही देख ने सांमा खड़ीया। तरे फेर जोरावरमलजी कह्यो—हमै सांमो हलो करो[9] ज्यु मार उड़ासां। तरे मुतो सागरमल ने पंचोली जोरावरमल, दांनजी घोड़ा चलाया सु जाय भीळीया ने दीखणीयां री पुठ घीरी[10] ने मोरां बेठा ने दीन पीण मेल पेठो सु दुजो लोक तो कई लारे घालीया सु रोड़ीया[11] पड़ाय ने रावतां पुठै सु रावत मार खांचीयां जाय[12] जीतरे दांनजी गाळ काढ़ी के रावत हुय ने नाठा जावो हो[13]। तरे 2 दोय जणा पाछा गीरीया[14] सु अेक तो दांनजी ऊपर ने अेक मुता सागरमल ऊपर। जरे जोरावरमलजी जांणीयो—हाकम ने मार लेसी तो अनरथ[15] हुसी सु मुता नें मार लीयो ई थो[16] पीण जोरावरमल घोड़ो दबाय ने वरछी बाई सु रावत रे काळा केसां लागी सु मांकड़ी फुट कांठी री भीवड़ी फुट ने खोगीर में जावती बेठी।[17]

---

1 क्यारियां। 2 पोटें। 3 फैला दीं। 4 घास की तरह काट दिए जावेंगे। 5 अपकीर्ति 6 मुंह मोड़ेंगे। 7 जो ईश्वर की मर्जी होगी। 8 आत्मविश्वास के साथ। 9 चार आँखें हुईं। 10 आक्रमण करो। 11 घूमे। 12 छोटे घोड़े। 13 भाग रहे हो। 14 वापस मुड़े। 15 अनर्थ। 16 मार लिया ही होता। 17 रावत के मस्तक से होती हुई घोड़े की पीठ पर काठी के अन्दर तक जाकर धंस गई।

पछै दीखणीया री वात ठेरी। रुपीया 60,00,000 साठ लाख ठेरीय्या सु आदो[1] तो भरणो ने आदा रोकड़ ने परगना सांभर, नांवो, परवतसर, मारोठ, मेड़तो सो जीतरे रुपीया भरीजै जीतरे दीखणीयां निचै राखणा[2]। अजमेर छोड़ देणो ने मुतसदीयां ने ओळ[3] मैं देणा ठेरीया। मुतसदीया में सींघवी भींवराजजी रा वेटा अखेराजजी नु ओळमे देण री पासवांनजी ठेराई। जिण सु सारा सिरदारां अरज कीवी। भींवराज रे मुढ़ै आगै तुगै पटेल भागो जिणरा बेटा ने ओळमे नहीं दीयो चाहीजै तरै ईणा ने दीया नहीं दुजा मुतसदीयां ने ईण माफक ओळ मे दीया—

मुणोयत ग्यांनमल सुरतरामोत
सिघवी .... ने
व्यास मनरूप. मुंहतो वांकीदास।

ईण माफक दीया ने अजमेर बीटली रा गढ़ मैं सींघवी धनराज लीखमीचंदोत भींवराज रो छोटो भाई ने चार। अलेदारखां जमादार महीना 9 हुवा लड़ता ने दीखणीयां घेरो सांकड़ो दीयो। जगड़ो मोकलो[4] हुवो। पीण छोड़ीयो नहीं। पछै खास रूको आयो। तरै धनराजजी अलेदारखां गढ़ सुंप जोधपुर आया।

जोधपुर में पासवांनजी रो चलण ठेहरीयो। भंडारी भवांनीदास ने दीवांणगी पासवांन जी दीराई। सारा मुतसदी खवास, पासवांनां कने डंड[5] लैणो ठेहरीयो। सारो विराड़ मांडीयो[6]। सारा मुतसदी दांन सदारी मेलीया जीण सु पईसो भरीजे नहीं। श्रीजी सा पीण जांणे के चाकर रे घर में पईसो नहीं। पीण पासवांन जी री दबवारी[7] सु फुरमावे नहीं। गोरधन खीची सु पासवांन वैराजी। सु अरज करी - दीखणीयां रो रुपीयो ठैरीयो। सु श्री हजुर रो माल मैं खादो सु देसुं के गोरधन खीची खादो है सु देसी। सु कीतराक दीन तो श्री हजुर धकाई[8] परंत अलवत पासवांन जी गोरधनजी ने पकडण री ने मारण री दुवायती[9] ले लीवी ने श्री जी म्हा. जांणीयो

---

1 आधा। 2 जब तक रुपये भरपाई में दिये जावें तब तक उक्त परगने मराठों के अधीन रखना। 3 ऐवज। 4 खूब, अत्यधिक। 5 दण्ड। 6 भय का वातावरण बना दिया। 7 प्रभाव के कारण। 8 चलाई। 9 इजाजत।

गोरधन सरीखो चाकर नहीं बीगड़ै[1] तो ठीक, नहीं तरै गोसै रुको मेलीयो[2]। तरे गोरधन डैरां सु नास ने सवाईसिंघजी रे डेरे गया। सवाईसिंघजी रो पासवांनजी कने चलण ठैरीयो। खीची पीण आंण बैठो—गोरधनजी पीण श्रीजी रो वस नहीं। पासवांनजी करै सु हुवै। तरे गोरधनजी उठे बेठा कुबदां[3] चलाई सो आप तो आगो रयो। सवाईसिंघजी ने गोरधनजी अेक हुवा। मुलक मैं बीषैड़ो[4] घालण री बात ठैरी।

संवत् 1847 में सींघवी भींवराजजी चलिया ने दीन 15 पछै छोटो भाई धनराजजी चलीयो। पछै अखेराजजी रे नांवे बखसी हुई[5]।

संवत् 1848 मैं पासवांनजी ने जालोर पटे दीवी श्रीजी। तरे ईणां ओधैदार[6] मेलीया। हाकम सींघवी जोरावरमल१, कारकुन मुतो सवाईराम१ पोतदार छांगांणी पनालाल१, सारा ओधैदार पासवांनजी रा जुमे रा गया।

पासवांनजी रे सेखावत[7] जी सु मेल नहीं हो ने सेखावत जी रे कंवर तीन तो चल गया[8] ने भींवसिंघजी मोह वाला[9] हा ने भींवसिंघ ने पासवांनजी रे बेटा तेजसिंघजी टाबर थका[10] लड़ीया था। तिण सु पासवांनजी बेराजी हा सु तेजसिंघजी चलीयां पछै मानसिंघजी ने खोलै ज्यु[11] राखता। देवड़ीजी रा कवरां ऊपर मरजी ने सीरदार सारां री मने—म्यांने[12] ईण तरै सला[13] थी के म्हाराज विरध अवसथा[14] है सु विराजीया जितरे तो ठीक है ने पछै मुलक रा धणी भींवसिंघजी है पीण पासवांनजी रो चलण सु श्रीजी ने अरज करी के सेरसिंघजी ने बारै काढ़ जुवराज[15] पदवी दीराओ तोण री सीरदारां मुतसदीयां रे तुली नहीं[16] ने सींघवी खुबचन्द अरज कीवी सेरसिंघजी ने जुवराज पदवी नहीं दीराइजै। पीण पासवांनजी संवत 1847 रा काती सुद 9 नु सेरसिंघजी नु जुवराज पदवी दीराई। सारा सिरदारां निजर निछरावळ कीवी ने श्रीजी बाग दाखल पासवांनजी कने रेवै[17]। पासवांनजी कने भेरजी पड़ीयार[18] रो चलण।

---

1 बर्बाद होवे। 2 गुप्त रूप से पत्र भेजा। 3 कुचालें। 4 उपद्रव, अव्यवस्था। 5 बखसी का पद दिया गया। 6 ओहदेदार, पदाधिकारी। 7 बड़ी रानी। 8 गुज़र गए 9 प्रिय, लाडला। 10 बालपने में। 11 दत्तक पुत्र की तरह। 12 मन ही मन में। 13 सलाह। 14 वृद्धावस्था। 15 युवराज। 16 जंची नहीं। 17 श्रीजी पासवानजी के पास महिलाबाग के महलों में रहने लगे। 18 परिहार।

पछै सींघवी खूबचन्द नु अरज कर चुक करायो ने बेटो सींघवी हरखचन्द थो सु सोभत हाकम थो जिण ने छोटे भाई वनेचंद नु सवाईसिंघ जी सोभत जाय चुक कीयो ने खूबचन्दजी रो छोटो भाई सीवचंद ने भांणेज लोढो सामल म्हेकरण फोजबंधी लीयां जालोर री तरफ चम्ब थीरोद कांनी फोज ही सु खुबचन्द ने चुक हुवो, सुणीयो तरै वीरड बेठा[1] ने मुलक लूटणो सरू कीयो। हरांमखोरो धार लीयो[2] पछै सिरदार कितराक धोकल कर छांडीया[3]। कुंपावत रतनसिंघ महेसदासोत आसोप रा तो खूबचन्दजी रा जथा[4] में भेळा था सो साहमल सांमल हुआ ने चांपावत कुंपावत, उदावत मेड़तीया सारा छाड़ीया, सेरसिंघजी ने जुवराज पदवी दीयां पछै।

पछै ईतरी आसामीयां छांड नै गाँव मालकोसणी डेरा कीया। मुलक में विषैड़ो[5] पड़तो देखीयो के पासवांनजी सेरसिंघजी मानसिंघजी नु तो जालोर मेल दीना ने श्रीजी ने पासवांनजी बाग मै रैता ने सीरदार छाड़ीया जिणां री सटपट[6] मांहे भींवसिंघजी था। सिरदारां सला[7] कीवी के आपां छाड़सां[8] तरै श्रीजी आपां नु मनावण ने[9] आवसी। तरै लारै[10] कीलेदार खास पासवांन वगैरे हे जिणां री सला आपां सांमल है जीकै भींवसिंघजी ने बारै काढ़ देसी। ईण तरै वीचार ने छाड़ ने, सिरदार बहीर हुवा, सु जुडली डेरा कीया।

पछै संवत 1848 रा फागण वद 12 पाछली (पाछली) प्होर रात रा श्रीजी जोधपुर सु सिरदारां ने मनावण ने कुच कीयो ने डीगाड़ी डैरा कीया, ने फागण वद अमावस बीसलपुर डेरा हुवा। होली गांव भावी री कीवी। चेत वद सातम (7) गोसै[11] असवार हुय सवाईसिंघजी रे डेरे रावटी मै खासो पधरायो[12]। सारा सिरदार हजुर आया पछै मालकोसणी डेरा करायो। सीरदार मुंडा आगै पाळा हाल डेरां दाखल कीया।

म्हाराज कंवार जालमसिंघजी रो पटा मै नांवो थो सु उथाप[13] ने

---

1 मरवा दिया। 2 नमकहरामी पर तुल गया। 3 डंटा करके छोड़ दिया। 4 जत्था, समूह। 5 अव्यवस्था। 6 सांठ-गांठ। 7 सलाह। 8 छोड़ेंगे। 9 मनाने, राजी करने के लिए। 10 पीछे। 11 गुप्त रूप से। 12 श्रीजी महाराज विजयसिंघजी ने भोजन आदि किया। 13 हटा करके।

सेरसिंघजी रो नांवो मांडीयो जिण सु जालमसिंघजी छांड ने घाटे सु उतर ने बगड़ी मारी[1] ने बगड़ी सु बिलाड़ै आया। तरै बीलाड़ा रो लोक श्रीजी रा डेरा था, जठै आया, फीरीयाद कीवी। तरे कूच रो नगारो करायो तरै सिरदार हजुर आज कुच रो नगारो मोकुब[2] रखायो नै गांव बांमसीण रा चांपावत जेगमाल ने जालमसिंघजी कनै मेल कुच कराय दियो।

संवत 1848 रा वैसाख वद 2 सोमवार ने दीन प्होर ऊपर घड़ी दोय आयां म्हराज कंवार भींवसिंघजी ढलैतां सु नायकां सुं मीलीया ने घर रा चाकरां नु ईकठा कर ने बुलाय ने जनांनी दोढ़ी री साळ में बेठा ने मेहलां पासवांनजी नै कीहुक गढ़ रो लोक भींवसिंघजी सु मिल गयां री सुळ-सुळ[3] हुय गई थी। जीण सु खीची दुरगा ने हजुर कनै मालकोसणी मैलीयो। भींवसिंघजी जनांनी दोढ़ी मांय सु कुंकम री टीकी दे ने नाड़[4] देखावण रो मीसकर[5] बारै पधार जनांनी दोढ़ी रा किंवाड़ मंगळ कराय[6] ताळो दीराय दीयो[7]।

जनांनी दोढ़ी रो दरोगो नाजर संतोकीराम हो सु डेरै रोटी खावण ने गयो थो ने कांमेती सींघवी हींदुमल अनोपचंदोत हा सु तलैटी रोटी खांवण नुं गयो थो सो भींवसिंघजो बारै पधारीया। तरै जनांनी दोढ़ीदार पंवार नरसिंघदास आपरो तरवार भींवसिंघजी ने झलाय ने मुडा आगै हुय गयो ने जनांनी दोढ़ी रा पावड़ीया उतर गया। तरै घरू[8] चाकर था सु मुढ़ा आगै[9] हुय गया। भींवसिंघजी रे माथं केसरीया तो लपैटो हो ने जांमो गुलाबी दुपटो सु कमर बांधीयां सुरजपोल हुय सभा मण्डप मै पधारीया। उठै ढलेता रो डेरो थो सु ढलैता ने फांटोया[10] हा सु ढलैत ही लारे हुय गया[11]। पछै दोढ़ी मै हुय भोजनसाळ मै उभां ही ईसी फुरमाई के सेख[12] चढ़े है। ईसो तोफो उठाय ने गढ़ री पोळां मंगल कराई ने नगारखांना कांनी री दोय-दोय तोपां री अवाजां कराई नै कीला रो मुसरफ सीरीमाली देवजी हो जीण कुचीयां देण री हटचट[13] कीवी तरे पकड़ कैद कीयो ने

1 घाटी से उतर करके बगड़ी पर कब्जा किया। 2 स्थगित। 3 अफवाह, कानाफूसी। 4 नाड़ी, नब्ज। 5 बहाना बना करके। 6 बंद करवा करके। 7 ताला लगवा दिया। 8 निजी। 9 आगे चलने लग गए। 10 अपनी ओर मिलाया। 11 पीछे हो गए। 12 कुल-नायक। 14 आनाकांनी।

कुचीयां मंगाय लीवी । तरै खीची सुरतो ने ग्हैलोत प्रथीराज आय अरज कीवी के श्रीहजुर वीराजीया ने आप अजोग[1] करावो हो । तरे धायभाई रामकीसन तकरार कर ने ईणां दोनां ही नै जालो रा कोठार में बैठांण दीया सु आथरणा[2] बारै काढीया ने सींधवी जोधराज गढ़ ऊपर गयो । सारा चाकरां यु जांणीयो के ग्हैलोत प्रथीराज नु श्रीहजुर खास रुको दे ने मेलीयो है । जीण नु महाराज कंवार बारै पधारोया है ईसो जांण सारा चाकर आपो आपरा[3] काम ऊपर गया ने पासवांनजी पड़ीहार भेरूदास रे ने मुता गुमान चंद रे नांवै कागद दीयो तोण मै सारो हकीकत लीख मेली । सो ईणां श्रीहजुर मै मालम कीया ने श्रीहजुर सिरदारां नु वंचाया ने महाराज कंवार भींवसिंघजी पीण सीरदारां नु कागद दीया ने श्रीहजुर मै अरजी भींवसिंवजी ईण मुजब लीखी –कै हुं सेख रा भेय सु जीव रा डर सु बारै आयो छुं सो मोनै आप कीलादार ज्यु समझसी । अे समाचार रात पाछलो रा पोता[4] तरै परभातै ही सवाईसिंघजी वगेरे सारा सीरदार श्रीहजुर में आय अरज कीवी –के आदा सिरदार ता पासवांनजी कने दीलासा मुदे मेलणा[5] ने आदा अठै श्रीहजुर कने । पछै सवाईसिंघजी कही–हुं तो कदमां हाजर रहेसुं । पछै कंवर जालम-सिंघजी ने सारा सिरदारां वचन दीरायो कंवर पदवी रो, ने जालमसिंघजी संमत 1848 रा वेसाख वद 7 रूसनाई[6] री वखत पगे लागा तरे गोड़वाड़ ईनायत कीवी । खास रुको देसूरी रा कीलादार ने नांव लीखाय ने दोड़ीदार मगजी नु दे ने साथै मेलीयो ने आपरे पत्ररावण रा कांनां रा मोती हा सु वगसीया[7], कीमत रुपया 9000) नव हजार रा ।

सिंभुसिंघ दोलतसिंघोत पड़ीहार भेरजी लारे अरज कराई के सीरदार स्हैर जाय है सु ठीक नहीं । तरै श्रीहजुर सुं धायभाई सींभुदांन ओजा (झा) रामदत्त नु जाधपुर मेलीया । पछै पाछली रात रा बाग[8] माथै गढ़ ऊपर सुं गोळा चलाया ने तीजे पोर[9] सेख रे ने गढ़ रे लोक[10] रे जगड़ो हुवो ।

पछै पासवांनजी कना सुं केईक चाकर गढ़ ऊपर चढ़ गया । भंडारी

---

1 अप्रिय कार्य । 2 सायंकाल । 3 अपने-अपने कार्य से । 4 पहुंचे । 5 तसल्ली दिलाने के लिए भेजना । 6 सायंकाल दीया बत्ती के समय । 7 अपने कानों में पहने हुए मोती बख्शीस में दिए । 8 मांयला बाग । 9 प्रहर । 10 गढ़ के अन्दर रहने वाले सैनिकों का ।

सीवचन्द करमसोत भोमसिंघ और ही घणा चाकर गढ़ ऊपर चढ़ गया ने सींघवी ग्यांनमल पासवांनजी ने छोड़ीया नहीं ने सारा ही सोरदारां ने फाड़[1] ने श्रीहजुर साहबां रा डेरा गांव डोगाडी कराया तीण सु भींवसिंघजी ईसी फुरमायी के मारै सुपेनो[2] हुवे तो सींघवी ग्यांनमल ने खीची खींवा[3] ने हाथां सु मारसुं । अठा सु सिरदारां ने ग्यांनो ले गयो है बाकी चाकर मुंहता लालजी वगैरे और ही चाकर गढ़ मे पेस गया[4] ।

सेर मैं भींवसिंघजी रो बंदोबसत हुय गयो[5] । दरवाजा भड़ दीना[6], बारीयां मांय[7] कर लोक दवायती[8] सु आवै जावै । पासवांनजी श्रीहजुर मैं रुको मेलीयो के मने भींवसिंघजो मार नाखसो । तरै पोकरण रा ठाकुर सवाईसिंघजी, रास ठाकुर जवांनसिंघजी वगैरे नें म्हाराज बाग मेलीया सो ईणां पासवांनजी ने कहा—आप गढ़ माथै हालो । आप केसो ज्युं भींवसिंघजी कर लेसी । ईण तरै रा बुता[9] दे ने सवाईसिंघजी म्हाडोळ मैं बैठाणीया ने जुहार वगैरे रा डबा गेणा[10] रा पासवांनजो रा था सु म्हाडोळ मैं मेल लीना[11] ।

वैसाख वद 10 सांम सींजीया[12] रा म्हाडोळ में बैठा । तरै सीरदारां रा आदमी चूक[13] कर तरवारां री हुरलां सुं[14] मार नाखीया। पासवांनजी नें चूक करण मैं गांव पली रा रूपावत सिरदारसिंघ थो ने पासवांनजी रो धन कीतोक सारो[15] सवाईसिंघजी जवांनसिंघजी लूट लीनो । पछै बीरांमणां कना सुं पासवांनजी ने कागे दाग दीरायो[16] । पासवांनजी ने चूक हुवां री घणा दिन तांई श्रीहजुर ने खबर पडण दीवी नहीं ।

पछै सिरदारां विचारीयो – कांम तो हुय लियो है तरै श्रीहजुर नें ले ने कूच उठा सु कीयो सु जालमसिंघजी ने तो मालकोसणीज राखीया ने श्री-हजुर रा डेरा वेसाख वद 14 चैनपुरै हुवा ने वेसाख सुद 6 सुकर[17] ने डेरा

---

1 विघटित करके । 2 सुपुर्द । 3 खीची खींवराज । 4 प्रवेश कर गए । 5 शहर की व्यवस्था भींवसिंह के नियंत्रण में आ गई । 6 बन्द कर दिए । 7 छोटे-छोटे दरवाजों से । 8 अनुमति से । 9 झांसा, झूठा विश्वास । 10 आभूषणों के डिब्बे । 11 रख लिए । 12 सन्ध्या के समय । 13 धोखा । 14 तलवारों की नोक के प्रहारों से । 15 अधि-कांशतः । 16 ब्राह्मणों से दाह-संस्कार करवाया । 17 शुक्रवार ।

बालसमंद हुवा ।

म्हाराज श्री विजैसिंघजी लोढा भाहमल म्हैकरण नु खातर लीखी[1] अर लीखीयो—भींवसिंघ सुं मीलीयोड़ा सोरदार है तीणां रा गांव बीगाड़ो[2]। तरै साहमल सिरदारां रा गांव बीगाडणा सरू कीया। मुलक कीतरोक लूट लीयो। म्हाराज श्रीविजैसिंघजी कने नीरंतर मरजी रा सोरदार[3] ईतरा हा, भींवसिंघजी री सटपट विनां[4]।

वीगत—

1 कुचामण रा ठाकुर सुरजमलजी सोभागसिंघोत

1 मीठणी रीडमलसिंघ सगतसिंघोत

1 वळदे फतेसिंघजी स्यामसिंघोत

1 रीयां बीड़दसिंघजी बखतावरसिंघोत

1 चंडावळ हरीसिंघजी सेरसिंघोत

संमत 1849 रा भादरवा वद 12 मंगलवार ने श्री हजुर रा डेरा डीगाडी हुवा ने मीगसर वद 11 डीगाडो रा डेरा श्रीहजुर म्हाराज श्रीविजैसिंघजी री बरसगांठ थी सु फुरमायो के दरबार तो मोतीयां विनां करां नहीं तरै मेड़तीये पाड़सिंघ जालमसिंघ वैद अमरचंद बीसटाळो कर महाराज कंवार जालमसिंघजी कना सु मोती पाछा नीजर कराया। पछै मरजी रा सोरदार[5] ने सींघवी अखैराज बगसी पुसकरणो फतेचन्द ईणां सवाईसिंघ जी नु कह्यो थै मोकला[6] दीन हुवा कीरीया[7] कीवी दस महीना हुवा म्हाराज बारै[8] विराजीया है ने जालमसिंघ जी ने लोढा मुलक लुटे है। ईतरा दीन तो ना तो थांरे सांमल हा ने ना जालमसिंघजी लोढा वगेरे म्हांनू केबावता जीणां सांमल हा, म्हाराज कने बेठा देखता हा, तमासो, पीण हमै आगीज[9] तो ईण तरै रही नहीं चाहीजै। सु हमै के तो बात ढाळे लगावो[10] नहीं तो हमै[11] म्हे कुंपावत ने मेड़तीया सारा भेळा हुय ने ज्युं हुंसी जाहुं म्हाराज ने गढ़ दाखल कर

1 विश्वासपूर्वक इच्छित संदेश दिया। 2 उपद्रव, लूटपाट करो। 3 खास, विश्वास के कृपापात्र सिरदार। 4 भींवसिंहजी से मतभेद रखने वाले। 5 विश्वसनीय कृपापात्र सिरदार। 6 बहुत। 7 सेवा-शुश्रूषा। 8 बाहर। 9 आने वाले समय में। 10 व्यवस्था ठीक करो। 11 अब।

देसां। तरै सवाईसिंघजी विचारी के हमैं बात लेह लगाय देणी[1]। सवाई-सिंघजी रा डेरा बेठा गोरधन जी खीची डोर हलावै ज्युं हाले।[2] सवाईसिंघ जी कही भींवसिंघजी नु सीवांणो दीरावो ने म्हाराज बिराजीया जीतरै तो ठीक नें पछै राज रा मालक भींवसिंघ जो है। थे सीरदार दुजा कंवरा सु सटपट[3] नहीं करो। म्हाराज देवलोक हुवा, पछै भींवसिंघ जी नें गढ़ दाखल करावणा ईतरी बात रो बचन देवो तो भींवसिंघ जी नु गढ़ सुं उतार देसुं नें थे म्हाराज ने हांकारो भरावो[4]। तरे मरजी रा सीरदारां अरज करी—भींवसिंघ जी नु सीवांणो दीराईजै सु गढ़ सुं उतारां सु महाराज ना फुरमायो[5]। पीण मरजी रा सीरदारां मांडांणी हांकारो भराय्यो[6]। भींवसिंघ हजुर सुं अरज कराई—मने सीवांणो बगसावो हो सु पांचु सिरदार साथै चाल मनु पोंछाय देवो ने मारा (म्हारा) चाकर कीतराक तो साथै चालसी नें कीतराक सीरदार चाकर मांसु (म्हांसूं) मीलीया जीकै अठै रेहसी जीणां सु आप खेचल[7] नहीं करै ने आप कोरोड़ दीवाली[8] राज करो। पीण पछै मारे (म्हारे) सांमल न्हे ईतरी बात रा बचन धायभाई सींभुदान सींघवी अखैराज चंडावळ, रीयां, बळुंदा, कुचामण, मीठड़ी रा सिरदारां कनें बचन दीरावो तरे ईणां आसामीयां ने बचन देण रो श्रीहजुर सु फुरमायो तरै सिरदारां अरज करी के मे श्री खावंदां रा सांम धरमीं चाकर छां नें मांने पोचावण ने मेलावसो ने खावंदा री ईसीं मरजी दीसै हे सो भींवसिंघ जी अठा सुं बहीर हुवा ने पछै खरच करावसो ने चाकर बचन लारैं मरसीं। तरैं हरांमखोरी आवसी सु मे तो बचन देवां नहीं। तरै हजुर जांणीयो ईणां सीरदारां रा बचन बानां भींवसिंघ गढ़ सुं उतरे नहीं। तरै चंडावळ रो उकील पंचोली रीषीकेस १, बळुंदा रो उकील पंचोली जोरावरमल १, कुचांवण रो उकील स्हा नेतसी १ वगेरे पांचु सिरदारां रा उकीलां ने कड़ा दीया[9] ने सीरदारां रा जीला रा अेक-अेक, दोय-दोय गांव लीख दीया नें सिरदारां री घणी खातर[10] कर बचन दिरायो।

1 अब व्यवस्था पूर्ववत् कर देनी चाहिए। 2 सवाईसिंघजी गोरधन की सलाह अनुसार कार्य करते थे। 3 गुफ्तगू, मेल-मिलाप। 4 सहमति दिलाओ तो। 5 इन्कार कर दिया। 6 जबर्दस्ती सहमत किया। 7 परेशान। 8 करोड़ों वर्षों तक। 9 पुरस्कार रूप में कड़ा दिया। 10 मान-सम्मान।

संमत 1849 रा चेत सुद 8 भींवसिंघ जी गढ़ सूं निचै उतरीया ने उण दीन रात रा घड़ी 1 रात गयां श्रीहजुर गढ़ दाखल हुवा ने ठाकुरजी श्री मुरली मनोहरजी रा दरसण कर ने खावका रा म्हेल में पधारीया ने भींवसिंघ जी रा डेरा गांव झंवर हुवा ने म्हाराज रातो-रात सींघवी अखैराज ने सेख ईसमाइल बेग ने और ही परदेसी लोक साथे दे ने भींवसिंघ जी ऊपर वीदा कीया[1] ने भींवसिंघजो कनै पोकरण १, पाली १, चंडावळ १, बळुंदो १ रीयां १, कुचामण १, मीठड़ी १, फेर ही मोटा छोटा सीरदारां री आसामीयां ने गढ़ मांय सुं वीरादरीयारी लोक ले गया सो चढ़ीया पाळा कर आदमी हजारेक आसरे[2] ने अखैराज बगसी ने परदेसी लोक वगेरे सांवठो[3] साथ भेळो कराय ने सांवठो लोक थो ने अखैराज जी नु फुरमायो कै भींवसिंघ नु पकड़ लावो ने सीरदार लोक सांभे[4] जीणा नु मार नाखो।

पछे संमत 1849 रा चेत सुद 9 दीन उगता गांव झंवर जगड़ो हुवो सो सेख ईमाम बेग पासवांन जी रो तालुकदार थो सो पासवांन जी ने मारीया 1 जीण सु झगड़ो घणो तन दे ने कीयो ने भींवसिंघ जी रे साथै राठौड़ हा जीणां पीण झगड़ो भारी कीयो। बचना रा गाडास सु[5] ईणां वरसां में ईसो जगड़ो हुवो नहीं ने बाकी रा सीरदारां स्वाईसिंघ जी कवायो के मे तो अठै सारो दीन जगड़ो करसां ने भींवसिंघजी ने ले ने नीसरो। थांरो ठीकांणो कांकड़[6] ऊपर है सो उठा वीना दूसरी जायगां ठेहर सकसी न्हीं। तरे भींवसिंघ जी नु ले स्वाईसिंघ जी तो प्होकरण चढ़ीया ने लारे सीरदार आथण तांई[7] जगड़ो कीयो। भींवसिंघ जी रा साथ में ही गढ़ ऊपर सु तोपखानो ले गया था सु माने म्हाराज री फोज में ही हो परदेसी मोकला कांम आया ने भींवसिंघ जी रे साथ रा ही घणा काम आया। ईतरा सीरदार कांम आया—

1 कुचामण ठाकुर सुरजमल जी
1 चंडावळ ठाकुर हरीसिंघ जी

---

1 भींवसिंहजी के ऊपर आक्रमण करने के लिए सेना भेजी। 2 लगभग। 3 पर्याप्त। 4 भींवसिंहजी के पक्ष में सामना करने के लिए जा सामना करें। 5 अपने वचनों पर दृढ़ रहने वालों से। 6 सीमा। 7 सायंकाल तक।

1 बळुंदे ठाकुर फतेसिंघ जी रे गोली 1 तीर लागो सु घायल हुवा ।
1 नोखा रा ठाकुरां रो भाई रूपसिंघ बखसीरामोत
1 सेवरीया रो ठाकुर दांनसिंघ भवानीसिंघोत
——
5

सींघवी जोधराज भींवसिंघजी साथे पोंहोकरण गयो । जवर[1] री राड़ में सीरदार कांम आया जीण रा कांमेतीया नु त्यां पींडा[2] लारे रया जीणा ने खास रुको दे ने जोधपुर बुलाया ने कुचामण, चंडावळ रे डेरे मातमपोसी करावण पधारीया, ने बळुंदे ठा. फतेसिंघ जी रे लोह लागा सु सुख पूछण ने पधारीया ने खातर फुरमाई ने फुरमायो के—करां कांई ? माने भींवसिंघ दुख घणो दीयो तीण सु ईतरी हुई ने थे च्यारु सीरदार प्हेलां अरज कीवी थी जीण री माने सरमच[3] घणी है ने हरीसिंघ जी सुरजमल जी काम आया सु भींवसिंघ कने न्हीं आया है म्हारे कने आया है ।

पछे कुचामण सीवनाथसिंघ जी रे नावे ने चंडावळ वीना हुकम नाव पटा लीख दीया ने सेवरीयो रामसिंघ जी लारे छुटो हो ने अेवज में लाडपुरो हो सो सेवरीयो जोधां नीचे हो सु (35) पेंतीस वरसां सु दान जी काम आया । तरे रतनसिंघ जी रे नावे पाछो लीख दीयो ने रूपसिंघ जी रे बेटा रे नावे गोठण लीखीजी ।

पछे म्हाराज कंवार भींवसिंघ जी री गाळमेल[4] में गोड़ाटी चोरासी मेड़ता वाटी वगेरे रा हा ने सारा मुलक रो अमल उठाय दीयो[5] थो तीण ऊपर बगसी सिंघ० अखैराज नु मेलीयो सु ठीकांणा कना सु पेसकसी लीवी ने गढ़ पाड़ीया—

वीगत—

1 गुलर, 1 जावळो, 1 भखरी, 1 बडु, 1 बोड़ावड़, 1 वालड़, 1 बुडसु, 1 वीदीयाद, 1 मोरडे—ईणा सारा कने पेसकसी लीवी ने गुलर मोरडे रा

---

1 भंवर । 2 स्वयं । 3 शर्मिन्दिगी । 4 शासन में । 5 महाराजा विजयसिंहजी का शासन समाप्त हो गया था ।

गढ़ पाडीया[1] । बीदीयाद रो वखाळ[2] उदावतां री जठे गढ़ पाड़ीयो जठे ठा. अजीतसिंघ जो कांम आया । बांचवा रो गढ़ पाड़ीयो चोरासी गोडाटी नु पाधरी कीधी[3] ।

पछे श्री हजुर प्रवतसर रो प्रगनो कंवर जी जालमसिंघजी नु लीख दीयो ने पीतांबरदास नांवे उदेपुर रो मुसदी हो सु प्रवतसर कंवर जी कांनी सु हाकम रयो, तीण वड़ी जबर हाकमी कीवी सु परवतसर हनोज[4] पीतांबर वारा वाजे है[5] दोय सो दस गांव ही खालसे कर लाट लीया[6] जीण री जमा-बंधी कानुगां कने है सारा ठीकांणा खालसे कर लाट लीया ।

श्री विजेसिंघजी सोजत कंवरजी श्री जालमसिंघजी नै दीवी । म्हाराज कंवार सांवतसिंघ जी रा कंवर सूरसिंघजी हजूर रा पोता वरस 10 में सु जीणा सु लोढा स्हामल री नै वेद अमरचंद री रूख सु अमरचंद श्री हजुर में अरज करी सूरसिंघजी रो नावो कंवरपदां में राखसां । अे बालक है ईणा रो डर न्हीं । सु स्हामल ने राजी राख ने प्होकरण मेलसां । भींवसिंघ जो स्वाईसिंघ जी नु पोकरण मांय सु काढ पोकरण छुड़ाय लैसां ।

अमरचंद ईसी अरज कर ने दीपावत भवांनीदासजी भंडारी दोलत-राजोत दोढ़ीदार सोवावत खींवकरण सींघवी ग्यांनमल ईणा ने सोभत ले गया । तरै श्री हजुर सु ईकंत[7] मै ग्यांनमल ने फुरमायो—के तुं फतेचंद रो बेटो छै सो तु चवड़ै[8] तो आवजे मती । थारो घर थैट सु[9] स्यांमधरमी[10] छे । सो अै सारा कै ज्युं कीजं ने सारा समाचार और तरै सुणै[11] तो थारा सला मै आवै ज्युं कीजै । नीगे[12] राखवो कीजै ।

पछै अे सारा सौभत गय्या । कीला मै स्हामल रो अमल करायो ने साहमल लिखंत करायो कै सुरसिंघ जी ने बारै[13] काढणा ने तरबीयत कर

---

1 ढहा दी और अपने कब्जे में ले लिया । 2 उपद्रव । 3 विद्रोह समाप्त करके अपने नियन्त्रण में ले लिया । 4 अभी तक, हाल तांई । 5 कहलाते हैं । 6 कृषि उपज का जागीरदार को मिलने वाला भाग वसूल किया । 7 एकांत । 8 खुल्लमखुल्ला । 9 प्रारम्भ से ही । 10 स्वामिभक्ति में । 11 कहें । 12 विपरीत स्थिति देखें तो । 13 ध्यान । 14 बाहर ।

लैणी। कांम-काज री श्री हजुर ने अरज कर लैणी। अरज साहमल री मंजुर। सारो कांम बीगतवार साहमल करसी। सारा जणा लिखत लीखीयो ने साखां घलाई। तरै सींघवीं ग्यानमल साख घाली नहीं ने लिखत पुरो सही करण दीयो नहीं। ईमी कही कै श्रीहजुर रो अपमान हजुर विराजीयां ही करण देवां नहीं। तरै उण लीखत मै अड़वी[1] पड़ गई।

श्रीजी साहबां री विरद अवसना[2] सरीर मै बायरो[3] कारण लखायो सु सरीर सारो रेह गयो[4]। म्हाराज कंवार सेरसिंघजी ने म्हाराज मानसिंघजी जालोर हा सु सेरसिंघ जी नु सींघवी फतैमल जीतमल अरज करी के अठै तो गढ़ आपणै हाथ है ने श्री हजुर सायबा रो सरीर बे-आराम है सु आप जोधपुर पधारो। तरै सेरसिंघजी जोधपुर आया ने श्रीहजुर मै मुजरो कीयो। तरै श्रीहजुर फुरमायो—के थने अठै नहीं आवणो थो।

पछै संवत 1849 रा असाढ़ वद 10 बुध हजुर री असवारी मींदरां दरसण करण नु हुई। पाछा पधार खेद मै पोढ़ीया[5]। जीवणी[6] पसवाड़ा री पासली मै पीड़ा उठी। अरोगीया नहीं, थाळ आयोड़ो पुठो[7] गय्यो। उना पांणी[8] सु पांसली सैंकी जीण सु पीड़[9] कम पड़ी। पछै रात रा जुर लखाई[10]। वेद गढ़मल नाड़[11] देख ने कयो—आ जुर आछी नहीं है। आखीयाँ रे मीट[12] रहै। पछै असाढ़ वद 14 री दोलतखानां मै पधराया, दांन-पुन कहो, आछी वीध हुई[13]। म्हाराज कंवार सांवतसिंघ जी सूरसिंघ जी दोलतखाना मै आया, रुपीया 2200) बाईसो पुन कराया ने पाछा जनांना में गया।

संमत 1849 रा असाढ़ वद 14 आधी रात रा देवलोक हुवा। हजुर देवलोक हुआ जिण वखत आदी[14] रात रा कंवर सेरसिंघजी जनांना रा डागला[14] हुय ने सेवा में पधारीया। ठाकुरजी श्री मुरलीमनोहर जी रा सेवग, पासवांन जी री वडारण[16] सुखसोभा री मारफत सेरसिंघ जी सुं

---

1 अड़चन। 2 वृद्धावस्था। 3 बात रोग। 4 सारे शरीर में लकवा मार गया। 5 अस्वस्थ अवस्था में लेट गए। 6 दाहिनी। 7 वापस। 8 गरम पानी से। 9 पीड़ा। 10 ज्वर हुआ। 11 नाड़ी। 12 अर्द्धनिद्रा। 13 विधि विधान ठीक से किया। 14 आधी। 15 छत। 16 दासी।

मीलीयोड़ा था, ने कुंपावत सादुलसिंघ ने चांपावत जालमसिंघ गीरधर-
दासोत देवलीया रो लोटोती ओर ही सीरदारां री आसामीयां पैली तो
दोलतखांना रा चोक में हा ने हजुर देवलोक हुवां पछै सिणगार चोकी बैठा
था सो सेरसिंघजी सेवा मांय सु आया सो दोलतखांना कने हुय अंबखास रे
झरोखै हुय सिरदारां कनै कूद पड़ण रो उपाव कीनो ने पधारता था सो
धायभाई सींभुदान, सींघवी अखैराज, बखसी भंडारी भांनीदास, ओजो (झो)
रामदत्त—अै ईतरा जणा बेठा। पोकरण सवाईसिंघजी नु कागद लीखता हा
जीतरे सेरसिंघजी पधारीया, ने दोढ़ी ऊपर दुसाको बळतो हो ने दोढ़ीदार
आईदांन, धांधळ उदेराम और ही बंदोबसत हो सो भोजनसाळ मैं सेरसिंघजी
चढ़ीया सो धायभाई सींभुदान रे निजर आय गया। तरे कमर पकड़ ने
दोलतखांना री उलोड़ी गेह[1] में ले आयो। जद[2] सेरसिंघजी कयो—के तु
म्हाराज रो धायभाई छै, ने म्है म्हाराज रा फरजन[3] छां। म्हारे ने भींव-
सिंघजी बाग बाबत दोख[4] छै, ने थे भींवसिंघजी नु बुलावसो सु मांरी माटी
खराब मत करो। म्है बारै नीसर म्हांरो जीव बचावसां। बारै मांनसिंघजी
छै, जालमसिंघजी छै ने तीजा मैं ही हुसां ने नहीं जांवण देवो तौ मांनु ही
हजुर भेळा बाळ दो[5], सो सींभुदान धायभाई मांनी नहीं, ने कयो—म्हाराज
रा सुधारा[6] रो बखत छै। सो थै हट मती करो। मे तो आपरे हीज वासते[7]
उपाव[8] करां छां। धायभाई सेरसिंघजी री कमर पकड़ी तरे सेरसिंघजी
आखड़ ने पड़ गया[9] सु जिवणा गोडा[10] रे लागी। पछै खावका मै ले जाय
चोकी[11] राखी। धांधळ उदैराम ने ओजो (झो) चौकी बेठा, ने वद अमावस
(") सोमवार श्री हजुर मंडोर दाखल हुवा। रंगसोभा गायण नागोर थो,
सो सत कीयो। कीलादारी खीची सुरता रे थी मुसरफ ओजो रामदत हो ने
दीवांण भंडारी भांनीदास हो, बगसी सींघवी अखैराज रे थी। धायभाई
सींभुदान वगेरे चाकर हजार हा सु गढ़ सैहर रो बंदोबसत कर लीयो।

जालमसिंघजी, मानसिंघजी, लोढा साहमल—अै सांवठी[12] फोज लै

---

1 नजदीक जगह। 2 तब। 3 सन्तान। 4 अनबन। 5 महाराजा विजयसिंहजी के साथ ही जला दो। 6 दाह-संस्कार का अवसर है। 7 आपके लिए ही। 8 उपाय। 9 हड़बड़ाकर-सन्तुलन बिगड़ने से गिर गए। 10 दाहिने गोडे के। 11 पहरा। 12 पर्याप्त।

सेखावतजी रे तलाब आय डेरा कीया, अर कैवायो के मांनु[1] गढ़ मे आवण दो। तरै म्हांलां[2] केवायो कै श्रीजी सा रा 12 दीन हुवां पछै देखीजसी[3]। तरे पाछो फेर केवायो के मांने कांण करावण[3] ने तो आवण दो। तरे लखणा पोळ रे बारै दीवांण, बखसी, धायभाई वगेरे तापड़ विछाय दीवी। जालमसिंघजी, मानसिंघजी कांण करावण ने छड़ा साथ सु आया[4]। दसतुर मुजब बोल बतलावण हुई, पाछा डेरे गया।

पछै धायभाई सींभुदान, सींघवी अखैराज वगेरे भींवसिंघजी नु बचन दीयो थो— म्हाराज विजैसिंघजी पछै राज रा धणी थाने करसां सो श्रीहजुर देवलोक हुवा। तरे भींवसिंघजी ने वुलावण ने कासीद मेलीया पोकरण ने[5]। भींवसिंघजी पोकरण सु संमत 1849 रा आषाढ़ वद 7 रे सावा[6] जेसलमेर रावळ मूलराज रै पोती ने रायसिंघजी री बेटी नांव सीणगार कंवर ने परणीजण ने पधारीया था, सो सवाईसिंघजी कागद मालम कीया।

तरै म्हाराज भींवसिंघजी उदास हुवा ने फुरमायो— मैं कपुत हुवा सो खांद रे ही आडा आया नहीं[7], और ही उदासी री बातां फुरमाई।

पछै संपाड़ो[8] कर अंजली दीनी, सपेद पोसाख[9] पेर सारा साथ ने भदर कराया[10], ने वेद मेघो, अवदा री सवाई, सींघवी जोधराज अे भदर हुवा नहीं। तिणां ऊपर वैमरजी[11] हुई सो सवाई ने तो जोधपुर पबार काढ़ दीयो ने मैघा ऊपर करड़ी रीस[12] हुई सु जेर[13] खाय मुवो।

पछै असवार होवण री सवाईसिंघजी ताकीद कीवी। रावळ जीं मातमपोसी करावण नु आया, ने महाराज भींवसिंघजी जेसलमेर सु ताकीद सुं चढीया सो पोकरण हुय जोधपुर पधारीया, सु नाळा री वारी हुय ने गढ़ दाखल हुवा संमत 1849 रा असाढ़ सुद—घड़ी दोय रे तड़के।

---

1 हमें। 2 गढ़ के अन्दर के लोगों ने। 3 देखी जाएगी। 4 मातमपुर्सी, संवेदना प्रकट करने हेतु। 5 दोनों अकेले-अकेले शस्त्ररहित। 6 पोकरण को संदेशवाहक भेजा। 7 विवाह का लग्न-दिन। 8 अन्तिम समय में कंधा भी नहीं दे पाया। 9 स्नान। 10 सफेद वस्त्र। 11 सिर मुंडवाये। 12 नाराजगी। 13 अत्यन्त क्रोध। 14 ज़हर।

म्हाराज श्री विजैसिंघजी रे राजलोक कंवरां री विगत—

म्हारांणी जुझणु[1] रा सेखावत सादाजी री पोती नागोर कंवरपदे थकां[2] परणीया था। सेखावतजी रे करायोड़ो ठाकुरदुवारो[3] दोढ़ीदारां री गवाड़ी[4] रे कनै छै। जीणा रे कंवरजी फतेसिंघजी रो जनम 1804 रा सांवण वद 4 रो, सु ग्रे पाटवी कंवर था, सो श्रीजी वीराजीयां थकां देवलोक संमत 1834 रा काती सुद 8 गुर हुवा।

कंवर फतैसिंघजी रे राजलोकां री विगत—

कंवरांणीया री—

जेसलमैरी जी रावळ अखैराज री बेटी
छोटा भटीयांणीजी–देवरीया भाटी सायबसिंघ री बेटी डोलो ग्रायो थो
हाडीजी कोटा रा म्हाराव ...... री बेटी सु कोटे जाय परणीया था।
चूंडावतजी देवगांव रा रावत राघोदास री बेटी
चवांणजी पबा गोरधनोत री बेटी, गांव सर पधार परणीया
चवांणजी गांव रोहीचा रा।

दुजा कंवर सेखावतजी रे भोमसिंघजी जीणां रो जनम 1806 रा दुतीक भादवा सुद 10 रो जनम, ने संमत 1825 रा वेसाख वद 13 सीतला नीकल देवलोक हुवा,[5] जीणां लारे भटीयांणीजी सत कीयो[6]। सीरे बज़ार[7] होय पधारीया ने मंडोवर दाग हुवो[8]।

कंवर भोमसिंघजी रे राजलोकां री विगत—

1 चवांणजी—रोहीचा रा चवांण उदैसिंघजी री बेटी छत्रसिंघजी री वेन[9] जीणरे कंवर भंवरजी भींवसिंघ संमत 1822 रा ग्रसाढ़ सुद 12 रो जनम, सो भींवसिंघजी नु फतैसिंघजी रे खोलै दीना। संमत 1850 रा पोस सुद 15[10] राजतीलक वैठा, ने संमत 1860 रा काती सुद 4 देवलोक हुवा।

---

1 झुंझुनु। 2 नागौर में कंवर पद पर थे जब। 3 ठाकुरद्वारा। 4 मोहल्ला। 5 शीतला माता निकलने से देहान्त हो गया। 6 सती हुई। 7 मुख्य बाजार। 8 दाह संस्कार। 9 बहिन। 10 पूर्णिमा।

2 बहु भटीयांणीजी देवरोया रा भाटो रावळोत साहबसिंघ री बेटी नांव चांदकंवर—डोलो आयो थो, सो सती हुवा ।

3 तीजा कंवर सेखावत जी रे सिरदारसिंघ जी रे संमत 1808 रा जेठ सुद 13 रो जनम ने संमत 1825 रा वैसाख वद 7 सीतला सु देवलोक हुवा । जीणा रे लारै बहू तुंवर जी सत कीयो । लखणा पोळ कांनी पधार कागै दाग हुवो ।

म्हाराणी जी श्री राणावतजी राणा जगतसिंघ जी री बेटी । संमत 1805 रा मे नागोर सु पधार कंवरपदे थकां उदेपुर पधार परणीजीया । जीणां रे कंवर जालमसिंघ जी संमत 1806 रा असाढ़ सुद 6 रो जनम, नें संमत 1854 रा दुतीक असाढ़ वद 5 सीरीयारी रे घाटै ऊपर गांव काछवलीयां रा डेरा देवलोक हुवा । जालमसिंघजी री कंवरपदा मै नांवो दीयो थो ।

म्हारांणीजी देवड़ीजी सीरोही रा राव................री बेटी डोलै परणीया जीणां रे कंवरा री बिगत—

कंवर सेरसिंघजी संमत 1817 रा आसोज सुद 9 री जनम नें संमत 1848 रा काती सुद 12 जुगराज[1] पदवी दीवी, ने संमत 1855 में भींवसिंघ जी चूक कराय[2] मराया । जीणा रे राजलोकां री विगत—

दुजा कंवर गुमानसिंघजी संमत 1818 रा काती सुद 8 रो जनम नें संमत 1848 रा आसोज वद 13 तथा 14 देवलोक हुवा । जीणा रे राजलोक बहु चवांण जी सोयतरा रा चवांण सांमसिंघजी री बेन नै गीरदासजी री बेटी जीण रे कंवर भंवरजी श्रीमांनसिंघजी संमत 1839 रा म्हा सुद 11 रो जनम, ने संमत 1860 रा म्हा सुद 5 रा राजतीलक विराजीया, ने संमत 1900 रा भादवा सुद 11 पाछली रात रा मंडोवर में देवलोक हुवा ।

राणीजी श्री बीरपुरीजी गुजरात रो गांव लुणावड़ा रो डोलो आयो थो ।

---

1 युवराज । 2 छल-कपट करके ।

राणीजी श्री तुंवरजी सुरतांणसिंघ जोरावरसिंघोत री बेटी गांव केलावा सुं डोलो आयो थो।

राणीजी श्री ईन्द्रभाणोत जी गांव लवारा रो डोडीया सीरदारसिंघजी री बेटी। संमत 1824 रा वरस मै श्रीहजुर श्रीजी दुवार दरसण नु पधारीया था। तरै पाछा पधारतां परणीया था। जीणां रे कंवर हुवो। कंवर सांवतसिंघजी संमत 1825 रा फागण सुद 8 रो जनम, ने संमत 1851 रा बरस मै भींवसिंघजी चूक कराय मराया। जीण रा राजलोक वहुवां चवांणजी, जीणरे भंवर सूरसिंघजी संमत 1841 रा कातो सुद 3 रो जनम, ने संमत 1851 में भींवसिंघ जी चूक करायो।

राणी हाडीजी रावराजा बुधसिंहजी बूंदी रा री बेटी उदेसिंघजी री बेन। संमत 1820 रा वेसाख में परणीया था ने संमत 1821 में बेराजी हुय पीहर बूंदी परा गया था। सु पाछा आया न्हीं ने संमत 1841 मे रामसरण[1] बूंदी हुवा।

जूमले राणीयां 7 (सात) री विगत है।

पासवांनजी गुलाबरायजी ठाकुरजी श्री कुंजबीहारीजी रो मींदर, ने गुलाब सागर तलाब, ने स्हेर में तलाब पाखती[2] बाग, ने बाग माहे जालरो[3] ने गोरदीकोट[4] ने म्हेलायत[5], ने सोजत रो कोट करायो। पासबांनजी रे वाभा तेजसिंहजी संमत 1825 मे दुजे सावण सुद 7 रो जनम, ने जेपुर रा राजा प्रीथीसिंघजी री खवास री बेटी परणीयां[6] पछे संमत 18....... में चल गया।

ठाकुरजी श्री कुंजबीहारीजी रो मींदर संमत 1837 में फागुण सुद 8 संपुरण हुवो, ने मांयलो बाग री म्हेलायत संमत 1837 रा पोस बद 6 संपुरण हुवो। गुलाबसागर तलाब संमत 1837 रा असाढ़ बद 4 संपुरण हुवो।

---

1 स्वर्गवास। 2 बगल में। 3 झालरा-वापिका। 4 घण्टाघर के चारों ओर के कोट। 5 महल आदि। 6 से विवाह किया।

पासवांन जी री बिगत ईण भांत हैं—

संमत 1823 रा में भूरट अणदराम री बडारण श्रीहजूर सायबा रे चीत[1] चढ़ी सु चढाई सो प्हेला तो गायण में राखी । पछे खवास पदवी दीवी । पछे मरजी ज्यादा हुई तरे संमत 1831 में पासवांन पदवी दीवी ।

म्हाराजा श्री विजेसिघजी रे राज री कीतरीक बातां बाकी रेह गई हैं ओ अठे लिखो—

ईडर रा राजा रायसिंघजी री बायां[2] 2 ईडर सु जोधपुर म्हाराज श्री विजैसिंघजी कने मेली ने कवायो - के ईणां रा व्याव आप करावसी । सो संमत 1818 में बूंदी रा रावराजा उदेसिंघजी ने तो बाई उदेकंवर परणाई, ने छोटा भाई दीपसिंघजी ने बाई भांनकंवर परणाई । दोनुं व्याव साथै कीया । रावराजा उदेसिंघजी जोधपुर परणीज ने पाछा जावता मेड़ते डेरा हुवा, सो धायभाई जगनाथ मेड़ते हो सो गोठ दीवी[3] सो उदेसिंघजी गोठ जीमण ने धायभाई री हवेली आया । तरे गजनी पोळ तांई सांमो आयो । नीजर नीछरावळ धायभाई आपरा हाथ नह[4] कीवी, व्यास गुलावराय कना सुं कराई ।

संमत 1816 रा फागुण में धायभाई जगनांथ ने वीदा कीयो सो मेड़तीया दरवाजा बारे डेरा कीया ।

श्री दरबार री फोज नींबाज लागी थी, तिणा आय मेड़ते अमल कीयो ।

राठौड़ चांपावत देवीसिंघजी रो बेटो सबलसिंघजी, ने पाली रो ठाकुर जगतसिंह, ने छतरसिंहजी रो बेटो जगरामजी वगेरे सारा भेळा हुवा, ने म्हाराज श्री रामसिंघजी परबतसर था जीणा नु कवायो के आप मेड़तो लीजो ने मे जालोर कायम कर आय भेळा हुसां । सो अे सीरदार जालोर कांनी कूच कीयो ने म्हाराज रामसिहजी परबतसर मारोठ रा मेड़तीया वगेरा ने ले ने मेड़ते आदमी हजार सात (7000) सु आय मोरचा लगाया । तरे जगनाथजी जालोर जाता हा, सु उठी सुं मेड़ता कांनी आया । असवार

1 चित्त । 2 लड़कियां । 3 दावत दी । 4 नहीं ।

तो कम था, पीण श्रीजी रा प्रताप सुं रामसिंघजी मेड़तो छोड़ कूच कीयो सु रूपनगर गया, ने लारे धायभाई गयो। पछै जेपुर गया। म्हाराज माधोसिंघ जी राणावतजी रा बाग में डेरा दीराया। रुपीया तीन सो 300 रोजीना कर दीया। घणा थोक कीया पीण आप भोळप सु माधोसिंघजी ने राजी न्हीं राखीया। घसीयां रा गोलां ने मानीया सो आछो बसत माधोसिंघजी मेले सो घसीयारा नु देवे तरे मेलणी मोकुब[1] राखी।

पछे सांभर आधी दीखणीयां कीचे थी, सु छुड़ाय ने म्हाराज रामसिंघ जी नु सुंप दीवी।

संमत 1829 कंवरजी श्री जालमसिंघजी उदेपुर था सु भंडारी जोरावरमल रतनसिंघोत बेटा भतीजा ने मेलीया ने श्री रामसिंघजी रे टीके आवण री रदल-बदल[2] कीवी ने आ बात जाहर हुई तरै रू. 33) तेंतीस रोजीना सांभर, नांवा, डीडवांणा री कचेड़ी ऊपर हुवा। सो जेपुर बेठा रा सरू हुवा, ने अठे आवण रो जाब[3] हुवो, सु आया नहीं। पछै कीतरांक म्हीना पछै रु. 10) रोजीना हुवा। पछै मोकुब हुवा, ने कंवरजी कने सींघवी फतेचंद, ने नाजर गंगादास, चांपावत, सवाईसिंघ सबलसिंघोत, ने कुंपावत महेसदास दलपतोत, ने मेड़तीयो सालमसिंघ मारोठ रा नु म्हैलीया, सु वचन कथन दैर[4] संमत 1833 में कंवरजी ने मेड़ते लाया सु स्हेर बारै डेरा रहा। धांधळ सरूपसिंघजी कने रहा पछं डेरा मै लांपणो[5] हुवो सु माल सांवठो बळीयो[6]। पछै संमत 1837 रे बरस कंवरजी रा मन मे भरांत[7] उपजी सु बीना मीलीया चढ़ गया। पाछा मेड़ता रो हाकम भंडारी भांनीदास चढ़ीयो सु गांव भड़सीये पोगा लीयो थो, ने सीसटाचार[8] मोकलो कीयो, पीण मानी न्हीं, ने पाछा उदेपुर परा गया।

जालमसिंघजी संमत 1834 में बीकानेर रा राजा गजसिंघजी रे कंवर राजसिंघजी उठा सु रीसाय ने जोधपुर आया। सु नागोरी दरवाजा बारे बहू जी रो तलाब है, जठै डेरा कीया। श्री दरबार रोजीनो कर दीयो ने

1 स्थगित। 2 रद्दो-बदल। 3 जवाब तलब। 4 वायदा करके, आश्वस्त करके। 5 आग लग गई। 6 अत्यधिक सामान-असबाब जल गया। 7 भ्रान्ति। 8 शिष्टाचार।

रीत-भांत आछी तरे राखी ।

राजा गजसिंघजी कंवर राजसिंघजी नु सारो कांम राज रो सु'प दीयो थो । पछै गजसिंहजी तो फोजबंधी में चढ़ीया था, ने लारे कंवरजी राजसिंघजी सु' सारो लोक मील गया था ने राजगादी बेठांवण रो ईरादो कर लीयो थो । तरे आ खबर राजा गजसिंघजी नु पड़ गई तरे स्हेर गढ़ रो जाबतो[1] कर दीयो । तरे कंवर फोज में थो, सु चढ़ ने सेखावटी ने गयो, ने गजसिंघजी री मदत में जोधपुर सु हजूर मदत में मुं० लालचंद ने मेलीयो, अर कंवर राजसिंघजी अठे आय गयो । तरे म्हाराज गजसिंघजी सु' बात कर दुतरफा वचन दे ने कंवर ने पाछो बीकानेर मेलीयो । राठोड़ कनीराम सुतरसिंघोत चांपावत ने सींघवी सीवदास स्हामलोत नु' साथै दीया । सु कीतराक दीन तो डेरा बारे रया । पछे कंवर रो ब्याव हुवो सु देवतावां री जात दैण नु माहे बुलाय केद कर दीयो । अठा रा सीरदार मुसदी था सु पाछा उरा[2] आया । श्री हजूर रो वचन राखीयो न्हीं. सो हजूर उणां सु बेराजी हुवा ।

संमत 1817 में ठाकुरजी श्री गंगस्यामजी रो मींदर रो कमठो नवो[3] करायो ।

म्हाराज श्री वीजेसिंघजी बूंदी परणीजन ने पाछा पधारतां खवासी री बेटी पदमावती बाई नु बूंदी रा रावराजा उमेदसिंघजी रा खवास रा वाभा नु' परणाई । सु जोधपुर परणीजन ने आया । सु परणीज पाछा जावता मेड़ते आयो । तरे श्रीहजुर सा सु मुजरो कीयो । तरे हाथी घोड़ो दायजो[4] खापां मुजब दीयो । पछे जोधपुर पधारीया । संमत 1824 में पुसकरजी[5] सु पाछा पधारतां मेड़ता रा डेरा सु गुसांईजो श्री व्रजाधीसजी लिलाविसतारी[6] री खबर सुणी तरे नोबत दीन 1। नहीं बजी ।

बखसी सींघवी भींवराज ने दीवी संमत 1832 में । भींवराज अरज कर ने ईतरी आसामीयां कने रूपीया ईण मुजब लीया —

1 मजबूती । 2 वापस । 3 नया । 4 दहेज । 5 पुष्करजी । 6 निर्वाण को प्राप्त हो गए ।

मुं. कुसालचंद उत्तमचंदोत सादायत कने वीसाही रू. 25000)
रोयट ठा. रो कांमदार मुं. ताराचंद कने वीजैसाही रू. 5000)
चांणोद रा कामदार मुं. मोखमचंद कने वीजैसाही रू. 5000)
ठा. सु रीसाय ने पाली आयो थो सु।
जोधपुर रो मोदी बालजी कुसालचंद वगेरे आसामीयां
कना सु 5000)

कुल रुपीया 40,000) भराया

महाराज विजेसिंघजी ने उदेपुर राणा अड़सीजी आपरी गरज[1] मदत[2] लेण वासते गोडवाड़ रो प्रगनो दीयो। जीण रा खास दसकतां रूका लीखत लीख दीया नीरदावे रा। तीण री नकलां राज में हाजर हैं संमत 1817 लगायत जोधपुर रा राज रे कवजे है। लीखता था खास रूका 2 मेलीया तीण में लाचारी हद रे दरजे है। लीखावट में लांबा चवड़ा कागदा मैं—

1 लीखत 1 संमत 1827 रा काती व्रद 3 री
1 लीखत 1 संमत 1827 रा वेसाख वद 11 री
—
2

फेर ईण स्वाय अंगरेजी में ने जोधपुर री सीरकार सुं अेदनावा[3] संवत 1874 हुवा। तीण में अंगरेजी लीख दीयो के गोढ़वाड़ का राणे अड़सीजी अपनी गरज सुं दीया जीसकुं पीढ़ी च्यार हुई। अब जोधपुर का राज में रहेगी। अब उदेपुर वाला गोढ़वाड़ की जीकर[4] करेगा तो सुणवाई न्हीं होगा। पछे संमत 1907 उदेपुर वाला दावो कीयो थो। खलीतो आयो, जीण रा जवाब में बड़ा सायव साफ-साफ लीख दीयो हमारी सीरकार ईसकी न्हीं सुणेगा सु गोढ़वाड़ रो दावो बड़े सायव खारत[5] कर दीयो। जीणा रो खुलासो अठ लीखीयो छै।

ईतीश्री म्हाराज वीजेसिंघजी री ख्यात संमत 1809 लगायत संमत 1849 रा असाढ़ वद 14 सुधी सारी लीख दीवी है।

---

1 मतलब। 2 सहायता। 3 ओहदानामा। 4 जिक्र। 5 खारिज।

